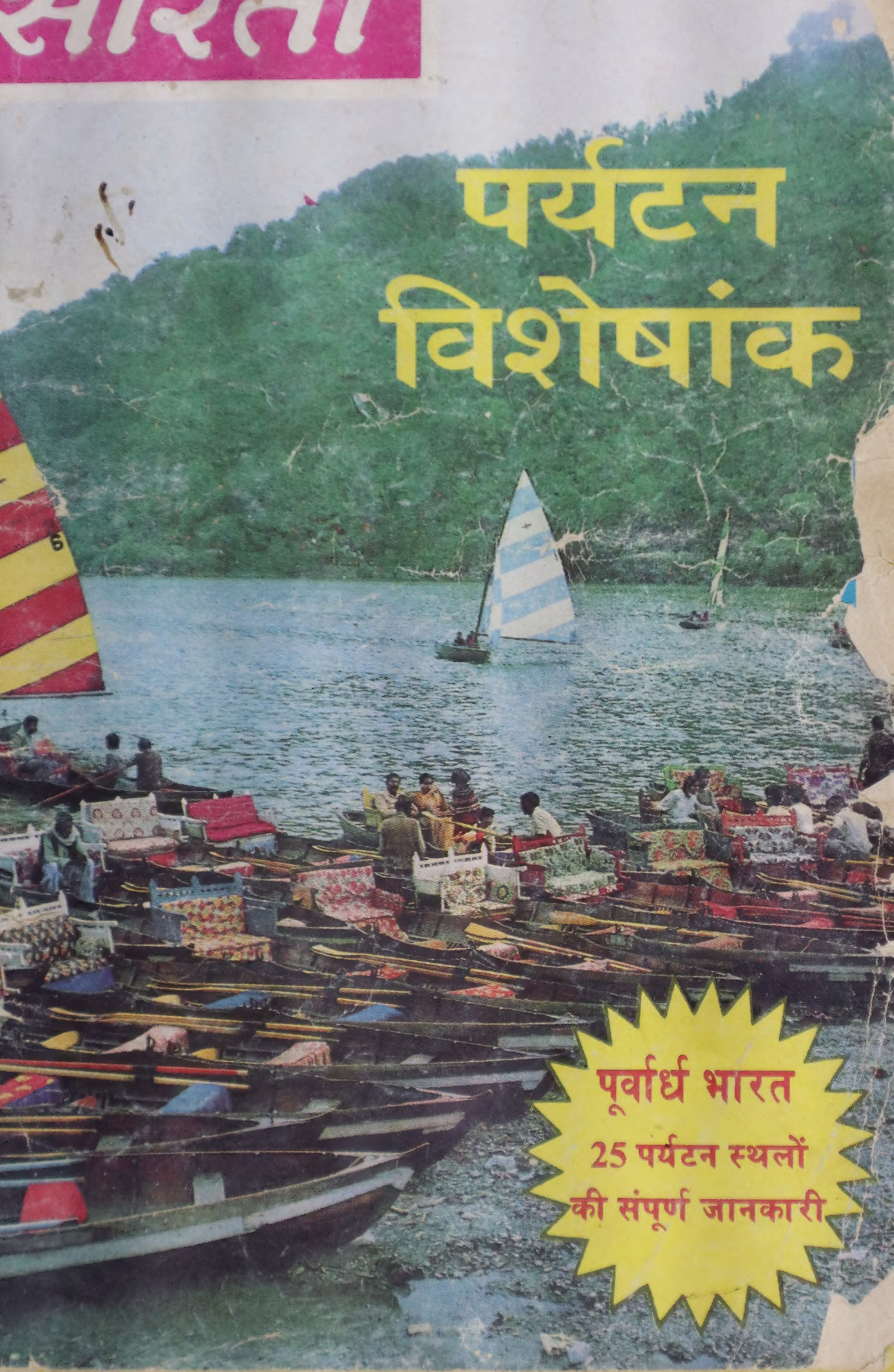
मई (प्रथम) 1988 रुपए 6.00

सरिता

पर्यटन विशेषांक



पूर्वार्ध भारत
25 पर्यटन स्थलों
की संपूर्ण जानकारी


ये ताज़गी, ये मोहकता...कुदरत के सिवा कहीं और कहां!
Cuticura
Lavender
Mist
A Talc Classique
लैवेंडर
मिस्ट
एक लाजवाब टैल्क.
झलके इसमें आपका अंदाज़.
Orbit/MP LM/169 87 BN

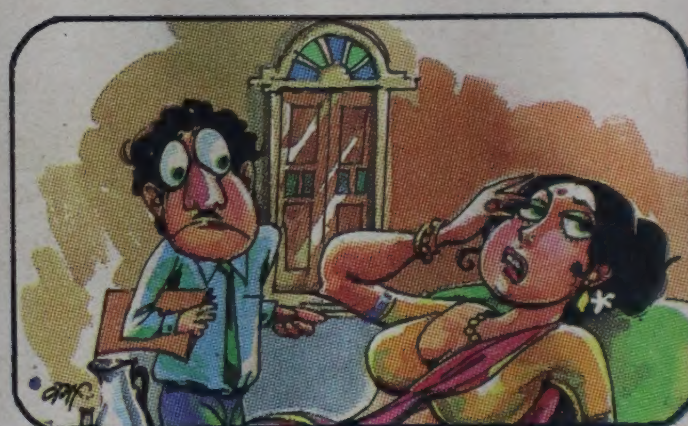
सरिता

सामाजिक व पारिवारिक पुनर्निर्माण की पाक्षिक पत्रिका

संपादक व प्रकाशक : विश्वनाथ अंक : 793 मई (प्रथम) 1988



कथा साहित्य





लेख



पर्यटन परिशिष्ट



स्तंभ

कविताएं



संपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस भवन, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा. लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा प्रकाशित तथा दिल्ली प्रेस समाचार पत्र प्रा.लि. साहिबाबाद/गाजियाबाद में मुद्रित.
अन्य कार्यालय : अहमदाबाद : 503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, अहमदाबाद-380009. बंगलौर : 302-बी. 'ए' क्वींस कारनर एपार्टमेंट्स, 3, क्वींस रोड, बंगलौर-560001. बंबई : 79-ए मित्तल चैंबर्स, नरीमन पाइंट, बंबई-400021.कलकत्ता : तीसरी मंजिल, पोद्दार पाइंट, 113, पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता-700016, मद्रास : 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लेक्स, 150/82, मांटीअथ रोड, मद्रास-600008., लखनऊ : 9, दुर्गा भवन, कपूर लेन, महात्मा गांधी रोड, लखनऊ-226001. सिकंदराबाद : 122, पहली मंजिल, चिनाय ट्रेड सेंटर लेन, 116, पार्क लेन, सिकंदराबाद-500003.

वैवाहिक विज्ञापन विभाग : एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.
वार्षिक मूल्य केवल ड्राफ्ट/मनी आर्डर द्वारा 'सरिता' के नाम से ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. चैक व वी.पी.पी. स्वीकार नहीं किए जाते.
मूल्य विदेशों में (समुद्री डाक से) 240 रु., (हवाई डाक से) 636 रु.

मूल्य एक प्रति 5.00 रुपए. वार्षिक 120 रुपए. यह प्रति 6.00 रुपए



पंखों पे चली आएं...ताज़ी ठंडी हवाएं!





सरित प्रवाह/मार्च/द्वितीय

आप ने बजट की सही मीमांसा की है. समय से पूर्व ही विभिन्न वस्तुओं के मूल्य बढ़ा कर सरकार ने बजट का सही रूप ही समाप्त कर दिया है. उस ने जनता को भुलावे में रखा है. बजट में आंकड़ों को मनमाने ढंग से तोड़ामरोड़ा गया है.

इसी अंक के लेख 'विवादों के घेरे में तमस' में तमस का बेबाक विश्लेषण किया गया है. वस्तुतः हमें अपनी गलतियां दूसरों पर थोपने की आदत पड़ गई है. आजादी से पहले हम अंगरेजों को दोषी ठहराते थे, अब 'विदेशी हाथों' को दोष देते हैं और सचाई को अनदेखा कर देते हैं. —जितेंद्र, कुमार विज

*

'अवैध कब्जों' से संबद्ध आप के विचार सटीक एवं सामयिक हैं.

नगरों में अवैध कब्जों का कारण यह है कि दूसरे नगरों से निचले तबके के लोग पलायन कर के जहांतहां बस जाते हैं. इस के पीछे राजनीतिक कारण भी रहते हैं. नेतागण इन्हें मोहरा बना कर स्वार्थसिद्धि करते हैं.



हमारे नगर रायपुर में उड़ीसा के सीमावर्ती नगरों से अनेक लोगों ने आ कर अवैध कब्जे कर रखे हैं. ऐसे लोग यातायात के नियमों का ढंग से पालन नहीं करते हैं. उन्होंने झोपड़पट्टी के रूप में खरपतवार फैला रखा है. इस से नगर की सुंदरता पर बुरा असर पड़ता है. —मोहन भया

*

विवादास्पद 'तमस'

लेख 'विवादों के घेरे में तमस' (मार्च/द्वितीय) में निष्पक्ष विचार प्रस्तुत किए गए हैं.

हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि तमस धारावाहिक का विरोध हिंदू पुनरुत्थानवादी तबके द्वारा किया गया था क्योंकि तमस एक हद तक वामपंथियों को पुष्ट करता है. इसलिए यह इतिहास को निष्पक्ष रूप में पेश नहीं करता.

तमस के समर्थन में अनेक लोगों ने इसे विभाजन की त्रासदी का बेजोड़ दस्तावेज भी कहा है. लेकिन ऐतिहासिक रूप से त्रुटिपूर्ण एवं एक खास विचारधारा का पोषण करनेवालों को इस कृति के इन पहलुओं को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता. प्रस्तुत लेख में इन सभी पहलुओं पर समुचित विचार किया गया है.

लेकिन खेद का विषय है कि तमस के प्रदर्शन का विरोध केवल हिंदू कठमुल्लेपन की भावनाओं पर आधारित था. 'इस का मकसद हिंदू भावनाओं पर आघात करना है, गड़े मुर्दे उखाड़ना है'—जैसी बातें करना बचकानापन है.



अदालत में भी दो न्यायाधीशों ने अपने फैसले में इसे ऐतिहासिक कृति बता कर प्रदर्शन की अनुमति दी. बेहतर होता, वे इस के प्रदर्शन/प्रसारण को 'अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' बता कर औचित्यपूर्ण ठहराते. —संजय व्यास 'गिरिराज'

*

दिग्भ्रमित मानसिकता

लेख 'रुद्राक्ष में कोई शक्ति नहीं' (मार्च/द्वितीय) धर्म के धंधेबाजों पर करारी चोट है.

वस्तुतः धार्मिक अंधविश्वासों के कारण आज जनता की मानसिकता इस हद तक दिग्भ्रमित हो गई है कि वह एक साधारण बीजनुमा फल के पीछे अपने खून पसीने की कमाई लुटा देती है. —प्रणय कुमार मिश्र

*

नसीहत भरी कहानी

कहानी 'पांचवीं' (मार्च/द्वितीय) उन लोगों के लिए एक नसीहत है, जो लड़के की चाह में लड़कियों की लाइन लगाते चले जाते हैं और बाद में उन से दुर्व्यवहार करते हैं. -व्रजबाला कंसल

*

दंभी लड़कियों पर कटाक्ष

कहानी 'मैं लौटना चाहती हूं' (मार्च/द्वितीय) उन दंभी लड़कियों पर तीक्ष्ण कटाक्ष है, जो अपने अहं के कारण हरेभरे घर को तबाह कर देती हैं. कहानी के


Oil of OLAY

नायक के समान समझदार लड़कों को ऐसी लड़कियों से सचेत रहना चाहिए.

—वनिता सिन्हा

*

शिक्षाप्रद कहानी

कहानी 'धर्म का धंधा' (मार्च/द्वितीय) में समाज



के उन ठेकेदारों की पोल खोली गई है, जो भोलेभाले लोगों को धर्म के नाम पर ठगते हैं.

—किस्मत सिंह 'दीवाना'

*

20 साल पहले भी

कहानी 'मन का मिला न मीत' (मार्च/द्वितीय) पढ़ कर विदित हुआ कि 'सरिता' में 20 साल पहले भी ऐसी सशक्त, प्रभावशाली एवं शिक्षाप्रद कहानियां प्रकाशित होती थीं.

कहानी की नायिका की दृढ़ता, संयम, आत्मविश्वास, स्वाभिमान और निर्णय लेने की क्षमता आज की हर युवती के लिए अनुकरणीय हैं. नायिका ने 'पति के घर से अरथी उठे' वाली परंपरा को तोड़ कर अच्छे कार्यों के लिए जीवन समर्पित कर के उन युवतियों को एक नई दिशा दिखाई है, जो सब कुछ सहन करते हुए भी पति को परमेश्वर मानती हैं, चाहे पति कितना हीं बुरा क्यों न हो.

—दीपिका बैद

*

बेकार फिल्म

फिल्म समीक्षा 'शहंशाह' (चंचल छाया/मार्च/द्वितीय) में फिल्म को एक स्टार दिया गया है.

यदि देखा जाए तो यह फिल्म एक भी स्टार पाने की हकदार नहीं है. क्या आप ने केवल अमिताभ बच्चन के कारण ही इसे एक स्टार दिया है?

—राजेश महेंद्र 'अमृतसरिया'

*

पितापुत्र में विरोध

लेख 'पितापुत्र में टकराव' (फरवरी/द्वितीय) में व्यावसायिक वर्ग की अपेक्षा नौकरीपेशा वर्ग पर अधिक ध्यान केंद्रित किया गया है.

हमारी दुकान खुले पांच साल हो गए हैं. अब आसपास अन्य दुकानें खुल जाने से हमारी आय पर काफी असर पड़ा है. इसलिए मैं चाहता हूं कि अपनी दुकान को नए रंगरूप में ढाल कर दुकान का स्तर ऊंचा कर दूं, मगर पिताजी इस का विरोध करते हैं. फलतः मैं कुछ भी नहीं कर पाता हूं और उलटे मानसिक तनाव का शिकार रहता हूं.

—एक पाठक

*

समयानुकूल 'सरिता'

'सरिता' में जिस प्रकार धार्मिक मान्यताओं, परंपराओं और रूढ़ियों का तर्कसंगत खंडन किया जाता है, वह हमारी नवीन पीढ़ी की मानसिकता को स्वच्छ और समयानुकूल बनाने में पूर्णतः सक्षम है. -लता गुप्ता

*

दूरदर्शन: अंधविश्वासपूर्ण प्रचारक

'सरिता' ने विगत 40 वर्षों में जितने लोगों को अंधविश्वासों से दूर किया होगा, उस से कहीं अधिक लोगों को दूरदर्शन के धारावाहिक 'रामायण' ने एक वर्ष में अंधविश्वासों के निकट ला दिया, 'रामायण' के अलावा 'ईश्वर भक्ति' और 'होनीअनहोनी' भी ऐसे ही कार्यक्रम हैं जो लोगों को भाग्य के भरोसे जीना सिखाते हैं. दूरदर्शन पर ऐसे प्रसारणों को यथाशीघ्र बंद किया जाना चाहिए. —घेवरचंद्र नाहटा



विदेशों में भी अंधविश्वास

अंधविश्वास, पाखंड और अकर्मण्यता जैसी प्रवृत्तिया भारत से बाहर बसे हिंदुओं में भी पनप रही हैं. ब्रिटेन जैसे विकासशील देश की अच्छी बातें भी ये लोग धर्म के नाम पर त्याज्य समझते हैं. यहां अधिकतर हिंदू भारत के गुजरात प्रदेश से आए हैं.

महात्मा गांधी, दयानंद सरस्वती, लौहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की जन्मभूमि से आए ये लोग जातपांत, छुआछूत और अन्य आडंबरों से जकड़े हैं. ये अपनी ही जाति की उपजातियों में विवाह करने से हिचकते हैं. 'तुलसी विवाह' जैसे छोटेछोटे त्योहार भी ये लोग बड़ी शान से मनाते हैं. इस अवसर पर बाकायदा बरात, स्वागत, पंडाल आदि की व्यवस्था की जाती है.

ये कारोबारी लोग अपने व्यस्त जीवन में से कुछ न कुछ समय इन कामों के लिए निकाल ही लेते हैं. ये अपने धन का उपयोग रचनात्मक कार्यों में नहीं करते. क्या अपने निर्धन भाइयों के लिए किसी स्थायी रोजगार की व्यवस्था करना इनका धर्म नहीं है.

—नीरू पटेल, यू.के. ●



हैलो कहने का नया अन्दाज़
स्कैफ़े कॉफी
या भर की मनपसन्द कॉफ़ी
ने की उमंग, जगाए तरंग ऐसे लम्हों में नस्कैफ़े.
तिशत शुद्ध, ताज़ा कॉफी का आनन्द लीजिए.
के का ख़ास स्वाद-आपके लिए ख़ास तौर से लाए हैं
, जिनसे बेहतर कॉफी के बारे में और कोई नहीं जानता.
ब संग साथ हो ऐसे लम्हों में-नैस्कैफ़े
वाद जिस पर दुनिया करे नाज़.
संग होने की उमंग
NESCAFÉ
SELECT
ठंडक पाओ मज़ा उठाओ
भाग लीजिए
20,000
से भी अधिक इनाम
अपने डीलर से सम्पर्क कीजिए.
तियोगिता की अन्तिम तारीख: 30 जून 1988


The Sup
VIMAL®
A RELIANCE PRODUCT
Dress Material


rlatives

संपादकीय
मई (प्रथम) 1988

शरित प्रवाह

पाकिस्तान की राजधानी इसलामाबाद और पुराने शहर रावलपिंडी के बीच स्थित शस्त्रागार में 10 अप्रैल को भयंकर विस्फोट हुआ. दो दिनों तक आसपास के क्षेत्रों में राकेट और बम फटते रहे. अरबों रुपए की संपत्ति नष्ट हुई और कई हजार व्यक्ति भी हताहत हुए.

यह विस्फोट इतना भयंकर था कि पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल जिया उल हक को, जो एक इसलामी कानफ्रेंस में भाग लेने कुवैत गए थे, खबर मिली कि दुश्मन ने हमला कर दिया है और वह वहां से ताबड़तोड़ भागे. (पाकिस्तान के लिए उस का दुश्मन इस समय तो भारत ही है.) जब घर वापस आए तो पता चला कि यह तो तोड़फोड़ की ही कारस्तानी थी और तब उन के दम में दम आया.

पर कशमीर में मुसलिम धार्मिक



उन्माद वाली संस्थाओं के लिए यह जान
जरूरी नहीं था कि यह विस्फोट कैसे, क
हुआ. यद्यपि पाकिस्तान मान रहा है कि
से भारत का कोई संबंध नहीं है, पर
मजहब के दीवाने फिर भी भारत को
दोषी मानते हुए श्रीनगर व अन्य स्थानों
अपना गुस्सा दुकानदारों, सड़कों पर च
वाहनों और राहगीरों पर निकालते र
कहा गया कि पाकिस्तान के विस्फोट में
लोगों की सहानुभूति में कशमीर में तो स
कामकाज ठप कर के शोक मनाया
जाएगा, चाहे पाकिस्तान में कोई हड़त
नहीं हुई हो.

पाकिस्तान से इन भारतीय कशमी
मुसलमानों का क्या संबंध है, सिवाए मज
के? क्योंकि भारत में अधिकांश हिंद
इसलिए भारत दुश्मन; पाकिस्तान मुस
बहुल है, इसलिए दोस्त.

मजहब नहीं सिखाता आपस में
करना?

*

कशमीर की इन धार्मिक संस्थाओं
कशमीरी मुसलमानों को इस प्रका
आंदोलन, तोड़फोड़ के सिलसिले में अ
भलाबुरा सोचना चाहिए, क्योंकि धर्म
मजहब न रोटी देता है, न कपड़ा, न मक
उलटे मजहब या धर्म के धंधेबाज यह
जनता से छीनने का प्रयास करते रहत
क्योंकि उन की रोजीरोटी किसी की
जरूरत पूरी करने से नहीं निकलती, ब

लोगों में दुर्भावना फैला कर, धार्मिक उन्माद में पागल बना कर वे अपनी मौजमस्ती का सिलसिला बनाते हैं.

कशमीर, जो मुसलिम बहुल प्रदेश है, अधिकांशत: सैलानियों, पर्यटकों से रोजीरोटी कमाता है. वहां का उद्योगव्यापार भी सैलानियों पर निर्भर रहता है. इसलिए बजाए पाकिस्तान की खैरख्वाही के यह ज्यादा अच्छा हो कि कशमीरी मुसलमान अपने को इस प्रकार के आंदोलनों में फंसाने के बजाए अपने को गरीबी की खंदक से निकालने का प्रयत्न करें.

बारबार पाकिस्तान और मजहब के पक्ष में दंगाफसाद कर के ये लोग समूचे भारत को अपना शत्रु बना रहे हैं. अगर इन दंगों और धार्मिक उन्माद के कारण हिंदू लोग कशमीर जाना बंद कर दें तो क्या होगा? आप मजहब के दीवाने बनेंगे तो दूसरा भी तो तुर्कीबतुर्की जवाब दे सकता है?

वैसे भी पिछले कुछ सालों से कशमीर में गंदगी, बदइंतजामी और लूटखसोट इतनी तेजी से बढ़ रही है कि चाहे सरकारी प्रचार कशमीर को स्वर्ग की संज्ञा दे, वहां पर्यटक को बजाए संतोष और प्रसन्नता के रोष ही होता है. दूरदूर से आया पर्यटक निराश हो कर ही लौटता है और जितने समय वह वहां रहता भी है तो उसे डर ही लगा रहता है कि न जाने यहां कब किसी जरा सी बात पर धार्मिक मारकाट होने लगे.

*

श्रीलंका में भारतीय उच्च आयुक्त जे. एन. दीक्षित ने रहस्योद्घाटन किया है कि भारतश्रीलंका समझौते की भूमिका में राजीव गांधी ने लिबरेशन टाइगर आफ तमिल ईलम (प्रमुख तमिल आतंकवादी गुट) को 100 करोड़ रुपए एकमुश्त और 50 लाख रुपए मासिक देने का प्रावधान किया था. इस रकम में से 50 लाख रुपए की एक किस्त दे भी दी गई. बाकी इसलिए रोक ली गई कि बाद में तमिल आतंकवादी समझौते से मुकर गए.



यह समाचार पहले लंदन में 'संडे आबजरवर' में प्रकाशित हुआ. बाद में भारतीय विदेश राज्य मंत्री नटवर सिंह ने संसद में इस की पुष्टि भी की.

यह रुपया किस मद में से दिया या लिया जाने वाला था, किस की अनुमति से इस के देने का फैसला हुआ और क्या मजबूरी थी इतनी बड़ी रिश्वत देने की, इस पर कोई प्रकाश नहीं डाला गया है. उलटे इस बात को छिपाने का, इस पर परदा डालने का प्रयत्न किया जा रहा है. इस प्रयास में विपक्ष भी शामिल है. भाजपा के अटलबिहारी वाजपेयी ने, जो जनता सरकार में विदेश मंत्री थे, कहा कि इस प्रकार के सौदों को सरकार द्वारा प्रकाश में लाना गलती थी. यानी उन की भी राय में इस प्रकार की रिश्वत कोई गलत बात नहीं थी !

वास्तविकता यह है कि भारतीय राजनीतिबाज, चाहे वे कांग्रेसी हों या विपक्ष के, दोगली बात करने में माहिर हैं. एक ओर तो रोज पाकिस्तान को कोसा जाता है कि वह पंजाब के सिख आतंकवादियों को हथियार दे रहा है, उन को प्रशिक्षित कर रहा है, भारत में अस्थिरता पैदा कर रहा है. पर दूसरी ओर दक्षिण में भारत वही सब कुछ श्रीलंका में कर रहा है, जिस का वह उत्तरपश्चिम में विरोध करता रहा है.

अब तो सर्वविदित हो गया है कि श्रीलंका में तमिल आतंकवाद भारत की शह पर जन्मा और पनपा. भारत में इन लोगों को प्रशिक्षण दिया गया, हथियार दिए

गए, रुपया दिया गया. तमिलनाडु के दिवंगत मुख्य मंत्री रामचंद्रन बराबर इन तमिल गुटों को करोड़ों रुपए हर महीने पहुंचाते रहे, भारतीय सेना के हथियार श्रीलंका पहुंचते रहे. यहां तक कि रामचंद्रन ने इन आतंकवादियों को हथियार व लोगों को लाने ले जाने के लिए एक बड़ा जहाज भी भेंट किया, जिसे भारतीय सेना को अंत में अपने शांति अभियान में नष्ट करना पड़ा.

अकसर ऐसा होता है कि आप अपने शत्रु को परास्त करने के लिए उस के दुश्मन पैदा करते हैं. पर अंत में वह आस्तीन का सांप आप ही को डसने लगता है. तमिल आतंकवादियों के साथ ऐसा ही हो रहा है. जब उन्होंने आप की बात, यानी श्रीलंका समझौते को मानने से इनकार कर दिया तो आप को गुस्सा आया, और आप को 1,50,000 से अधिक फौज उन्हें दबाने, सबक सिखाने के लिए भेजनी पड़ी.

इस अभियान में 2,000 से ऊपर भारतीय सिपाही और अफसर मारे गए व जख्मी हुए. सैकड़ों करोड़ रुपया हर माह खर्च हो रहा है. भारतीय सेना उन्हीं भारतीय मूल के लोगों को मार रही है, जिन के लिए पहले विद्रोह का स्वांग रचा गया.

यद्यपि रोज भारतीय राजनीतिबाज व अधिकारी तोता रटंत बोलते हैं कि भारतीय सेना आवश्यकता से एक रोज भी अधिक श्रीलंका में नहीं ठहरेगी, पर प्रश्न यह है कि वह दिन कब आएगा?

इस प्रकार के अभियानों में अमरीका वियतनाम में और रूस अफगानिस्तान में अपना मुंह काला कर चुके हैं. क्या हम उन से सबक नहीं सीख सकते?

*

पंजाब में आतंकवादियों द्वारा हत्याओं का सिलसिला निर्बाध रूप से चालू है. महीने में शायद ही कोई ऐसा दिन जाता है जब 5 से ले कर 20 तक हत्याएं नहीं हो जातीं. जिस दिन कोई बहुत बड़ा हादसा होता है, उस दिन सरकारी प्रवक्ता संवाददाताओं को बुला कर रटारटाया, पहले से तैयार किया



बयान उगल देता है कि प्रधान मंत्री ने पंजाब के राज्यपाल को सलाहमशवरा के लिए तत्काल दिल्ली बुलाया है और उसे ताकीद की जा रही है कि इन आतंकवादी हत्याओं से सख्ती से निबटे.

बस इस को अखबारों में छपवा देने और रेडियो, टीवी पर प्रसारित करा देने के बाद राजीव गांधी विदेशी नेताओं से मिलने, उन्हें हैदराबाद हाउस में शानदार दावतें देने और हवाई अड्डे पर उन्हें विदा करने या स्वयं विदेशों की सैर करने में लग जाते हैं—और यही सिलसिला चलता रहता है जब तक एक दूसरा धमाका न हो जाए.

हां, बीच में पाकिस्तान और अमरीका को बढ़िया शराब की चुसकियों के बीच गालियां भी दी जाती हैं और भारत के आंतरिक मामलों में विदेशी हस्तक्षेप की भर्त्सना कर दी जाती है. भारतीय 'मूर्ख' जनता के लिए क्या इतना ही काफी नहीं है?

इधर कुछ पंजाबी बेरोजगार नेता हैं जो इस शोरशराबे में अपनी तूती की आवाज मिला देते हैं, यह कह कर कि सरकार तत्काल जोधपुर के बंदियों को रिहा करे, 1984 के दिल्ली दंगों के अपराधियों को दंड दे और आतंकवादियों से बातचीत करे—मानो इन तीनचार बातों से पहले पंजाब में आतंकवाद था ही नहीं, और इन तीन बातों से तत्काल मिट भी जाएगा.

उधर खालिस्तानी आतंकवादी एक

बार फिर स्वर्ण मंदिर पर काबिज हो गए हैं और वहां उन का दबदबा इतना है कि जब वे हवा में फायर करते हैं तो स्वर्ण मंदिर के चारों ओर तैनात फौजी सिपाही भाग कर पास की दुकानों में छिपते नजर आते हैं.

लगता है राजीव गांधी सरकार ने फैसला कर लिया है कि यदि पंजाब में सिख हिंदू मरते हैं तो मरने दो, हमें क्या? हम तो कमांडो फौज से घिरे सुरक्षित ही हैं. जहां तक गद्दी का प्रश्न है, अभी तो कोई माई का लाल दिखाई नहीं पड़ रहा है जो हम से गद्दी छीन सके. जब अगले चुनावों का समय आएगा तो हम बड़ी तेजी, फुरती, सख्ती दिखाएंगे और जनता को बेवकूफ बना कर गद्दी पर फिर विराजमान हो जाएंगे. टीवी, रेडियो व अधिकांश पत्रपत्रिकाएं हमारे कंट्रोल में हैं ही. पैसे की हमारे पास कमी होने का प्रश्न ही नहीं उठता. फिर चिंता की क्या बात है?

*

रूसी सर्वोच्च नेता मिखाइल गोरबाचौफ ने एलान किया है कि रूस अब पूर्वी यूरोप के पड़ोसी देशों में उन के आचारविचार, कार्यप्रणाली, सरकारी ढांचों में हस्तक्षेप नहीं करेगा. यह उस ब्रेजनेव सिद्धांत का उलट है जो अब तक रूस और पूर्वी यूरोप के देशों के संबंधों को संचालित करता रहा है.

यह घोषणा गोरबाचौफ ने उस समय की जब वह यूगोस्लाविया के पांच दिवसीय दौरे से लौट रहे थे और वहां की ढीली, विकेंद्रित औद्योगिक प्रणाली को स्वयं देखपरख रहे थे.



अब तक रूस किसी भी पड़ोसी यूरोपीय देश में केवल अपने ही ढांचे के कम्यूनिज्म और समाजवाद को बरदाश्त करता था. जहां किसी देश ने कोई नई बात शुरू की, या परिवर्तन करना चाहा तो फौरन रूसी धमकियां शुरू हो जाती थीं और क्योंकि सिवाए यूगोस्लाविया के अन्य सभी पूर्वी कम्यूनिस्ट देशों में–जैसे पोलैंड, हंगरी, चैकोस्लोवाकिया आदि में सोवियत सेना के अड्डे थे, और पीछे सारे रूस की ताकत, इसलिए किसी भी छोटे देश की हिम्मत नहीं होती थी कि वह रूसी पद्धति या सिद्धांत या आदेश की अवहेलना कर दे.

इस रूसी शिकंजे के ढील करने और छोटे देशों को अपना कामकाज स्वयं संभालने की स्वतंत्रता देने के निश्चय का समर्थन व स्वागत करना ही चाहिए.

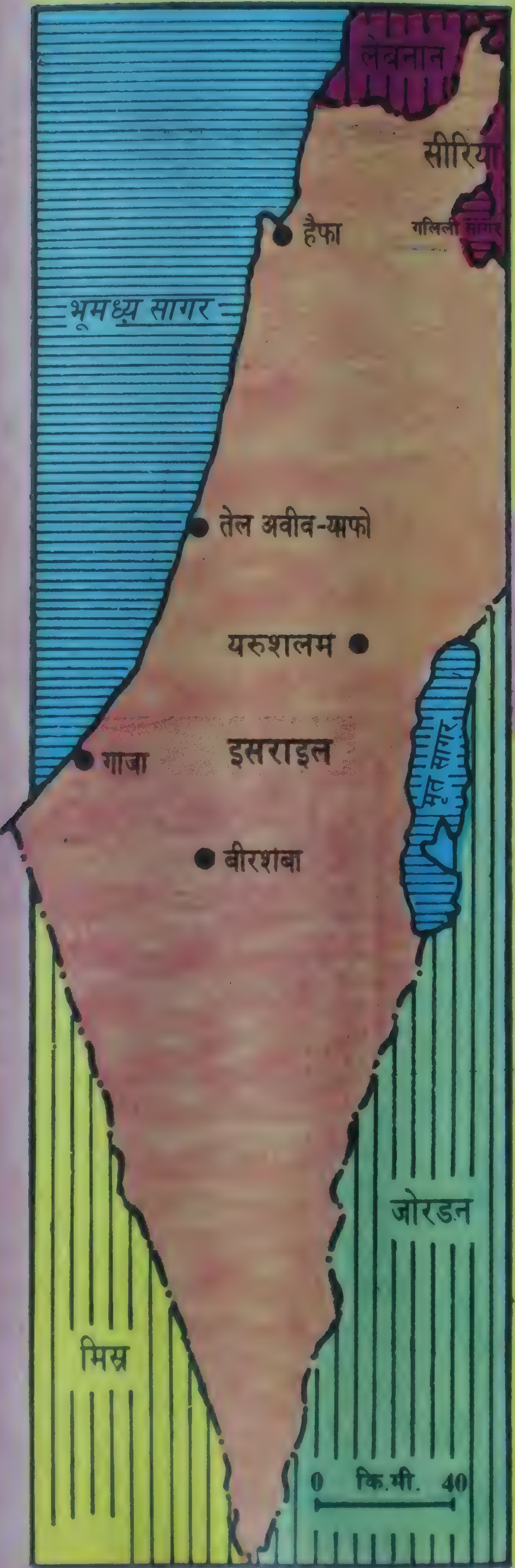
*

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के एक शोध दल ने बताया है कि वाराणसी के आसपास गंगा नदी के पानी में डायरिया (दस्तों की बीमारी) के कीटाणु हैं जो उस पानी को पीने वालों को, विशेषतः बच्चों को बीमार कर सकते हैं.

जो लोग गंगा को पवित्र और शुद्ध करने वाली मानते हैं, उन के लिए तो यह सब स्वीकार करना बड़ा कठिन है. भला पतितपावनी, परम शुद्धिकारिणी गंगा ऐसी बीमारी फैलाने वाली कैसे हो सकती है? पर जो स्वयं अपने को शुद्ध नहीं कर सके वह दूसरों को क्या शुद्ध करेगा?

इस सब के होते हुए भी अपार संख्या में अंधश्रद्धालु हिंदू आंख मींच कर ब्राह्मण-पुरोहितों द्वारा अपने स्वार्थ के लिए लिखे गए शास्त्रों की तथाकथित वाणी को शिरोधार्य मान कर हर वर्ष गंगा में डुबकी लगाने जाते हैं और अपने खूनपसीने का कमाया पैसा यात्रा व पंडेपुजारियों में नष्ट कर के बीमारी मोल लेते हैं. ●

इस वर्ष के आरंभ से ही भूमध्य सागर के पूर्वी तट का वह भूभाग, जो प्राचीन काल में फिनीशिया कहलाता था, समाचारपत्रों की सुर्खियों में है. सन 1985 की बसंत ऋतु में मुझे इस सुहावने समुद्रतटीय भूभाग में कुछ सप्ताह बिताने का अवसर मिला. मैं ने कुछ घंटे रामअल्लाह नामक उस ऐतिहासिक स्थल पर भी बिताए जो आजकल दूरदर्शन पर प्रायः प्रतिदिन दिखलाई देता है तथा जहां अरब और फिलिस्तीनी लोग इसराइल के विरुद्ध हिंसक प्रदर्शन कर रहे हैं. उन दिनों यहां सर्वत्र शांति थी और यहां के निवासी रोज सवेरे यरूशलम, तेल अवीव, बीरशब्बा, हैफा आदि नगरों के कारखानों और होटलों में काम करने जाते थे तथा शाम को लौट आते थे.



इसराइल की नैतिक सरकार के विरोध में अनैतिक प्रदर्शन करते हुए फिलिस्तीनी युवक.

उग्र होता

बहुत से अरब नागरिक इसराइल की सेना में भी ऊंचेऊंचे पदों पर थे. यहां तक कि इसराइल की संसद के 120 सदस्यों में 5 अरब थे.

उस समय मेरे लिए यह पहचान करना कठिन था कि कौन यहूदी है और कौन अरब.

इसराइल अपने जन्मकाल से ही अरबों के हमलों से अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए जूझ रहा है. हाल में गाजा पट्टी व पश्चिमी तट पर रह रहे फिलिस्तीनियों के दंगों ने इसराइल को और संकट में डाल दिया है.



फिलिस्तीनी विवाद

लेख • यमुना दत्त वैष्णव 'अशोक'

केवल कुछ कट्टर यहूदी ही काला कोट और छोटी सी जालीदार टोपी पहनते थे. यह पहनावा भी शनिवार के दिन सिनेगौग जाते समय ही धारण किया जाता था. मुझे अपने इस प्रवास में ऐसा लगा कि सभी होटलों के कर्मचारी, मैनेजर आदि अरब हैं, जब कि उन होटलों के मालिक यहूदी हैं. यहूदी भी यह पूछना अशिष्ट मानते थे कि वे अरब हैं या यहूदी. आज स्थिति कैसी हो गई है, इसे समझने के लिए इसराइल देश के अब तक के 40 वर्ष के इतिहास पर दृष्टि डालना आवश्यक है.

स्वतंत्र यहूदी राष्ट्र का जन्म

29 नवंबर, 1947 को राष्ट्रसंघ की महासभा ने दोतिहाई से भी अधिक के बहुमत से फिलिस्तीन नामक देश को विभाजित कर के दो पृथक फिलिस्तीनों की स्थापना की घोषणा कर दी. जैसे अविभाजित भारत के दो टुकड़े वर्तमान भारत और पाकिस्तान हुए, इसी प्रकार ये दो राष्ट्र भी प्रस्तावित किए गए. एक अरब और दूसरा यहूदी. फिलिस्तीन का यह विभाजन अरब देशों को नहीं भाया. संयुक्त राष्ट्र संघ की घोषणा में यह बात स्पष्ट कर दी गई कि यरूशलम नगर एक अंतर्राष्ट्रीय नगर बना रहेगा और नवघोषित यहूदी और अरब राष्ट्र दोनों आर्थिक दृष्टि से संयुक्त माने जाएंगे. ज्ञातव्य है कि यरूशलम नगर मध्यकाल में ईसाइयों और मुसलमानों के बीच हुए धर्मयुद्धों का मूल कारण था. उस समय यहूदी लोगों का यरूशलम पर कोई अधिकर है अथवा नहीं, यह प्रश्न ही नहीं उठा था.

धर्मयुद्धों से पहले ईसा की सातवीं सदी

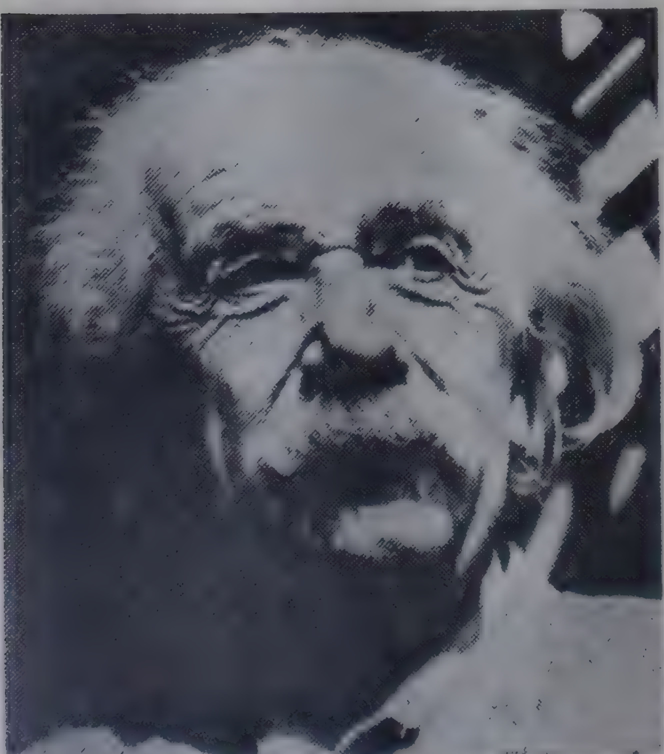
तक यरूशलम ग्रीक बैजंटाइन देश का अंग था और उस से पहले रोमन काल में वह रोमन साम्राज्य का एक प्रांत था. रोमन लोगों द्वारा अधिकार किए जाने से पहले जो भी निवासी थे, वे विभिन्न संप्रदायों के थे. आज भी यरूशलम नगर चार भागों में बंटा हुआ है. ये चार भाग हैं :

● मुसलिमबहुल भाग, जो बैतुल मुकद्दस कहलाता है तथा इसलाम धर्म के अनुसार जहां से पैगंबर मुहम्मद साहब सीधे आसमान की सैर (मेराज) को गए थे.

●.ईसाईबहुल भाग, जहां पर ईसामसीह को सूली पर चढ़ाया गया था.

● यहूदी टेंपल तथा वेलिंग वाल, वह मंदिर जिसे राजा सुलेमान ने ईसा पूर्व दसवीं सदी में निर्मित कराया था और जिस में पणि राजा हिराम ने भारत के पश्चिमी समुद्रतट पर स्थित ओफिर (सोप्पारक) से सोना, हीरेजवाहरात तथा हाथीदांत ले जा कर इस मंदिर के निर्माण के लिए अपने पड़ोसी राजा सुलेमान को उपहार में दिए थे.

● आर्मीनी लोगों की बस्ती. ये अंतर्राष्ट्रीय व्यापारी कैस्पियन सागर तथा काला सागर के मध्यवर्ती भूभाग के वे लोग थे, जो आजकल रूसी गणतंत्र अजरबैजान और आर्मीनिया में रहते हैं. ये अपनी प्राचीन पहचान को बनाए रखने के लिए तुर्की से सन 1923 से ही लोहा ले रहे हैं, और आजकल रूस



के विरुद्ध हिंसक आंदोलन चला रहे हैं.

नवयहूदी राष्ट्र की स्थापना 14 मई, 1948 को तेल अवीव में की गई. यहूदी नेताओं ने इसे परंपरागत फिलिस्तीन नाम न दे कर इसराइल नाम दिया. प्रसिद्ध वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टाइन को इस नवजात राष्ट्र का राष्ट्रपति बनने के लिए आमंत्रित किया गया. आइंस्टाइन ने इसे अस्वीकार कर दिया. वास्तव में, आइंस्टाइन उन लोगों में से था जिन्हें यहूदी धर्म मानव का वह आदि धर्म लगता था जिस से कालांतर में ईसाई और मुसलिम धर्मों का प्रादुर्भाव हुआ. तीनों धर्मों के अनुयायी आज भी मूल यहूदी धर्मपुस्तक ओल्डटेस्टामेंट पर आस्था रखते हैं. तीनों के पैगंबर और नबी एक ही महापुरुष हैं.

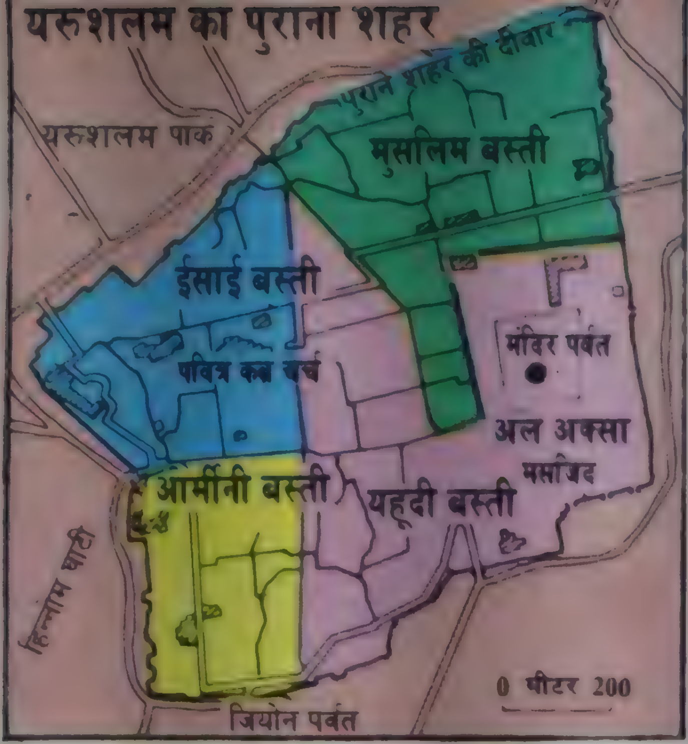
ईसा स्वयं यहूदी थे और हजरत मुहम्मद ने भी मदीना के यहूदियों के एकेश्वरवाद, पवित्र और अपवित्र जीवजंतुओं के नियमों का अनुसरण किया, जिन का मूसा के ला (नीतिशास्त्र) में उल्लेख है.

हिटलर के यहूदी उत्पीड़न अभियान के समय अल्बर्ट आइंस्टाइन ने कहा था, "मैं पृथक यहूदी राष्ट्र की अपेक्षा अरब लोगों के साथ मेलमिलाप से रहना पसंद करूंगा. यहूदीवाद एक दार्शनिक संप्रदाय है, न कि एक विशेष धर्म. यहूदियों का किसी सीमाबद्ध पृथक भौगोलिक इकाई में जाना, वहां अलग धर्मराज्य स्थापित करना और अपनी यहूदी सेना से उस की रक्षा करना, ये तीनों मेरी यहूदीवाद की कल्पना के विरुद्ध हैं." (लेस्ली द्वारा 1938 में लिया गया साक्षात्कार. हिस्ट्री आफ ज्यूज—लंदन, 1987, पृष्ठ 446)

शिशुराष्ट्र की हत्या का प्रयास

14 मई, 1948 को स्वतंत्र इसराइल देश की अस्थायी सरकार के मंत्रिमंडल की घोषणा हुई. 15 मई को सवेरे ही नवजात राष्ट्र पर मिस्र, ट्रांसजार्डन, इराक, सीरिया, लेबनान की सेनाओं ने आक्रमण कर दिया.

प्रसिद्ध वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टाइन : यहूदीवाद एक दार्शनिक संप्रदाय है न कि एक विशेष धर्म.



इसराइल अधिकृत दंगाग्रस्त क्षेत्र

सऊदी अरब ने भी अपनी टुकड़ियां आक्रमणकारी सेनाओं की सहायता के लिए भेज दीं. सोवियत रूस और संयुक्त राज्य अमरीका दोनों ने इस आक्रमण की कड़ी निंदा की. सैनिकों के अतिरिक्त आसपास के देशों के अरब भी प्रतिदिन प्रस्तावित यहूदी राष्ट्र की सीमाओं के भीतर आ कर अपना अड्डा जमाने लगे, ताकि प्रस्तावित सीमाओं के भीतर उन की संख्या यहूदियों की संख्या से अधिक हो जाए.

सन 1948 में प्रस्तावित सीमाओं के भीतर कुल जनसंख्या छः लाख 50 हजार थी. इन में एक लाख 56 हजार गैरयहूदी थे. वे अधिकांश मुसलमान थे. थोड़े से ईसाई भी थे. मुसलमानों में अधिकांश दुरूज लोग थे. कुछ हजार बहाई मुसलिम संप्रदाय के लोग थे. इस धर्म के संस्थापक अहमदी लोगों के धर्माधीश राजकुमार आगा खां हैं. इन का विश्वभर का धर्मकेंद्र इसराइल के उत्तर पश्चिम में स्थित हैफा नगर है.

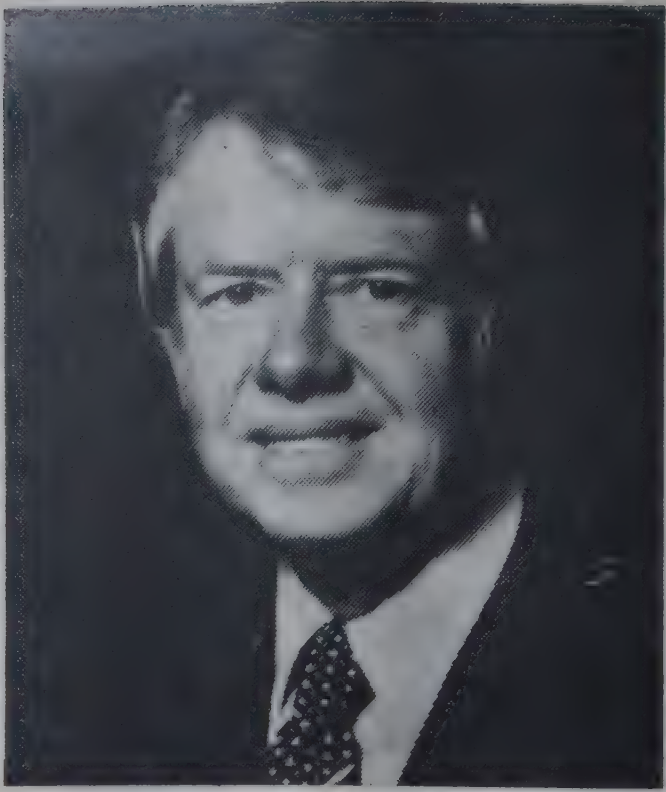
मुझे भी हैफा में बहाई संप्रदाय के मुख्यालय को देखने का अवसर मिला. ये बहाई लोग गैलिली के जिले में दो गांवों में रहते हैं. हैफा नगर के समुद्रतट की ओर एक पूरी पहाड़ी की ढलान पर इन का न्यायालय तथा उद्यान बहुत ही आकर्षक और रमणीक है. लगभग सारे संसार के अहमदी मुसलमान तथा बहाई समाज के विभिन्न मतावलंबी लोग इस तीर्थ की यात्रा पर यहां वर्षभर आते रहते हैं. बहाई लोगों को अपनेअपने धर्मों के पालन की पूर्ण स्वतंत्रता है.

स्वतंत्रता का युद्ध

जन्म के दिन से ही इसराइल को शत्रुओं का सामना करना पड़ा. इसराइल के गैरयहूदियों को भी वहां नागरिकता के वे सभी अधिकार संविधान में दिए गए हैं, जो एक यहूदी को प्राप्त हैं. किंतु समयसमय पर बाहर से आए अरब इसराइल को राजनीतिक स्वतंत्र इकाई नहीं मानते और अन्य अरब राष्ट्रों का अनुसरण करते हुए इसराइल को प्राप्त भूभाग को भी उस का अनधिकृत भूभाग कह कर उस को एक अरब फिलिस्तीन देश बनाने के लिए लड़ाई लड़ते रहते हैं.

इसराइल अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए अब तक पांच नियमित लड़ाइयां लड़ चुका है : पहली स्वतंत्रता की लड़ाई (1948-49), दूसरी सिनाई की लड़ाई (1956), तीसरी छः दिन की लड़ाई (1967), चौथा पश्चात्ताप युद्ध (1969-70) तथा पांचवीं किप्पुर पर्व की लड़ाई (1973). इन नियमित युद्धों के अतिरिक्त, अरब आतंकवादियों के उस पर हिंसक हमले कभी भी बंद नहीं होते. सब से अधिक हमले जो लुकछिप कर निहत्थे नागरिकों पर होते हैं, वे फिलिस्तीनी मुक्ति संगठन द्वारा किए जाते हैं. इस के बावजूद, अपने पहले वर्ष के शासनकाल के बाद ही मई, 1949 में, अपने लोकतंत्र के स्थायित्व का प्रमाण दे कर इसराइल राष्ट्रसंघ का एक सदस्य बन गया. किंतु अरब देशों ने उसे अभी तक मान्यता नहीं दी.

युद्ध जारी रहा और अरब राष्टों ने अपने आक्रमण को और तेज करने तथा इसराइल के अस्तित्व को मिटा देने लिए अगस्त, 1967 में सूडान में एक शिखर सम्मेलन किया. इस में 'तीन नहीं' का सिद्धांत अपनाया गया. ये तीनों नहीं (निषेध) थे: (1) युद्ध विराम नहीं होगा, (2) संधिवार्ता नहीं होगी, (3) इसराइल को एक स्वतंत्र राष्ट्र की मान्यता नहीं दी जाएगी.



तत्कालीन अमरीकी राष्ट्रपति जिमी कार्टर : कैंप डेविड समझौता कराने में अहम भूमिका निभाई.(बाएं) मिस्र के तत्कालीन राष्ट्रपति अनवर सादात : अरब राष्ट्रों के विरोध के बावजूद इसराइल की भूमि पर जा कर संधिवार्त्ता की (दाएं).



अरब राष्ट्रों में इसराइल के सब से विकट और निकट शत्रु थे मिस्र और सीरिया. इन दोनों ने यहूदियों के त्योहार योमेकिप्पुर के दिन 1973 में इसराइल पर दोनों ओर से आक्रमण कर दिया. मिस्र ने स्वेज नहर पार कर के उत्तर की ओर बढ़ना आरंभ किया. उत्तरी सीमा पर सीरिया ने सीमावर्त्ती गोलन पहाड़ियों पर अधिकार कर लिया. मिस्र की सेना में सात लाख सैनिक, 2,500 टैंक और 650 विमान थे. सीरिया की सेना में तीन लाख सैनिक, 2,000 टैंक और 330 विमान थे. इन विशाल सेनाओं का सामना करने के लिए इसराइल के पास केवल 90 हजार सैनिक थे.

युद्ध के प्रथम तीन दिनों में इसराइली सेना दोनों ओर से बढ़ती हुई अरब सेनाओं को आगे बढ़ने से रोकती रही. तीसरे दिन उस ने पहले सीरिया के मोरचे पर और फिर स्वेज नहर के मोरचे पर आक्रमणकारियों के विरुद्ध हमले जारी किए. सोवियत रूस ने मिस्र और सीरिया को विमानों और हथियारों की सहायता भेजनी आरंभ की तो संयुक्त राज्य अमरीका चौंका और उस ने इसराइल को शस्त्रास्त्र भेजना आरंभ कर दिया.

18 दिन के युद्ध के बाद इसराइली सेना ने दक्षिण के मोरचे पर मिस्र को करारी मात दी. काहिरा जाने वाली मुख्य सड़क अपने अधिकार में कर ली और स्वेज नहर का बायां किनारा भी उस के कब्जे में आ गया. उत्तर में उस की सेना दमिस्क की ओर बढ़ती उस नगर से 35 किलोमीटर दूर तक पहुंच गई. युद्ध की भयानकता को देख कर राष्ट्रसंघ की सुरक्षा परिषद ने तुरंत संधिवार्त्ता का अपना प्रस्ताव नं. 338 पारित किया.

मिस्र और इसराइल के मध्य संधिवार्त्ता कराने में अमरीका के राष्ट्रपति जिमी कार्टर ने व्यक्तिगत रुचि ली. मिस्र के राष्ट्रपति अनवर सादात ने भी शेष अरब राष्ट्रों के विरोध के बावजूद स्वयं इसराइल की भूमि में जा कर वहां संधिवार्त्ता की. अंततः मिस्र और इसराइल के मध्य चले आ रहे 30 वर्ष के वैमनस्य का अंत हुआ. इसराइली और मिस्री सेनाओं को मोरचों से हटाने का काम 4 मार्च, 1974 से आरंभ हो कर अमरीका के विदेश सचिव डा. हेनरी किसिंजर की देखरेख में संपन्न हुआ.





दंगा कर रहे फिलिस्तीनी युवक : शांतिपूर्वक रह रहे अरबों को फिलिस्तीनी मुक्ति संगठन ही भड़काता है (ऊपर) फिलिस्तीनी मुक्ति संगठन के प्रमुख अराफात : विश्वभर के कई अन्य आतंकवादी उपसंगठनों के कर्णधार (दाएं)

31 मई, 1974 को सीरिया के साथ भी इसी प्रकार की युद्ध विराम संधि हो गई. संधिवार्त्ता पर हस्ताक्षर करने में लगभग डेढ़ वर्ष और लग गया. अंततः 4 सितंबर, 1975 को डा. किसिंजर के प्रयत्न से जिनेवा में संधि पर हस्ताक्षर किए गए. इसराइल के प्रधान मंत्री मैनाकम बेगिन ने मिस्र, सीरिया से स्थायी शांति के लिए अपील करते हुए अपनी संसद में 21 जून, 1977 को कहा, "हमारा मुख्य उद्देश्य मध्यपूर्व को युद्ध से मुक्त रखना है. मैं जार्डन के शाह हुसैन, सीरिया के राष्ट्रपति असद और मिस्र के राष्ट्राध्यक्ष सादात तीनों से अपील करता हूं कि वे मुझ से मिलें. यह मुलाकात या तो उन की राजधानियों में हो या किसी तटस्थ राष्ट्र की राजधानी में. मुलाकात गुप्त रखी जाए अथवा समाचार माध्यमों में उस का विवरण दिया जाए, यह उन पर निर्भर है. यहूदी और अरब दोनों का इस क्षेत्र में बहुत सा खून बह गया है, हम दोनों इसे एक घिनौना कृत्य मानते हैं. अतः इस का अंत करें."

9 नवंबर को राष्ट्रपति सादात ने इसराइल की चुनौती का उत्तर अपने देश की संसद में इन शब्दों में दिया, "मैं शांति संधि के लिए दुनिया के किसी कोने में, यहां तक कि इसराइल की संसद में भी जाने को तैयार हूं."

शनिवार 19 नवंबर, 1977 को राष्ट्रपति सादात अपनी पत्नी सहित इसराइल के बेन गुरूइन हवाई अड्डे पर तेल अवीव पहुंच गए. उन का इसराइल ने पूर्ण राजसी सम्मान से स्वागत किया. संसद के विशेष अधिवेशन को संबोधित करते हुए राष्ट्रपति सादात ने कहा, "हम परस्पर सहयोग की नीति अपनाएं, यह घोषणा करें कि अब युद्ध न हो, खूनखराबा न हो और हम एकदूसरे को धमकियां न दें." राष्ट्रपति सादात ने इसराइल के यहूदी, ईसाई और मुसलिम तीनों संप्रदायों के पवित्र स्थलों के दर्शन कर के अपनी दो दिन की यात्रा समाप्त की.

16 माह के निरंतर विचारविमर्श के उपरांत सितंबर, 1978 को मिस्र, अमरीका और इसराइल के तीनों सर्वोच्च नेताओं ने 14 दिन तक एकसाथ बैठ कर एक समझौता किया. इस में मध्यपूर्व इसराइल के सभी पड़ोसियों के बीच मैत्री पर विचार भी किया गया. 26 मार्च, 1978 को अमरीका के राष्ट्रपति के मुख्यालय ह्वाइट हाउस (वाशिंगटन डी.सी.) में संधिपत्र पर हस्ताक्षर हुए. इस ऐतिहासिक संधि को कैंप डेविड समझौता नाम मिला. इस से दोनों देशों के बीच के 31 वर्ष के वैमनस्य का अंत हुआ.

इस समझौते की तीन विशेषताएं हैं (1) मिस्र और इसराइल के बीच संबंध पूर्णतः सामान्य होंगे. सिनाई का सारा प्रायद्वीप जिस पर इसराइल ने अधिकार किया है वह मिस्र को वापस कर दिया जाएगा. (2) सिनाई, समरिया और जूडा जिलों तथा गाजा पट्टी में रहने वाले अरबों को स्वशासन के पूरे अधिकार देने के लिए काररवाई की जाएगी. (3) मिस्र की भांति अन्य अरब राष्ट्रों को भी इसराइल से समझौता करने के लिए उच्च स्तर पर प्रयत्न करना चाहिए, ताकि युद्ध से जर्जर हुए मध्यपूर्व के सभी राष्ट्र शांति और सुरक्षा का उपभोग कर सकें.

अमरीका और इसराइल दोनों उक्त समझौते से स्वयं को अब भी जुड़ा मानते हैं. इसराइल ने सिनाई का प्रायद्वीप, स्वेज का अधिकृत किनारा, खनिज तेल के वे तीन क्षेत्र जिन पर उस ने कब्जा कर लिया था, वापस कर दिए. अपने पड़ोसियों से संबंध सुधारने की भी उस ने पूरी कोशिश की. इस के लिए उस ने जार्डन नदी के ऊपर बने पुलों को खोल दिया, ताकि पड़ोसी राज्यों के साथ खुला व्यापार हो सके. लेबनान के साथ अनाक्रमण संधि संपन्न की. फलतः गृहयुद्ध में घायल और बीमार ईसाई, अरब और द्रूज लेबनानी लोग उपचार के लिए इसराइल के हस्पतालों में आने लगे. गाजा पट्टी और पश्चिमी किनारे के जूडा, समरिया और रामअल्लाह के झोपड़ों में रहने वाले अरबों के लिए आवास गृह, हस्पताल और स्कूल खोले.

मुझे इस क्षेत्र में क्रियातगट, बीरशब्बा और गाजा पट्टी विद्यालयों में जाने की पूरी सुविधा दी गई. इस यात्रा में मेरे साथ गई एक इसराइली महिला अधिकारी मदाम सिम्खा ने बताया, "राष्ट्रसंघ में शिकायत की गई थी कि इस तथाकथित इसराइल अधिकृत क्षेत्र में बसे लोगों को स्वास्थ्य के लिए हानिकर स्थानों में झुग्गीझोंपड़ियों में रखा जा रहा है. इस बात की जांच के लिए तीन सदस्यों को यहां भेजा गया. उन में से दो ऐसे देशों के थे, जिन से इसराइल के राजनयिक संबंध नहीं हैं. उन्होंने अपनी जो आख्या दी उस पर अब फिर यह दोषारोपण किया जा रहा है कि इसराइल इस अधिकृत क्षेत्र में पक्के बहुमंजिले मकान बना रहा है."

वास्तव में इस अधिकृत क्षेत्र में जो पहले सूखा, रेतीला और वीरान था, आज हरेभरे बाग हैं. दिल्ली विकास प्राधिकरण ने जिस प्रकार का भवन निर्माण कार्य जनकपुरी और विकासपुरी में किया है, उसी के समान क्रियातगट की झुग्गीझोंपड़ियों को 80,000 की आबादी के लिए एक आत्मनिर्भर किब्बुत्स (सहकारी गांव) बना दिया गया है. सभी मकान, सड़कें और नालियां पक्की हैं. बूंदबूंद कर के पौधों की जड़ों के पोरों में इंजेक्शन से पानी दिया जाता है. यह विधि 'ट्यूबोपोनिक्स' कहलाती है.

रेगिस्तान में सदा दुर्लभ इस जीवन रस पानी को गरम हवाएं भाप बना कर उड़ा न ले जाएं, इस के लिए हर पौधे के थाले को निर्वात कर के ऊपर से प्लास्टिक झिल्ली बिछा दी जाती है. उस पर कंकड़पत्थर इस तरह बिछे रहते हैं कि समुद्र की ओर से बहती हवा की नमी रात में ओस बन कर जम जाए और इलेक्ट्रानिक प्रक्रिया से पेड़ की जड़ों में पहुंच जाए. गाजा के इस रेगिस्तान में केवल एक सेंटीमीटर वर्षा होती है.

किब्बुत्स और मोशब दो भिन्न प्रकार की सहकारी संस्थाएं हैं. एक में गृहस्थ अपने

(शेष पृष्ठ 218 पर)

गतांक से आगे

कहानी ● बेला मुखर्जी

अनुपमा

अनुपमा सोच कर आई थी कि छोटे से परिवार की बहू बन कर घर को सुखों की फुलवारी बना देगी. सब की सेवा करेगी, सब से स्नेह पाएगी. यहां आ कर तो सब कुछ उलटा हो गया था. एक अछूत की तरह अपने कमरे में बंदिनी सी रहती थी. सासससुर बोलते ही नहीं थे. आशीर्वाद तक नहीं दिया था. उसे भी साहस नहीं होता था कि उन के सामने जाए.

सौरभ ही उस का एकमात्र सहारा था. पर उसे भी सुधीर ने इतना काम सौंप दिया था कि वह देर रात गए तक फाइलों में ही उलझा रहता था. नाश्ता कर के सुबह 9 बजे कोठी से निकलता था तो रात 8 बजे से पहले



नहीं लौट पाता था. रात को फिर फाइलें ले कर बैठ जाता था. जब बिस्तर पर आता था तब तक थक कर निढाल सा हो जाता था.

पर उसे अनुपमा का पूरा ध्यान रहता, खूब प्यार करता, और समझाता था कि मन खराब न करो, समय आने पर सब ठीक हो जाएगा.

पर सौरभ के घर से बाहर पैर रखते ही उसे भय और आतंक घेर लेते थे. कमरे से बाहर कदम रखने का साहस नहीं होता था. कभीकभी मन करता था कि भाग जाए यहां से. अभावग्रस्त पर शांतिपूर्ण छोटे से मायके में जा कर चैन से हाथपैर फैला कर अपनी टूटीफूटी चारपाई पर सो जाए. पर सौरभ के प्रेम ने उसे ऐसे बांध लिया था कि वह हिलडुल भी नहीं सकती थी.

रामू भी उसे बहुत स्नेह करता था. चायनाश्ता, खाना सब कमरे में ले आता था. वह अकसर हिम्मत बंधाता, "बहूरानी, मेरे रहते तुम्हें कोई कष्ट नहीं होगा. बस, तुम डरना नहीं इन लोगों से. अपने अधिकार ले कर रहना."

एक और थी उस की हमदर्द ननद प्रीति. अवाक हो जाती थी यह सोच कर कि आरती जैसी मां की छाया में पल कर भी दोनों भाईबहन इतने खुले स्वभाव के कैसे हो गए. अंगरेजी में एम.ए. कर के प्रीति पत्रकारिता पढ़ रही थी. बहुत ही अल्हड़ और हंसमुख थी. जबतब चली आती थी कमरे में हंसती हुई और हंसीमजाक कर के चली जाती थी.

लगातर चार दिन प्रीति उस के कमरे में नहीं आई थी. पांचवें दिन आई तो सदा चुप रहने वाली अनुपमा ही पहले बोल पड़ी, "आप चार दिन से कहां थीं?"

प्रीति ने आंखें फाड़ कर अनुपमा को देखा.

"हैं, तुम बोलना भी जानती हो?"

पहली बार अनुपमा हंस पड़ी, "जानती हूं."

"तो मेरी बातों का जवाब क्यों नहीं देतीं?"

"घर की बहू जवाब दे, यह भारतीय परंपरा नहीं है. एक बात कहूं?"

"अरे,आज तुम ही बोलोगी क्या?"

"नहीं, वीजी, बस, एक बात."

"बोलो..."

"मेरा बहू बन कर इस घर में आना बहुत बुरा लगा है आप सब को?"

"बुरा नहीं तो क्या अच्छा लगेगा? बहू बन कर चली आईं, खाली हाथ हिलाती हुई. न तो पहले कुछ लाई और न ही पीछे ही कुछ लाने की आशा है."

अनुपमा का मुख मलिन हो गया.

"हम बहुत गरीब हैं, वीजी. फिर आप के घर में क्या कमी है?"

"न हो कमी, दहेज पाने का मजा ही कुछ और है. बहू के घर से आया हर माल ससुराल का मान बढ़ाता है. जानती हो, जूली से ब्याह होता भैया का, तो वह कितना दहेज लाती? मेरे और मां के लिए हीरों का हार बनवाया था उन्होंने, गया हाथ से. तुम तो बस हाथपैर ले कर चली आईं."

"ठीक है, फिर आप मुझ से इतना प्यार क्यों करती हैं?"

"क्या कहा?"

"हां, इस घर में मुझ को प्यार आप से ही मिला है."

"तुम्हारा सिर" प्रीति मुसकराती हुई कमरे से तेजी से निकलती चली गई.

अपनी संपन्न ससुराल में अनुपमा खुद को बंदिनी सी महसूस करने लगी, लेकिन एक दिन उस के ससुर को अपनी भूल का एहसास हुआ तो अनुपमा ने भी 'बहूरानी' का मान पा ही लिया.



हताश हो गई अनुपमा. महीना गुजर [गय]ा था, पर उस परिवार ने उस को वधू के [रूप] में नहीं स्वीकार किया था. क्या इसी [प्रक]ार उन दो कमरों में बंदिनी बन कर [क]टेगा उस का सारा जीवन. सौरभ जिस [दि]न जल्दी लौटता था साथ घूमने जाने का [आ]ग्रह करता था. पर जाने किस संकोच से [उ]स के पैर नहीं उठते थे. वह ढेरों [पत्र]पत्रिकाएं ला कर देता था.

पर अनुपमा कामकाजी लड़की थी. [ट्य]ूशनें तो थीं ही, घर पर भी सारा काम [क]रती थी क्योंकि मां महिला समाज में [भ]लाई करने जाती थीं. यहां दिनरात [बै]ठबैठ कर शरीर दुखता था उस का. अपने [क]क्ष को ही फिर से झाड़ती पोंछती नौकर के [सा]फ कर जाने के बाद. फिर भी पहाड़ सा [दि]न मानो कटता ही नहीं था.

"लेकिन मैं तो दूध पीता नहीं." सुधीर ने अनुपमा द्वारा दूध का गिलास देने पर कहा.

सोच रही थी कुछ बुनाईकढ़ाई करेगी. छुट्टी का दिन था. सुबह से मूसलाधार पानी पड़ रहा था. दिन को भी अंधेरा सा लग रहा था. रामू चाय लाया तो बोला, "आज घर में कोहराम मचा है, बहूरानी."

वह घबरा गई, "क्या बात है, बाबा? किसी की तबियत खराब है?"

"इस से भी बुरा है. रसोइया नहीं आया आज."

अनुपमा को कुछ समझ में नहीं आया, "तो क्या हुआ?"

"होटल से इस बरसात में खाना लाने कौन जाएगा?"

"होटल से खाना क्यों आएगा?"

"अरे, बहूरानी इस घर का चलन यही है. मालकिन हैं, प्रीति बेटी है, पर उन लोगों को यह नहीं मालूम कि रसोई की खिड़की किस ओर खुलती है."

"ऐसा क्यों, बाबा?"

"बड़े घर की बहूबेटियां रसोई में जाएं, तो रूपरंग न फीका पड़ जाएगा. क्लब में चमकेंगी कैसे?"

"बाबा,...मैं...मैं...चलूं रसोई में?"

"तुम इन लोगों का खाना बना लोगी?"

"घर पर तो बनाती थी, सादा खाना जैसा आता है."

"अच्छा तो चलो."

बहुत दिनों बाद करने को कुछ पाया अनुपमा ने. वह खुशी से थिरक उठी. एक बजे भी पानी कम न हुआ. आरती उलझन में पड़ गई, "रामू, डबलरोटी, मक्खन लगा दो मेज पर. ऐसे में होटल कौन जाएगा?"

"खाना लगा दिया है, मालकिन."

मेज पर बैठते ही सुधीर चौंके "किस होटल का खाना है, इतनी बढ़िया सुगंध?"

अनुपमा रायते का डोंगा रख कर चुप खड़ी रही. रामू ही बोला, "बहूरानी ने बनाया है."

एकसाथ सब चौंके. सौरभ भी उसे घूरने लगा. अनुपमा को किसी ने बैठने तक को नहीं कहा. वह खड़ी ही रही. सुधीर ने एक चम्मच पालक पड़ी मूंग की दाल मुंह में रखी और तुरंत उन्हें मां याद आ गई. ठीक वैसा ही स्वाद कितने दिनों बाद. मां सदा डरीडरी रही थीं, पर घर के उस नियम का उल्लंघन कर के आधा खाना अपने हाथों से बनाती थीं.

उन्होंने अनुपमा के चेहरे को पहली बार ध्यान से देखा स्निग्ध शांत मुख. सोचा, 'सुंदर है संध्यादीप की लौ जैसी. मां की तरह ही गरीब घर से आई है. पर उन की तरह मजबूरी की छाप नहीं है मुख पर. प्रभावशाली व्यक्तित्व है. आत्मविश्वास है और नम्रता लिए हुए दृढ़ता है.'

उन्होंने दूसरा डोंगा देखा. मूंग की दा[illegible] की मंगौड़ी लौकी के साथ. अरबी के पत्तों [illegible] पकौड़े, सूखे आलू और खीरे का रायत[illegible] करारी सिकी रोटियां, नमकीन चावल. व[illegible] धीरेधीरे खाते रहे. मां की स्मृति स्पष्[illegible] होती रही. फिर बरबस मुंह से निकल पड़ा[illegible] "तुम भी बैठो, बहू."

सब के साथ स्वयं अनुपमा भी चौं[illegible] उठी. आरती ने मुंह बनाया. वह खा ही इ[illegible] ढंग से रही थीं जैसे घासपात खिलाया ज[illegible] रहा हो. सुधीर ने दोबारा आग्रह किया[illegible] "बहू, आज से तुम हमारे साथ ही खाने बैठ[illegible] करो. और हां, इस रसोइए बिरजू पर खा[illegible] का पूरा भार न छोड़ा करो. दालसब्जी तु[illegible] बनाया करो."

सौरभ का मुख खिल उठा, "खान[illegible] पसंद आया आप को?"

सुधीर ने गहरी सांस ली, "मां की या[illegible] आ गई."

आरती ने भौंहें चढ़ाईं, "यह खाना है[illegible] न स्वाद, न गंध."

अनुपमा का मुख मलिन हो गया. प्रीति[illegible] रायता पीने लगी. "अच्छा है, मा[illegible] बिरजू का घीतेल से तर खाना हम को मौत [illegible] रास्ते पर जल्दीजल्दी ले जा रहा था."

"प्रीति, बड़ी जबान चल गई है तेरी,[illegible] आरती ने फटकारा.

"स्वादगंध तो है ही नहीं, मां. फिर भ[illegible] जाने कैसे दो रोटियां ज्यादा तुम्हारे पेट [illegible] चली गईं."

सौरभ खिलखिला कर हंस दिया[illegible] आरती उठ कर चली गई. सुधीर भी उ[illegible] गए. उन के अधरों पर मृदुहास देखा सौर[illegible] ने.

"लो, पिताजी का मैदान तो जी[illegible] लिया. अब मां को जीतो तो जानें. पर वह[illegible] कांटे बहुत हैं."

"मैं हिसाब से बाहर हूं क्या?" प्रीति [illegible] टोका.

"तुम्हें तो पहले ही जीत चुकी, नन[illegible] जी," अनुपमा ने बड़े आत्मविश्वास से कह[illegible]

र खड़ा रामू होंठों ही होंठों में मुसकरा रहा ा.

सुधीर यादों में खोए थे. दादाजी ने हा था, "मां का दुख तुम दूर करना बेटे" न्होंने बड़ी वेदना के साथ आगे कहा था, गरीब की बेटी को आदर के साथ डोली में ठा कर लाया था. पर घर में उस के अनादर ा दूर न कर सका.

सुधीर ने वचन दिया था, "मैं मां का ख दूर करूंगा, दादाजी."

पर सुधीर कर न सके थे. दादी तो ास थीं. पर उन की पत्नी आरती ने बहू हो र भी मां को अवहेलना और अपमान के सवा कुछ भी नहीं दिया था. वह मां की केली संतान थे. पर उन पर भी दादी का धिकार था. मां बड़ी कातरता से कहतीं. आज मेरे पास सो जा, मुन्ना. अच्छीअच्छी हानियां सुनाऊंगी."

पर दादी उन्हें जबरदस्ती खींच कर ाया के साथ सुलाती थीं. पिता का देहांत न के बचपन में ही हो गया था. बेचारी धवा मां को आरती नौकरचाकरों के ामने भी लांछित करती रही और वह ुपचाप देखते रहे.

सुधीर ने लंबी सांस खींची. समय बदल गया था. अब वह भेदभाव मिटता जा हा था. आरती बहुत जबरदस्त महिला है, दी जैसी. पर बेटाबेटी दोनों उन से डरना ा दूर, उन की खिल्ली उड़ाते थे. पिता में तना साहस नहीं था कि पुत्री के सम्मान की क्षा के लिए मां से झगड़ा मोल लें. अतः वह स घर में चिर उपेक्षिता ही रह गईं, मरते म तक.

दादी अपनी सहेली की पोती आरती ा उन की बहू बना कर ले आईं और उस को मझा गईं कि सास दीनहीन परिवार की क ऐसी सेविका हैं, जो केवल उस के पति ा जन्म देने के लिए ही इस परिवार में लाई ई थीं. मां का बेटे पर अधिकार ही क्या था. ारती ने भी बड़ा कष्ट दिया था उन को. पड़ेचीथड़े हो जाते थे, तब नए मिलते थे.



प्यार

तुम इस तरह मुझे भुला न पाओगे
जब भी देखोगे खुद को आईने में
अपनी आंखों में मेरी तसवीर पाओगे.

—रईस अख्तर

बीमार पड़ने पर दवाई तक नहीं. यहां तक कि उन को भी मां के पास नहीं फटकने देती थीं. जबकि उन के जीवन का सब से बड़ा कर्तव्य था मां की सेवा करना.

अब सुधीर की बड़ी इच्छा हो रही थी मां के मन की व्यथा जानने के लिए. पर बड़ी देर हो गई थी. मां हमेशा के लिए मुंह मोड़ गई थीं. मां के पास कुछ भी नहीं था. बस, 10 तोले का चंपाकली हार दादाजी ने मुंह दिखाई दिया था. वही पड़ा रहता था गले में. उन के गुलाबी रंग के सामने सोना भी फीका पड़ जाता था. जब वह छोटे थे, तब मां अकसर कहती थीं, "मुन्ना, यह हार मैं तेरी बहू को दूंगी."

पर बहू आरती के ढंग देख कर उन का मन कांप उठता था. हार क्या देतीं.

मृत्यु के कुछ दिन पहले एकांत पा कर वह हार सुधीर को दिया था मां ने, "मुन्ना, यह तेरे दादाजी का अशीर्वाद है. बड़ा पवित्र है, तू जिस को इस के योग्य समझे, उस को दे देना."

अब भी वह हार अलमारी में पड़ा था. उस के योग्य उन्हें कोई नहीं मिली थी.

सुधीर को रात भर नींद नहीं आई थी.

उन का कमरा आरती के कमरे से बहुत दूर था. छटपटा कर रात बीती. सुबह थके से ऊपर छत पर गए.

अनुपमा नहाधो कर सूर्योदय देख रही थी, 'मां भी ठीक इसी प्रकार यहीं खड़ी हो कर सूर्योदय देखती थीं. इसी प्रकार पीठ पर फैले गीले बालों के छोर से पानी की बूंदे मोती सी टपकती रहती थीं.'

सुधीर दबे पैरों नीचे उतर आए.

"पिताजी!"

चौंक कर दृष्टि उठाई सुधीर ने. लाल किनारी की गुलाबी तांत की साड़ी, सिर पर पल्ला, माथे पर सिंदूर की बिंदी, हाथ में दूध का गिलास लिए अनुपमा सामने खड़ी कह रही थी, "दूध पी लीजिए, पिताजी."

"पर...पर...मैं तो दूध नहीं पीता."

अनुपमा के नम्र स्वर में स्नेह की मिठास थी, "इतनी चायकाफी ठीक नहीं, आज से रोज दूध पिएंगे आप."

उन्होंने बिना कुछ कहे गिलास खाली कर दिया.

"इतना काम करते हैं, दूध जरूरी है. रोज पीना पड़ेगा आप को." अनुपमा गिलास उठा कर चलने लगी.

"जरा सुनो, बेटी." सुधीर ने टोक दिया अनुपमा मुड़ी, "जी..."

सुधीर ने अलमारी से मां वाला हार निकाला. हथेली पर मां के शरीर की ममता भरी हरारत अनुभव की, 'अनुपमा ही योग्य अधिकारिणी है इस की, इस विचार के आते ही बोले, "मैं ने अभी तक कुछ दिया नहीं है तुम्हें?"

अनुपमा हंस कर बोली, "दिया है, पिताजी."

"क्या?" उन्हें आश्चर्य हुआ.

"अपना स्नेह."

सुधीर का मन भर उठा तृप्ति से, "यह भी लो मेरा आशीर्वाद. मां के गले का हार."

उन्होंने हार अनुपमा के गले में डाल दिया. अनुपमा ने झुक कर उन के पांव छुए, उठी तो सुधीर को लगा, "मां के गले में भी यह हार ठीक इसी प्रकार चमचमाता था."



अटैची बंद करने की कला

लेख • अमिताभ स.

यात्रा पर जाने से पूर्व अटैची में सही तरीके से सामान रखना भी एक कला है. लेकिन साधारणतः देखा या है कि अधिकतर गृहिणियां अटैची बंद रने का सही तरीका नहीं जानतीं. अटैची ऐसे बंद करना चाहिए कि जब वह खोली ाए तो वस्त्रों पर कम से कम सिलवटें मिलें. गर मामूली सावधानियां बरती जाएं तो लवटों से बचा जा सकता है. परिणाम-वरूप बारबार इस्तिरी करने के झंझट से ी छुटकारा मिल जाता है.

आप यात्रा पर जा रही हैं तो यकीनन आप अधिक से अधिक सामान अपने साथ ले जाना चाहेंगी. लेकिन ऐसा तभी संभव है जब आप को अटैची में ढंग से सामान रखने की कला का भान हो.



वास्तविक क्रीज के अनुसार कपड़ों को तह लगा कर रखने से सिलवटें कम पड़ेंगी.

सब से पहले अटैची में डाले जाने वाले सभी कपड़ों व अन्य वस्तुओं को एक पलंग या मेज पर रख लीजिए. सभी कपड़ों की जेबें खाली कर लें तथा जिपें व बटन बंद कर दें. परंतु जैकेट अथवा कोट के बटन बंद न करें क्योंकि कोट की अगली दोनों तरफें एकदूसरे पर रखी जाती हैं. ध्यान रहे, जिन वस्त्रों में सिलवटें पड़ने की ज्यादा संभावनाएं हों उन्हें ड्राइक्लीन वाले लिफाफे में ही डाल कर अटैची में रखना चाहिए.

पैंट, कमीज, पाजामा, साड़ी वगैरह को उस की वास्तविक क्रीज के अनुसार ही तह लगा कर अटैची में लंबाई में रखने की सलाह दी जाती है. यदि वस्त्रों की लंबाई अधिक हो तो उन्हें अटैची के चौड़ाई वाले किनारों से बाहर लटकने दीजिए. पहले वस्त्र की ऊपरी तरफ (कमीज के कंधों वाली और पैंट की कमर वाली) बाईं ओर तथा दूसरे वस्त्र की दाईं ओर रखते जाएं. फिर इसी क्रम में सभी कपड़ों को लगाएं.

इस के बाद उलटा कंधों से उठा कर जैकेट या कोट को अटैची में लिटा दीजिए. उल्लेखनीय है कि कोट के बटन और काज वाले हिस्से एकदूसरे पर गिरने चाहिए. गरदन के हिस्से को अटैची की चूलों (कब्जों) की दिशा में रखें. कोट के बीचोबीच जुराबें, पैंटी, अंडरवियर, रात की पोशाकें आदि रख सकते हैं. फिर बाजुओं को विपरीत दिशा में मोड़ कर तह लगा दीजिए.

अटैची की लंबाई की तरफ से बाहर लटकते कोट के निचले हिस्से को बीचोबीच रखे वस्त्रों पर मोड़ दें. ऐसा करने से किसी कपड़े की तह खराब नहीं होगी. उस के बाद पैंट, कमीज व अन्य पोशाकों को दोनों ओर से अंदर मोड़ कर रखें. बारीबारी तह लगाते वक्त क्रीज ठीक करते रहें.

अब अटैची में कपड़े रखने के पश्चात अगर कुछ कपड़े बच जाएं तो क्या करें? कपड़ों के स्थान में परिवर्तन करना उचित नहीं है. ऐसा करने की बजाए, शेष वस्त्रों (जैसे पैंटी, अंडरवीयर, रात की पोशाक वगैरह) को जहांतहां बचीखुची जगहों पर रख दीजिए. कुछ वस्त्रों को गोलमटोल कर के रखने में भी कोई हर्ज नहीं है.

हेयरड्रायर, जूतेसैंडल जैसी अपेक्षाकृत भारी वस्तुओं को अटैची के ढक्कन वाली तरफ रखें, ताकि अटैची के हिलनेडुलने के साथसाथ वे भी इधरउधर न खिसक पाएं.

और अंत में, साबुन, तेल, क्रीम और अन्य सौंदर्य प्रसाधनों को रखें. ध्यान रहे, इन के रिसने या टपकने का खतरा बना रहता है. अतः इन्हें पोलीथीन के बैग में डाल कर रख सकते हैं. अतिरिक्त सुरक्षा के लिए सारी सामग्री को तौलिए में लपेट कर रखें.वैसे सौंदर्य प्रसाधनों को किसी अलग डब्बे या वेनिटीबाक्स में डाल कर हाथ में ही उठाना ठीक रहता है. साथ ही, सूईधागा, मोमबत्ती, दियासलाई, जरूरी दवाइयां आदि भी अटैची की जेबों में रखनी चाहिए.

पैकिंग करने के बाद भरी हुई अटैची को खोलते समय यह ध्यान रखें कि अटैची कभी उलटी न खुले. वैसे, आजकल भारतीय बाजारों में एक प्रसिद्ध कंपनी की विशेष अटैची उपलब्ध है, जो उलटी होने की स्थिति में खुलती ही नहीं है. लेकिन इस अतिरिक्त सुविधा के लिए आप को साधारण अटैचियों की अपेक्षा काफी अधिक कीमत चुकानी पड़ेगी. ●



मेरी बिल्ली

पप्पू देखो प्यारी बिल्ली
मैं ने पाली काली बिल्ली.
जब मैं इसे डांटती, चुप हो जाती यह बिल्ली
जब मैं चुप होती तो कुछ कहती यह बिल्ली
म्याउंम्याउं की रट लगा कर.
सब से हरदम कुछ मांगती यह बिल्ली
अपने दो बच्चों को हरदम
साथसाथ घुमाती यह बिल्ली
किसी एक को भी गर मैं उठा लूं तो
फौरन फूंफूं कर गुर्राती यह बिल्ली
देख कर बिस्कुट का टुकड़ा फिर
झट से चुप हो जाती मेरी बिल्ली.

—शगुफ्ता जबीं

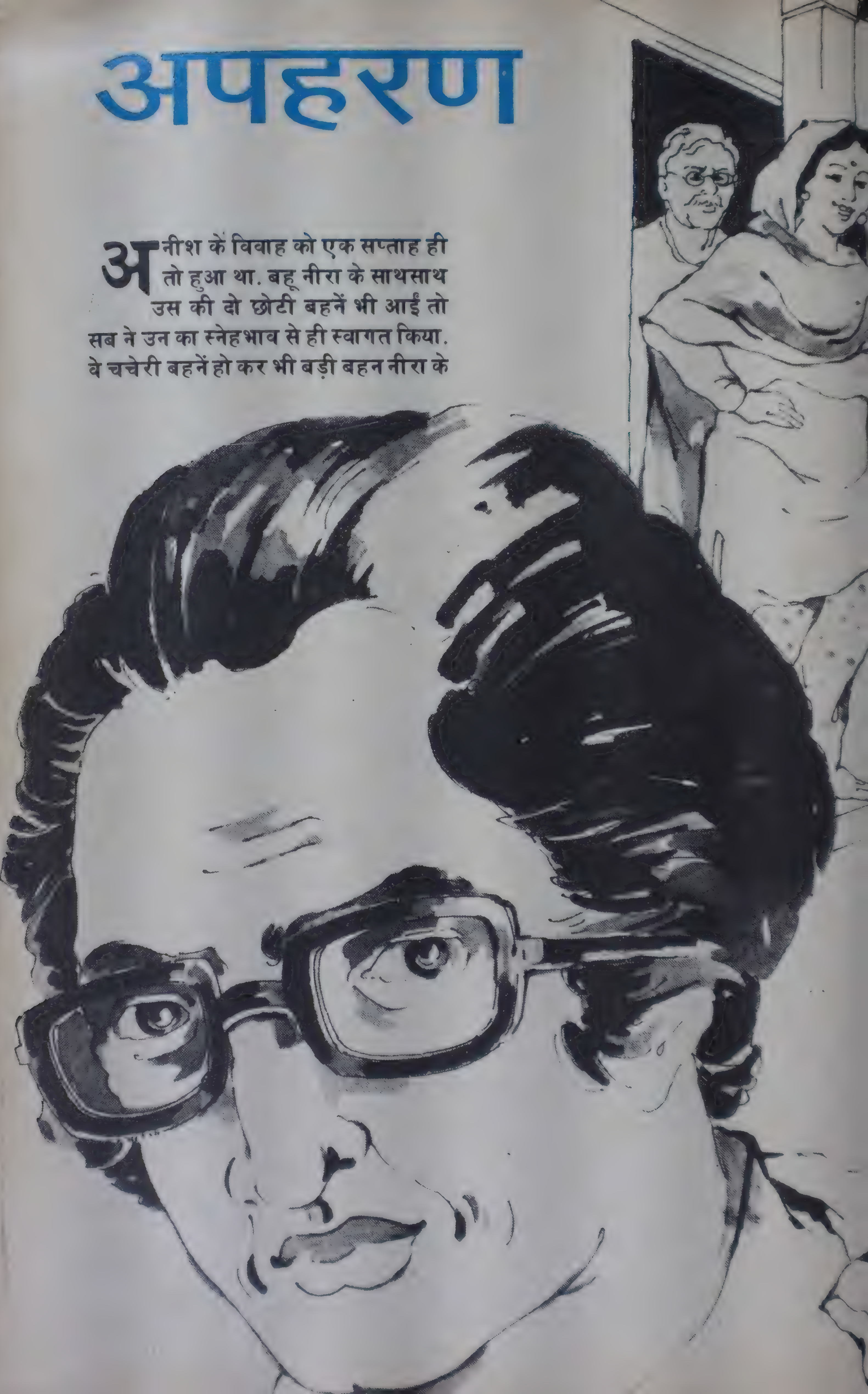
यहां उड़ रहे पांच पक्षियों में दो पक्षी बिलकुल एक जैसे हैं. आप उनके नंबर बताओ.



उत्तर:- नंबर एक और नंबर पांच बिलकुल एक जैसे हैं

अपहरण

अनीश के विवाह को एक सप्ताह ही तो हुआ था. बहू नीरा के साथसाथ उस की दो छोटी बहनें भी आईं तो सब ने उन का स्नेहभाव से ही स्वागत किया. वे चचेरी बहनें हो कर भी बड़ी बहन नीरा के



पीछेपीछे लगी रहतीं. हर समय उस का काम करतीं, विभा व शुभा को देख कर अनीश के घर के लोग नीरा के परिवार के अपनेपन को देख कर चकित भी थे और हर्षित भी.

अनीश और उस के भाईबहनों को सालियों से छेड़छाड़ का अधिकार तो परंपरा से प्राप्त था. कोई कहता, "साली तो आधी घरवाली होती है."

"और जब एक छोड़ दोदो सालियां हों तो?"

कहानी • नारायणी

नीरा का विवाह अनीश के साथ हो गया, लेकिन उस के अपाहिज होने की बात का पता बहुत बाद में चला. फिर भी सब ने उसे हाथोहाथ लिया. कुछ दिन बाद उसे मायके ले जाया गया. जब वहां से तलाकनामा आया तो अनीश का माथा ठनका.



नीरा के साथ चचेरी बहनों के अपनेपन को देख कर अनीश के परिवार के लोग चकित हो रहे थे.

"तब तो वही संभाल लेंगी, उन की जीजी की जरूरत ही नहीं."

सरल हास्यविनोद पर ठहाके लगाए जाते, यद्यपि नीरा अधिकतर चुप, गंभीर, सोचती सी रहती.

"घर की याद आ रही होगी."

"बिछड़ने का दुख... किसीकिसी को ज्यादा ही सताता है. कोई तो जीवन में पूर्णतः रम जाता है." घर की प्रौढ़ाएं कहतीं.

शुभा और विभा बहन के स्नानघर में भी जाने पर कपड़े ले कर अंदर पहुंच जातीं. एक साड़ी ठीक कर रही होती तो दूसरी पहने वस्त्रों को खंगाल कर ले आती. उस के बाल कटे हुए थे. उन्हें भी वे ही दोनों संवारतीं. क्रीमपाउडर लगातीं. सिंदूर की बिंदी व नेलपालिश लगातीं. यहां तक कि नीरा को खाना भी दोनों चम्मच ले कर खिलाने बैठ जातीं.

बराबर की ननदें कुढ़ने लगीं. पहलेपहले बहू आई है. उन के बड़े भाई की विवाहिता, उन की भाभी आई है. आखिर, उन्हें भी तो कुछ करने का शौक है.

चचेरीफुफेरी ननदें तो खीज ही उठीं, "ऊंह, क्या हमारे अपने भाई नहीं हैं? अनीश भैया की सालियों जैसा महत्त्व अपने घर तो सालियों को दिया नहीं जाएगा."

शुभा व विभा ने सुना, समझा और कहा, "आप लोग सेवा कीजिएगा न हमेशा ही. हमें अब कौन सा साथ रहना है. चार दिन को आए हैं इतनी दूर से. बारबार कहां आना हो पाएगा."

किंतु समस्या का इस से समाधान नहीं हुआ. रिश्ते की औरतों ने फब्तियां कसनी शुरू कर दीं, "वाह, ऐसा भी क्या लाड़. अच्छी, पूरी उम्र की बहू है. 24-25 साल से कम तो होगी नहीं. भाव ऐसा लगा रहे हैं कि पांच बरस की गुड़िया ही हो."

"ठीक कहती हो, चाची. ऐसा लाड़ तो हम ने भी नहीं देखा. दोदो बहनें भी हमेशा साथ नहीं रहीं. एक ऊदपुर तो दूसरी सूदपुर रहती रही. नीरा कानपुर में रही, तो चाचा पुणे में रहे. ये तो पांचछः बरस पहले, जब से इस की मां नहीं रही, घर में अकेली हो गई थी तो पुणे भेज दी गई. दूरदराज रहते हुए भी आदमी का प्यार बना रहे तो बहुत. पर यह कहना कि जीजी तो मेरे ही हाथ से खाती हैं या मैं ही जीजी का काम करती हूं. इस पर कौन विश्वास करेगा?"

असल में चाची इसलिए नाराज थीं कि उन की बताई हुई लड़की जेठानी को पसंद नहीं आई. चाचा के अफसर की बेटी थी. थोड़ी सांवली ही सही, थी तो अफसर की बेटी. बहू बन कर आ गई होती तो चाचा का रोब भी रहता और अंदर की बात कि चाचा के ऊपर आता गबन का मामला भी दब जाता. रुतबा बढ़ने की भी संभावना थी.

मौसी मंगला ने इलाहाबाद में ही जो लड़की देखी थी, वह सुंदर भी थी, सुशिक्षित भी. पर वहां दहेज मिलना तो दूर, बरात भी अपने खर्च पर ही ले जानी होती. विमलजी भले ही उदार मन, सक्षम और अच्छे पद पर रहे हों, इतना दबने को तैयार न थे.

इसी तरह लगभग सभी संबंधियों ने अपनेअपने प्रतियोगी भेजे थे. किंतु विमलजी की पत्नी कमला को जो लड़की पसंद आई, वह नीरा ही थी. गोरा रंग और सुंदर नैननक्श. उस ने एम. ए., बी.एड. भी कर रखा था. अनीश पढ़ने में तेज नहीं था. अच्छे पद की आशा भी नहीं थी और व्यवसाय का इच्छुक था. नीरा तीसरी और आखिरी संतान थी, जो कुछ नकद उस के पिता के पास था, वह अनीश को विवाह में दे दिया था.

वर्तमान परंपरानुसार अनीश के हनीमून का प्रबंध भी किया गया था. कशमीर और दार्जिलिंग भेजने से कमलाजी डर रही थीं. अतः मसूरी भेजने की योजना थी. पर सुना था कि नीरा ने गोआ जाने का अनुरोध किया था. बंबई में दो दिन किसी संबंधी के घर रुकना भी था. वहीं से शुभा व विभा को पुणे की गाड़ी पर बैठना था. बंबई



BPL · SANYO
संगीत रचयिता
बीपीएल क्वालिटी • सॅनियो टेक्नॉलॉजी • व्यापक श्रेणी
अब आकर्षक दामों में उपलब्ध.
क्यूबिक्स
मिनि एवं स्लिम
M7740K
M7010K
M1760H
स्टीरियो रेडियो/कैसेट रिकार्डर्स
स्टीरियो डबल कैसेट रिकार्डर
C1K
M9903-2H
MW200K
मोनो रेडियो/कैसेट रिकार्डर्स
कैसेट रिकार्डर्स
M2429-2H
M8300-2H
M2800-2H
C1004
C1002
BPL-AUDIO
Always the best!
BPL.3229 HIN



से नीरा व अनीश के गोआ जाने की तैयारी हुई.

अनीश के घर विवाह समारोह में आए संबंधी एकएक कर के चले गए थे. ताई और मौसी अभी रुकी हुई थीं. अभी तक वे लोग लेनदेन, हिसाबकिताब निबटाने और विदाई आदि करने में व्यस्त रही थीं. शुभा व विभा नीरा को इस तरह घेरे रहीं कि उन्हें दो बातें करने का समय भी नहीं मिला था. बहू के जाने पर घर में खालीपन सा छा गया.

''चलो, सब काम ठीकठाक निबट गए. अब 10 दिन बाद बहू आ जाएगी और घर संभाल लेगी. तब तुम आराम करना,'' जेठानी कह रही थी.

विमला के कुछ उत्तर देने से पूर्व ही बड़ी बेटी ने कहा, ''हां, अम्मां, ठीक तो कह

''हां, अम्मां. ठीक तो कह रही हैं ताई, अब यह नहीं कि लाड़ में बहू को सिर पर चढ़ा लो.'' बड़ी बेटी ने अम्मां से कहा.

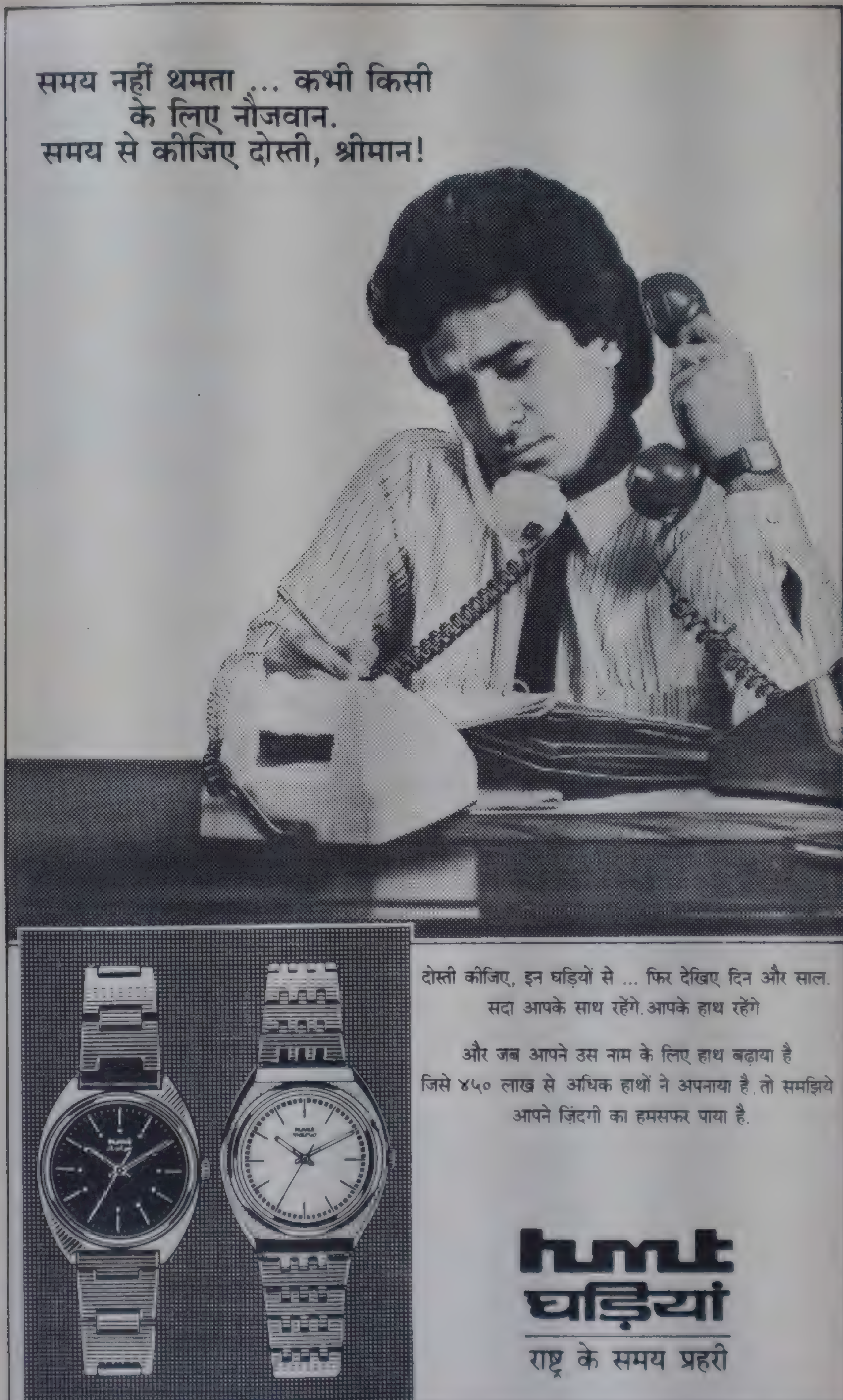
रही हैं ताई. अब तुम्हारे आराम के दिन हैं. भैया का विवाह भी काफी देर में किया. अब यह नहीं कि लाड़ में बहू को सिर पर चढ़ा लो. शुरू से ही काम की आदत डाल देना. चौकेचूल्हे का भार डाल देंगी तो करने लगेगी. अगर शुरू में आप करती रहीं यह सोच कर कि बाद में बहू करने लगेगी तो आजकल की बहुएं ऐसी नहीं होतीं. हमारी सास को देखो, जाते ही सारी जिम्मेदारी डाल दी हमारे सिर पर. पूछ लो ताई से. इन्होंने तो देखा है, वहीं रहती हैं.''

''हां, हां, मैं क्या नहीं जानती. छः



दाँतों के बारे में एक खरा सच
साँस की बदबू का संबंध
दाँतों से ज़्यादा मसूड़ों से है.
एक और खरा सच
सिर्फ़ फोरहॅन्स का
अनोखा एस्ट्रिंजेंट मसूड़ों को कस कर
उन्हें स्वस्थ रखता है.
साँस की बदबू पैदा ही नहीं हो पाती.
झागवाला फोरहेंन्स
नीले पैक में.
FOAMING
Forhan's
FOR THE GUMS
फोरहॅन्स
सीमित झागवाला
नारंगी पैक में.
फोरहॅन्स
सुरक्षा
32 बरकरार
एक दाँतों के डॉक्टर का बनाया हुआ टूथपेस्ट

GM 27/88 Hn


समय नहीं थमता ... कभी किसी
के लिए नौजवान.
समय से कीजिए दोस्ती, श्रीमान!
दोस्ती कीजिए, इन घड़ियों से ... फिर देखिए दिन और साल.
सदा आपके साथ रहेंगे. आपके हाथ रहेंगे
और जब आपने उस नाम के लिए हाथ बढ़ाया है
जिसे ४५० लाख से अधिक हाथों ने अपनाया है, तो समझिये
आपने ज़िंदगी का हमसफर पाया है.
hmt
घड़ियां
राष्ट्र के समय प्रहरी

रस से देख रही हूं," ताई बोलीं. अपनी साड़ी पा कर और इतने दिनों की कमला की खातिरदारी से प्रसन्नचित्त दिखाई दे रही थीं. "और देख ले सतीश की बहू को. मैं सब काम करती रही तो अब यह हाल है कि कहो तो वह काम कर देती है. नहीं तो उस का घरबार से कोई मतलब ही नहीं. कोई जिम्मेदारी ही नहीं संभालती. तभी तो कह रही हूं, शुरू में ही सिर पर भार डाल देना चाहिए. अरे, यह लालाजी कैसे चले आ रहे हैं, क्या हुआ?"

विमलाजी ने घबराए स्वर में कहा, दफ्तर में पुणे से ट्रंककाल आई है. फोन पर नीरा के चाचा कह रहे थे कि बहू वहां स्नानघर में गिर गई है. दाएं हाथ की कुहनी की हड्डी टूट गई है. प्लास्टर लगेगा."

"पुणे? वहां बहू कैसे है, वह तो गोआ गई है न."

"नहीं, गोआ नहीं गई. अनीश फोन पर बता रहा था कि नीरा जिद करने लगी कि दो दिन को पुणे चलो. इसी लिए वे सब वहां चले गए थे. नीरा घर में थी. पेट में दर्द था. उसे छोड़ कर अनीश सिंहगढ़ चला गया था सालेसालियों के साथ. शाम को जब वापस आए तो पता लगा कि अभी तो दर्द की दवा खिला कर सुला दिया गया है. प्लास्टर लगेगा. छः सप्ताह तो कम से कम प्लास्टर खुलने में लगेंगे."

इस तरह हनीमून के लिए गोआ जाने के बजाए अनीश वाराणसी से पुणे के चक्कर लगाता रहा था. छः सप्ताह बाद नीरा का प्लास्टर हटा, तब भी हाथ ठीक नहीं हुआ. दोबारा प्लास्टर लगाया गया.

कमला भी नीरा को देखने पुणे गईं. दूसरे ही दिन उन का कर्तव्यबोध जागा. कहा, "नीरा को हम अपने साथ ले जाएंगे. चाचा के घर कब तक पड़ी रहेगी. प्लास्टर नहीं खुलेगा."

कमला प्रथम श्रेणी में नीरा को साथ ले कर वाराणसी आईं, ताकि उसे भीड़भाड़ में चोट न लगे. दिनरात मन में यही आशा जगाए थीं कि तीन महीने बाद ही सही, कभी तो वह दिन आएगा, जब बहू दोनों हाथों से घर का काम कर सकेगी.

कमला का काम बढ़ गया था, जिम्मेदारियां बढ़ गई थीं. अनीश को भी पत्नीसेवा की प्रेरणा दी गई थी. कपड़े पहनाना व धोना आदि उस का ही काम था. एक नौकरानी भी लगा ली गई थी कि थोड़े दिन के दुख हैं, कट जाएंगे. फिर तो नीरा अपना ही नहीं, दूसरों का भी काम कर लेगी.

पर नीरा की हायहाय में कोई कमी नहीं आई. डाक्टर परेशान थे. जैसेजैसे प्रतीक्षा का समय कटा. प्लास्टर हटाया गया. सब से नामी हड्डी विशेषज्ञ के निरीक्षण में. नीरा के हाथ में कोई अंतर नहीं आया था.

डाक्टर ने पुनः जांच करने के लिए बुलाया था. कमलाजी मन ही मन जाने किसकिस की मन्नतें मान रही थीं. तभी चिड़चिड़ाए हुए विमलजी की आवाज सुन कर चौंक उठी, "हमारे साथ धोखा किया गया है. बहू को चोट आज की नहीं, बरसों पुरानी है. उस की कुहनी में इस्पात की छड़ चढ़ाई गई है. वह दायां हाथ उठा ही नहीं सकती. सालियों को इसी लिए साथसाथ रखा गया था, ताकि हम लोग जान न पाएं. फिर गोआ जाने की जिद, तिकड़म से बंबई से पुणे पहुंचना. उस के चाचा के पहचान के पुराने डाक्टर का झूठमूठ प्लास्टर चढ़ाना. फिर ठीक न होने का बहाना, ताकि समय बीतता जाए और हम शादी के बाद हुई दुर्घटना मान कर इसे स्वीकार लें."

"दुर्घटना तो हुई थी बहू को हमारे सिर मढ़ने की. लेकिन कैसी साजिश से, कमाल है."

कमला ने दिल पर पत्थर रख लिया. नीरा के घर वालों ने भले ही धोखा दिया, पर वह नीरा को सहानुभूति, प्रेम और पूरे मान से अपने घर रखेगी. अनीश को भी समझाया, "बेटा, मान लो, अपने घर आने पर ही ऐसा हो जाता, तब हम क्या करते? तब



दास्ताने गम

क्या सुनाते दास्ताने गम किसी को
बहुत देखा, बहुत है जी लिया,
जमाना चलता रहा अपनी रफ्तार में
देखते हम रहे, मगर लब सी लिया.
—सुशीला ठाकुर

भी तो निभाते. तुम ने उस की मांग भरी है, सात फेरे लिए हैं अग्नि के सामने. उस की लाज तुम्हीं को निभानी है. तुम्हीं उस के सब से अपने हो. जो लोग धोखे से विवाह कर के छुट्टी पा जाना चाह रहे थे, वे अब उस के लिए कुछ नहीं करेंगे."

नीरा ने भी रोरो कर अपना अपराध स्वीकार कर लिया था. इस नाटक की योजना उस के पिता और चाचा ने ही बनाई थी. मायके का मान रखने के लिए ही उसे चुप्पी साधनी पड़ी थी. यदि वह बता देती कि पहले से ही असमर्थ है तो शायद ससुराल वाले उसे विदा कर देते.

कुछ दिनों के आघात के बाद नीरा का अपाहजपना, अनीश का उस के व्यक्तिगत काम करना, मां का घरगृहस्थी का काम पूर्ववत संभाल लेना सब सामान्य हुआ ही था कि नीरा का मायके से बुलावा आ गया. कमला ने अनिच्छा से भेज दिया. वह उन स्वार्थी लोगों को भूलना चाहती थी, जिन्होंने बेटी को विवाहित देखने के लिए उस के सुखदुख की परवाह नहीं की थी. कहीं वह भी उन सासों की तरह होती, जो दहेज की बलि पर बहू को स्वाहा कर रहे हैं तो जाने क्या हो जाता.

कमला उन के दुष्कृत्य को भूलने की चेष्टा करती रही थी कि दूसरा आघात लगा. अनीश उस के सामने खड़ा था — एक पत्र बारबार पढ़ता हुआ. वह हक्काबक्का कभी कमला को देखता था, कभी पत्र को.

"किस का पत्र है? नीरा का? क्या वह लिखने लगी? बाएं हाथ से अभ्यास किया होगा या लिखाया है किसी से?"

"उस के चाचा का पत्र है तलाक देने को लिखा है."

"तलाक... क्यों? हम ने तो कुछ कहा भी नहीं, फिर क्यों?" कमला समझ नहीं पा रही थी.

"लिखते हैं, एक तो विवाह होते ही वह अपाहिज हो गई. फिर उस के साथ इतना दुर्व्यवहार, मारपीट करना, भूखीप्यासी रखना. वह ऐसी स्थिति में अलग होना चाहती है."

कमला सन्न रह गई. उस की समझ में कुछ नहीं आया. नीरा तीन महीने उस के पास रह कर गई थी. उस ने सब सचसच बता दिया था. ससुराल में तो उसे स्नेहिल व्यवहार ही मिला था, फिर यह सब क्या था? तरहतरह के प्रश्न उसे मथते रहे.

आखिरकार उस ने अनीश से कहा, "तुम स्वयं नीरा से मिल कर आओ. तभी सच का पता चलेगा."

पुणे जाने पर अनीश को पता लगा कि नीरा बहन के पास पटना चली गई है. वह उस से मिलना ही नहीं चाहती थी. अतः वह मिलने का प्रयत्न न करे, न ही उन के घर दोबारा आए.

नीरा के न मिलने से कुंठित हो कर अनीश पुणे से लौटने ही वाला था कि उसे याद आया, नीरा विवाह से पहले किसी दफ्तर में काम कर रही थी. विवाह से पहले उस ने नौकरी छोड़ दी थी. वह सब दोबारा ससुराल आने पर ही नीरा ने बताया था, पहले नहीं.

आतेआते अनीश के मन में नीरा का पुराना दफ्तर देखने की इच्छा हो आई. पता लगाता हुआ वह दफ्तर पहुंचा तो मालूम


उषा आज! उषा अब!
सुनहरे व भूरे सरताज: कोहिनूर सुपर डीलक्स, सेनेटर और नया 3-ब्लेड। पल्सर.
चमकते-दमकते मोतियों से सफेद, स्टैला, पल्सर, प्राइमा.
और कई दूसरे आकर्षक सितारे भी – तरह-तरह के टेबिल, वॉल, कैबिनेट, पैडेस्टल व वेंटिलेटिंग पंखे विलासपूर्ण आराम से लेकर आसान दाम तक.
कोहिनूर सुपर डीलक्स
महलों का सरताज
USHA
उषा
भारत का सर्वाधिक बिकने वाला पंखा

हुआ कि नीरा ने त्यागपत्र नहीं दिया था. वह वहीं थी, कहीं बाहर भी नहीं गई थी.

नीरा ने जो सच बताया, उस से अनीश साजिश के असली रूप को समझ गया.

नीरा विवाह से दो वर्ष पहले से ही नौकरी कर रही थी. विवाह से पहले उस ने छुट्टी ली थी. अब तक छुट्टियां बढ़ाती रही थी. उस से कहा गया था ससुराल में नौकरी की भनक भी न दे, नहीं तो वे लोग नाराज हो जाएंगे. उन्हें कामकाजी लड़की बिलकुल भी पसंद नहीं है. उसे वेतन के रूप में दो हजार के लगभग मिल रहा था. और अपाहिजों को मिलने वाली अन्य सुविधाएं भी मिल रही थीं.

पिता के जोर देने पर विवाह तो कर दिया गया था, पर उन्हें लगा था कि सोने का अंडा देने वाली मुरगी हाथ से निकल गई.

आखिर में नीरा ने कहा, "पहले तो यह आशंका हुई कि आप लोग मुझे छोड़ देंगे या ऐसा व्यवहार करेंगे कि मैं ऊब कर चली जाऊंगी. आप लोगों की सज्जनता से जब ऐसा न हुआ तो यह चाल चली गई. मुझे बताया गया कि आप लोगों के पत्र तलाक के लिए आए हैं. इस बीच मुझे आप का कोई पत्र भी न मिला कि मैं सच जानती. खिन्न हो कर मैं ने भी नहीं लिखा."

"पत्र तो मैं ने भेजे थे," परेशान व हैरान अनीश ने सफाई दी.

"भेजे थे? ओह, वे गायब कर दिए गए होंगे. मैं घर में जो नहीं रहती. कल मुझे दफ्तर से ही चाची बहाने से दूर घुमाने ले गई थीं. रात में हम दूसरे घर में रहे थे. आप से झूठ बोला गया कि मैं पटना चली गई हूं."

"तुम छुट्टी के लिए आवेदन दे दो और इसी समय मेरे साथ चलो."

"ऐसे ही, कुछ सामान..."

"रहने दो. तुम अपने घर चलो. सामान हो जाएगा."

कमला ने चौंक कर देखा, लंबे सफर से थकीहारी, किंतु प्रफुल्ल नीरा रिकशे से उतर रही थी. बहन दौड़ती हुई आई और अनीश की छोटी सी अटैची उठाते हुए पूछा, "भाभी का सामान कहां है?"

"सामान कैसा? मैं तो नीरा का अपहरण कर के ला रहा हूं."

"अपहरण तो विवाह से पहले करते पृथ्वीराज की तरह. अब पत्नी का कैसा अपहरण?"

"समय की यही मांग थी, शादी के बाद भी पत्नी का अपहरण करना पड़ा," वह हंसा.

"क्या मतलब, भैया?"

"पहले चाय तो पिला. तब मतलब का पता चलेगा." अनीश ने हंसते हुए नीरा की तरफ देखा. लेकिन वह तो इस तरह शर्म से धरती में गड़ी जा रही थी. जैसे वह अब तक कुंआरी हो और अनीश सचमुच उस का अपहरण कर लाया हो. ●

मुझे शिकायत है

इन प्रकाशित शिकायतों को काट कर संबंधित व्यक्तियों को भेजिए या उपयुक्त स्थान पर चिपकाइए ताकि इन्हें पढ़ने वाले अपनी त्रुटियों को पहचान कर उन्हें दूर कर सकें.



मुझे शिकायत है उन डाक्टरों से जो मरीज को स्थायी ग्राहक बनाने के चक्कर में उस का सही इलाज नहीं करते बल्कि उसे लटकाए रहते हैं. इस से मरीज का समय, धन और स्वास्थ्य तीनों ही खराब होते हैं.

-शैलेंद्र चतुर्वेदी



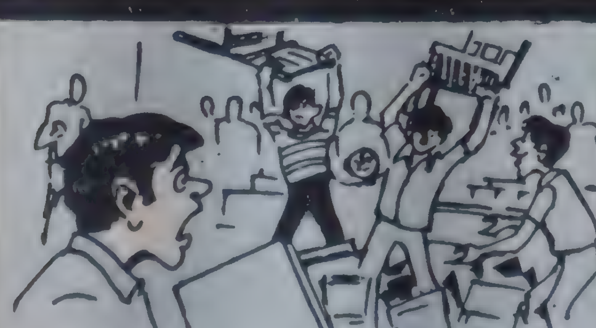
मुझे शिकायत है उन असभ्य लोगों से जो रेलवे पुल पर चढ़ कर नीचे थूकते हैं जिस से नीचे से गुजरने वालों के सिर पर थूक आ गिरता है और उन के कपड़े खराब हो जाते हैं.

-अंबिकाप्रसाद तिवारी



मुझे शिकायत है उन अभिभावकों से जो अपनी पुत्रियों को उपेक्षित कर पुत्रों को अधिक महत्त्व देते हैं. इस से पुत्रियों में हीन भावना उत्पन्न हो जाती है.

-भास्कर दास



मुझे शिकायत है उन छात्रों से जो अध्यापक के न रहने पर स्कूली सामानों को तोड़फोड़ कर के नुकसान पहुंचाते हैं.

-निर्मेष जैन



मुझे शिकायत है उन पड़ोसियों से जो सास की बात बहू से और बहू की बात सास से कह कर आपस में झगड़ा करवाते हैं.

-शांति कुमारी अग्रवाल



याद आए बोल तेरे

बड़ा नाजुक समय है,
पागल मन में प्रलय है,
स्वर तार में पिरोई लय है,
प्रिय, यह मेरी पराजय है,
तभी तो तुम्हारी विजय है.

सपने हुए मेरे रंगीले,
मन में धुले अपने सजीले,
याद आए बोल तेरे वे रसीले,
वेणी में गूंथ डाले फूल प्यारे,
गुलाबी, लाल, पीले और नीले.

तेरा संग साथ है और रात सुहानी,
रतनारे नयनों से छलकती जवानी,
मदिरा सी धुल गई है, मत कहो पानी,
ऐसे में फिर छेड़ी तुम ने प्रीत की कहानी,
जीवन सकारथ हो गया, नहीं कोई भी हानि.

—प्रिया माहेश्वरी



जलवायु
भाभीजी, मैं तो अपनी पत्नी के मोटापे से परेशान हो गया हूं.
इसमें उस बेचारी का भी क्या कसूर, दिनभर घर में बैठी रहेगी तो यही होगा. उसे सुबह शाम लंबी सैर कराया करो.
मैं क्या करूं? मेरे दफ्तर जाते ही वह हलवापूरी बना कर खाना शुरू कर देती है. कहती है खाली सैर करा के मेरे पैर क्यों दुखाते हो. घुमाना है तो किसी होटल, विवाह या जन्मदिनपार्टी में चलो.
मैं तो उसे समझासमझा कर हार गया हूं. अब आप ही कोई उपाय बताइए.


ठीक है, तुम कल ही उसे किसी पहाड़ी क्षेत्र की सैर कराने ले जाओ. सैर के बहाने पहाड़ों पर चढ़ने उतरने से सारी चर्बी पिघल जाएगी.
वाह! क्या बात कही है. मैं कल ही उसे ले कर जाता हूं.
वापस आने पर
अरे यह क्या? तुम तो और भी दुबले हो गए.
हां, और मेरा बटुआ भी. लेकिन आशा को वहां की जलवायु इतनी रास आई कि उस का वजन दस पौंड और बढ़ गया है.





▲मिर्च व लहसुन की सास

कद्दू की सास▲

तीखीमीठी स्वादिष्ट सास

मिर्च व लहसुन की सास

सामग्री: 500 ग्राम मोटी लाल ताजा मिर्च, 2 गांठ लहसुन, 200 ग्राम नमक, 300 ग्राम सिरका, 1 चम्मच तेल रिफाइंड, 2 बड़े चम्मच कार्नफ्लोर.

विधि: सिरके में लहसुन छील कर और मिर्च की डंडियां तोड़ कर डाल दें. इस में नमक मिला कर मिक्सी में बारीक पीस लें. तेल गरम करें और धीमी आंच पर कार्नफ्लोर को हलका सा भून लें. इस में सिरके में पिसा लहसुन व लाल मिर्च का घोल मिलाएं. मिलाते समय लगातार हिलाते रहें, वरना गांठें पड़ जाएंगी. सास गाढ़ी होने पर उतार लें. ठंडी होने पर बोतल में भर लें.

पानी से पूरा बचाव रखें. मिर्च धो कर पोंछ कर एकदम सुखा लें. मिक्सी का जग तथा पतीला भी कपड़े से पोंछ कर अच्छी तरह सुखा लें. तब यह सास वर्ष भर भी चल सकती है.

कद्दू की सास

सामग्री: 1 कि.ग्रा. पीला कद्दू, 400 ग्राम सिरका, 500 ग्राम चीनी, 150 ग्राम नमक, 1 छोटा गांठ लहसुन, 1 चम्मच गरम मसाला, 1छोटा चम्मच लाल मिर्च बारीक पिसी, 1 चम्मच लाल रंग (खाने वाला गीला).

विधि: लहसुन को छील कर बारीक पीस लें. पतीले में तेल गरम करें. इस में लहसुन के पेस्ट को डाल कर हलका भूरा होने तक भूनें. कद्दू का छिलका उतार कर





हरी मिर्च की सास

चीनी तथा भारतीय व्यंजनों के साथ प्रयोग में लाने के लिए पेश हैं कुछ तीखीमीठी नई सास बनाने की विधियां, जिन से बनने वाली सास केवल स्वादिष्ट ही नहीं होंगी, बल्कि लंबे समय तक रखी भी जा सकती हैं.

ारीकबारीक काट लें. लहसुन भुनने के बाद ाल मिर्च गरम मसाला डाल कर भून ले फिर कद्दू डालें और नमक कर डाल कर ढक्कन से ढक कर धीमी आंच पर पकाएं. कद्दू गलने के बाद चीनी डालें और अच्छी रह भून कर सुखा लें. ठंडा होने पर सिरका मिला कर मिक्सी में बारीक पीस लें और ्रन कर खाने का रंग मिला दें. धो कर ुखाई हुई बोतलों में सास पूरी तरह ठंडी ोने के बाद भर लें. यह बिलकुल टमाटर की ास लगेगी.

हरी मिर्च की सास

सामग्री: 500 ग्राम. हरी मिर्च, 400 ाम सफेद सिरका, 250 ग्राम नमक, 2 बड़े म्मच रिफाइंड तेल, बड़े चम्मच ार्नफ्लोर, 1 छोटा चम्मच हरा रंग.

विधि: हरी मिर्च को धो कर कपड़े से ोंछ कर डंडियां तोड़ें और काटें. सिरके को तीले में डाल कर नमक के साथ इन मिर्चों ो आधा घंटा पहले भिगो दें. इस में कार्नफ्लोर धीरेधीरे मिलाते हुए डालें. फिर इस मिश्रण को मिक्सी में डाल कर इतना बारीक पीसें कि मिर्च के बीज बिलकुल दिखाई न दें. तेल पतीले में गरम करें और उस में पिसी हुई मिर्चों के मिश्रण को उबाल आने तक तेज आंच पर पकाएं और फिर हलकी आंच पर पकने दें.

जब सास गाढ़ी हो जाए तो उतार लें और ठंडी होने पर खासतौर से बोतल में भर दें. यह चीनी तथा भारतीय व्यंजनों के साथ प्रयोग में लाई जाती है. –विजया वासुदेव ●



अब!
केयरफ्री
डिओडरन्ट
सैनिटरी नैपकिन्
न सिर्फ़ सम्पूर्ण सुरक्षा
और स्वच्छता दें बल्कि
गंध भी कम करें
केयरफ्री डिओडरन्ट सैनिटरी
नैपकिन्स मासिक की गंध कम
करने में सहायक होती हैं औ
आप साफ़-स्वच्छ महसूस
करती हैं
Carefree
केयरफ्री* डिओडरन्ट... स्वच्छता जब आपके लिए सबसे ज़रूरी
जॉन्सन एण्ड जॉन्सन
* केयरफ्री जॉन्सन एण्ड जॉन्सन यू.एस.ए का ट्रेडमार्क है

पर्यटन परिशिष्ट

छुट्टियों को सुखद और मनोरंजक बनाने के लिए इस परिशिष्ट में पूर्व, अर्ध भारत के प्रमुख पर्यटन स्थलों पर पहुंचने, रहने, घूमनेफिरने की संपूर्ण जानकारी दी जा रही है. अगर आप कहीं नहीं भी जा रहे तो इस परिशिष्ट के द्वारा आप घर बैठे ही पूरे देश का भ्रमण कर सकेंगे.





मसूरी

पर्यटन स्थलों में चारों तरफ पहाड़ियों से घिरा मसूरी सैरसपाटे और मनोरंजन के लिए उत्तर भारत का सब से नजदीक पर्यटन स्थल है. समुद्र की सतह से 2,006 मीटर की ऊंचाई पर बसे इस शहर के यंग लैंडर नामक स्थान पर पहला सैनिक स्टेशन स्थापित किया गया था. 1920 में पहली कार देहरादून होते हुए मसूरी पहुंची थी. अब तो यहां गाड़ियों और बसों की भीड़ दिल्ली जैसे बड़े शहरों का मुकाबला करती है.

स्वतंत्रता से पूर्व मसूरी का प्रयोग बड़े अधिकारियों, व्यापारियों और खिलाड़ियों द्वारा स्वास्थ्य लाभ के लिए किया जाता था. अब यह एक रोज के लिए छुट्टी मनाने वालों के लिए भी काफी उपयुक्त स्थान है.

बहुत ऊंचा न होने के कारण इस पर्यटन स्थल पर नवंबर से फरवरी के अतिरिक्त कभी भी जाया जा सकता है. इन दिनों यहां पर्यटकों की भारी भीड़ होती है. जुलाई अगस्त की लगातार होने वाली वर्षा के दिनों भीड़ थोड़ी कम रहती है. यहां की रातें तथा सुबह ठंडी और शामें खुशनुमा नमीयुक्त होती हैं.

प्रमुख शहरों से दूरी:

दिल्ली से 290 किलोमीटर, सहारनपुर से 107 किलोमीटर, हरिद्वार से 103 किलोमीटर, देहरादून से 35 किलोमीटर और ऋषिकेश से 77 किलोमीटर.

कैसे जाएं?

मसूरी जाने के लिए सब से आसान साधन बस है. हरिद्वार, सहारनपुर, दिल्ली, देहरादून आदि स्थानों से मसूरी के लिए नियमित साधारण और डीलक्स बसें जाती हैं.

रेलमार्ग और वायुमार्ग से जाने वाले र्यटकों को देहरादून ही उतरना पड़ेगा, योंकि इस के आसपास का सब से करीबी लवे स्टेशन और हवाई अड्डा यही है. हरादून देश के अन्य भागों से जुड़ा हुआ है ौर यहां से मसूरी बस या टैक्सी द्वारा सहज ो पहुंचा जा सकता है.

हां ठहरें?

मसूरी में ठहरने के लिए पर्याप्त सुविधाएं हैं. यहां के सरकारी आवास में र्यटन विभाग के आवास गृहों के साथ लोक नर्माण विभाग के आवास गृहों में भी ठहरा ा सकता है.

मसूरी में होटलों की संख्या बहुत धिक है अतः सूची देना संभव नहीं है. हर र्ग के लिए उपयुक्त होटल मिल सकते हैं. ूची के लिए पर्यटन विभाग को लिखें. ुसाफिरखाना, सनातन धर्म और जैन र्मशाला में भी ठहरा जा सकता है. ुलरी बाजार और लाइब्रेरी बाजार स्टेट एजेंटों की सहायता से पेइंग गेस्ट के ौर पर भी ठहरने की पूरी सुविधा है, परंतु स के लिए पहले तसल्ली करना जरूरी है. स के अलावा पी. डब्ल्यू. डी. इंस्पेक्शन ंगला और वाई. एम. सी. ए. होस्टल में भी हरा जा सकता है. लेकिन इस के लिए पहले ारक्षण करा लेना जरूरी है.

या देखें?

वैसे तो मसूरी का चप्पाचप्पा देखने ाला है, लेकिन उस के लिए काफी समय ाहिए. आमतौर पर पर्यटक कुछ दिनों के लिए ही यहां आते हैं. फिर भी मसूरी की कुछ जगहें ऐसी हैं जिन्हें देखे बिना नहीं रहा जाता.

कैमल्सबैक रोड: 3 किलोमीटर लंबी यह सड़क कुलरी बाजार से लाइब्रेरी रोड तक जाती है. सड़क के एक किनारे बड़ीबड़ी दुकानें हैं तो दूसरे किनारे पर पटरी पर सामान बेचने वाले लोग नजर आ जाते हैं. इस सड़क पर हर वक्त चहलपहल लगी रहती है. इसी सड़क पर दो सिनेमाघर भी हैं. इसी सड़क के बीच में ट्राली का स्टेशन भी है. यहां से पर्यटक ट्राली में बैठ कर पहाड़ी की दूसरी ओर गनहिल पर जा सकते हैं. ट्राली में बैठ कर जाने का अपना अलग ही मजा होता है. यहां घुड़सवारी का मजा भी लिया जा सकता हैं.

कैंप्टी फाल्स: मसूरी से 12 किलोमीटर दूर चकराता रोड पर ऊंची हरीभरी पहाड़ियों से घिरी खूबसूरत जलप्रपात में तेज गति से गिरती जलधारा में नहाते हुए बड़ा आनंद आता है. इस जलप्रपात में नहाने जाने से पहले अपने कपड़े व तौलिया अवश्य साथ ले जाएं. यहां नाश्ता वगैरह करने के लिए एक कैफे भी है.

नाग टिब्बा: शिकार के शौकीन पर्यटक मसूरी से 42 किलोमीटर दूर नाग टिब्बा जरूर जाना चाहेंगे. मसूरी टेहरी मार्ग पर यहां मसूरी का सर्वाधिक सघन वन है. इस स्थान पर चारों ओर जंगली पशुओं का खतरा बना रहता है. शिकार करने से पहले क्षेत्रीय वन अधिकारी मसूरी से अनुमति लेनी जरूरी होती है.

यमुना ब्रिज पर पर्यटक मछली के शिकार का आनंद भी ले सकते हैं. यह ब्रिज मसूरी चकराता बरकोट रोड पर 27 किलोमीटर दूर है.



मसूरी का कैमलस्बैक रोड: यहां हमेशा चहलपहल लगी रहती है.



गरमियों के मौसम में मसूरी में पर्यटकों की भीड़ लगी रहती है.

म्यूनिसिपल गार्डन: **म्यूनिसिपल गार्डन जाने के लिए लाइब्रेरी चौक से ऊपर की ओर सीधी सड़क जाती है. यह स्थान लगभग 4 किलोमीटर दूर है. पर्यटक यहां से हाथ से खींचे जाने वाले रिकशा में जा सकते हैं. यहां एक खूबसूरत पिकनिक स्थल है, जहां सुंदर बागबगीचे हैं. यहां झील के नाम पर सिर्फ एक सूखा तालाब ही है. खानेपीने तथा नाश्ता आदि करने के लिए यहां कई दुकानें भी हैं. परंतु इन दुकानों पर वस्तुओं के दाम अधिक ही होते हैं तथा क्वालिटी भी कोई खास नहीं होती.**

काठगोदाम टिब्बा: **मसूरी की सब से ऊंची लाल टिब्बा के नजदीक 5 किलोमीटर दूर पैदल या रिकशे से जाएं. यहां से बर्फीली चोटियों का दृश्य बड़ा रोमानी लगता है.**

मालरोड: **कैमल्सबैक रोड के विपरीत मालरोड एक चहलपहल वाला इलाका है. जहां नव फैशनपरस्त युवाओं को सहज ही किलकारियां मारते हुए देखा जा सकता है. असल में मसूरी की सारी रंगीनियां तो मालरोड पर ही सिमटती हैं. यहां भोजन के अच्छे होटल हैं.**

गनहिल (तोप टिब्बा): **गनहिल मसूरी का एक अलग आकर्षण है जहां पहुंचने के लिए लोहे के मोटेमोटे तारों वाली झूलती ट्रालियों में बैठना बड़ा आनंददायक है. यहां पर वातावरण कुछ ठंडा हो सकता है. खुशनुमा तथा रोमांटिक ढलानों पर लगे खूबसूरत चट्टानी बगीचे की आभा लिए हुए यहां ज्यादातर फोटोग्राफी की दुकानें हैं. यहां रंगबिरंगी ड्रेसों में रोमांटिक पोज में फोटो खिंचवाते पर्यटक दिखाई पड़ते हैं. इक्कादुक्का खाने की दुकानों में दक्षिण भारतीय तथा उत्तर भारतीय स्नैक्स खानेपीने की सामग्री तो है पर सफाई नाम मात्र की है. यहां पर कुछ फोटोग्राफर लोगों को बेवकूफ बनाने से बाज नहीं आते. फोटो के पूरे पैसे ले कर घर भेजने का वादा तो करते हैं पर तस्वीर नहीं भेजते. कुछ लोगों का यही धंधा है. अतः फोटो उसी दिन लेने की कोशिश करें या फिर कैमरा साथ ले जाएं. यहां पर लगी दूरबीन से मसूरी के दृश्यों को निहारा जा सकता है. इस दूरबीन से पर्यटक आसपास के दृश्य का मजा ले सकते हैं. इस के लिए दूरबीन के मालिक पैसे लेते हैं.**

धनोल्टी: **धनोल्टी से हिमालय की हिमाच्छादित चोटियों का भरपूर अवलोकन किया जा सकता है. देवदार और चीड़ के लंबेलंबे वृक्षों से घिरे इस स्थान की दूरी मसूरी से 24 किलोमीटर है.**

चाइल्डर्स लाज: **मसूरी से 4 किलोमीटर दूर यह सब से ऊंची पहाड़ी है. जहां टट्टू द्वारा या पैदल ही पहुंचा जा सकता है. दूर तक फैली बर्फ से ढकी पर्वत श्रृंखलाओं को देखने के लिए यहां एक शक्तिशाली दूरबीन की भी व्यवस्था है.**

देहरादून

हिमालय की गोद में बसा चारों तरफ पर्वत श्रृंखलाओं और नदियों से घिरा हरादून पर्वतों की रानी मसूरी और करात का प्रवेश द्वार है. साथ ही यह च्छे शिक्षण संस्थानों और अच्छे आवासों की वजह से भी प्रसिद्ध है. इस के उत्तर में हमालय, दक्षिण में शिवालिक पहाड़ियां ौर पूर्व और पश्चिम में गंगा और यमुना दियां हैं.

प्राकृतिक सौंदर्य के अलावा यह भारत ा अकेला शहर है, जहां उच्चस्तरीय शक्षा संस्थान, भारतीय सेना अकादमी दून कूल, ब्राउन स्कूल जैसे शिक्षण संस्थान हैं.

देहरादून दिल्ली से 255 किलोमीटर र है. हरिद्वार से यह 52 किलोमीटर दूर है. हां से केवल डेढ़ घंटे का समय लगता है. स के अतिरिक्त हरिद्वार, ऋषिकेश, दल्ली से टैक्सियां भी उपलब्ध रहती हैं. दल्ली से देहरादून सीधे अथवा हरिद्वार ोते हुए भी आप जा सकते हैं.

कहां ठहरें?

पश्चिमी ढंग के होटलों में होटल धुबन ह्वाइट हाउस उल्लेखनीय हैं. होटल ोजेंट सस्ता तथा सुविधायुक्त है. होटल जीडेंट, अरोमा, दून गेस्ट हाउस काफी च्छे होटलों में से हैं. भारतीय ढंग के टलों में 'दून व्यू' सब से बढ़िया, शहर के ीच में स्थित है.

यहां धर्मशालाओं, सरकारी आवासों के अतिरिक्त 100 के लगभग छोटेबड़े टल हैं, जहां 50 रुपए से ले कर 500 ुपए प्रतिदिन के हिसाब से ठहरा जा सकता .

क्या देखें?

देहरादून घाटियों के मध्य बसा एक मणीक नगर है. यहां की हर चीज पर्यटकों ो अपनी ओर खींचती है.

सहस्रधारा: शहर से लगभग 11 किलोमीटर की दूरी पर स्थित इस स्थान पर पहाड़ियों से निरंतर पानी गिरता है. इस के अतिरिक्त यहां गंधक के चश्मे भी हैं. पर्यटक यहां नहाने और रमणीक स्थानों को देखने का मजा उठा सकते हैं. पिकनिक स्थल के रूप में भी यह प्रसिद्ध है.

वन अनुसंधान शाला: शहर से 5 किलोमीटर दूर चकराता मार्ग पर स्थित यह भव्य स्थान वन्य सबंधी प्रदर्शनों, कागज मिल, वनस्पति उद्यान और हिरणों की वाटिका के लिए मशहूर है.

डाक पत्थर: शहर से 45 किलोमीटर दूर चकराता मार्ग से कुछ ही दूरी पर डाक पत्थर यमुना नदी के बांध के कारण अत्यंत ही रमणीय स्थल है.

कालसी: देहरादून शहर से चकरौता मार्ग में 50 किलोमीटर की दूरी पर स्थित कालसी सम्राट अशोक के प्राचीन शिलालेखों के कारण काफी प्रसिद्ध है. यह लेख एक बड़ी शिला पर पाली भाषा में लिखा हुआ है, जो शिला पर पानी डालते ही दिखाई देने लगता है.

चकराता: शहर से 95 किलोमीटर की दूरी पर यह स्थान स्वास्थ्य के लिए अत्यंत ही उपयोगी है, जहां से बर्फ से ढके शिखरों को आत्मसात किया जा सकता है. इस के अतिरिक्त यह जौनसारभाभर का भी प्रमुख केंद्र है.

राजा की वाइल्ड लाइफ सेंचुरी: देहरादून से 23 किलोमीटर पर वन्य जीव अभय वन 449 वर्ग कि.मी. में फैला हुआ है. यहां रेस्ट हाउसों में ठहरने की व्यवस्था है.

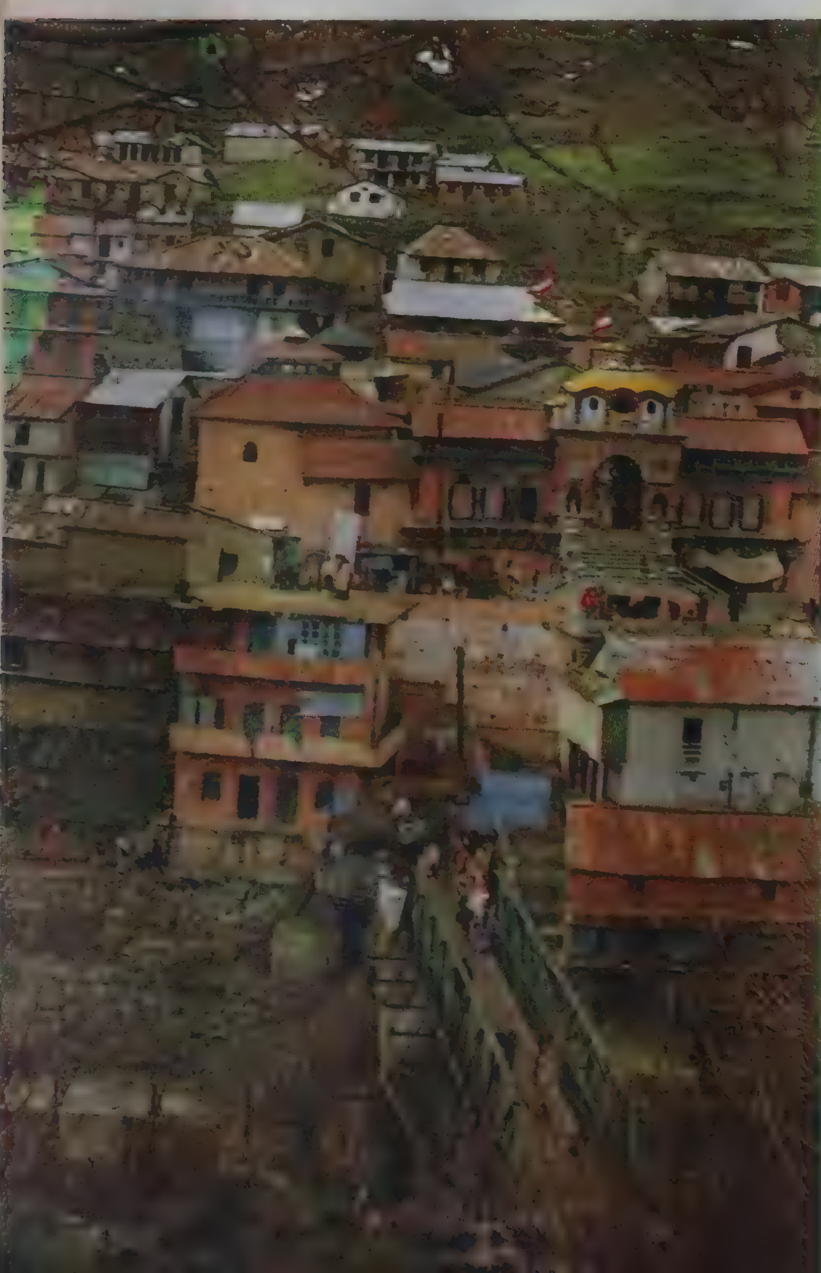
क्या खरीदें?

देहरादून का चावल बहुत प्रसिद्ध है, अतः जरूर खरीदें. देहरादून के फलों में लीची, आम जरूर खरीदें.

बदरीनाथ

बदरीनाथ नारायण पर्वतों के बीच ऋषिगंगा और अलकनंदा नदियों के संगम पर स्थित समुद्र सतह से 3,122 मीटर की ऊंचाई पर एक अत्यंत रमणीय तीर्थ स्थल और पर्यटन स्थल है. कालांतर में बदरीवन के नाम से जाना जाने वाला यह स्थान अब बदरीनाथ बन गया है. बदरी का शाब्दिक अर्थ बेर और बादल होता है. कभी इस स्थान पर बेरों के घने जंगल हुआ करते थे. आज भी यहां वातावरण में बादल छाने का आभास पर्यटकों को लुभाता है.

हिंदू धर्म शास्त्रियों ने इस स्थान का नाम धर्म से जोड़ कर, सातवीं शताब्दी में शंकराचार्य ने कुंड से प्राप्त एक मूर्ति को यहां स्थापित कर दिया. बाद में वह मूर्ति गायब हो गई लेकिन दोबारा स्थापित होने पर वह अंधी धार्मिकता से जुड़ गया. तीर्थस्थल के लिए यहां जाना अंधविश्वास ही होगा लेकिन पर्यटन के लिए यहां जाया जा सकता है.



पुराने समय से ही बदरीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री में शांत और शीतल सुरम्य स्थल लोगों को अपनी ओर खींचते रहे हैं. महाभारत, स्कंद पुराण आदि में भी बदरीनाथ के सौंदर्य की चर्चा होती रही है.

कब जाएं?

बदरीनाथ जाने के लिए मई से अक्तूबर तक का समय बेहतर रहता है.

कैसे जाएं?

बदरीनाथ जाने के लिए ऋषिकेश या कोटद्वार तक ट्रेन द्वारा जा कर बदरीनाथ के लिए नियमित जाने वाली बसों को पकड़ा जा सकता है. ऋषिकेश और कोटद्वार उत्तरी भारत के सभी मुख्य शहरों से रेल और बस मार्गों द्वारा जुड़े हुए हैं. वहां से आगे का सफर टैक्सियों द्वारा भी तय किया जा सकता है.

कहां ठहरें?

बदरीनाथ में ठहरने के लिए बस स्टेशन के निकट छोटेछोटे होटल और धर्मशालाएं हैं जहां कम पैसों में ठहरा जा सकता है. सार्वजनिक निर्माण विभाग, निरीक्षण भवन, बदरीनाथ पर्यटन विश्राम गृह, पंचायती धर्मशाला, बिड़ला धर्मशाला, पी. डब्ल्यू. डी., जी. बी.आर. गेस्ट हाउस आदि जगहों पर सस्ते में और सुविधापूर्वक रुका जा सकता है.

बदरीनाथ मार्ग में पड़ने वाला मुख्य पड़ाव जोशीमठ है. जोशीमठ में भी कई होटल और धर्मशालाएं हैं जहां रुकने की उचित व्यवस्था है.

क्या देखें?

बदरीनाथ पहुंच कर पर्यटक को किसी जानकार व्यक्ति या गाइड मैप के आधार पर



ताज़गी
ो दिनभर
साथ निभाए
OISE
AMILY
DORANT
ALC
पॉइज़ दिनभर ताज़गी का अहसास करानेवाले एक असरदार डिओडरेंट के साथ. बन-फूलों की भीनी-भीनी, मदमाती खुशबू समेटे. घंटों आपके पूरे परिवार का तन तरो-ताज़ा, मन प्रसन्न रखनेवाला टाल्कम पाउडर.
पॉइज़–फैमिली डिओडरेंट टाल्क
१००, २०० और ४०० ग्राम के पैक में उपलब्ध
बिक्री व्यवस्था: रैलीज़ इंडिया लिमिटेड, २१, डी. एस. मार्ग, बम्बई ४०० ००१
R K SWAMY/RI/3495/HN



सुनील गावस्कर और उनकी पत्नी मार्शनील।
उस्ताद अमजद अली खान और उनकी पत्नी शुभलक्ष्मी।

लिप्टन यानी उ



जीत
ायका की बात हो, जहां पसंद और
जे का सवाल हो लिप्टन चाय की जीत
देश में विदेश में इसी लिए सुनील
अमजद अली ख़ान और उनकी
लिप्टन की ही फरमाइश करती हैं।
ह-चाय है जो सचमुच तसल्ली देती
झे....लिप्टन के साथ आप हमेशा
हर जगह
TIGER
NEW RICHBRU TEA
GREEN LABEL
लिप्टन
माने सर्वोत्तम क्वालिटी

पूरी जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए. क्योंकि इस से कम समय में अधिक घूमा जा सकता है और पृष्ठ भूमि की जानकारी भी हो जाती है.

फूलों की घाटी– बदरीनाथ के उत्तरपूर्व में लगभग 4,000 मीटर की ऊंचाई पर स्थित 10 कि.मी. लंबी और 3 कि.मी. चौड़ी इस विश्वविख्यात फूलों की घाटी को देखने के लिए विश्वभर के पर्यटक यहां आते हैं. हर साल जून से सितंबर तक यहां 400 से भी अधिक रंगबिरंगी खिली हुई फूलों की किस्मों का मेला देखने के लिए प्रकृति प्रेमी पर्वतारोही और वनस्पति शास्त्री इकट्ठे होते हैं.

यहां पहुंचने के लिए गोविंद घाट से घंघरिया तक का 14 कि.मी. का रास्ता पैदल तय करना पड़ता है. घंघरिया से 1 कि.मी. पैदल चलने पर दो रास्ते मिलते हैं जिन में बायां रास्ता फूलों की घाटी की तरफ जाता है और दायां हेमकुंड के लिए.

हेमकुंड: हेमकुंड हिंदू तथा सिखों का एक प्रमुख तीर्थस्थान है तथा इस के निक ही एक सुंदर झील है.

तप्त कुंड: बदरीनाथ के निक अलकनंदा के किनारे तप्त कुंड नामक ग पानी का एक झरना है. जिस के पानी नहाने का अपना ही आनंद है.

वसुधारा: बदरीनाथ से कुछ आ भारत के अंतिम गांव माणा से 4.5 कि.मी की दूरी पर काफी ऊंचाई से गिरने वा तीव्र जलप्रपात वसुधारा है जो दर्शनीय है

व्यास गुफा: कहते हैं कि बदरीनाथ पास ही माणा की व्यास गुफा में ही वेदों व सामग्री का संकलन और उन्हें 4 भागों बांटने का कार्य संपन्न हुआ था. यह गुफा भ देखने लायक है.

आसपास के दर्शनीय स्थान

ऋषिकेश से बदरीनाथ जाते सम रास्ते में देवप्रयाग, श्रीनगर, रुद्रप्रयाग, क प्रयाग, नंद प्रयाग, जोशीमठ और गोवि घाट आदि दर्शनीय स्थल पड़ते हैं जिन व लौटते समय आनंद उठाया जा सकता है.

केदारनाथ

उत्तर प्रदेश के गढ़वाल मंडल में स्थित केदारनाथ का मुख्य आकर्षण यहां का मंदिर है, जो बदरीनाथ से 42 किलोमीटर की दूरी पर है. समुद्र की सतह से 3,581 मीटर की ऊंचाई पर बना पर्वतों पर विराजमान यह स्थल मैदानी क्षेत्रों के पर्यटकों के लिए खासा रमणीय स्थान है. लेकिन धार्मिक दृष्टि से यह स्थान बहुत ही महत्त्वपूर्ण समझा जाता है.

ऐसा कहा जाता है कि महाभारत युद्ध के बाद पांडव इस स्थान पर आए थे और उन्होंने यह मंदिर बनवाया था. इस ऊंचे समतल स्थान पर बने इस मंदिर के ठीक पीछे बर्फ से लदी विशाल पर्वत चोटियां हैं, जिन्हें देख कर पर्यटक सहज ही रोमांचित हो उठते हैं.

मंदिर के प्रवेश द्वार पर नंदी व विशाल प्रतिमा है. मंदिर के भीत बैल के आकार का एक पत्थर रखा है जिसे अंधविश्वासी लोग कथित भगवान व बैल मानते हैं. इस पत्थर के सामने का भा काठमांडू में है जिसे पशुपतीश्वर कहते हैं इस के चार अन्य भाग गढ़वाल के चार अ स्थानों पर रखे हैं. इस के अतिरिक्त मंदि में पार्वती, पांच पांडवों, कुंती, द्रौपदी औ गणपति की मूर्तियों को भी देखा ज सकता है, जो कलात्मकता की दृष्टि बेजोड़ हैं.

कब जाएं?

केदारनाथ जाने के लिए मई, जून तथ सितंबर, अक्तूबर का समय बहुत उपयुक्त रहता है क्योंकि इन दिनों यहां न तो बरसा



केदारनाथ मंदिर : कलात्मकता की दृष्टि से बेजोड़.▲

होती है और न ही हिमपात होने का डर रहता है. चट्टानों पर बर्फ जमी होने के कारण यहां बारहों महीने ठंडक रहती है.

प्रमुख शहरों से दूरियां

केदारनाथ देहरादून से काफी निकट पड़ता है. दिल्ली से हरिद्वार हो कर केदारनाथ 346 किलोमीटर दूर है. बंबई से केदारनाथ 1,836 किलोमीटर, हावड़ा से 1,659 किलोमीटर और मद्रास से 2,649 किलोमीटर की दूरी पर है. ये सभी दूरियां देहरादून और हरिद्वार हो कर हैं.

कैसे जाएं?

केदारनाथ के लिए बदरीनाथ गंगोत्री, ऋषिकेश, मसूरी, कोटद्वार, काठगोदाम, नैनीताल आदि स्थानों से बसें चलती हैं जो रुद्रप्रयाग तक आती हैं या तिलवाड़ा तक.

रुद्रप्रयाग से केदारनाथ तक का मार्ग 84 कि.मी. लंबा है. बीच में तिलवाड़ा अगस्त्य मुनि कुंड, गुप्तकाशी, सीतापुरी, सोनप्रयाग, गौरीकुंड, रामबाड़ा और गरुड़चट्टी आदि स्थानों को देखा जा सकता है. बसें सोनप्रयाग तक ही जाती हैं, जहां पहुंचतेपहुंचते शाम हो जाती है और रात को सोनप्रयाग में ही ठहरना पड़ता है. उस से आगे सोनप्रयाग से केदारनाथ का 19 कि.मी. का रास्ता पैदल तय करना पड़ता है.

कहां ठहरें?

सोनप्रयाग या सोनप्रयाग से 3 कि.मी. पहले रामपुर पड़ता है जहां होटलों और धर्मशालाओं में सुविधानुसार किराया दे कर ठहरा जा सकता है. गौरीकुंड में भी ठहरने का उचित प्रबंध है. इस के अलावा पर्यटक होटल, यात्री लाज, बिड़ला गेस्ट हाउस, लोक निर्माण विभाग का निरीक्षण गृह, होटल हिमलोक, मंदिर समिति अतिथि गृह भी

ठहर सकते हैं.

क्या देखें?

केदारनाथ मंदिर के अलावा यहां कई ऐसे पर्यटन स्थल हैं जिन्हें देखने के बाद पर्यटक को तनिक भी थकान महसूस नहीं होती.

गांधी सरोवर: यह एक प्राचीन विशाल तालाब है, गांधी की राख को 1948 में इसी तालाब में विसर्जित किया गया था. पहले इस का नाम चोटावादी ताल था. इसी तालाब से मंदाकिनी का उदय हुआ है.

वासुकी ताल: केदारनाथ से 8 किलोमीटर दूर वासुकी नामक एक तालाब है जिसे देखे बिना पर्यटक रह नहीं पाता.

मंदाकिनी घाटी: मंदाकिनी केदारनाथ के पास ही एक सुंदर घाटी है जहां की सुंदरता सहज ही पर्यटकों का मन लुभाती है. इस के अतिरिक्त सोनप्रयाग से 26 कि.मी. दूर गुप्तकाशी है. जहां अर्द्धनारीश्वर मंदिर और चंद्रशेखर महादेव मंदिर देखने योग्य हैं. गुप्तकाशी से एक पैदल मार्ग भदमहेश्वर तक जाता है. गुप्तकाशी से 5 कि.मी. दूर कुंद से एक पक्की सड़क इखीमठ, चौपता और चमोली होती हुई बदरीनाथ तक जाती है. और यहीं से एक मार्ग पैदल ही तुंगनाथ तक जाता है. इन के अलावा भीमगुफा, मधुगंगा, स्नो व्यू, क्षीर गंगा, भैरों शिला, उदक कुंड, हंस कुंड तथा रेत कुंड भी यहां के दर्शनीय स्थल हैं.

आवश्यक अतिरिक्त जानकारी:

केदारनाथ की यात्रा पर जाते समय हैजे का टीका अवश्य लगवा लें. और यात्रा के दौरान उबला पानी ही पीएं. यहां सरदी अधिक पड़ती है इसलिए पर्याप्त मात्रा में गर्म कपड़े ले कर चलें. साथ ही टार्च, बरसाती, छतरी लें तो अच्छा रहेगा.

गंगोत्रीयमुनोत्री

यमुनोत्रीगंगोत्री की यात्रा आप हरिद्वार या ऋषिकेश से आरंभ कर सकते हैं. इस यात्रा के लिए बस सेवाएं उपलब्ध हैं. आप अपना आरक्षण पहले से करवा लें तो अति उत्तम, अन्यथा थोड़ी असुविधा होती है. बस में स्थान की कमी के फलस्वरूप आप को अपनी यात्रा का समय संभवतः बढ़ाना पड़े.

इन पहाड़ी यात्राओं में सामान कम से कम ले जाएं. पहनने के दोतीन जोड़े कपड़े जो आसानी से धुल सकें, एक दरी, चादर और तकिया, खाने की सूखी वस्तुएं एवं पीने के लिए पानी—इन्हीं वस्तुओं के साथ अपनी यात्रा प्रारंभ करें. गरम कपड़े साथ रखना न भूलें.

ऋषिकेश से 12 बजे दिन में चल कर बस शाम को लगभग 6 बजे 'ब्रह्मखाल' नामक स्थल पर रात्रि विश्राम के लिए रुकती है. यह एक छोटा सा पहाड़ी कसबा है. यहां खानेपीने की आवश्यक वस्तुएं उपलब्ध हैं. यात्रियों के लिए रात्रि निवास के लिए छोटेछोटे कमरे भी उपलब्ध हैं.

इन पहाड़ी रास्तों में बस सेवा संध्या छः या सात बजे के बाद सामान्यतः बंद हो जाती है, अतः प्रत्येक रात्रि में आप को अपना ठिकाना ढूंढ़ना है. यदि आप अधिक व्यय करने की स्थिति में हैं तो आप उस बस सेवा से संपर्क स्थापित करें, जो रात्रि निवास की व्यवस्था भी करती है. प्रत्येक रात्रि में नए स्थल पर नया ठिकाना ढूंढ़ना कुछ कठिन कार्य है. यदि आप चारपांच सदस्यों के साथ यात्रा कर रहे हैं तो रात्रि निवास में आप को सुविधा होगी. एक कमरे का किराया तीसचालीस रुपयों से ले कर पचाससाठ तक होता है. यदि आप अकेले ही यात्रा कर रहे हैं तो सहयात्रियों से मेलजोल बढ़ाने का प्रयास करें और रात्रि निवास मिलजुल कर करें.

दूसरे दिन प्रातः छः बजे चल कर



गंगोत्री मंदिर : हिमाच्छादित पर्वतमालाओं के बीच में बना खूबसूरत मंदिर. ▲

मध्याह्न में एक बजे के लगभग 'हनुमान चट्टी' पहुंचे. यहीं बस सेवा समाप्त हो जाती है. यमुनोत्री जाने के लिए यहां से पैदल का रास्ता है. हनुमान चट्टी से यमुनोत्री की दूरी 13 किलोमीटर है. यहां से आप पैदल, घोड़ा, कंडी और ढोकों से अपनी यात्रा आरंभ कर सकते हैं. कंडी खुली पालकी होती है, जिसे चार व्यक्ति उठा कर चलते हैं. ढोको लंबी टोकरी सदृश बांस की बनी वस्तु है, जिस में छोटे बच्चों या बूढ़ों को बैठा कर कुली अपनी पीठ पर रखते हैं. इस में एक पट्टा बना होता है, जिसे वे अपने सिर में फंसा लेते हैं. यदि आप स्वस्थ हैं और आप के लिए शीघ्र ही वापस लौटना अनिवार्य न हो तो आप पैदल ही यात्रा करें.

पहाड़ काट कर बनी सड़क असुविधाजनक है.मार्ग कहीं संकरा, कहीं ढालू और कहीं ऊंचा है. एक ओर पर्वत तथा दूसरी ओर हजारों फुट गहरी खाई है.

पहाड़ी मौसम का कोई भरोसा नहीं. कब आकाश स्वच्छ रहेगा और कब वर्षा होगी, आप अनुमान नहीं कर सकते. अतः अपनी सुविधा हेतु अपने साथ एक बरसाती अवश्य रखें. ऊबड़खाबड़ भूमि पर चलने में सुविधा हो, अतः हलके कपड़े वाले जूते भी साथ रखना न भूलें.

हनुमान चट्टी से यमुनोत्री की यात्रा में एक रात्रि आप को किसी चट्टी पर बितानी होगी. सामान्यतः पर्यटक (जानकीबाई चट्टी) में ही अपनी रात्रि बिताते हैं. इस चट्टी में रहने की व्यवस्था है. सामान्य मूल्य चुका कर आप रजाई, कंबल तथा गद्दा पा सकते हैं. अतः बिस्तर आदि ले जाने की कतई

आवश्यकता नहीं है.

'हनुमान चट्टी' से 5 किलोमीटर ऊपर यमुनोत्री है. यहां गर्म पानी का एक कुंड तथा एक सूर्य मंदिर है. गर्म जल में स्नान कर आप थकान मिटा सकते हैं. अनेक पर्यटक इस कुंड के गर्म जल में कपड़े की पोटली में चावल, आलू आदि डाल कर उबाल लेते हैं.

इस लंबी पहाड़ी यात्रा में पर्यटकों को शौचालय की असुविधा हो सकती है. अनेक यात्री जहांतहां गंदगी कर के वातावरण को तो प्रदूषित करते ही हैं, साथ ही इस से अनेक बीमारियां फैलने का भी डर रहता है. जहां इतने यात्री एकत्रित होते हैं, उन स्थलों पर सरकार को 'शौचालय' की समुचित व्यवस्था करनी चाहिए.

मनोहारी दृश्यावलि

मार्ग में सर्वत्र प्राकृतिक सुषमा आप का मन मोह लेगी. हिमाच्छादित पर्वत मालाएं, दुग्ध धवल झरने, चट्टानों से टकराती यमुना नदी—इन दृश्यों से दृष्टि हटाने की इच्छा नहीं होती. चीड़ के कद्दावर वृक्ष, पहाड़ों के ढलान पर सीढ़ीनुमा खेत तथा उन में काम करते सीधे सरल पहाड़ी—महानगरों से सर्वथा विपरीत दुनिया है. तुषारमंडित पर्वतों पर सूर्यास्त का दृश्य अत्यंत ही मनोहारी होता है. चांदी जैसी पर्वत की बर्फीली चोटियां, डूबते सूर्य की रश्मियों के संपर्क से पीत स्वर्ण में परिवर्तित हो जाती हैं.

'हनुमानचट्टी' से चल कर पुनः रात्रि में पड़ाव डालना पड़ता है. यह पड़ाव 'बड़कोट' में हो सकता है. बड़कोट से गंगोत्री के लिए बसें चलती है. मार्ग पहाड़ी ही है, परंतु अपेक्षाकृत सुगम है. यहां चीड़ के साथ 'देवदार' के वृक्ष भी दृष्टिगोचर होते हैं. लंबे किंतु छितरे 'देवदार' के वृक्ष बांहें पसार कर यात्रियों का स्वागत करते हुए.

'गंगोत्री' से 10 किलोमीटर पहले हरसिल नामक स्थल है, जहां हमारी सैनिक चौकी है. इस स्थल से आगे मार्ग संकरा है—आनेजाने वाली बसें बारीबारी से चलती हैं. जब एक ओर से बसें छूटती हैं तो दूसरी ओर बसें प्रतीक्षा करती हैं.

हरसिल के पश्चात 'भैरो घाटी' है, जिस की ऊंचाई समुद्र तल से 9,000 फुट है. इस के पश्चात 'गंगोत्री' गंगा के शीतल एवं निर्मल जल को स्पर्श कर आती हुई बयार तनमन को शीतल कर देती है. मई के महीने में ही, स्वेटर और शाल में लिपट कर भी हम ठंड का अनुभव करते हैं.

गंगोत्री तक बस जाती है, अतः वहां पहुंचने में आप को असुविधा नहीं होगी. यहां भी अन्य पहाड़ी स्थलों की भांति रजाईकंबल उपलब्ध होते हैं. आवास अपेक्षाकृत महंगा है. जैसेजैसे रात्रि बढ़ती है, ठंड बढ़ती जाती है. प्रातः की अपेक्षा संध्या समय गंगा स्नान करना अधिक सुविधाजनक है.

गंगा के किनारे गंगा देवी का एक मंदिर है. यहां एक छोटा सा बाजार है जहां खानेपीने की दोतीन सामान्य दुकानें हैं. खाना अत्यंत महंगा है, पर 11,000 फुट की ऊंचाई पर यात्रियों के लिए समस्त आवश्यक वस्तुओं को उपलब्ध कराना ही अपनेआप में आश्चर्य का विषय है.

गंगा की स्वच्छता

यदि आप वास्तव में गंगा की स्वच्छता देखना चाहते हैं, तो गंगोत्री अवश्य जाएं. हिमशीतल जल के स्पर्श से समस्त शिराएं झनझना उठती हैं.

तट पर गंगा का जल छिछला परंतु वेगवान है. बिना किसी पात्र की सहायता से आप स्नान करने में समर्थ नहीं हो सकेंगे. तट पर बैठ कर लोटे से स्नान अधिक सुरक्षित रहता है.

भोजन सात्विक मिलता है. बिना प्याजलहसुन की सब्जी, रोटी और दाल. मिठाई के नाम पर जलेबियां और पीने को गर्म चाय. गंगोत्री में और कोई दर्शनीय स्थल नहीं है.

15 कि. मी. आगे गोमुख है, जो गंगा का उद्गम स्थल है, पर वहां का मार्ग अत्यंत

कठिन है. साधारणतः यात्री गंगोत्री से ही वापस लौटते हैं. गंगा में कपड़े धोना एवं साबुन का प्रयोग करना सर्वथा वर्जित है.

गंगोत्री में रात्रि पड़ाव ही पर्याप्त है. सितंबरअक्तूबर में समस्त निवासी नीचे उतर आते हैं. ठंड की अधिकता से वहां ठहरना कठिन हो जाता है.

गंगोत्री से आप अपनी यात्रा केदारनाथ की ओर भी मोड़ सकते हैं और वापस ऋषिकेश भी आ सकते हैं.

ऋषिकेश

ऋषिकेश भागीरथी के दक्षिणी तट पर तीन ओर पर्वतमालाओं से घिरा 1,120 वर्ग मील में फैला, समुद्रतल से 1,110 फुट की ऊंचाई वाला धार्मिक पर्यटन स्थल है.

देहरादून जिले में देहरादून से 42 कि.मी. और हरिद्वार से 24 कि.मी. की दूरी पर स्थित ऋषिकेश जाने के लिए यों तो वर्ष पर्यंत जाया जा सकता है लेकिन मई व जून के महीनों में ऋषिकेश जाना उचित रहता है. इन दिनों यहां मौसम रमणीय रहता है. देशीविदेशी सभी तरह के पर्यटकों को सितंबरअक्तूबर की निराली छटा एक बार फिर अपनी ओर आकर्षित करने में सफल रहती है.

बड़े शहरों से दूरी

दिल्ली से ऋषिकेश	585 कि.मी.
बंबई से ऋषिकेश	2,075 कि.मी.
हावड़ा से ऋषिकेश	1,898 कि.मी.
मद्रास से ऋषिकेश	2,888 कि.मी.

कैसे जाएं?

ऋषिकेश रेल, वायु तथा स्थल मार्ग से देश के सभी प्रमुख शहरों से जुड़ा हुआ है. ऋषिकेश पहुंचने के लिए पहले हरिद्वार पहुंचना पड़ता है. हरिद्वार से रेलगाड़ी के अलावा हर दसपंद्रह मिनट के अतंराल से बसें व टैक्सियां आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं.



कहां ठहरें?

ऋषिकेश में ठहरने के लिए होटलों व धर्मशालाओं की समुचित व्यवस्था है. जगहजगह धर्मशालाएं हैं. रेलवे स्टेशन के निकट इंद्रलोक और बस अड्डे के पास मेनका होटल साफसुथरे हैं. इन के अतिरिक्त देहरादून मार्ग पर जनता टूरिस्ट लाज है. हाल में एक नया भव्य होटल ऋषिकेश भी खुला है जो महंगा है पर आधुनिक सुविधाओं से भरपूर है.

सरकारी आवासों में पर्यटन विभाग का पर्यटन बंगला ठहरने के लिए बढ़िया जगह है. लेकिन इस के लिए संबंधित अधिकारी से अनुमति लेना आवश्यक हैं. पता हैः क्षेत्रीय पर्यटक कार्यालय, लालता राव ब्रिज स्टेशन रोड, हरिद्वार तथा पर्यटक सूचना केंद्र, रेलवे स्टेशन, हरिद्वार - 1.

क्या देखें?

लक्ष्मण झूलाः गंगा नदी पर लक्ष्मण के नाम पर बना यह पुल कलकल बहती जलधारा से 150 मीटर की ऊंचाई पर है, जो मोटेमोटे तारों को बुन कर बनाया गया है. यहां से चारों ओर फैली हरियाली की सुंदर छटा का आनंद उठाया जा सकता है.

गीता भवनः लक्ष्मण झूला पार करते ही पर्यटक गीता भवन पहुंच जाते हैं, जो आधुनिक शिल्प कला का एक नमूना है. रामपुल नवनिर्मित पुल से गीता भवन बहुत ही सुविधाजनक है. यहां पर स्कूटर, कुली, टैक्सी आदि भी उपलब्ध हैं.

आसपास के दर्शनीय स्थल :

भारत मंदिर, त्रिवेणी घाट, पुष्कर मंदिर, स्वर्गाश्रम और बैराज पशुलोक आदि स्थान भी देखने लायक हैं.

क्या खरीदें?

गीता प्रेस के कपड़े, चादरें, बेड कवर, साड़ी, कुर्ते यहां आसानी से उपलब्ध हैं. चोटी वाले होटल के देसी घी का भोजन जरूर खाएं.

पर्यटन कार्यालय का पताः

क्षेत्रीय पर्यटन कार्यालय, हरिद्वार.
पर्यटन कार्यालय, ऋषिकेश.

हरिद्वार



हरिद्वार वैसे तो प्रमुख तीर्थस्थल है, पर सैलानियों के लिए भी यह बुरा स्थान नहीं है. उत्तर प्रदेश के तीर्थयात्रियों के लिए यह सब से पहला पड़ाव है. गंगा के दाएं किनारे पर स्थित शिवालिक पर्वतों की घाटी में गंगा यहीं से मैदानी भाग में आती है हर की पैड़ी व पास की गंगा का पानी साफ है तथा इस का वेग व कलकल मनमोहक है. इस पर्यटन स्थल पर जाइए जरूर, बस, सावधानी बरतिए कि पिंडदान, तर्पण व अस्थि प्रवाह के चक्करों में पड़ कर इस सुरम्य स्थल की प्राकृतिक छटा को न भूलें.

गरमियों में यहां पर ठंडे बर्फीले पानी की तेज जलधारा पर्यटकों को राहत देती है. यहां के घाट घंटों नहाते हुए पर्यटकों को शीतलता प्रदान करते हैं. वैसे इस पर्यटन



स्थल पर गरमियों में ही अधिक भीड़भाड़ होती है.

कब जाएं?

हरिद्वार समुद्र सतह से 292.7 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है. लगभग सवा लाख जनसंख्या वाला यह पर्यटन स्थल पर्यटकों की आवश्यकताएं पूर्ण करने में सक्षम नहीं है. फिर भी साल भर पर्यटकों का तांता सा लगा रहता है. तीर्थस्थान होने के कारण वर्ष भर लोग यहां आते हैं और तीर्थस्थानों पर होने वाले छलफरेबों के शिकार बनते देखे जा सकते हैं. यहां के होटल वाले, रिकशे वाले और बस व तांगे वाले सब इस 'पुण्य' नगरी में आए लोगों को लूटने में लगे रहते हैं. अतः पगपग पर सावधानी की आवश्यकता है. हरिद्वार सभी मौसमों में जाने के लिए उपयुक्त है.

प्रमुख शहरों से दूरी

हरिद्वार रेल, वायु व स्थल मार्ग से देश के सभी प्रमुख शहरों से जुड़ा हुआ है.

दिल्ली से हरिद्वार (रेल द्वारा): 263 किलोमीटर (बस द्वारा):205 कि.मी. आगरा से हरिद्वार (बस द्वारा):368 कि.मी.,

हर की पैड़ी : सब से व्यस्त इस घाट पर सुबहशाम नहाने वालों की भीड़ लगी रहती है. ▲

मेरठ से हरिद्वार (बस द्वारा):142 कि.मी., देहरादून से हरिद्वार (बस द्वारा):55 कि.मी.

हरिद्वार बदरीनाथ, केदारनाथ, यमुनोत्री, गंगोत्री जाने वालों के लिए एक पड़ाव स्थल भी है. यहां से इन स्थानों के लिए बसें उपलब्ध हो जाती है परंतु उन बसों में पहले से ही आरक्षण करा लेना ठीक रहता है.

हवाई जहाज से यात्रा करने वाले पर्यटकों के लिए हरिद्वार के लिए निकटतम हवाई अड्डा जौली ग्रांट (भानियांवाला) है, जो हरिद्वार से 34 कि. मी. दूर है. दिल्ली और लखनऊ से यहां के लिए वायुदूत सेवा भी उपलब्ध है.

कहां ठहरें?

हरिद्वार में ठहरने के लिए वैसे तो पर्याप्त होटल व धर्मशालाएं हैं, लेकिन उन की दरें और सुविधाएं अलगअलग हैं. होटलों का किराया 25 रुपए से 125 रुपए प्रतिदिन तक है (ये किराए सीजन के दिनों में बढ़ भी सकते हैं) गुरुदेव, कैलाश, आरती,

होलीडे इन, अशोक पैलेस, न्यू रायल आदि होटलों में ठहरा जा सकता है.

धर्मशालाएं

वैसे तो हरिद्वार में धर्मशालाओं की भरमार है लेकिन अधिकांश धर्मशालाओं में वहां के व्यवस्थापक कमरा देने में आनाकानी करते हैं तथा पर्यटकों से अपेक्षा करते हैं कि पर्यटक उन्हें कुछ रकम ऊपर से भी दें. हर की पैड़ी पर भी कई धर्मशालाएं हैं. यहां पर स्थित धर्मशालाओं में 2 रु. से 5 रु. प्रति व्यक्ति तक किराया लिया जाता है. इन धर्मशालाओं में अकसर पानी की किल्लत होती है तथा किसीकिसी में तो सफाई का अभाव भी रहता है. कुछ प्रमुख धर्मशालाएं इस प्रकार हैं: काली कमली, धनदेवी, बसंतीदेवी, ननकीबाई, भटिंडा वाली, अमृतसर वाली, गीता भवन आदि.

इन के अलावा भी हरिद्वार में ठहरने के लिए अनेक उपयुक्त स्थान हैं, जो इस प्रकार हैं:

ठहरने के लिए उपयुक्त स्थान

टूरिस्ट बंगला : इस के लिए आरक्षण टूरिस्ट, आफिसर, हरिद्वार द्वारा कराया जा सकता है.

जिला परिषद निरीक्षण हाउस, बस अड्डे के पास. (इस के लिए आरक्षण जिला अधिकारी सहारनपुर द्वारा कराया जा सकता है)

वन विश्राम गृह, रानीपुर (इस के लिए आरक्षण, डी.एफ.ओ., देहरादून डिविजन, सहारनपुर, से आरक्षण कराया जा सकता है).

पी. डब्ल्यू. डी. निरीक्षण गृह, भीमगोड़ा रोड (आरक्षण एस.डी.ओ.,पी. डब्ल्यू. डी.,हरिद्वार द्वारा कराया जा सकता है).

रेलवे विश्राम कक्ष (आरक्षण, रेलवे स्टेशन मास्टर, हरिद्वार, द्वारा कराएं).

पर्यटक आवासगृह, बेलवाला, हरिद्वार में भी ठहरा जा सकता है. यह आवासगृह उत्तर प्रदेश राज्य पर्यटन विकास निगम की एक इकाई है. इस के लिए आरक्षण निम्न पते पर कराया जा सकता है:

प्रबंधक, पर्यटक आवासगृह, बेलवाला, हरिद्वार. इस आवासगृह में 4 डीलक्स एयरकूल्ड कमरे उपलब्ध हैं, जिन का किराया 80 रु. प्रति कमरा है तथा 10

रोपवे द्वारा मनसादेवी मंदिर तक जाने का अपना ही मजा है. ▼



लक्स कमरे हैं, जिन का किराया 60 रु.
त कमरा है. डारमेटरी में 10 शय्याएं हैं
न का किराया 10 रु. प्रति शय्या है.

इन के अलावा डाक निरीक्षण भवन,
यापुर, सा.लि.वि.नि. भवन, भीमगोडा,
विश्रामगृह रानीपुर में भी ठहरा जा
कता है.

ा देखें?

हर की पैड़ी: यह घाट हरिद्वार का सब
प्रमुख घाट है. यहां बच्चे, बूढ़े, स्त्री, पुरुष
पानी में नहाते नजर आते हैं. घाट पर
छ पंडों ने अपनीअपनी दुकानें भी खोल
ी हैं, जहां वे नहाने वाले यात्री का सामान
खवा लेते हैं तथा नहा लेने के बाद यात्री के
थे पर चंदन का टीका लगा कर उस से पैसे
गते हैं. यहां सावधान रहने की जरूरत है.
ाने आने से पहले आप अपना कीमती
मान व नगदी होटल में ही रख आएं.

हर की पैड़ी पर हर 12 साल बाद कुंभ
हर छः साल बाद अर्धकुंभ का मेला लगता

शाम को गंगा में विसर्जित किए जाने
ले दीपों का दृश्य बड़ा मनोहारी लगता है.

कनखल: हरिद्वार रेलवे स्टेशन से लगभग
कि. मी. दूर कनखल है. जहां राजा यक्ष
प्रजापति मंदिर तथा रामघाट है. वैसे इस
ाह और कोई खास चीज देखने की नहीं
सिर्फ साधु संन्यासियों द्वारा बनाए हुए
ई आश्रम ही हैं.

सप्तऋषि आश्रम: लगभग 6 कि.मी.
यह स्थान प्रकृति की छटा से ओतप्रोत है
ां पावनधाम व परमार्थ आश्रम दर्शकों को
कर्षित करते हैं. पावनधाम में शीशों से
मंदिर की अनुपम छटा दर्शनीय है.
मार्थ आश्रम में सिर्फ देवीदेवताओं की
र्तियां ही हैं. यहां पहुंचने के लिए नगर से,
वे स्टेशन के बाहर ही नगर सेवा की बस
लब्ध हो जाती है.

मनसा देवी मंदिर: यह मंदिर बिल्व
त पर स्थित है. यहां पैदल अथवा रज्जु
र्ग से जाया जा सकता है, जो 'रतन
कीज' से शुरू होता है. रज्जुमार्ग (रोपवे)
से आने जाने का अपना अलग ही आनंद है इस
का किराया लगभग छः रु.प्रति व्यक्ति है.
यहां घूमने के लिए प्रातः 8-00 बजे से 12
बजे तक एवं दोपहर 2 बजे से सायं 6 बजे
तक जाया जा सकता है. ऊपर पहुंच कर
दूरदूर तक पहाड़ियों का नजारा पर्यटकों के
आनंद में वृद्धि कर देता है.

भीमगोडा तालाब: हरिद्वार से
ऋषिकेश जाने वाले मार्ग पर भीमगोडा
तालाब लगभग 2.5 किलोमीटर की दूरी
पर पड़ता है. ऐसा कहा जाता है कि जब
पांडव हरिद्वार होते हुए हिमालय जा रहे थे
तो भीम के घुटना दबाने से यह कुंड उत्पन्न
हुआ था. पर यहां अब गंदगी का आलम है.

चंडी देवी मंदिर: यह मंदिर गंगा नदी
के ठीक दूसरी तरफ नील पर्वत पर बना हुआ
है. इस के साथ ही गौरी शंकर महादेव तथा
अंजनीदेवी के मंदिर हैं. तीन किलोमीटर
पैदल चल कर यहां पहुंचने पर दूरदराज़
तक फैली पर्वतमालाओं को निहारा जा
सकता है.

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय: स्वामी
श्रद्धानंद द्वारा स्थापित यह विश्व विद्यालय
भारत के विख्यात शिक्षा संस्थानों में से एक
है.

अवधूत मंडल के पास एक नवनिर्मित
पारे का बना शिव लिंग है. यहां पर बहुत
भारी रुद्राक्ष का पेड़ देखने लायक है.

यह स्थान ऋषिकेश मार्ग पर 6
किलोमीटर की दूरी पर है. आसपास के
दर्शनीय स्थलों के अलावा संग्रहालय, ब्यूटी
पाईंट, दूधारी मंदिर, मायापुरी में मायादेवी
का मंदिर, दक्ष मंदिर एवं सतीकुंड और
अवधूत मंडल आदि भी देखने योग्य स्थल हैं.

क्या खरीदें?

हरिद्वार में बांस व बेंत की बनी अच्छी
वस्तुएं मिलती हैं. पीतल की गंगाजली,
पीतल की मूर्तियां, बिंदी लगाने के सांचे,
रुद्राक्ष, काले शिवलिंग पत्थर खरीदे जा
सकते हैं.

पर्यटन कार्यालय का पता:

क्षेत्रीय टूरिस्ट ब्यूरो, हरिद्वार.



नैनीताल

उत्तर प्रदेश के उत्तरी भाग में हिमाच्छादित पर्वतों के अंचल में चलें तो कुमाऊं प्रदेश में है नैनीताल, जो वर्षों तक राज्य की ग्रीष्मकालीन राजधानी रही है. 1841 में बैरन नामक एक अंगरेज यात्री द्वारा खोजा गया नैनीताल समुद्र की सतह से 1,938 मीटर की ऊंचाई पर बसा हुआ एक प्रमुख पर्यटक केंद्र है. मसूरी के बाद यह उत्तर प्रदेश का सब से प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है.

नैनीताल को पहले छकता कहा जाता था, जिस का अर्थ 60 झीलों वाला क्षेत्र होता है. इन्हीं झीलों से घिरा होने के कारण इसे नैनीताल कहा जाता है. यही नहीं, यहां के प्रसिद्ध मंदिर नैनादेवी के नाम को जोड़ कर भी इसे नैनीताल कहते हैं.

कब जाएं?

नैनीताल जाने के लिए मार्च से जून और मध्य सितंबर से अक्तूबर के अंत तक का समय उपयुक्त है लेकिन हर पर्वतीय स्थल पर जाने की तरह नैनीताल जाते समय भी गरमियों से हलके ऊनी कपड़े और सर्दियों में मोटे ऊनी कपड़े जरूर ले जाएं क्योंकि यहां मौसम का कोई भरोसा नहीं. क्षण भर में धूप निकल आती है और क्षण भर में बादल घिर आते हैं और बारिश होने लगती है.

प्रमुख शहरों से दूरी

नैनीताल दिल्ली से 322 किलोमीटर, बंबई से 1838 किलोमीटर, हावड़ा से 1403 किलोमीटर, मद्रास से 2,566 किलोमीटर दूर है. ये सभी दूरियां काठगोदाम हो कर हैं. हां, मद्रास से नैनीताल के लिए इलाहाबाद, लखनऊ से काठगोदाम हो कर जाना पड़ता है.

कैसे जाएं?

नैनीताल देश के प्रमुख बस मार्गों द्वारा अन्य हिस्सों से जुड़ा हुआ है: अलमोड़ा,

ली; मुरादाबाद, रामपुर, हलद्वानी, ोखेत, बरेली, हरिद्वार, देहरादून और ानी से नैनीताल बसों द्वारा सुविधापूर्वक चा जा सकता है.

नैनीताल का समीप का हवाई अड्डा नगर 71 किलोमीटर की दूरी पर है, जहां लिए दिल्ली से वायुदूत सेवा उपलब्ध है. नगर उतरने के बाद वहां उपलब्ध बसों र टैक्सियों द्वारा आसानी से नैनीताल चा जा सकता है.

ां ठहरें?

नैनीताल में ठहरने के लिए पर्याप्त टल, धर्मशालाएं आदि हैं. दैनिक जरूरतों चीजों को खरीदने के लिए भी यहां दुकानें र स्टोर उपलब्ध हैं.

ग्रैंड, (नैनीताल झील के किनारे स्थित) स, रायल होटल अत्याधुनिक सुविधायुक्त ढ़िया होटलों में से हैं. अलका, अजंता, कम गे हैं. अच्छे होटलों में आल्पस, अरोमा, सडर, अनुपम, अशोक, सेंट्रल, एवरेस्ट, ली, मेटरोपोल, हिलव्यू, इंडिया, राजा, राजदूत, सेवाय, सोलर, होटलों में रुपए से 500 रुपए तक प्रतिदिन के ाए पर ठहरा जा सकता है. इस के अलावा भिन्न संस्थानों द्वारा निर्मित हालीडे होम्स ी ठहरा जा सकता है.

आर्यसमाज मंदिर, लाला परमशिवलाल समिति धर्मशाला, और गुरुद्वारे के ावा अंजुमन ए इसलामिया मुसाफिर खाने ी रुका जा सकता है.

रिक्त आवासीय सुविधाएं

पर्यटक गृह (आरक्षण: सहायक शक पर्यटन, कुमाऊं, नैनीताल.), यूथ टल (आरक्षण: वार्डन यूथ होस्टल, ताल.), नैनीताल क्लब (आरक्षण: राज्य त्ति अधिकारी, यू. पी. सचिवालय, नऊ.), सार्वजनिक निर्माण विभाग का क्षण गृह (आरक्षण: अधिशासी नयंता, सार्वजनिक निर्माण विकास ीय खंड, नैनीताल).

नैनीताल जाने के मौसम में पर्यटकों की या काफी बढ़ जाती है, इसलिए अच्छा रहेगा कि जाने से पहले वहां आरक्षण करवा लिया जाए.

ज्यादा जानकारी के लिए नजदीकी उत्तर प्रदेश के पर्यटन ब्यूरो से संपर्क करें.

क्या देखें?

हरियाली से आच्छादित सात पहाड़ियों से घिरे नैनीताल में घुसते ही झीलों की नगरी आप के आगमन में अपने सौंदर्य की पलकें बिछा देगी. झीलों ने नैनीताल को एक अनुपम सौंदर्य प्रदान किया है, जिन में झांकता शहर का रूप रात की रंगीन रोशनी में तो और भी अधिक हो जाता है. इस के अलावा नौका विहार, तैराकी, घुड़सवारी व पर्वतारोहण यहां के मनोरंजनों में मुख्य आकर्षण हैं.

नैनापीक: नैनीताल के चारों तरफ फैली सात पहाड़ी चोटियों में नैनापीक सब से ऊंची है. समुद्र की सतह से 2,611 मीटर की ऊंचाई पर स्थित इस पहाड़ी से हिमालय की गोद में सिमटी झील के मनोरम दृश्यों का आनंद उठाया जा सकता है. लड़िया कांटा दूसरी सब से (2,481 मीटर) ऊंची चोटी है. यहां से झील के किनारे बसे शहरी क्षेत्र की भव्य झलक दिखाई पड़ती है. स्नोव्यू 2,270 और

रोपवे का मजा मल्लीताल से स्नोव्यू तक लिया जा सकता है. ▼





नौकुचियाताल : पहाड़ और पेड़ों से घिरा अपने आप में अद्वितीय.

डोरोथी सीट 2,292 मीटर एवं लैंड्स एंड 2,481 मीटर से खुरपाताल का भव्य दर्शन और पहाड़ी ढलानों पर फैले हरेभरे खेतों की सुंदरता देखते बनती है.

हनुमान गढ़ी: **शहर से लगभग 3.2 किलोमीटर की दूरी पर स्थित कलात्मक मंदिरों वाले इस स्थान से सूर्यास्त देखने का आनंद उठाया जा सकता है.**

वेधशाला: **खगोल विद्या पर अनुसंधान कार्य के लिए चर्चित 2.2 किलोमीटर की दूरी पर स्थित इस वेधशाला से पर्यटक चांद, सितारों, ग्रहों और कृत्रिम उपग्रहों को दूरबीन से ढूंढ़ कर उस की स्थिति का अवलोकन कर सकते हैं. यह वेधशाला मनोरा पहाड़ की चोटी पर अंतरिक्ष अध्ययन का एक महत्त्वपूर्ण केंद्र है.**

किलबरी: **लगभग 10 किलोमीटर की दूरी पर घने पेड़ों से घिरा यह एकांत स्थान एकांत प्रिय पर्यटकों को काफी राहत देने वाला है.**

खुरपाताल: **10 किलोमीटर की दूरी पर ही स्थित यहां एक छोटी सी सुंदर झील है, जहां मछली मार कर आप अपना शौक पूरा कर सकते हैं.**

रमणीक खेल स्थान: **झील के उत्तरी कोने पर यह एक विशाल मैदान है, जो कुमाऊं के सब से बड़े खेल मैदानों में से एक है. कई खेल संस्थाएं हर वर्ष यहां आ कर अपनी प्रतिभा से पर्यटकों को अभिभूत करती हैं. रात्रि में इसी स्थान पर सांस्कृतिक आयोजनों की संपन्नता भी पर्यटकों के आकर्षण का एक मुख्य केंद्र है.**

राजभवन: **अपने सुंदर उद्यानों और गोल्फ मैदानों के लिए प्रसिद्ध राजभवन उत्तर प्रदेश के राज्यपाल का ग्रीष्मकालीन निवास है, जो रविवार के दिन पर्यटकों के लिए खोला जाता है.**

आसपास के दर्शनीय स्थल

रामगढ़: **फलदार बगीचों का घर रामगढ़ नैनीताल से 26 किलोमीटर की दूरी पर है. फूलों से घिरे इस बगीचे की शोभा में प्राकृतिक सौंदर्य ही नहीं, बल्कि सेब, नाशपाती, आड़ू, चेरी और खूबानी भी चार चांद लगाते हैं. साहित्यकारों को यह स्थान विशेष रूप से प्रिय है. दिवंगत महादेवी वर्मा**


मोनॅको फिर से बड़े पैक में !
PARLE
MONACO
पारले
मोनॅको

ने तो अपना ग्रीष्मकालीन घर ही यहां बना रखा था.

भीमताल: महाभारत के योद्धा भीम के नाम पर रखे गए इस स्थान की दूरी शहर से 23 किलोमीटर है. यहां की सब से बड़ी इस झील में नौकायन का आनंद लें. इस के बीच में बनाया गया टापू एक पिकनिक स्थल की भूमिका निभाता है. मछलीमारों के लिए मत्स्य विभाग ने यहां विशेष सुविधाएं जुटाई हैं. इस के अलावा यहां एक पर्यटक आवास गृह भी है, जहां ठहरने के लिए आरक्षण कराना जरूरी है.

नौकुचिया ताल: भीमताल से 3 किलोमीटर की दूरी पर स्थित 9 कोनों के टेढ़ेमेढ़े आकार वाले इस ताल के बारे में कहा जाता है कि किसी भी एक स्थान से इस के 9 कोनों को एक साथ नहीं देखा जा सकता. कमल के फूलों से भरा यह ताल पहाड़ों और पेड़ों से घिरा है. इस ताल में 20 पौंड तक की मछलियां पाई जाती हैं.

सातताल: भीमताल से ही 4 किलोमीटर की दूरी पर यह सरोवरों का एक सुंदर समूह है. यहां प्रकृति का शासन ही सर्वोपरि है. बांध बन जाने से यहां पानी भी काफी मात्रा में रहता है. प्रतिवर्ष हजारों पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करने वाले इस स्थल पर भी एक आवास गृह है. यहां आरक्षण करा कर ठहरा जा सकता है.

मुक्तेश्वर: नैनीताल से 52 किलोमीटर की दूरी पर स्थित इस स्थान से हिमालय की विहंगमता सरलता से देखी जा सकती है. यहीं पर भारतीय पशु चिकित्सा का शोध संस्थान भी है. पर्यटकों के लिए यहां के डाक बंगलों में रहने की उचित व्यवस्था है.

ज्योलीकोट: यहां से 18 किलोमीटर दूर ज्योलीकोट एक नया उभरता स्वास्थ्य लाभ का रमणीक पर्यटन स्थल है. यह शहद के व्यवसाय के लिए खासा प्रसिद्ध है.

क्या खरीदें?

मुलायम लकड़ी पर की गई नक्काशी से सुसज्जित काष्ठ कलाकृतियां यहां की विशेषता हैं, जिन्हें खरीदा जा सकता है. इस के अलावा, फलों में सेब, नाशपाती, खूबानी तो खरीदे ही जा सकते हैं. यहां एक विशेष प्रकार की मोमबत्ती भी खरीदी जा सकती है जो जलने पर विशेष सुगंध देती है. ये मोमबत्तियां यहां ही बनाई जाती हैं.

अधिक जानकारी के लिए लिखें

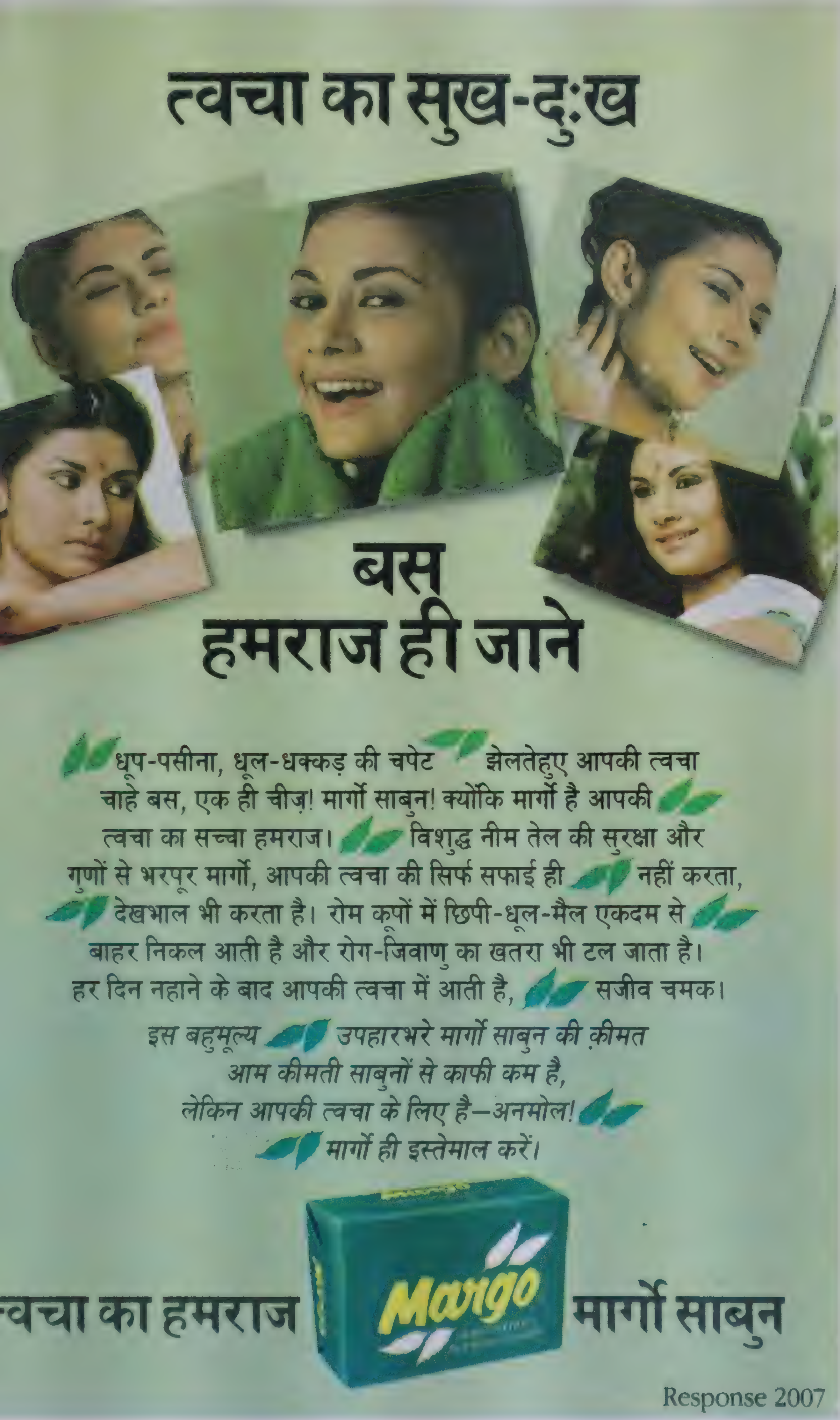
उत्तर प्रदेश सरकार पर्यटक कार्यालय, द माल, नैनीताल.

अलमोड़ा

अलमोड़ा पूर्वोत्तर रेलवे स्टेशन काठगोदाम से 92 किलोमीटर दूर 51 कि.मी. लंबी एक पहाड़ी पर बसा हुआ भारत का प्राचीन पर्वतीय स्थान है जो अपने मनोरम दृश्यों, स्वास्थ्यवर्धक जलवायु और एक पर्वतीय पर्यटन स्थल के रूप में जाना जाता है.

नैनीताल जाने वालों के लिए अलमोड़ा, कौसानी और रानीखेत की दो दिन की यात्रा काफी अच्छी रहती है. समुद्रतल से 1,646 मीटर की ऊंचाई पर बसा अलमोड़ा संस्कृति का प्राचीन केंद्र और ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण नगर है. यह कुमाऊं की प्राचीन राजधानी भी रहा है. कुमाऊं का ऐतिहासिक महत्त्व का पहला राजवंश कत्यूरी था. नैनीताल से लगभग 69 किलोमीटर की दूरी पर बसे इस ऐतिहासिक नगर पर 16वीं शताब्दी में चंद्र नरेशों का शासन रहा. उस के बाद नेपाल के अंतर्गत आने वाले इस शहर को 1815 में हरा कर भारत में मिलाया गया. यह मिलान नेपाल से लड़ कर अंगरेजों ने किया था.

नगर के पूर्वी द्वार पर खगमरा नामक प्राचीन किला 9वीं शताब्दी में कत्यूरी राजाओं ने बनवाया था.


त्वचा का सुख-दुःख
बस
हमराज ही जाने
धूप-पसीना, धूल-धक्कड़ की चपेट झेलतेहुए आपकी त्वचा
चाहे बस, एक ही चीज़! मार्गो साबुन! क्योंकि मार्गो है आपकी
त्वचा का सच्चा हमराज। विशुद्ध नीम तेल की सुरक्षा और
गुणों से भरपूर मार्गो, आपकी त्वचा की सिर्फ सफाई ही नहीं करता,
देखभाल भी करता है। रोम कूपों में छिपी-धूल-मैल एकदम से
बाहर निकल आती है और रोग-जिवाणु का खतरा भी टल जाता है।
हर दिन नहाने के बाद आपकी त्वचा में आती है, सजीव चमक।
इस बहुमूल्य उपहारभरे मार्गो साबुन की क़ीमत
आम कीमती साबुनों से काफी कम है,
लेकिन आपकी त्वचा के लिए है—अनमोल!
मार्गो ही इस्तेमाल करें।
वचा का हमराज
Margo
मार्गो साबुन
Response 2007



अलमोड़ा से दिखाई देती हिमालय की चौथी सब से ऊंची चोटी नंदादेवी. (ऊपर), अलमोड़ा का व्यस्त बाजार (दाएं)



कहां ठहरें?

अलमोड़ा में ठहरने की आवश्यकता नहीं है पर चाहें तो हाली डे होम में ठहर सकते हैं. यह यहां के सब से बढ़िया होटलों में से है. नीलकंठ होटल में कमरों के साथ ही बाथरूम तथा किचन की सुविधा होने से ज्यादा आरामदेह है. भारतीय ढंग के होटलों में से एंबेसडर बहुत बेहतरीन होटल है. अन्य होटलों में अलका, अशोक, ग्रांड, मानसरोवर, न्यू हिमालय, रंजना, त्रिशूल, और कैलाश हैं.

धर्मशालाएं: हरिप्रसाद टमटा धर्मशाला, माल धर्मशाला और अलमोड़ा धर्मशालाओं में आसानी से रुका जा सकता है.

क्या देखें?

अलमोड़ा शहर अपनेआप में एक चक्कर लगाने लायक है. पुराना शहर होने के कारण इस के मकान, दुकानें आकर्षक हैं.

अलमोड़ा से 2 कि.मी. की दूरी वाले ब्राइटेन एंड कार्नर से सूर्योदय और सूर्यास्त का मनोरम दृश्य देखा जा सकता है.

काली मठ से प्राकृतिक दृश्य तथा अलमोड़ा के नगर का विहंगम दृश्य देख सकते हैं. यह पिकनिक के लिए लोकप्रिय है

न के आलावा मोहनजोशी पार्क और सारदेवी का मंदिर पिकनिक के लिए लोकप्रिय हैं. शहर से 3 कि.मी. की दूरी पर समतौला एक रमणीय पिकनिक स्थल है जो लुभावने दृश्यों के बीच पर्यटक को काफी र रोके रह सकता है.

चितई: अलमोड़ा से 6 कि.मी. की दूरी र स्थित यह स्थान गोल देवता के मंदिर के लए प्रसिद्ध है. यहां से हिमालय की कुछ चोटियों की झलक पा सकते हैं.

कटारमल: अलमोड़ा से 11 कि.मी. की दूरी पर यह एक 800 वर्ष पुराना सूर्यमंदिर है. यहां से 1 कि.मी. की दूरी पर ही 'बिकुट फारेस्ट' है जहां से अलमोड़ा नगर के विहंगम दृश्य का आनंद उठाया जा सकता है. यहां तक जाने के लिए कोसी तक बस से और आगे की 4 कि.मी. की यात्रा पैदल तय करनी पड़ेगी.

अलमोड़ा के निकट कई प्राचीन मंदिर हैं पर सिर्फ सैलानियों के लिए न तो आकर्षक हैं, न वहां जाना सुविधाजनक.

रानीखेत

काठगोदाम से 84 किलोमीटर की दूरी पर बसा रानीखेत चीड़ व देवदार के ऊंचे घने वृक्षों से घिरा उत्तर प्रदेश का एक बहुत ही अछूता नैसर्गिक रमणीय पर्वतीय नगर है.

कैसे जाएं?

रानीखेत जाने के लिए नैनीताल, कौसानी, अलमोड़ा आदि के लिए जाने वाली परिवहन व्यवस्थाओं का सुचारु उपयोग किया जा सकता है. क्योंकि ये सभी रानीखेत के इर्दगिर्द के पर्यटन स्थल हैं, केवल दूरियों का फर्क है.

काठगोदाम रेलवे स्टेशन से रानीखेत की दूरी 84 किलोमीटर है. पंतनगर हवाई अड्डे से रानीखेत की दूरी 119 किलोमीटर है. जहां से पर्यटक बसों और प्राइवेट टैक्सियों द्वारा रानीखेत पहुंच सकते हैं.

कहां ठहरें?

रानीखेत में ठहरने के लिए मुसाफिरखाना, वालिमकी धर्मशाला, शिवमंदिर धर्मशाला आदि हैं. जहां पर्यटक कम खर्चे पर आसानी से ठहर सकते हैं.

वेस्ट व्यू पाइंट सब से बढ़िया होटल है. इस के बाद क्रम में अच्छे सुविधाजनक महंगे होटलों में नोरटोंस, मून, मेघदूत, अलका, नटराज, टूरिस्ट और एवरेस्ट होटलों में ज्यादा से ज्यादा 250 रुपए और कम से कम 75 रुपए प्रतिदिन के हिसाब से स्तर अनुसार रुकने की व्यवस्था है. इस के अतिरिक्त फारेस्ट रेस्ट हाउस और टूरिस्ट बंगलों में भी भारतीयों के लिए कम से कम 25 रुपए और विदेशी पर्यटकों के लिए 45 रुपए प्रतिदिन के हिसाब से भी रुकने की व्यवस्था है.

आरक्षण के लिए संपर्क करें:

फारेस्ट रेस्ट हाउस (आरक्षण : डिविजनल फारेस्ट आफिसर (प. अलमोड़ा.)

पी. डब्ल्यू. डी. हाउस (आरक्षण : एक्स. इंजी. प्रोविंशियल डिवीजन, रानीखेत, अलमोड़ा).

रानीखेत क्लब (सेक्रेटरी, रानीखेत क्लब, रानीखेत).

क्या देखें?

रानीखेत को निहारने के लिए अगर पर्यटक खड़ा हो जाए तो वहां से उस का हटने को मन नहीं करेगा. हिम श्रृंखलाओं का मनमोहक दृश्य आप का मन मोह लेगा. लेकिन कुछ जगहें ऐसी हैं जिन्हें देखे बिना लौट आना मूर्खता ही होगी.

एशिया का प्रसिद्ध गोल्फ मैदान उपत और कालिका: एशिया के ख्यातिप्राप्त उपत और कालिका गोल्फ के सर्वश्रेष्ठ मैदान हैं.



चीड़ के पेड़ों से घिरा रानीखेत का गोल्फ क्लब.

रानीखेत से 6 किलोमीटर की दूरी पर स्थित यह मनोरम स्थल फिल्म निर्माताओं के लिए भी आकर्षण का केंद्र है. इस के नजदीक का काली मंदिर तथा वन विभाग की नर्सरी देखने योग्य है.

चौबटियाः उद्यान वाटिका स्थल के रूप में मशहूर है. यहां से हिमालय पर्वत शृंखला का नजारा लुभाने वाला है. भालूडेम पर एक खूबसूरत नकली झील निर्मित है.

चौबटिया कुमाऊं मंडल का प्रसिद्ध फल अनुसंधान केंद्र है. फलों के बाग देखने का अपना एक अलग ही आनंद है क्योंकि फल और फूलों से झुकी डालियां ऐसी लगती हैं मानो झुक कर पर्यटकों का स्वागत कर रही हों.

रामजी हरबेरियमः वनस्पति और जड़ीबूटियों से लगाव रखने वाले पर्यटकों के लिए रामजी हरबेरियम एक उत्तम स्थान है. यहां विभिन्न वनस्पतियों और जड़ीबूटियों का अभूतपूर्व संकलन है.

मजखालीः यह स्थल 13 किलोमीटर दूर अलमोड़ा के रास्ते पर है. यहां बर्फीली पहाड़ों की चोटियों का नजदीक से अवलोकन कर सकते हैं.

शीतलाखेतः पहाड़ों पर फैले बर्फ के दृश्यों का अछूता सौंदर्य एकांत प्रेमियों के लिए शांत स्थल है. रानीखेत से 26 किलोमीटर की दूरी पर स्थित शीतलाखेत एक रमणीय पर्यटन स्थल है, जहां ग्रीष्म काल में स्कूल, कालेजों के छात्रछात्राओं के शिविर लगते हैं.

द्वाराहाटः ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण रानीखेत से 35 किलोमीटर दूर द्वाराहाट पुराने समय में कत्यूरी राजवंश का निवास स्थल था, जहां अब पुराने मंदिर हैं. 11 वीं और 16 वीं सदी के मध्य में निर्मित ये मंदिर कुमाऊं की प्राचीन स्थापत्य कला के परिचायक हैं.

खैरनाः मछलीमारों के लिए यह जगह अत्यंत उत्तम है, जो रानीखेत से 22 किलोमीटर की दूरी पर है.

तारीखेतः रानीखेत से 8 किलोमीटर की दूरी पर रामनगर मोटर मार्ग पर बनाए जा रहे इस स्थान पर महात्मा गांधी कुछ समय के लिए रहे थे.

मनीलाः रानीखेत से 66 किलोमीटर दूर मनीला बर्फ और बादलों से ढका एक सुंदर स्थान है, जिस की मनोरम छटा पर्यटक के मन पर गहरा प्रभाव छोड़ती है.

क्या खरीदें?

यहां से हर प्रकार के ताजे फल खरीदे जा सकते हैं.

कौसानी

उत्तर प्रदेश के कुमाऊं मंडल में आने वाला कौसानी एक विख्यात पर्वतीय स्थल है, हां की प्राकृतिक छटा देख कर ऐसा प्रतीत ता है मानो प्रकृति ने अपनी तमाम संुदरता ासानी को ही सौंप दी है. यहां का मनोरम तावरण, हरेभरे, ऊंचेनीचे मैदान, सिर ठाए पर्वत और दूर तक फैला स्फटिक सा पारदर्शी गहरा नीला आकाश और डी हवाओं के झोंकों से सिहरता कौसानी र्यटकों को सहज ही रोमांचित करता है.

समुद्र की सतह से 1,890 मीटर की ंचाई पर स्थित कौसानी इतनी ऊंचाई पर कि सूर्यास्त और सूर्योदय का दृश्य बहुत सुहावना दिखाई देता है. उगते हुए सूरज ी किरणें जब बर्फ से ढके पहाड़ों पर तरती हैं तो एक विशेष ही दृश्य बनता है. ांदी जैसे चमकते हिममंडित हिमालय ाखरों का रंग नारंगी लाल से सुनहरी में रिवर्तित होने लगता है.

हिंदी के विख्यात कवि सुमित्रानंदन त का जन्म भी कौसानी में ही हुआ था. सलिए उन की कविताओं में भी कौसानी ा जिक्र बारबार आता है.

कब जाएं?

कौसानी घूमने के लिए अप्रैल से सितंबर तक का मौसम सब से अच्छा रहता है. बरसात में कोहरे और बादलों की वजह से पर्वतों को देखना मुशकिल होता है. इसलिए बरसात के बाद या शरद के मौसम में कौसानी जाना चाहिए. गरमी में जाते समय हलके ऊनी कपड़े और शरद ऋतु में मोटे ऊनी कपड़े साथ ले जाना आश्वयक है अन्यथा परेशानी उठानी पड़ सकती है.

कैसे जाएं?

कौसानी का सब से करीब का रेलवे स्टेशन काठगोदाम ही है, जहां से कौसानी जाने के लिए आसानी से उत्तर प्रदेश परिवहन तथा कुमाऊं मोटर आनर्स यूनियन लि.की बसें मिल जाती हैं. इस के अलावा मुरादाबाद, बरेली, पंतनगर, हलद्वानी आदि शहरों से भी कौसानी के लिए बस सेवाएं उपलब्ध हैं.

बस मार्ग से: कौसानी देश के सभी प्रमुख शहरों से सड़क मार्ग से सीधा जुड़ा हुआ है. अलमोड़ा, रानीखेत और नैनीताल के साथ बागेश्वर होते हुए उत्तर प्रदेश



ौसानी का पर्यटक आवासगृह.

परिवहन की बसों द्वारा कौसानी आराम से पहुंचा जा सकता है.

वायु मार्ग से: कौसानी का सब से नजदीकी हवाई अड्डा पंतनगर है जहां से बस द्वारा कौसानी पहुंचा जा सकता है लेकिन हवाई सेवा विश्वसनीय नहीं है.और स्थानीय परिवहन व्यवस्था भी नहीं है.

कहां ठहरें?

कुमाऊं मंडल पर्वतीय विकास निगम ने कौसानी में पर्यटकों को आवासगृहों की व्यवस्था के साथसाथ भोजन की भी उचित व्यवस्था की है. क्षेत्रीय पर्यटक ब्यूरो, दी माल, नैनीताल को अग्रिम सूचना दे कर यहां आरक्षण भी करवाया जा सकता है. अनासक्ति योग आश्रम में भी शाकाहारी भोजन और कमरे किराए पर लिए जा सकते है, जिस के लिए पहले से आरक्षण करवाना जरूरी है.

ठहरने की अन्य सुविधाएं:

जिला परिषद डाक बंगला (आरक्षण: सेक्रेटरी जिला परिषद, अलमोड़ा).

स्टेट बंगला (आरक्षण: जिलाधीश, अलमोड़ा).

फारेस्ट रेस्ट हाउस (आरक्षण: कंजरवेटर, कुमाऊं सर्किल, नैनीताल तथा डिवीजनल फारेस्ट आफीसर, अलमोड़ा).

पाइन व्यू होटल (आरक्षण: प्रबंधक, पाइन व्यू होटल, कौसानी, अलमोड़ा) हिमाचल होटल में भी ठहर सकते हैं.

क्या देखें?

यों तो कौसानी विशेष रूप से सूर्योदय तथा सूर्यास्त के मनमोहक दृश्यों और वहां से दिखाई देने वाली बर्फीली चोटियों के लिए विख्यात है. यहां से दिखाई देने वाली हिमालय की चोटियों में चौखंभा (20,700 फुट), नंदाघुंटी (21,280 फुट), त्रिशूल (23,380 फुट), नंदकोट (22, 510 फुट), नंदादेवी (25,660 फुट), पंचचूली (22,650 फुट) आदि मुख्य हैं.

इन के अलावा कौसानी से 19 किलोमीटर दूरी पर आकर्षक गरुड़ घाटी में गोमती नदी के किनारे बैजनाथ अपने ऐतिहासिक कलात्मक मंदिरों और मूर्तियों के लिए प्रसिद्ध है. लेकिन सैंकड़ों वर्ष पहले 8 वीं और 11 वीं शताब्दी के बीच बने इन मंदिरों में अब थोड़े ही बचे हैं. बागेश्वर और पिंडारी ग्लेशियर भी सैलानियों को आकर्षित करने में सक्षम भूमिका निभाते हैं. इन के अलावा अनासक्ति योग आश्रम है. यहां महात्मा गांधी ठहरे थे. यहां का माहौल शांत है. शोरशराबे से दूर एकांतप्रेमियों के लिए यह श्रेष्ठ स्थान है.

पर्यटन कार्यालय का पता:

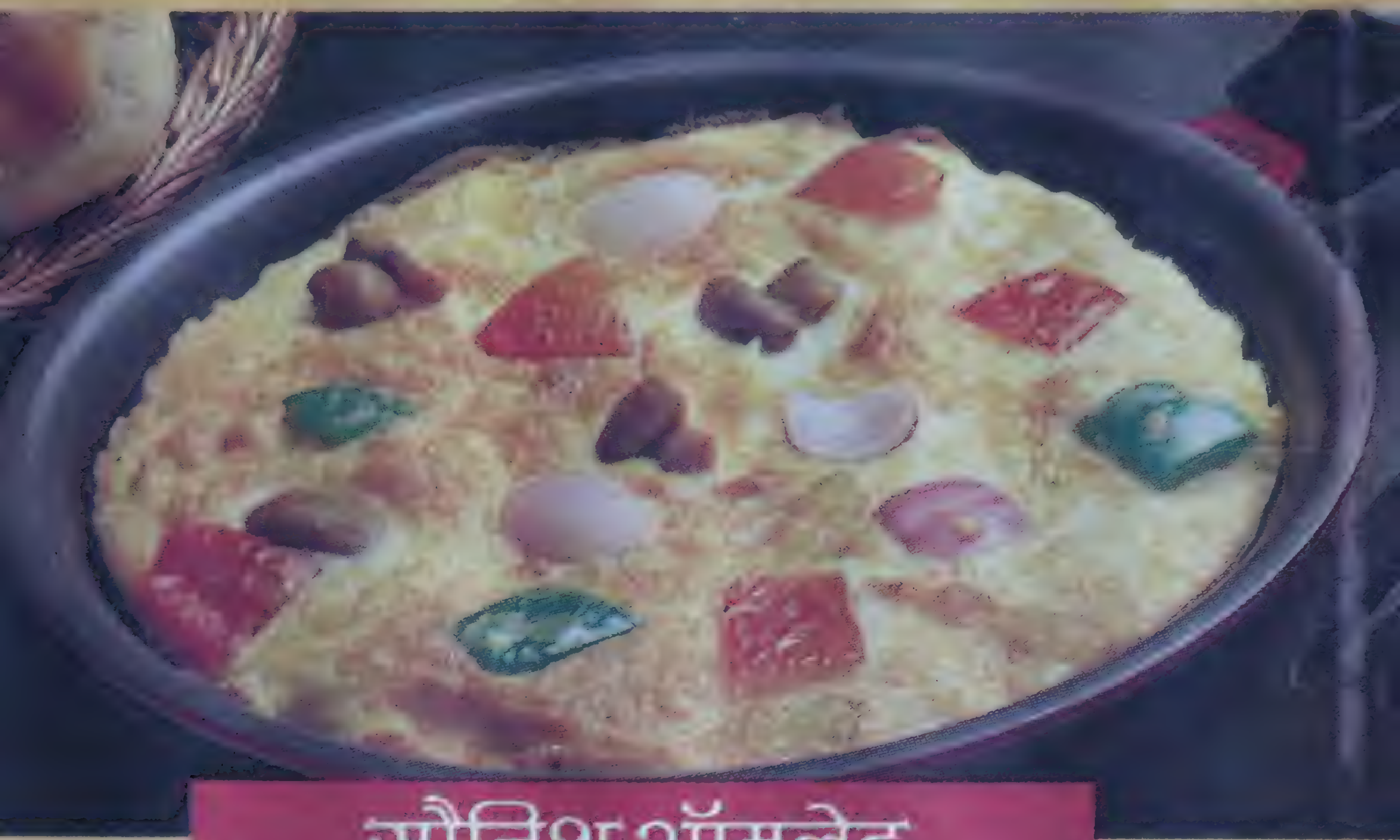
टूरिस्ट ब्यूरो, अलमोड़ा (उत्तर प्रदेश).
क्षेत्रीय पर्यटक ब्यूरो, दि माल,नैनीताल.
पर्यटक ब्यूरो, रेलवे स्टेशन, काठगोदाम.

दार्जिलिंग

पिछले एक वर्ष से गोरखा आंदोलन के कारण दार्जिलिंग का जीवन अस्तव्यस्त सा हो गया है. पर्यटकों की संख्या नगण्य रह गई है. पर्यटन कार्यालय भी बंद पड़ा है फिर भी सीजन के दिनों में कुछ इनेगिने पर्यटक दार्जिलिंग पहुंचते हैं. पर्यटकों की कमी के कारण अब वहां होटलों के किराए भी कम हो गए हैं. यह जानकारी उन्हीं कुछ पर्यटकों के लिए दी जा रही है जो अब इस अव्यवस्था के बावजूद दार्जिलिंग जाना चाहते हैं.

विश्व प्रसिद्ध हिमालय का नैसर्गिक सौंदर्य, दूरदूर तक फैले बागान, हरेभरे घने वन, पक्षियों का कलरव, जंगली जीव जंतुओं का स्वच्छंद विचरण—ये सब विशेषताएं अगर किसी एक जगह देखने को मिलती हैं,

संडे हो या मंडे,
ोज़ खाएं अण्डे.



स्पैनिश ऑमलेट

कल सवेरे अपने परिवार को एक अनोखा गुणभरा नाश्ता दीजिए. मिनटों में बन जाए, हर किसी को भाए.

सामग्री (१ ऑमलेट के लिए) : २ अण्डे, १/४ प्याज़, १/४ सिमला मिर्च, १/४ टमाटर, ३-४ डिंगरी, १ चुटकी काली मिर्च पाउडर, १ बड़ी चम्मच तेल/मक्खन, पसंद के मुताबिक नमक.

विधि : सब्ज़ियों को १/२"-१/२" के चौकोर टुकड़ों में काट लीजिए. अण्डों को नमक व काली मिर्च के साथ फेंट लीजिए. तेल गर्म करके उसमें सब्ज़ियाँ छौंक दीजिए, अण्डे मिलाइए और काँटे से १०-१५ सेकेण्ड तक धीरे धीरे सतह पर चलाइए. अण्डा जब आधा जमने लगे तो उसे पलट दीजिए. १/२ मिनट पकाइए. ग्रिल किए हुए टमाटर, सिंके हुए आलू तथा टोस्ट के साथ परोसिए.

NECC
नेशनल एग
कोऑर्डीनेशन कमेटी

अण्डों के साथ, बन जाए बात.

Enterprise/NECC/15 Hi



मन में आए तो मुँह में पानी आ जाए!
हाथ में हो! तो पल में तैयार!
nutrine INSTANT
GULAB JAMUN MIX
न्युट्रिन
इनस्टेन्ट
मीठी मीठी बातों से बनी
२०० ग्राम और १०० ग्राम पैक में उपलब्ध।
ACIL/072/88-Hin



गोरखा आंदोलन के कारण अब दार्जिलिंग जैसा सुंदर नगर सुनसान नजर आता है. ▲

तो वह है पश्चिम बंगाल का दार्जिलिंग नगर. दार्जिलिंग 'सूर्योदय की स्वर्णिम घाटी' के रूप में भी प्रसिद्ध है.

दार्जिलिंग किसी समय सिक्किम के राजा के अधिकार में था. सन 1835 में सिक्किम के राजा से ब्रिटिश सरकार ने इसे खरीद लिया था और यहां अपने सैनिकों के लिए क्षय रोग केंद्र स्थापित किया था.

आज दार्जिलिंग पुष्प प्रेमियों के लिए स्वर्ग से कम नहीं है. यहां 4,000 से भी अधिक फूलदार पौधों की किस्में, फर्न की 300 किस्में तथा अनेक पुष्परहित पौधों का भंडार है. यहां की पहाड़ियों में 600 से अधिक प्रकार के दुर्लभ पक्षियों में हिमालय के ब्ल्यू बर्ड, लंबी टांग वाले काले फेलकनेट, मिजवेट, शाही कबूतर आदि है.

आबजरवेटरी पहाड़ी पर बने दोर्जी नामक बौद्ध मठ के इर्दगिर्द ही दार्जिलिंग शहर बसने की शुरुआत हुई थी. इसी आधार पर पहले यह नगर दोर्जीलिंग कहलाता था. कालांतर में यह दोर्जीलिंग ही दार्जिलिंग हो गया. बंगाली में आज भी यह दोर्जीलिंग ही बोलते हुए सुना जा सकता है.

कब जाएं?

दार्जिलिंग जाने के लिए सब से अच्छा समय अप्रैल से जून व सितंबर से नवंबर तक होता है.

प्रमुख शहरों की दूरी

दिल्ली-2,095 किलोमीटर (हावड़ा हो कर), बंबई-2,827 किलोमीटर, मद्रास-2,317 किलोमीटर, कलकत्ता-654 किलोमीटर.

कैसे जाएं?

दार्जिलिंग का निकटस्थ हवाई अड्डा बागडोगरा है. बागडोगरा और कलकत्ता के मध्य हवाई सेवाएं उपलब्ध हैं. बागडोगरा और दार्जिलिंग के बीच की दूरी 80 किलोमीटर है, जिसे बस, टैक्सी आदि साधनों से तय किया जा सकता है.

दार्जिलिंग देश के प्रमुख नगरों से रेलमार्ग द्वारा भी जुड़ा हुआ है. दार्जिलिंग के लिए दिल्ली, लखनऊ, बरौनी, गोहाटी, डिब्रूगढ़, कलकत्ता आदि स्थानों से सीधी

रेलगाड़ियां चलती हैं. हां, बंबई व मद्रास से आने वाले पर्यटकों को हावड़ा, सिलिगुड़ी या न्यूजलपाईगुड़ी रेलवे स्टेशन पर रेलगाड़ी बदलनी पड़ेगी.

उक्त स्थानों से दार्जिलिंग के लिए नियमित बस सेवाएं भी उपलब्ध हैं.

कहां ठहरें?

दार्जिलिंग में ठहरने की पर्याप्त व्यवस्था है. यहां सस्ते और महंगे दोनों प्रकार के होटल हैं. आप अपनी सुविधानुसार किसी भी होटल में ठहर सकते हैं.

अधिकतर होटल रेलवे स्टेशन और बस अड्डे के निकट हैं. होटल कादंबरी व निर्वाण रेलवे स्टेशन के निकटस्थ होटलों में प्रमुख हैं.

होटल स्टार, सेंट्रल, न्यू एलगिन, स्वेस, प्रधान आदि पाश्चात्य ढंग की सुखसुविधाओं से संपन्न हैं. इन का किराया अपेक्षाकृत अधिक है.

इन के विपरीत होटल अशोक, अनामिका, ब्राडवे, कैपिटल, एवरग्रीन, ग्रैंड व्यू, फ्लोरा आदि भारतीय परंपरा के होटल हैं.

टूरिस्ट लाज, मैपल लाज, यूथ होस्टल, सिलिगुड़ी टूरिस्ट लाज, टूरिस्ट सेंटर आदि सरकारी आवास हैं. इन में ठहरने के लिए आप को संबंधित अधिकारी से अनुमति लेनी पड़ेगी, तभी आप इन में ठहर सकते हैं.

क्या देखें?

पर्वतारोहण प्रशिक्षण संस्थान : दार्जिलिंग के केंद्र से करीब 2 किलोमीटर दूर पश्चिमी जवाहर मार्ग पर हिमालय पर्वतारोहण प्रशिक्षण संस्थान है. यह अपनी तरह का अकेला संस्थान है. इस संस्थान में पर्वतारोहण के लिए पर्वतारोहियों को प्रशिक्षित किया जाता है. यहां एक संग्रहालय भी है, जिस में पर्वतारोहण संबंधी उपकरणों का संग्रह है . यह संस्थान पर्यटकों के लिए गरमियों में प्रायः 9 बजे से सायं 6 बजे तक और सर्दियों में प्रायः 9 बजे से सायं 4 बजे तक खुला रहता है. इस अतंराल में दोपहर में 1 बजे से 2 बजे तक भोजन अवकाश रहता है. यह संस्थान मंगलवार को बंद रहता है. इस संस्थान का प्रवेश शुल्क मामूली है. किंतु संग्रहालय देखने के लिए शुल्क देना पड़ता है.

पद्मजा नायडू जीवजंतुशाला : पर्वतारोहण संस्थान के निकट ही पद्मजा नायडू जीवजंतुशाला है. इस में साइबेरिया के चीते, हिमालय के काले हिरन, भालू, पक्षी और अनेक प्रकार के जीवजंतुओं [illegible] है. इस में भी सामान्य प्रवेश शुल्क लगता है.

लायड वानस्पतिक उद्यान: दार्जिलिंग में यह उद्यान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है. हिमालय पर्वत पर प्राप्त पुष्पों, पौधों आदि का यहां अच्छा संग्रह है. इस में कोई प्रवेश शुल्क नहीं लगता. प्रातः 6 बजे से सायं 5 बजे तक आप इसे देख सकते हैं.

चाय उद्यान: दार्जिलिंग चाय उत्पादन में भारत का प्रमुख नगर है. यहां चाय के बागान ही नहीं देखे जा सकते वरन यह भी देखा जा सकता है कि चाय कैसे बनती है. नगर से 2 किलोमीटर दूर हैपी वैली टी एस्टेट है, जहां आप आसानी से चाय बनने की प्रक्रिया देख सकते हैं.

धीरधाम मंदिर: दार्जिलिंग रेलवे स्टेशन के निकट ही धीरधाम मंदिर है. यह मंदिर कलात्मक दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है. इस का निर्माण काठमांडू के पशुपतिनाथ मंदिर को दृष्टि में रख कर किया गया है.

घूम बौद्ध तीर्थ: बौद्ध संप्रदाय का जानामाना यह तीर्थ दार्जिलिंग से करीब 8 किलोमीटर दूर है. यह हिल कार्ट रोड पर घूम रेलवे स्टेशन के निकट है.

टाइगर हिल: टाइगर हिल नगर से लगभग 11 किलोमीटर दूर है. यहां से सूर्योदय और सूर्यास्त के दृश्य अत्यंत मनोरम लगते हैं. सूर्योदय और सूर्यास्त के समय सूर्य की रक्तिम रश्मियां जब एवरेस्ट और कंचनजंघा की हिममंडित चोटियों पर पड़ती हैं, तब दर्शक मंत्रमुग्ध हो कर रह जाता है. ऐसा रमणीक दृश्य टाइगर हिल से ही दर्शनीय है. इस पहाड़ी से एवरेस्ट की दूरी लगभग 160 किलोमीटर है.



लिगुड़ी से दार्जिलिंग को जोड़ती हुई सड़क.

तिब्बती हस्तशिल्प केंद्र: दार्जिलिंग में हस्तशिल्प केंद्र हैं, जिन में से तिब्बती तशिल्प में आप को कारीगरी का जीवंत देखने को मिलेगा. इस केंद्र की स्थापना तूबर 1959 में शरणार्थी तिब्बतियों की ायता के लिए की गई थी. यहां ऊनी लीन, लकड़ी और चमड़े की दस्तकारी के भिन्न नमूने बनते हुए देखे जा सकते हैं.

सपास के दर्शनीय स्थल

मिरिक: यहां दार्जिलिंग से 49 लोमीटर दूर भारत का नवीनतम पर्यटक ल है. 1979 में बनाए गए इस पर्वतीय ल की ऊंचाई 5,800 फुट है. बागडोगरा 55 तथा सिलिगुड़ी से 52 किलोमीटर दूर रमणीय स्थल पर नौकाविहार का आनंद उठाया जा सकता है. झरनों से युक्त यह न पिकनिक के लिए एकदम उपयुक्त है.

संदाकफू: दार्जिलिंग से 58 किलोमीटर दूरी पर एक मनोहारी स्थल है जहां टक प्राकृतिक सौंदर्य की छटा देख सकते यात्रा का विशेष आकर्षण रास्ते में ाम करने के लिए जगहजगह बनाए गए स हैं. यहां पर हिमालय के शिखर का य स्वरूप देख दंग रह जाएंगे. सिहा लीला पर फैले हरेभरे समतल मैदान हैं. अप्रैल में यह क्षेत्र रंगबिरंगे फूलों से ढक जाता है.

सिगला: दार्जिलिंग से 48 किलोमीटर की दूरी पर नदी किनारे बसा हुआ एक अत्यंत सुदंर स्थान है. यहीं से 21 किलोमीटर की दूरी पर मजीतार नामक एक अन्य पिकनिक स्थान है, यहां से दार्जिलिंग के लिए सीधा जाया जा सकता है. इस के अलावा शहर से 51 किलोमीटर दूर और 4,100 फुट की ऊंचाई पर बसा 9 वर्ग किलोमीटर का कलिमपोंग का चाओलिंग मठ भी देखने लायक है.

क्या खरीदें?

चाय के उत्पादन के साथसाथ दार्जिलिंग का महत्त्वपूर्ण कार्य यहां की दस्तकारी है. यहां पहाड़ी दस्तकारी से निर्मित चूड़ियां, भूटानी चित्र, धातु तथा पत्थर की मूर्तियां खरीदी जा सकती हैं. ये वस्तुएं घर को सजाने के साथसाथ इष्टमित्रों को उपहार में देने के काम भी आ सकती हैं.

हस्तशिल्प की ये चीजें तिब्बती हस्तशिल्प केंद्र, बंगाल मंजूषा एंपोरियम, क्यूरियो शाप से उचित मूल्य पर खरीदी जा सकती हैं. चौरास्ता, नेहरू मार्ग, कार्ट मार्ग आदि पर भी हस्तशिल्प की वस्तुओं के बिक्री केंद्र हैं, जहां से आप अपनी सुविधानुसार खरीदारी कर सकते हैं.

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें: टूरिस्ट ब्यूरो, पश्चिम बंगाल सरकार. 1, नेहरू रोड, दार्जिलिंग, प. बंगाल.

गंगटोक

गंगटोक 2,500 हेक्टेयर क्षेत्रफल में फैली हुई सिक्किम प्रदेश की राजधानी है. भारत का चीन की सीमा से लगा प्रदेश होने के कारण व सामरिक दृष्टि से इस का विशेष महत्त्व है. गंगटोक की ऊंचाई समुद्र सतह से 1,524 मीटर है. सीढ़ीदार खेतों में लगे धान के हरेभरे पौधे स्वयं मूक संकेत दे देते हैं कि गंगटोक में धान की खेती सर्वाधिक होती है. गंगटोक की घाटी में वर्षभर रंगबिरंगे फूल खिले रहते हैं.

कब जाएं?

पर्यटन की दृष्टि से अनुकूल मौसम मार्च से मई तक एवं अक्तूबर से मध्य दिसंबर तक है. ठंड के दिनों में भारी ऊनी कपड़े व गरमी में हलके ऊनी कपड़े ले कर जाना उचित है.

कैसे पंहुचें?

वायुयान द्वारा: बागडोगरा हवाई अड्डा गंगटोक से 124 किलोमीटर की दूरी पर है. कलकत्ता से बागडोगरा इंडियन एअरलाइंस के विमान द्वारा 50 मिनटों में पहुंचा जा सकता है. दिल्ली से प्रतिदिन कलकत्ता तथा बागडोगरा के बीच तथा पटना होते हुए बागडोगरा के लिए सीधी उड़ानें हैं. 15 सीटों वाली वायुदूत की भी नियमित सेवा है. हैलीकाप्टर सेवा बागडोगरा से गंगटोक के लिए भी एक हफ्ते में दो बार है.

रेल द्वारा: गंगटोक सिलिगुड़ी व न्यूजलपाईगुड़ी रेलवे स्टेशनों से क्रमश: 114 किलोमीटर व 125 किलोमीटर की दूरी पर है, जो दिल्ली, कलकत्ता, गौहाटी, लखनऊ व दूसरे महत्त्वपूर्ण शहरों से रेल मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है.

सड़क द्वारा: यह दार्जिलिंग, कलिमपोंग, सिलिगुड़ी व सिक्किम के जिला केंद्रों से जुड़ा है. सिक्किम प्रदेश के पर्यटन विभाग की यातायात शाखा द्वारा लक्जरी कोच, कार, लैंड रोजर, वैगोनेट्स व जीपें किराए पर पर्यटकों को उपलब्ध रहती हैं.

सिक्किम राष्ट्रायकृत ट्रांसपोर्ट नेत्र... सभी प्रमुख स्थलों को गंगटोक से जोड़ती... सिलिगुड़ी दार्जिलिंग और कलिमपोंग... गंगटोक का सड़क मार्ग सूखे मौस... (अक्तूबर से मध्य जून) तक अच्छा रहता... अन्य दिनों में सड़क मार्ग की स्थिति सिक्कि... टूरिस्ट आफिस (सिलिगुड़ी), तिस्का ब्रि... पुलिस चेक पोस्ट एवं टूरिस्ट आफि... दार्जिलिंग से प्राप्त हो सकती है.

कहां ठहरें?

टूरिस्ट लाज (अकानामी क्लास): टूरि... डिपार्टमेंट के अंतर्गत कार्यरत सिंगल, डब... व तीन बिस्तरों वाले कमरे क्रमश: 30 रु.,... रु.व 65 रु. तक में प्राप्त हो सकते हैं.

टूरिस्ट लाज: 2 से 4 बेड वाले रूम 40... 65 रुपए के बीच प्राप्त हो सकते हैं.

नारखिल: एक परिवार द्वारा पूर्ण ... प्राप्त करने पर 450 रुपए लगते हैं.

पश्चिमी होटल: अमरीकन प्ला... मोडीफाइड अमरीकन प्लान, कांटीनें... आदि हैं. ताशी, डीलेक, मयूर अशो...

मुखौटा लगाए हुए सिक्किम का एक ... लोकनर्तक.





गंगटोक नगर का विहंगम दृश्य

त, डेनजोंग में पहले से आरक्षण करा के सकते हैं.

सस्ते भारतीय होटल: आर्किड होटल में 85 रुपए तक दो, तीन, चार बेड वाले उपलब्ध हो जाते हैं. ग्रीन होटल में 10 से 70 रुपए तक कमरे प्राप्त हो सकते मा होटल में 10 रुपए से 50 रुपए के कमरे प्राप्त हो सकते हैं.

सी.पी. डब्ल्यू. रेस्ट हाउस: दो व्यक्तियों कमरे 2 रुपए से 5 रुपए तक प्रति न के लिए प्राप्त हो सकते हैं. यह रेस्ट एकजीक्यूटिव इंजीनियर, सी.पी. .डी. (नार्थ), सिक्किम हाइवे, गंगटोक संचालित किया जाता है. इस के अलावा ंगतसे टूरिस्ट लाज, सिक्किम गेस्ट भी हैं.

दर्शनीय स्थल: पर्यटन विभाग सिक्किम य दर्शनीय स्थलों के लिए सेवाएं लत करता है. स्थानीय दर्शनीय स्थल टेक के लिए 9.30 प्रातः से 12.00 बजे र व 9.30 मध्यकाल से 4.00 बजे सायंकाल तक निम्नलिखित दर्शनीय स्थल देखे जा सकते हैं.

काटेज इंडस्ट्रीज संस्थान: सिक्किम सरकार द्वारा संचालित इस संस्थान में विविध प्रकार की विशेष वस्तुएं—जैसे हाथ से बुने हुए ऊनी कालीन, कंबल, शाल, विशेष पच्चीकारी की हुई लकड़ी की मेज, पहाड़ी लोगों के पहनने के वस्त्र आदि सुंदर व प्रसिद्ध वस्तुएं निर्मित की व बेची जाती हैं. कुटीर उद्योग (काटेज इंडस्ट्री) के कार्यों के निरीक्षण के लिए पर्यटन सूचना केंद्र के नीचे स्थित शोरूम देखा जा सकता है. सोमवार से शनिवार 9.30 बजे प्रातः से 12.30 मध्यकाल व 1.30 मध्यकाल से 3.30 सायंकाल. सरकारी छुट्टियों व रविवार के दिन शोरूम बंद रहता है.

टसुक ला खांग: यह चोग्याल राजाओं का पूजा स्थल है. यहां से पहाड़ों की भव्य छटा दिखाई देती है. इस शाही पूजा स्थल में कला का समावेश डिस्टेंपर रंग द्वारा दीवारों पर पेंटिंग कर तथा ऊंची जगहों को सजा कर किया गया है.

डियर पार्क: इस शांत स्थल में हरी

घाटी से ले कर चमचमाती बर्फ के पीछे दूर तक नजर आता गंगटोक शहर देखा जा सकता है. यहां भांतिभांति के फूलों के बीच स्वर्णजड़ित बुद्ध की प्रतिमा है. कस्तूरी मृग तथा अन्य दुर्लभ जातियों के मृग जहांतहां चौकड़ी भरते हुए नजर आ जाते हैं.

चोरटोन: यह स्थान आर्किड अभयारण्य के नजदीक है. यहां पर नवयुवक लामा विद्याध्ययन, पूजा तथा काम करते हैं.

टाशी व्यू पाइंट: पिकनिक के लिए मशहूर इस स्थान से आप कंचनजंघा के नजारे का लुत्फ उठा सकते हैं.

पेमायांगत्से मठ: पुराने मठों में दूसरे नंबर का सब से पुराना मठ है. इस मठ की दीवारों और छत पर देवीदेवताओं की आकृतियां चित्रित हैं. यहां से कंचनजंघा का भव्य नजारा देखा सकता है. यकसुम के लिए यह आदर्श पड़ाव है.

यकसुम: यकसुम का शाब्दिक अर्थ है–तीन महान लामाओं का मिलन. यहां पर एक रमणीय झील है. यहां पर्वतारोहण का प्रशिक्षण भी दिया जाता है.

बाकखिम: यह चित्ताकर्षक स्थल है. यहां रोडोडेंडा की 20 से अधिक प्रजातियां फैली हैं. पर्वतारोहियों तथा ट्रेकिंग के लिए यह अच्छा आधार है.

तिब्बती रिसर्च इंस्टीट्यूट: यह संस्थ तिब्बती बौद्ध साहित्य के लिए विश्व प्रसिद्ध है. यहां 200 से भी अधिक चित्र, पू में प्रयोग की जाने वाली कला की बेजो वस्तुएं, प्राचीन तंखे, मूर्तियां, वस्त्र व प्राची पांडुलिपियों का भारी संग्रह है. इस संस्थान विश्व के कोनेकोने से शोधार्थी आते हैं. य संस्थान सोमवार से शनिवार तक प्रात: बजे से सायं 4 बजे तक खुलता है. स सरकारी छुट्टियों में यह संस्थान बंद रहता

आर्किड सेंचुरी: तिब्बती अनुसंध संस्थान के प्रांगण में ठीक नीचे स्थित अमू पौधों, वृक्षों व आर्किड पौधों का अभयार है. यहां आर्किड की 450 से भी अधि जातियां देखी जा सकती हैं. ये पौधे सिक्कि से बाहर प्राय: नहीं देखे जाते हैं.

एनचे मठ: यह मठ गंगटोक नगर तीन किलोमीटर की दूरी पर स्थित है. यहां कंचनजंघा पर्वतमाला का सर्वश्रेष्ठ नजा दृष्टिगत होता है. करीब 200 वर्ष पुराने इ मठ में धार्मिक वस्तुएं भी संग्रहीत हैं.

आर्किडेरियम: गंगटोक से किलोमीटर की दूरी पर स्थित आर्किडेरिय में अद्वितीय पौधे व वृक्ष, वन विभाग द्वा संरक्षित हैं. पिकनिक व मनोरंजन की दृष्टि यह बहुत ही अच्छा स्थल है.



"पहले ही कहा था कि शादी का मुहूर्त पंडित से नहीं, होटल वालों से निकलवाओ. हनीमून का सारा मजा किरकिरा हो गया."



"प्लास्टिक की गंध? छी...
मेरे फ़्लास्क में नहीं!
यही तो है मिल्टन का कमाल"

मिल्टन इंसुलेटेड फ़लास्क की भीतरी सतह विशेष फ़ूड-ग्रेड
की होने के कारण इसमें प्लास्टिक की नागवार बू नहीं आती.
मिल्टन इंसुलेटेड फ़लास्क से आपको मिलता है केवल शुद्ध.
ठंडा शीतल, पूरी तरह दुर्गंध रहित पीने का पानी– घंटो तक.
टन फ़्लास्क के रंग धूप में कभी फीके नही पड़ते. और ये आपकी
क अनुरूप कई क्षमताओं और आकारों में मिलते हैं.दफ्तर या
न, घर या बाहर..... हर जगह इस्तेमाल के लिए उपयुक्त

1 थर्मिल* इंसुलेशन:
घंटो पानी ठंडा और ताज़ा रखता है.

2 विशेष फ़ूड-ग्रेड लाईनिंग:
ताकि इसमें रखे पेय गंधरहित रहें.

3 मज़बूत लचीली बॉडी

यूरेथेन फोम के लिए मिल्टन द्वारा दिया गया विशेष नाम है.
कमात्र अत्याधिक कार्यकुशल इन्सुलेटिंग मटीरियल है.



MILTONAIRE
811, Raheja Centre, Nariman Point, Bombay-400 021. Tel: 233453, 224010.



SKS FROM MILTON



आज की कामकाजी ज़िन्दगी के लिए स्टेफ़्री बेल्टलेस सैनिटरी नैपकिन का भला कौन मुकाबला कर सकता है. इस स्टेफ़्री के साथ न बेल्ट की ज़रूरत न सुतली-नाड़े या पिन की

स्टेफ़्री में सोखने की भी क्षमता ज़्यादा है जिससे हरदम सूखेपन और आराम का एहसास रहता है. और इन दिनों भी महीनों के और दिनों की तरह मैं आज़ाद और बेफ़िक्र रहती हूँ.

अधिक स्राव के दिनों में मुझे भरोसा है तो सिर्फ़ स्टेफ़्री सुपर पर क्योंकि आकार बड़ा होने के कारण यह ज़्यादा बचाव करता है पूरी सुरक्षा देता है

अब स्टेफ़्री डियोडरेन्ट भी उपलब्ध है. डियोडरेन्ट सैनिटरी नैपकिन वास्तव में मासिक की गंध को कम करते हैं. इसलिए मुझे स्वच्छता का पूरा एहसास रहता है और जो भी मैं करना चाहूँ पूरे विश्वास से कर सकती हूँ

इसीलिए तो मैं हमेशा स्टेफ़्री का इस्तेमाल करती हूँ. यह मुझमें आत्मविश्वास जगाता है। है न कितना उपयोगी!

स्टेफ़्री सुरक्षा के प्रकार

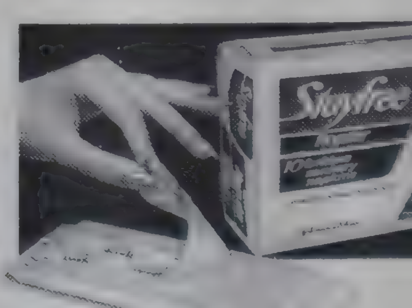
रेगुलर पूरा बचाव और पूरी सुरक्षा के लिए.

सुपर ज़्यादा स्राव के दिनों में अधिक सुरक्षित और रात के इस्तेमाल के लिए भी

डियोडरेन्ट पूरी सुरक्षा तथा डियोडरेन्ट की ताज़गी और स्वच्छता के लिए

बस निकालिए और काम में लाइए

तिगुनी ताकत से चिपकने वाली इसकी पट्टियों को अपनी की भीतरी तहों से चिपकाइए... नैपकिन अपनी जगह पर रहेगी, न हिलेगी, न सरकेगी और न गिरेगी



स्टेफ़्री* ...आज़ादी का वही एहसास, जो आप चाहती हैं

* स्टेफ़्री जॉन्सन एंड जॉन्सन यू.एस.ए. का ट्रेडमार्क है.

जॉन्सन एण्ड जॉन



आगरा

विश्व मानचित्र में आगरा का ऐतिहासिक महत्त्व तो है कि लेकिन भारत मण करने वाला पर्यटक जब तक आगरा के जमहल को नहीं देखता वह अपनी यात्रा धूरी ही मानता है. मथुरा से 56 कि.मी. र है आगरा. 16वीं 17वीं शताब्दी में यह छ दशकों तक मुगलों की राजधानी रही आगरा एक प्राचीन नगर है और इस का ल्लेख महाभारत में भी मिलता है. दूसरी ताब्दी में पटालेमी ने इसे विश्व मानचित्र आगरा के नाम से दर्शाया था. वैसे माना या है कि इस के पूर्व इसे संस्कृत के शब्द ग्रवान के नाम से जाना जाता था.

आगरा को प्रसिद्धि तब मिली जब ाल शासकों ने इसे अपनी राजधानी बना र अनेक इमारतों का निर्माण करना शुरू या था. मुगल शासक अपने राज्य पर यहीं शासन करते थे. उन्हीं मुगल शासकों की है आगरा का ताजमहल, जो पर्यटकों के ए आज आकर्षण का केंद्र बना हुआ है. वैसे आगरा एक बड़ा शैक्षिक एवं व्यापारिक केंद्र भी है.

कैसे जाएं?

आगरा देश के प्रमुख शहरों से रेल मार्ग, हवाई मार्ग एवं सड़क मार्ग से जुड़ा है. पर आगरा जाने के लिए रेल मार्ग सब से अधिक उपयुक्त है क्योंकि मद्रास, कलकत्ता, बंबई की ओर से दिल्ली आने वाली अधिकांशतः रेलगाड़ियां आगरा हो कर आती हैं. दिल्लीआगरा के बीच एक्सप्रेस रेलगाड़ियां भी चलती हैं. जब कि आगरा को हवाई मार्ग से दिल्ली, जयपुर एवं खुजराहो से भी जोड़ा गया है. बंबई से आगरा रेल मार्ग द्वारा ही पहुंचा जा सकता है. नई दिल्ली से रोजाना सुबह सात बजे ताज एक्सप्रेस गाड़ी चलती है, जो उसी दिन रात को 10 बजे लौट आती हैं.

कहां ठहरें?

आगरा में पश्चिमी ढंग के अत्याधुनिक तथा खूबसूरत होटलों में मुगल शेरेटन (टे.

64701) अच्छी सेवाएं प्रदान करने वाला सब से बढ़िया होटल है. दी ग्लेक्सी ताज के नजदीक है. मुमताज, अशोक होटल (टे. 75580) सुविधापूर्ण है. क्लार्क शीराज (टे. 72421), लोरीस होटल पुराने ढंग का खूबसूरत है. जयवाल हाल (टे.641441/टे. 64142) सुरुचिपूर्ण तथा साफसुथरा है. टूरिस्ट बंगला, आगरा होटल अमर होटल गोवर्धन, पैलेस अच्छे तथा कम महंगे होटल हैं. मयूर टूरिस्ट कांपलेक्स पर काटेजिस भी अच्छी हैं. पी.डब्ल्यू.डी. इंस्पेक्शन बंगला, रेलवे रिटायरिंग रूम के अलावा पर्यटक धर्मशालाओं में भी ठहर सकते हैं. धर्मशालाओं में अग्रवाल पंचायती धर्मशाला जानकीप्रसाद धर्मशाला, सुंदरलाल जैन धर्मशाला, प्रतापचंद्र धर्मशाला प्रमुख हैं. यहां पर्यटकों को सभी सुविधाएं मिल सकती हैं.

दर्शनीय स्थल

यमुना के तट पर बसे आगरा शहर का प्रमुख आकर्षण ताजमहल है. मुगल बादशाह शाहजहां ने सन 1653 में अपनी बेगम मुमताज की याद में इस का निर्माण करवाया था. यमुना के किनारे खड़ा ताजमहल मुगलकालीन स्थापत्य एवं भवन निर्माण कला का अनूठा नमूना है जिस का खाका 'उस्ताद इसा' फारसी शिल्पकार ने तैयार किया था. 20 वर्ष के कठिन परिश्रम के बाद लगभग 20,000 भारतीय, ईरानी कारीगरों ने काम कर के इस महल का निर्माण किया था. इसी लिए ताजमहल को भारतीय ईरानी भवन निर्माण कला का उत्कृष्ट नमूना माना जाता है. 57 मीटर ऊंचे बीच के गुंबद के ठीक नीचे मुमताज महल की कब्र है शाहजहां की कब्र भी उसी के साथ बनी हुई है. 'चांदनी रात' में ताजमहल को देखने पर पर्यटक मुग्ध हो जाता है.

यमुना के किनारे बना आगरा का विशाल किला मुगल शासकों की कहानी बताता है. इस किले का निर्माण 1565 ईसवीं में अकबर महान ने करवाया था. किले में अनेक इमारतें एवं मसजिदें हैं. किले में हिंदू मुसलिम भवन निर्माण कला को देखा जा सकता है. किले में बनी मोती मसजिद विश्व की सब से बड़ी मसजिद है. ताजमहल के ठीक सामने यह किला शाहजहां के उस दिन की याद दिलाता है, जब औरंगजेब ने उसे चमेली महल में बंदी कर के रखा था. इसी चमेली महल से वह शाहजहां को निहारता रहता था.

एत्मादुद्दौला आगरा का एक दो मंजिला भव्य स्मारक है. इस का निर्माण सन 1622 और 1628 के बीच मलिका नूरजहां ने अपने पिता गयासुद्दीन बेज की याद में करवाया था. इस का निर्माण एत्मादुद्दौला के मकबरे पर हुआ है. इसे ताजमहल से भी पहले की सफेद संगमरमर की इमारत होने का गौरव प्राप्त है. सफेद संगमरमर एवं लाल पत्थर से बना यह स्मारक बेहतरीन कीमती पत्थरों पर की हुई पच्चीकारी, नक्काशी, जालियों के लिए विख्यात है. ताजमहल के मुकाबले यहां की नक्काशी अधिक महीन और खूबसूरत है.

रामबाग सब से प्राचीन मुगल उद्यान है.इस का निर्माण मुगल शासक बाबर ने 1526 में करवाया था.

दयालबाग राधा स्वामी पंथ का मुख्यालय है. यहां पंथ के अनुयायियों के गुरु की समाधि है, जो एक भव्य स्मारक है.

आसपास के दर्शनीय स्थल

आगरा से 10 किलोमीटर दूर सिकदरा अकबर के मकबरे के लिए विख्यात है. इस मकबरे का निर्माण अकबर ने स्वयं शुरू किया था लेकिन इसे अकबर के पुत्र जहांगीर ने सन 1613 में पूरा करवाया. यह मकबरा हिंदू और मुस्लिम वास्तुकला का सुंदर मिश्रण है.

आगरा से 23 किलोमीटर दूर कैथम झील है, जो 2.5 किलोमीटर में है. यह झील 640 एकड़ में फैले सूरदास बन से घिरी हुई है. इस झील में अनेक प्रकार की मछलियां एवं जलपक्षी रहते हैं.

आगरा से 40 किलोमीटर दूर



म्राट अकबर द्वारा बनवाया गया फतेहपुर
ीकरी दर्शनीय है

तेहपुर सीकरी मुगल सम्राट अकबर द्वारा 569 में बनवाया गया था. यहां मुसलिम त शेख सलीम चिश्ती रहता था. कहा ता है कि शेख सलीम चिश्ती के शीर्वाद से जब अकबर की हिंदू पत्नी धाबाई को पुत्र पैदा हुआ तो अकबर ने श्ती से प्रभावित हो कर अपनी राजधानी करी ले जाने का निर्णय कर लिया. और 569 में एक किले का निर्माण शुरू करवा र पांचछः सालों में किले के भीतर अनेक हलों एवं मसजिदों का एक समूह खड़ा कर या. अकबर 15 सालों तक यहां रहा. यहीं उस ने गुजरात पर आक्रमण कर के जय प्राप्त की थी. किले के भीतर दीवाने म, दीवाने खास, बीरबल महल, पंच हल, जोधाबाई महल, दरगाह शेख लीम चिश्ती, बुलंद दरवाजा दर्शनीय हैं. रियम महल में अकबर की एक रानी ती थी.

बुलंद दरवाजा का निर्माण 1601 में या गया था. 176 फीट ऊंचा बुलंद वाजा विश्व का सब से बड़ा दरवाजा है. शेख सलीम चिश्ती की दरगाह के सामने है. शेख सलीम चिश्ती की दरगाह 24 फीट ऊंची है.

इन के अलावा आगरा से 54 किलोमीटर दूर भरतपुर का दीग वनविहार, वन्य जीवन अभयारण्य, 54 किलोमीटर दूर मथुरा, 63 किलोमीटर दूर वृंदावन, गोकुल, गोवर्धन, बरसाना, नंदगांव एवं 54 किलोमीटर दूर भरतपुर पक्षी अभयारण्य दर्शनीय स्थलों में प्रमुख हैं.

क्या खरीदें:

खरीदारी: आगरा में चमड़े का सामान खरीदा जा सकता है. यहां चमड़े के जूते सस्ती मिलते हैं. वैसे आगरा कालीन उद्योग के लिए विख्यात है. आगरे का दालमोंठ व पेठा भी अच्छा होता है. बशर्ते आप किसी अच्छी दुकान से खरीदें. रेलवे स्टेशन से न खरीदें, पच्चीकारी की हुई सेलखड़ी से बनी वस्तुएं दुकानदार संगमरमर की कह कर पर्यटकों को लूटते हैं. इन की खरीदारी में सावधानी बरतें.

अधिक जानकारी के लिए भारत सरकार पर्यटन कार्यालय, 191, दी माल आगरा से संपर्क कर सकते हैं.



वाराणसी

पूर्वी उत्तर प्रदेश में गंगा तट पर स्थित वाराणसी एक प्राचीन शहर है. वाराणसी को पहले काशी के नाम से जाना जाता था. पर्यटन की दृष्टि से छुट्टी मनाने के लिए यहां कुछ नहीं है पर तीर्थस्थल होने के कारण लाखों पर्यटक यहां आते हैं.

कैसे जाएं?

धार्मिक स्थान होने के कारण वाराणसी को देश के प्रमुख शहरों से जोड़ा गया है. वाराणसी रेल एवं वायु मार्ग (नजदीकी हवाई अड्डा बाबतपुर है) से जा सकते हैं. बंबई, दिल्ली, कलकत्ता, लखनऊ, पटना आदि शहरों से प्रतिदिन रेल सेवाएं उपलब्ध हैं. आगरा, कलकत्ता, दिल्ली, काठमांडू, खजुराहो से विमान द्वारा वाराणसी जा सकते हैं. इलाहाबाद, लखनऊ, गोरखपुर, कानपुर से नियमित बस सेवाएं भी उपलब्ध हैं.

कब जाएं?

सितंबर से मई तक का महीना अच्छा होता है. लेकिन सर्दियों में अधिक ठंड तथा गरमी के मौसम में अधिक गर्मी पड़ती है. संध्या के समय गर्मियों में घाट के किनारे का वातावरण बहुत सुहावना होता है. यहां सैलानियों की 15 जुलाई से मार्च तक गहमागहमी रहती है.

बड़े शहरों से दूरी:

दिल्ली से 710 किलोमीटर, कलकत्ता से 678 किलोमीटर, लखनऊ से 31[illegible] किलोमीटर, इलाहाबाद से 127 किलोमीटर.

कहां ठहरें?

महंगे होटलों में बनारस ताज सभी सुविधाओं से भरपूर सब से बढ़िया होटल है. क्लार्क होटल में भारतीय तथा पश्चिमी भोजन का अच्छा प्रबंध है. भारतीय पर्यटन विकास निगम का वाराणसी अशोक होटल

सुविधा संपन्न है. पुराने ढंग का अशोक टल है, होटल डी पेरिस, अजय होटल, रलाइंस भी अच्छे होटल हैं. बनारस ज तथा सेंट्रल होटल दशाश्वमेध घाट ड, पर बने भारतीय शैली के सब से ढ़िया होटलों में से हैं.

अन्य होटलों में पुष्पांजलि होटल, मालय होटल, के.एम.एम.होटल, मिंट उस होटल, श्री टेकेश्वर लाज, बनारस ज अच्छे हैं.

उत्तर प्रदेश पर्यटन विकास के टूरिस्ट ाला में आरक्षण के लिए संपर्क करें: जर रिजर्वेशन, रेलवे रिटायरिंग रूम, नवे स्टेशन, वाराणसी कैंट. टूरिस्ट डाक ाला, करावां पार्क में भी ठहरा जा सकता इस के अलावा धर्मशालाओं में रेवाबाई र्मशाला, जैन धर्मशाला, जयपुरिया तिथि भवन, हरा संदरी धर्मशाला, धी धर्मशाला में भी ठहरा जा कता है.

दर्शनीय स्थल: घाटों का दृश्य, श्वनाथ मंदिर, दुर्गा मंदिर, तुलसीमानस दिर, भारतमाता मंदिर, सारनाथ प्रमुख र्शनीय स्थल हैं. कई सदी पूर्व काशी में जा शिवोदास ने काशी विश्वनाथजी का दिर बनवाया था, जिसे औरंगजेब ने तुड़वा र ज्ञानवापी मसजिद बनवा दी थी. लेकिन ौर की रानी अहल्या बाई ने 1776 में पुनः श्वनाथजी के मंदिर को बनवाया तथा हाराजा रणजीत सिंह ने 22 मन सोने का तर समूचे मंदिर के गुंबदों में चढ़वाया. इसे र्ण मंदिर भी कहते हैं.

विश्वनाथ मंदिर: पहली बार श्वनाथ मंदिर देखने में बड़ा निराशाजनक इतने अधिक नाम वाले मंदिर के लिए ली, संकरी, कीचड़ भरी गली में से जाना ता है जिस के दोनों ओर दुकानदारों की ड़ होती है. चटख लाल रंग का मंदिर न नात्मक दृष्टि से भव्य है, न आकार में. ीमहल्लों के छोटे मंदिर की तरह यह दिर किस हिंदू समाज की विख्यात धरोहर समझ नहीं आता.

मंदिर के अंदर भी सफाई का नाम नहीं है. पैसा चढ़ाइए और बढ़ जाइए. छोटे से कमरे में शिवलिंग है और उस की महानता पर गर्व करने के स्थान पर उस की दयनीय स्थिति पर तरस आता है.

इस मंदिर के चारों ओर छोटे मंदिरों की दुकानें हैं, जहां आप पैसा चढ़ा कर पाप धो सकते हैं ताकि घर पहुंच कर नए सिरे से शुरू कर सकें.

मंदिरों से अच्छी तो बाहर की दुकानें है जहां तरहतरह की शृंगार सामग्री व चूड़ियां मिलती हैं.

संकटमोचन मंदिर: यह हनुमान का प्रसिद्ध पुराना सिद्ध मंदिर है. यहां समूह में घूमते बंदरों की आदतें तथा हरकतों को देख कर एक रोचक ग्रंथ लिखा जा सकता है. यहां काफी भीड़ रहती है.

दुर्गा मंदिर: वाराणसी के प्रमुख मंदिरों में से एक है. इस मंदिर का निर्माण 18 वीं शताब्दी में नागरा ढंग की भवन निर्माण कला के आधार पर करवाया गया था. प्राचीन समय में नागरा शैली उत्तर भारत में काफी प्रसिद्ध थी.

तुलसी मानस मंदिर: वाराणसी से 8 कि.मी. पर स्थित दुर्गा मंदिर के पास है. इस का निर्माण 1969 में किया गया था. इस मंदिर का निर्माण उस जगह किया गया है जहां मध्यकालीन युग में गोस्वामी तुलसीदास रहा करते थे.

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय: की स्थापना पंडित मदन मोहन मालवीय ने की थी. एशिया का सब से बड़ा आवासीय विश्वविद्यालय 2,000 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है. विश्वविद्यालय में ही बिड़ला द्वारा बनवाया गया एक ओर विश्वनाथ (शिव) मंदिर है. इस के अलावा यहां निर्मित भारत कला भवन (आर्ट गैलरी) कलाकृतियों का अच्छा संग्रह है.

घाटों का दृश्य: गंगा के तट पर चार मील के दायरे में लगभग 70 घाट फैले हैं. घाटों का सौंदर्य सूर्योदय की बेला में देखने लायक होता है. ऐसा लगता है मानो सारा



ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण सारनाथ में बौद्ध स्तूप एवं विहार देखे जा सकते हैं

शहर नींद से जाग कर यहां की 80 तंग गलियों से निकल कर गंगा के घाटों की तरफ उमड़ कर आ गया है. घाट के किनारों के पास नाव खेते मल्लाह नदी की सैर भी करवाते हैं.

कुछ स्थानों पर नहाने का भी टैक्स देना पड़ता है. मणिकर्णिका श्मशान घाट यहां का मुख्य श्मशान घाट है. इन घाटों के तट पर राजा कर्णसिंह, सिंधिया आदि भूतपूर्व राजा महाराजाओं की आरामगाहें भी बनी हैं. ये लोग यहां पुण्य भी कमाने आते थे और पाप भी. तभी उन्होंने यहां भव्य महल बनवाए. यदि पुण्य कमाते होते तो वृक्ष के नीचे का नाटक करते.

नाव खेते मल्लाह इन घाटों के नजदीक से घुमाते हुए घाटों की जानकारी देते रहते हैं. फिर आप को रेशमी, सिल्क, जरी की साड़ियों के कारखाने में ले जाते हैं. वहां से खरीदने के लिए जोर देते हैं. इन का कमीशन बंधा होता है.

गंगा तट की शाम भी आकर्षक है.

गंगा तट पर बने घाटों पर तरहतरह के दृश्य देखने को मिलते हैं. वहीं इन घाटों पर धर्म के नाम पर ठगी होती है. बनारस के पंडे यजमानों पर बाज की तरह झपटते हैं. गंगा के किनारे बने इन घाटों पर धर्म का लबादा ओढ़े एक बछिया की पूंछ पकड़ा कर दिन भर पैसे के लिए सैकड़ों लोगों को बैतरणी पार कराने वाले ये पंडे घटिया बन गए हैं.

मसजिदें: आलमगीरी मसजिद तथा ज्ञानवापी मसजिद भी दर्शनीय हैं. औरंगजेब ने मंदिरों को तुड़वा कर इन मसजिदों को बनवाया था. दोनों मसजिदें हिंदूमुसलिम भवन निर्माण कला का मिश्रित नमूना हैं.

सारनाथ: ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण दर्शनीय स्थल में सारनाथ है. रेलवे स्टेशन से 10 किलोमीटर दूर सारनाथ में ही गौतम बुद्ध ने अपने पांच शिष्यों को अपना पहला उपदेश दिया था. इसी कारण सारनाथ बौद्धों का प्रमुख तीर्थस्थान माना जाता है. बाद में सम्राट अशोक ने तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व यहां अनेक स्तूपों एवं विहारों का निर्माण करवाया. 500 ईसवी का एक स्तूप सब से ज्यादा महत्त्वपूर्ण माना जाता है. सारनाथ में चीनियों द्वारा बनवाया गया गौतम बुद्ध का मंदिर दर्शनीय है. इस के अलावा जैन, तिब्बती मंदिर तथा पुरातत्त्व संग्रहालय हैं.

आसपास के दर्शनीय स्थल

वाराणसी से 69 किलोमीटर दूर चंद्रप्रभा अभय वन राजधारी और देवधारी

झरनों के लिए विख्यात विंध्य शृंखलाओं की गोद में फैली है.

वाराणसी से लगभग 37 किलोमीटर दूर गंगा के दाएं तट पर चुनार का किला भी दर्शनीय है. इस किले में अफगान शासक शेरशाह सूरी रहता था. जो 16 वीं शताब्दी में हुमायूं को अपदस्थ कर के गद्दी पर बैठा था. यहां के लिए बसें उपलब्ध हैं. घाट से आगे किले तक पहुंचने के लिए पैदल चलना पड़ता है. चुनार बस अड्डे पर चुनार की चीनी मिट्टी के बर्तन तथा मिट्टी के खूबसूरत गुलदस्ते, सुराहियां, खिलौने, मूर्तियां आदि यहां मोलभाव कर के उचित दामों पर मिल जाती हैं.

क्या खरीदें:

वाराणसी में बनारसी साड़ी खरीद सकते हैं. गर्मियों में आम के पने का जलजीरा जरूर पीएं, बनारस का बनारसी पान, लंगड़ा आम खाएं. बनारसी आंवला, लू के लिए उत्तम पेय है. बनारस के दशमेश घाट पर फूलदार पौधे ज्यादातर औरतें पौधें बेचती दिखाई देती है. सुपारी, इत्र, लकड़ी के खिलौने भी यहां से उचित मूल्य पर खरीदे जा सकते हैं.

खजुराहो

खजुराहो मध्य प्रदेश का ही नहीं, समग्र भारत का महत्त्वपूर्ण दर्शनीय स्थल है. प्राचीन काल में यह चंदेल राजाओं की राजधानी रहा था.

नगर के चारों ओर छोटेछोटे टीलों और बुंदेलयुगीन कलापूर्ण मंदिरों से खजुराहो का प्राचीन वैभव आज भी झलकता है, जिसे देखने के लिए प्रति वर्ष देशविदेश के हजारों लोग आते हैं. यह स्थान बच्चों के साथ देखने न जाएं; क्योंकि उन के प्रश्न वयस्कों को परेशान कर सकते हैं.

अभिलेखों के आधार पर खजुराहो का प्राचीन नाम 'खर्जूरवाहक' था, किंतु अल्बरूनी (11वीं सदी) ने इसे 'कजुराहा' व इब्नबतूता (14वीं सदी) ने 'काजुर' या 'कजर्रा' कहा था. ऐसा प्रतीत होता है कि इस का सही नाम 'खजुराहा' था, जो बुंदेली बोली के प्रभाव से 'खजुराहो' हो गया है.

यहां जड़ पाषाणों पर कलाकारों ने जिस कुशलता से अनेक कोमल भाव भंगिमाओं का चित्रण करने वाली प्रतिमाओं को गढ़ा है, वे देखते ही बनती हैं. विभिन्न उपास्य देवीदेवताओं की भव्य मूर्तियों के साथसाथ यहां कामक्रीड़ा का चित्रण करने वाली अनेक मूर्तियां भी हैं, जिन से प्रणयी जीवन मौन रूप में मुखरित है. ऐसा लगता है मानो कलाकार ने समस्त नायिकाओं का रहस्योद्घाटन इन प्रतिमाओं में कर दिया है. ये समस्त प्रतिमाएं ऊपर से देखने में भले ही अश्लील या उत्तेजक प्रतीत होती हों, पर वास्तव में इन का सौंदर्य 'सत्यं शिव सुंदरम' की पृष्ठभूमि पर अंकित है, अर्थात् सत्य और शिव से समन्वित है.

कैसे जाएं?

बोइंग 737 की दैनिक उड़ान खजुराहो को दिल्ली, आगरा, वाराणसी और काठमांडू से हवाई मार्ग द्वारा जोड़ती है. अतः हवाई मार्ग से जाने वाले पर्यटक इन स्थानों से खजुराहो तक आसानी से पहुंच सकते हैं.

झांसी माणिकपुर रेलवे लाइन पर महोबा (65 कि.मी.) खजुराहो का निकटतम प्रमुख रेलवे स्टेशन है. इस के अलावा हरपालपुर (94 कि.मी.) निकट स्टेशन है. दिल्ली, बंबई, मद्रास आदि स्थानों से रेल मार्ग द्वारा आने वाले पर्यटकों के लिए यह सुविधाजनक रहेगा कि वे झांसी (170 कि.मी.) से रेलगाड़ी बदल कर



खजराहो का सारा कलात्मक सौंदर्य वहां के विभिन्न मंदिरों एवं मूर्तियों में दिखाई देता है

खजुराहो जाएं. इसी प्रकार बंबई, कलकत्ता और बनारस की ओर से खजुराहो जाने वाले र्यटक बंबई, इलाहाबाद रेलमार्ग पर स्थित सतना (117 कि.मी.) पर सुविधापूर्वक उतर सकते हैं.

सड़क मार्ग से खजुराहो भारत के सभी प्रमुख नगरों जैसे आगरा, इलाहाबाद, भोपाल, बंबई, दिल्ली, ग्वालियर, हरपालपुर, जबलपुर, झांसी, सतना, रीवां, वाराणसी, लखनऊ आदि से जुड़ा है.

सड़क मार्ग से दूरी: खजुराहो से आगरा (छतरपुर, झांसी, ग्वालियर होते हुए) 478 कि.मी. है.

खजुराहो से इलाहाबाद (पन्ना, रीवां होते हुए) 289 कि.मी. है.

खजुराहो से भोपाल (छतरपुर, सागर, रसन) 387 कि.मी. है.

खजुराहो से दिल्ली (छतरपुर, झांसी, ग्वालियर, आगरा होते हुए) 596 कि.मी., खजुराहो से ग्वालियर (छतरपुर) 275 कि.मी., बनारस (रीवां, मिरजापुर होते हुए) 359 कि. मी. है.

कहां ठहरें ?

खजुराहो में पर्यटकों के ठहरने की समुचित व्यवस्था है. यहां होटल चंदेल और जस ओबराय पांच सितारा होटल हैं तथा खजुराहो अशोक तीन सितारा. ये होटल आधुनिक सुखसुविधाओं से संपन्न हैं. इन में ठहरना अपेक्षाकृत महंगा रहता है.

अन्य होटलों में उल्लेखनीय हैं—पायल, राहिल, टूरिस्ट निकासा कैंप, टूरिस्ट बंगला, टूरिस्ट कैंपिंग सेंटर आदि.

क्या देखें ?

खजुराहो का सारा कलात्मक सौंदर्य वहां के विभिन्न मंदिरों एवं मूर्तियों में दिखाई देता है. पर्यटन की सुविधा के लिए इन मंदिरों को तीन श्रेणियों में बांटा जा सकता है.

पश्चिमी मंदिर समूह : **मंदिरों का यह समूह भारत सरकार के पर्यटन कार्यालय के सामने ही स्थित है. चौंसठ योगिनी मंदिर, कंदारिया महादेव मंदिर, देवी जगदंबा मंदिर, चित्रगुप्त मंदिर, विश्वनाथ मंदिर, पार्वती मंदिर, लक्ष्मण मंदिर, मातंगेश्वर मंदिर आदि प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं. इन में से प्राय: सभी मंदिरों के देवीदेवताओं की मूर्तियां खंडित हो चुकी हैं, केवल मार्तंगेश्वर मंदिर ही ऐसा मंदिर है जहां एक 2.5 मीटर ऊंची विशालकाय लिंग मूर्ति स्थापित है. यह लक्ष्मण मंदिर के दक्षिण में है.**

चौंसठ योगिनी मंदिर ग्रेनाइट पत्थर से बना है. यह काली मंदिर के नाम से भी जाना जाता है. कंदारिया महादेव का मंदिर खजुराहो के सुंदरतम मंदिरों में से एक है. यहां काली की प्रतिमा अब नहीं है. सिर्फ 64 योगिनियों, संन्यासिनों की प्रतिमाएं हैं.

पूर्वी मंदिर समूह : **भारत सरकार के पर्यटन कार्यालय से करीब 2-4 किलोमीटर पूर्व में पूर्वी मंदिर समूह स्थित है. यह खजुराहो गांव के निकट है. इस समूह में तीन**

हिंदू तथा तीन जैन मंदिर आते हैं. ये मंदिर हिंदू और जैन धर्मों का समन्वय करते प्रतीत होते हैं.

इस समूह के मंदिरों में वामन, ब्रह्मा, जाबरी, घंताई, आदिनाथ, पारसनाथ के मंदिर हैं. इन में से जाबरी और ब्रह्मा के मंदिर प्रायः खंडहर हो चुके हैं. शिल्पकला की दृष्टि से घंताई मंदिर देखते ही बनता है. आदिनाथ मंदिर में तीर्थंकर आदिनाथ की प्रतिमा प्रतिष्ठित है. पारसनाथ मंदिर खजुराहो का सब से विशाल तथा सर्वोत्तम जैन मंदिर है. मंदिर के पूजा गृह कक्ष में रखा सिंहासन, जिस पर बैल की प्रतिमा बड़ी खूबसूरती से तराशी हुई है, देखने लायक है.

दक्षिणी मंदिर समूह: दक्षिणी मंदिर समूह के मंदिर खजुराहो गांव से करीब 5 किलोमीटर दक्षिण में स्थित हैं. इस समूह में केवल दो मंदिर उल्लेखनीय हैं-दूल्हादेव और चतुर्भुज मंदिर. दूल्हादेव शिव मंदिर है. मंदिर की मुख्य दीवार पर पेड़ों के आसपास खेल खेलती स्त्रियों के दृश्य बड़ी उत्कृष्ट शैली में तराशे हुए हैं, जिन की सुंदरता बेमिसाल है. चतुर्भुज मंदिर में विष्णु की बड़ी सुंदर ढंग से तराशी हुई भीमकाय मूर्ति है.

इन सभी मंदिरों की दीवारों पर नारियों की विभिन्न मुद्राएं अंकित हैं, जिन से शरीर की ससारता एवं निष्प्राण सौंदर्य झलकता है. कमनीय देहयष्टि एवं वासना स्निग्ध लावण्य की दृष्टि से ये मूर्तियां अनुपम हैं.

कुछ मिथुन मूर्तियों के बाह्य रूप में अश्लीलता लक्षित की जाती है. इन का संबंध कौल, कापालिक जैसे वासना को प्रश्रय देने वाले संप्रदायों से बताया जाता है.

वस्तुतः यह चित्रांकन परंपरागत है. पुरुष की उदासीनता और नारी की निस्संकोच चेष्टा व सतृष्ण याचना इन की विशेषता है. ऐसा प्रतीत होता है कि कलाकारों ने इन मूर्तियों के माध्यम से समसामयिक सामाजिक एवं धार्मिक कुरीतियों का यथार्थ चित्रण कर जन चेतना को सजग करने का प्रयास किया था. अतः आप इन मूर्तियों का अवलोकन इसी परिप्रेक्ष्य में करें तो ज्यादा ठीक रहेगा.

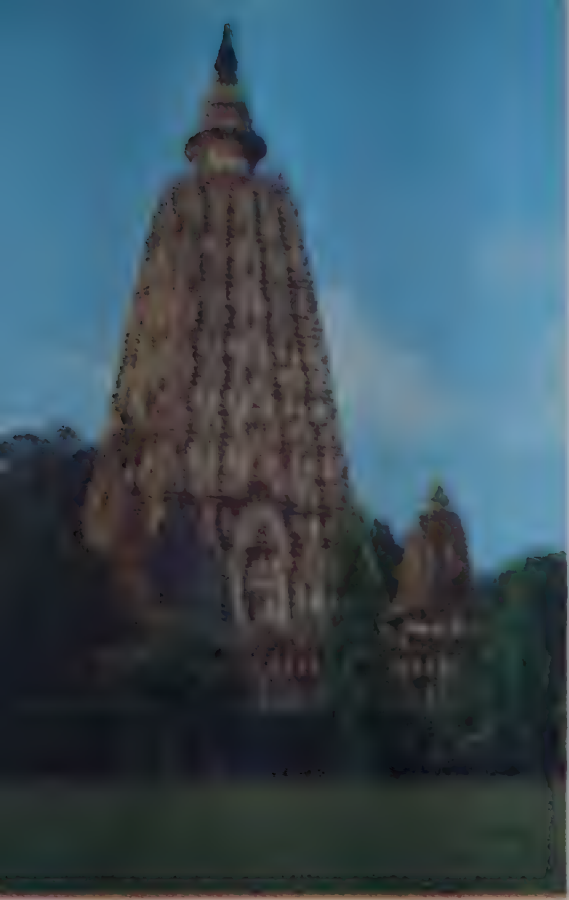
खरीदारी: खजुराहो का स्थानीय उत्पादन कुछ नहीं है, जिसे आप यादगार के रूप में ला सकें. यहां के बाजारों में प्रायः देशविदेश के बाजारों से लाई गई वस्तुएं अधिक मिलती हैं, जिन का मूल्य अधिक देना पड़ सकता है, अतः खजुराहो से कुछ भी खरीदारी करना उचित नहीं रहेगा.

गया

हिंदुओं के लिए गया एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण तीर्थ स्थान है. भारत के ही नहीं, बल्कि नेपाल से भी भारी संख्या में लोग यहां आते हैं. अपनी अंधश्रद्धा के कारण हिंदू यहां आ कर अपने पितरों से उऋण होने के लिए पिंडदान करते हैं. अपने पितरों की आत्मा को शांति प्रदान करने के लिए पूजापाठ करते हैं. यह जानते हुए भी कि यहां के पंडे उन्हें लूटेंगे और ऐसे हिंदू अकसर पंडों द्वारा लुटते भी देखे गए हैं. रेलवे स्टेशन से पंडे यात्रियों के पीछे लग जाते हैं और अगर उन्हें पता चल जाए कि कोई यात्री पिंडदान कराने आया है तो वे उसे बाकायदा घेर लेते हैं. यहां के रिकशेवाले, तांगेवाले सब पंडों के एजेंट होते हैं. अतः गया जाने से पहले पंडों के चंगुल में फंसने से सावधान रहें.

कैसे पहुंचें?

पटना से 92 कि. मी. दूर गया पूर्वी रेलवे के मुख्य मार्ग में पड़ता है. पटना तथा क्यूल से भी यह रेल मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है. वैसे पटना और गया के बीच बसें भी चलती हैं. मगर बस द्वारा समय और पैसा ज्यादा



चारों तरफ छोटीछोटी पहाड़ियां, प्राकृतिक हरा और छोटेबड़े मंदिर बोध गया को अत्यंत आकर्षक रूप प्रदान करते हैं

है और वह असुविधाजनक भी है. रेल द्वारा ही गया पहुंचें. पटना से कई ाया को जाती हैं. कुल चार घंटे का तय करना होता है.

ठहरें?

गया में ठहरने के लिए अनेक होटल, ालाएं तथा डाक-बंगले हैं. मध्यम के होटलों की कमी नहीं है, जिस में म किराया बीसपच्चीस रुपए प्रतिदिन . इन के अतिरिक्त रेलवे रिटायरिंग ं भी आप ठहर सकते हैं. गया रेलवे न के पास ही कई अच्छे व सस्ते होटल

खें?

पुराने समय में गया का मुख्य आकर्षण नदी रही है. इसी फल्गू नदी के तट पर बुद्ध ने कठोर तप किया था. परंतु अब बरसात के दिनों में ही इस में पानी भरा है. अन्य मौसमों में इस का पानी सूख है. और सिर्फ बालू रह जाती है.

एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचने ाए गया में रिकशा, टैक्सी व टेंपो नी से उपलब्ध हो जाते हैं. गया में गढ़ मंदिर पर्यटकों को विशेष तौर पर र्षित करता है. इस मंदिर का र्माण इंदौर की महारानी अहल्याबाई ने 1787 ई. में करवाया था. इस के अतिरिक्त गया म्यूजियम भी आप देख सकते हैं.

गया रेलवे स्टेशन के अहाते में ही पर्यटक सूचना केंद्र है, जहां से पर्यटक अपनी इच्छानुसार जानकारी हासिल कर सकते हैं. फोन नं.–155.

बोधगया

बौद्ध धर्मावलंबियों के लिए बोधगया न सिर्फ महान बल्कि अत्यंत महत्त्वपूर्ण व पवित्र तीर्थस्थान है. ईसा से छः शताब्दी पूर्व गौतम बुद्ध को बोधगया में बौधि वृक्ष के नीचे सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त हुआ था.

गर्मियों में यहां सर्वाधिक गर्मी पड़ती है. क्योंकि यह विषवत रेखा के पास है.

कैसे पहुंचे?

गया से बोधगया की दूरी मात्र 15 कि.मी. है. बस या रिकशा, टैक्सी किसी भी साधन से बोधगया जाया जा सकता है. जो पर्यटक बोधगया घूमना चाहते हैं, उन्हें हमारी सलाह यही है कि अपना सामान गया में ही रख कर सुबह बोधगया के लिए चल दें और शाम तक वापस आ जाएं. खाना गया से ही पैक करा लें तो अच्छा रहेगा. वैसे अगर आप चाहें तो बोधगया में भी ठहरने के कई उत्तम प्रबंध मौजूद हैं और आप वहां ठहर सकते हैं.

कहां ठहरें?

पर्यटकों की सुविधा के लिए पर्यटन विभाग, बिहार के दो टूरिस्ट बंगले हैं. संपूर्ण सुखसुविधाओं से परिपूर्ण इन बंगलों में पहले से आरक्षण करवाया जा सकता है. इन के अतिरिक्त आई. टी. डी. सी. का यात्री लाज तथा लोक निर्माण विभाग निरीक्षण बंगला आदि भी यात्रियों के लिए उपलब्ध रहते हैं.

क्या देखें?

बोधगया में सब से अधिक आकर्षक व विख्यात महाबोधि मंदिर है. इस मंदिर का निर्माण द्वितीय शताब्दी में हुआ था. यहीं पर

बोधि वृक्ष (पीपल के वृक्ष) के नीचे भगवान बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था. दुख, रोग, शोक से पीड़ित संसार के कल्याण हेतु राजकुमार सिद्धार्थ भटकते हुए यहां पहुंचे थे और ज्ञान की प्राप्ति के बाद वे बुद्ध कहलाए. यहीं बौद्ध धर्म का जन्म हुआ, जो देखतेदेखते सारे विश्व में फैल गया.

इस के अलावा तिब्बत, थाईलैंड, चीन, जापान और बर्मा के विहार भी दर्शनीय हैं. बौद्ध पर्यटकों को बोधगया विशेष तौर पर आकर्षित करता है. गांव के बाहर ही शांत निरंजन नदी बहती है.

चारों तरफ छोटीछोटी पहाड़ियां, प्राकृतिक छटा का बाहुल्य और धार्मिक पवित्रता से ओतप्रोत अनेक छोटे बड़े मं बोधगया को अत्यंत आकर्षक रूप प्र करते हैं. आप अपना कैमरा साथ ले जाए अच्छा रहेगा. यदि आप अपने साथ ख पैक करा के लाएं हैं तो कहीं एकांत में कर खा सकते हैं. फिर घूमनेफिरने के आप अगर गया वापस लौटना चाहते है सरकारी बसें व टैक्सी उपलब्ध हो जाते

क्या खरीदें?

गया का तिलकुट मशहूर है. यह ति से बनी एक विशेष प्रकार की मिठाई है 10 रुपए प्रति किलोग्राम मिलती है.

पर्यटन कार्यालय का पता: पय सूचना केंद्र, बोधगया,

पचमढ़ी

पचमढ़ी मध्य प्रदेश का एकमात्र पर्वतीय नगर है. रमणीक पचमढ़ी सतपुड़ा की रंगीन घाटियों में स्थित है. शायद इसी लिए पचमढ़ी को सतपुड़ा की रानी भी कहा जाता है. विंध्याचल के बीच से भोपाल हो कर गुजरते हुए जिस स्थल पर नर्मदा को दोबारा पार कर के आगे बढ़ते हैं, सतपुड़ा की पहाड़ियों में बसा स्थल पचमढ़ी है, जो कि बंबई और दिल्ली के बीच की आधी दूरी पर है. यहां पर पर्यटकों को बड़ेबड़े स्तूपों, मंदिरों, और वीरान किलों से दूर राहत मिलती है.

यहां लाल बालू पत्थर की पहाड़ियां विशेष आकर्षण का केंद्र हैं. धूपगढ़ और महादेव पहाड़ियों के शिखर तक की चढ़ाई का अनोखा आनंद है. यहां धूपगढ़ शिखर से सूर्योदय का नजारा बड़ा भव्य दिखाई देता है. वहीं महादेव की पहाड़ियों से नर्मदा के पार विंध्याचल का दृश्यावलोकन भी आंखों को सुख देने वाला है. सूर्यास्त के समय जब लाल पहाड़ियों के पत्थरों से टकरा कर किरणें जब नीले आकाश में प्रतिबिंबित होती है. क्षितिज में लाल और नीले रंगों की छटा का सौंदर्य देखते ही बनता है.

यह समुद्र तट से (3,500 फीट) 1,0 मीटर ऊंचाई पर स्थित है. अक्तूबर से तक कभी भी आ सकते हैं. यहां का ताप मई, जून, जुलाई में सामान्य रहता इसलिए पर्यटकों को इन्हीं महीनों में उ

पहाड़ों में झरझर बहता पानी पचमढ़ी की सुंदरता को और भी बढ़ा देता है ▼





सतपुड़ा की रंगीन वादियों में बसा पचमढ़ी पर्यटकों का मन मोह लेती है.

60 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ र दिल्ली से 1132, इलाहाबाद से बई से 1165, नागपुर से 262 तथा से लगभग 210 किलोमीटर दूर है. चमढ़ी जाने के लिए रेलवे लाइन से पिपरिया जाया जा सकता है. लेकिन के नजदीक पिपरिया स्टेशन पर के लिए रेल से इलाहाबाद से हो कर ता है. यह मध्य रेलवे के इलाहाबाद रसी विभाग पर पड़ता है. पिपरिया से पचमढ़ी लगभग 53 किलोमीटर त है. पिपरिया पहुंचने के बाद आप टैक्सी से पचमढ़ी जा सकते हैं. से पचमढ़ी जाने के लिए इंडियन इंस तथा रेल से जा सकते हैं. हवाई से पहले भोपाल जाना पड़ता है. से 210 किलोमीटर दूर स्थित जाने के लिए बसें भी मिलती हैं. आप निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन से जा सकते हैं और जबलपुर से फिर से पचमढ़ी पहुंच सकते हैं. लेकिन से जाने पर कुछ विशेष आकर्षण क पिपरिया से 25 किलोमीटर दूर द्भुत हरीतिमा दिखाई देने लगती रंगे फूलों से सुवासित वातावरण आनंद प्रदान करने लगता है. यही कारण है कि पिपरिया से ही अधिक पर्यटक पचमढ़ी पहुंचते हैं.

लेकिन इतना ध्यान रहे कि पचमढ़ी जाने से पूर्व आप अपने रहने का बंदोबस्त कर लें. मध्य प्रदेश राज्य पर्यटन निगम यहां के लिए पर्यटन कार्यक्रम संचालित करता है. पचमढ़ी में एक होटल, एक होलीडे हाउस और वन विभाग का विश्रामगृह है. इन होटलों में ठहरने का किराया रोज 15 से 50 रुपए तक लगता है.

कहां ठहरे?

मध्य प्रदेश पर्यटन विकास निगम का फारेस्ट लाज है और यहां पर इकोनमी श्रेणी के 45 सस्ते होली डे होम्स भी बने हैं.

व्यू होटल ब्लाक तथा पुराना होटल ब्लाक का प्रबंध पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट द्वारा होता है. संपर्क करें : सतपुड़ा रीट्रीट टेलीफोन-97.

अमलतास होटल (टेलीफोन- 98), पंचवटी होलीडे होम्स, पंचवटी हट्स, नंदनवन (स्पेशल एरिया डेवेलपमेंट अथारिटी) में भी ठहरा जा सकता है. यहां पर धर्मशालाएं भी ठहरने के लिए उपलब्ध हैं.

दर्शनीय स्थल

पचमढ़ी की पर्वतमालाओं में अनेक प्राकृतिक गुफाएं हैं. यहां के निवासी कला के उपासक हैं. इन गुफाओं में बने भित्तिचित्र पाषाण युग की याद दिलाते हैं. 15 हजार आबादी वाले पचमढ़ी का नाम पांच गुफाओं पर आधारित है. इन पांच गुफाओं में ही पांच पांडवों ने अज्ञातवास के दौरान एक वर्ष बिताया था. ऐसी वहां के लोगों की धारणा है. पचमढ़ी के चारों ओर पर्वत भृंखलाएं

फैली हुई हैं. जमुना प्रपात, रजत प्रपात, वास्तविक एवं अलौकिक सौंदर्य के केंद्र हैं. धूपगढ़, सुंदर कुंड, जलावतरण बिहार, राजेंद्र गिरि, जमुना कुंड, जटाशंकर, चौरागढ़, छोटा महादेव आदि अनेक रमणीय दार्शनिक स्थल हैं. भारत के पूर्व राष्ट्रपति राजेंद्रप्रसाद की स्मृति में बना राजेंद्र उद्यान पिकनिक के लिए काफी उपयुक्त है. राजेंद्र उद्यान राजेंद्र गिरि पर बना हुआ है.

सतपुड़ा पहाड़ी से लगा मेडिया घाट तथा पांडव गुफा व जटाशंकर मंदिर देखना न भूलें.

पचमढ़ी से ऐसे कई दर्शनीय स नजदीक हैं जिन्हें आप जा कर देख सक पचमढ़ी से नागद्वारी स्थल 28 किलोमी दूर है. नागद्वारी का सब से बड़ा आक वहां पाए जाने वाले किंग कोबरा सांप है फुट लंबे ये सांप आज भी वहां दिखाई दे कहते हैं कि ये सांप किसी को काटते न मगर इस भ्रम में न रहें, सांपों को दूर देखें क्योंकि इन का कोई भरोसा नहीं ह प्राकृतिक रूप से पलने वाले ये कभीकभी 5-6 फुट ऊपर तक अपना उठा कर झूमते भी हैं

कलकत्ता

भारत का सब से बड़ा शहर और पश्चिमी बंगाल की राजधानी—कलकत्ता को पूर्वी भारत का द्वार कहा जाता है. यह सदियों से भारत का प्रमुख बंदरगाह, औद्योगिक और व्यापारिक केंद्र रहा है. साथ ही यह अपनी शिक्षा, सांस्कृतिक गतिविधियों और कला के लिए भी प्रसिद्ध रहा है.

पर्यटन के लिए यहां बहुत कुछ है. साथ ही यहां पर्यटकों के लिए होटलों, बसों व अन्य यातायात और पर्यटन सुविधाओं समुचित व्यवस्था है.

कब जाएं?

कलकत्ता का अनुकूल वातावरण समुचित पर्यटन व्यवस्थाएं इसे वर्ष पर्यटन के लिए उपयुक्त बनाती हैं.

कैसे जाएं?

वायु यान द्वारा: इंडियन एअरल कलकत्ता को वायु यान द्वारा सभी प्र शहरों से जोड़ती है, जैसे दिल्ली, म पटना, अहमदाबाद, पोर्टब्लेअर, र लखनऊ, वाराणसी, गोरखपुर, विशा पटनम, भुवनेश्वर, बंगलौर, हैदरा नागपुर, सिल्चर, इंफाल, गौहाटी, अगरत बागडोगरा, लीलाबरी, जोरहाट, शिर जमशेदपुर, आईजोल इत्यादि.

इस के अतिरिक्त वायुदूत हवाई कलकत्ता को सिल्चर, शिलांग, गौह कूचबिहार, रांची, राउरकेला और जम पुर से जोड़ती है.

रेल द्वारा: यहां पहुंचने वाली प्रमुख रेलें हैं: दिल्लीकालका



अपनी कलात्मकता के लिए मशहूर पारसनाथ मंदिर.

लदहअमृतसर मेल, बांबे मेल बरास्ता ाबाद, वातानुकूलित एक्सप्रेस ता गया/पटना, नई दिल्ली और सर तक. राजधानी एक्सप्रेस (हफ्ते में न), हिमगिरि (जम्मू तवी), बांबे जनता प्रेस, देहरादून जनता एक्सप्रेस, दून प्रेस, अमृतसर एक्सप्रेस, तूफान प्रेस, दिल्ली एक्सप्रेस/दिल्ली जनता प्रेस, गोरखपुर एक्सप्रेस, मिथिला प्रेस.

द्वारा

कलकत्ता नेशनल हाइवे द्वारा समीप भी प्रमुख नगरों से जुड़ा हुआ है. कत्ता राज्य यातायात निगम (कलकत्ता ट्रांसपोर्ट कारपोरेशन) की बसें कई नगरों को जाती हैं.

नगरों से दूरी:

भुवनेश्वर से कलकत्ता 499 कि.मी., लिंग से कलकत्ता (वाया सिलिगुड़ी) कि.मी., दीघा से कलकत्ता (वाया गुड़ी) 185 कि.मी., गंगटोक से कत्ता (वाया सिलिगुड़ी) 720 कि.मी., टी से कलकत्ता (वाया सिलिगुड़ी) 1 कि.मी., काठमांडू से कलकत्ता (वाया गुड़ी) 1,170 कि.मी.

ठहरें?

कलकत्ता में पर्यटकों के ठहरने का त प्रबंध है. यहां धर्मशालाओं, सामान्य ों, लाजों के अतिरिक्त सरकारी न विभाग के मान्यता प्राप्त होटल भी तादाद में हैं, जैसे होटल एअरपोर्ट, र्क, होटल हिंदुस्तान इंटरनेशनल, ओबराय ग्रांड, पार्क होटल पांच रा होटल हैं. न्यू केनिलवर्थ तीन सितारा होटल हैं. लान होटल दो सितारा है. कार्लटन होटल तथा होटल एक सितारा होटल हैं. इस के अतिरिक्त होटल मिनर्वा, होटल शालीमार, नटराज होटल भी अच्छे हैं.

धर्मशालाओं में दिगंबर जैन भवन, श्यामदेव भानिका धर्मशाला, फूलचंद मूकिंग जैन धर्मशाला, बाबूलाल अग्रवाल धर्मशाला, नवलकिशोर डागा बीकानेरवाला धर्मशाला, महाराष्ट्र निवास में भी ठहरा जा सकता है.

क्या देखें?

डलहौजी स्क्वायर: कलकत्ता के केंद्र में स्थित 'डलहौजी स्क्वायर' कलकत्ता पर्यटन का प्रमुख केंद्र है. बंगाल के तीन शहीदों के नाम पर इस का नया नामकरण 'बिनयबा-दलदिनेश बाग' किया गया है. इस स्क्वायर के चारों ओर कलकत्ता की अनेक ऐतिहासिक इमारतें हैं. इस के उत्तर में 'राइटर्स बिल्डिंग' है. ईस्ट इंडिया कंपनी के समय में यह लिपिकों का आवास था. उस समय 'लिपिक' (क्लर्क) 'राइटर' कहलाते थे. आज इस में पश्चिम बंगाल सरकार का सचिवालय है.

डलहौजी स्क्वायर के पूर्व में कलकत्ता का व्यापारिक केंद्र तथा पश्चिम बंगाल सरकार का पर्यटन कार्यालय है. दक्षिण में राजभवन, राज्यपाल निवास और इस के पीछे है राज्य विधान सभा भवन तथा उच्च न्यायालय. पश्चिम में जी.पी.ओ. की भव्य इमारत है.

चौरंगी: डलहौजी स्क्वायर से एक किलोमीटर दूर कालीघाट मार्ग पर चौरंगी कलकत्ता का एक शानदार बाजार है, जिसे पर्यटन स्थल माना जा सकता है. यहां इटली के वास्तुविदों द्वारा निर्मित अनेक भव्य



त्ता का वनस्पति उद्यान विभिन्न के पेड़पौधों के कारण प्रसिद्ध



कलकत्ता का विशाल दक्षिणेश्वर मंदिर.

इमारतें देखते ही बनती हैं. ईस्ट इंडिया कंपनी के समय में यहां उच्चवर्गीय अंगरेजों का निवास था. अब यहां कलकत्ता का सर्वाधिक चहलपहल वाला क्षेत्र है, जहां विभिन्न दुकानें, होटल, कार्यालय तथा रिहायशी मकान हैं. यहां एक शहीद मीनार भी है. 48 मीटर लंबी यह मीनार अपनी तरह की अकेली मीनार है, जो 1841 में बनवाई गई थी. महात्मा गांधी, नेताजी सुभाषचंद्र बोस आदि कई जननायकों की विशिष्ट प्रतिमाएं भी यहां प्रतिष्ठित हैं.

हावड़ा पुलः हुगली नदी पर बना अपनी तरह का यह विश्व में सब से बड़ा पुल है. डलहौजी स्क्वायर से 5 कि.मी. दूर यह पुल विश्व का सब से व्यस्त पुल है. यह विशाल पुल हावड़ा शहर को कलकत्ता शहर से जोड़ता है. इस का निर्माण सन 1943 में किया गया था.

जैन मंदिरः दसवें जैन तीर्थंकर शीतलनाथजी को समर्पित जैन मंदिर के शीशों और पत्थरों का काम इस को बहुत आकर्षक बनाता है. डलहौजी स्क्वायर से 7 कि.मी. दूर स्थित इस मंदिर का निर्माण सन 1867 में किया गया.

काली मंदिरः डलहौजी स्क्वायर से 5 कि.मी. दूर स्थित इस काली मंदिर का निर्माण अनुमानतः 200 वर्ष पूर्व किया गया था, किंतु बाद में सन 1809 में इस का पुन: निर्माण किया गया.

नेशनल लाइब्रेरीः भारत में यह सब से बड़ी लाइब्रेरी है, जहां करीब 80 लाख पुस्तकें संग्रहीत हैं. यहां एक बार अवश्य आना चाहिए. पुस्तकों से प्रेम न हो तो भी ये पुराने संग्रह देखने लायक है.

विक्टोरिया मैमोरियलः कलकत्ता का सब से अधिक दर्शनीय स्थल डलहौजी स्क्वायर से 3 कि.मी. दूर स्थित भव्य विक्टोरिया (मैमोरियल) है. यह सफेद पत्थरों से बनाया गया है. इस को बनाने में करीब 75 लाख रुपए लागत आई थी और सन 1921 में वेल्स के राजकुमार ने इस का उद्घाटन किया था. यहां करीब 3,500 कलात्मक वस्तुएं प्रदर्शित हैं, जिस में रानी विक्टोरिया की मूर्ति भी है, जिस को सर थामस ब्रूक ने महारानी के बचपन में बनाया था.

चिड़ियाघरः डलहौजी स्क्वायर से 4 कि.मी. दूर स्थित इस चिड़ियाघर को सन 1876 में वेल्स के राजकुमार द्वारा खोला गया था. 16 हेक्टेयर क्षेत्र में फैले इस चिड़ियाघर में दुनिया भर के विभिन्न पशुपक्षी हैं. यह सुबह से शाम तक खुला रहता है और इस के अंदर प्रवेश करने का शुल्क मात्र 1 रुपया है.

बिड़ला प्लेनेटोरियमः डलहौजी



तारिका
Purnima/TS/117

स्क्वायर से 3 कि.मी. दूर स्थित यह ताराघर दक्षिणपूर्वी एशिया में सब से बड़ा है. यहां लगभग 500 लोगों के बैठने की व्यवस्था है. यहां प्रत्येक दिन 3 शो होते हैं, जो हिंदी, अंगरेजी व बंगाली में होते हैं. प्रवेश शुल्क मात्र 5 रुपए है और यह सोमवार को बंद रहता है.

इंडियन म्यूजियम: डलहौजी स्क्वायर से दो कि.मी. दूर स्थित यह म्यूजियम आमतौर पर जादूघर के नाम से जाना जाता है. यहां की भूविज्ञान, प्राणीविज्ञान और मानव विज्ञान संबंधी गैलरी, जिस में शिवालिक पहाड़ियों से प्राप्त अवशेष रखे हैं, देखते ही बनती है. साथ ही यहां कई पुरातात्त्विक चीजें भी संग्रहीत हैं.

बेलूर मठ: यह अंतर्राष्ट्रीय रामकृष्ण मिशन का हेडक्वार्टर है जो डलहौजी स्क्वायर से 16.5 कि.मी. दूर है. इस का निर्माण प्रसिद्ध संत रामकृष्ण के शिष्य स्वामी विवेकानंद ने सन 1899 में किया था. बेलूर मठ को विभिन्न कोणों से देखने पर यह चर्च, मंदिर और मसजिद की तरह दिखत[ा] है, यह इस मठ की प्रमुख विशेषता है.

दक्षिणेश्वर काली मंदिर: डलहौज[ी] स्क्वायर से 20 कि.मी. दूर स्थित इस मंदि[र] में प्रसिद्ध संत रामकृष्ण को दिव्य ज्ञान प्राप्त होने के कारण यह प्रसिद्ध रहा है. बेलूर म[ठ] के नजदीक और हुगली नदी के दूसरी तरफ स्थित इस मंदिर का निर्माण रानी रशोमन[ी] ने सन 1847 में किया था.

क्या खरीदें?

कलकत्ता का न्यू मार्केट मुख्य और क्र[य] केंद्र है. यहां से आप छोटीबड़ी जरूरतों क[ी] सभी चीजें सहज ही प्राप्त कर सकते ह[ैं] घड़ियों और कैमरों की यहां हर समय मां[ग] बनी रहती है. यहां अपना सामान बेचा भ[ी] जा सकता है.

पर्यटन कार्यालय का पता:

टूरिस्ट ब्यूरो, 3/2, बी.बी.डी. बा[ग] पूर्व, कलकत्ता.

भुवनेश्वर

भुवनेश्वर उड़ीसा राज्य की राजधानी है. यह नगर अपने ऐतिहासिक, आध्यात्मिक और स्थापत्य शिल्प की महत्ता के लिए भारत का एक महत्त्वपूर्ण केंद्र है. पारंपरिक रूप से यह नगर सुंदर मंदिरों, तालाबों और झीलों का नगर कहा जाता है. भुवनेश्वर नगर दो भागों में बंटा हुआ है. एक प्राचीन भुवनेश्वर, जिस में अनेक मंदिरों के समूह हैं. यह उड़ीसा की प्राचीन संस्कृति संजोए हुए है. दूसरा नया भुवनेश्वर, जो राजधानी के रूप में पिछले दशकों में बसाया गया है. इस में आधुनिक भवनों का निर्माण बड़ी सुरुचि और व्यवस्था के अनुसार किया गया है.

पूर्वकाल से भुवेनश्वर को कोटिलिंग कह कर पुकारते हैं. यहां कभी काशी की भांति हजारों की संख्या में शिवलिंग स्थापित थे. किसी समय यहां 1,000 शिव मंदिर थे अब केवल 500-600 ही रह गए हैं. यहां क[े] मंदिरों की रचना प्राय . एक सी है तथा उन प[र] पत्थर के बेलबूटे भी एक जैसे ही हैं.

इन में सब से प्राचीन मंदि[र] परशुरामेश्वर 5 वीं शताब्दी में बनाया गय[ा] था. इस के शिल्प कौशल पर दक्षिण शिल्[प] कला का प्रभाव है. परशुराम मंदिर क[ी] जालीदार खिड़कियों की नक्काशी दर्शनी[य] है. मुख्य मंदिर लिंगराज मंदिर लगभग 1,10[0] वर्ष पुराना उड़ीसा के ययाति केसरी द्वार[ा] निर्मित है. आधे मील की दूरी पर सिद्धरा[ज] वन में भुवनेश्वर का मंदिर है. यदि यह मंदि[र] बालू पत्थर का न होता तो इस की सुंदरत[ा] और कारीगरी आगरा के ताजमहल से कम [न] होती.

भुवनेश्वर मंदिर के पूर्व में भास्करेश्व[र]



का मंदिर है. पश्चिम में बना राजारानी का मंदिर सुंदरता में बेजोड़ है. इस मंदिर की आदमकद प्रतिमाओं में अप्सराओं का अंगअंग सांचे में ढला है. इन अप्सराओं की सुंदरता अद्वितीय है.

इन के अलावा वासुदेव, अनंत और बेताल देवादि और कई देव मंदिर दर्शनीय हैं. ब्रह्मेश्वर मंदिर के प्रांगण में मंदिर की दीवारों पर खूबसूरती से गढ़ी हुई प्रतिमाएं लिंगराज मंदिर का लघु स्वरूप हैं. भवुनेश्वर मंदिर उड़ीसी स्थापत्य कला का नगीना है. बाहरी दीवारों पर तराशी हुई प्रतिमाओं में नक्काशी भरी हुई है.

प्रवेश द्वार पर लगी पत्थर की कमानी पर बंदर और मगरमच्छ की प्रसिद्ध कहानी के दृश्य पंचतंत्र की कहानियों के हिस्से हैं. यहां उड़ीसी पंडित विष्णु शर्मा की मशहूर पंचतंत्र की कहानियों का चित्रण रोचक है.

बड़े प्रमुख नगरों से दूरी

कलकत्ता से 469 किलोमीटर, मद्रास से 1,222 किलोमीटर, दिल्ली से 2,063

भुवनेश्वर का मुक्तेश्वर मंदिर : उड़ीसी स्थापत्य कला का नमूना.

किलोमीटर, पुरी से 61 किलोमीटर, कोणार्क से 64 किलोमीटर, हैदराबाद से 1,170 किलोमीटर.

कैसे पहुचें?

भुवनेश्वर रेल तथा सड़कों द्वारा भारत के बड़ेबड़े नगरों से जुड़ा हुआ है. दिल्ली, कलकत्ता, विशाखापटनम तथा वाराणसी से भुवनेश्वर के लिए हवाई यात्राएं भी उपलब्ध हैं.

कहां ठहरें?

भुवनेश्वर में सर्किट हाउस, स्टेट गेस्ट हाउस, पर्यटक आवास गृह, यूथ होस्टल, कलिंग, अशोक, प्राची होटल, भुवनेश्वर क्लब आदि अनेक आधुनिक सुविधाजनक स्थान यात्रियों के ठहरने के लिए उपलब्ध हैं.

दर्शनीय स्थल

नंदन कानन पार्क: हरेभरे वृक्षों से घिरा प्राकृतिक वन क्षेत्र भुवनेश्वर से 12

किलोमीटर दूर 400 हेक्टेयर भूमि में फैला है. सुंदर चिड़ियाघर, वन्य पशु अभयारण्य, बोटेनिकल गार्डन तथा सुंदर पुष्पित वनस्पतियों से युक्त छोटी झील से घिरा है. यहां पर रंगबिरंगे दुर्लभ तोतों की प्रजातियां तथा देशविदेश के जानवरों में सफेद शेर, भालू, लंगूर, करतब दिखाता गिब्बन, चिंपाजी, आवाजें निकालता बंदर सर्वाधिक आकर्षण का केंद्र हैं. इन के अलावा सफारी वन में खुले शेर घूमते रहते हैं. वहां के लिए जीप आदि का भी प्रबंध है. यह बहुत ही मजेदार चिड़ियाघर है, जरूर देखें.

राज्य संग्रहालयः भुवनेश्वर में दो संग्रहालय हैं. नए भुवनेश्वर और प्राचीन भुवनेश्वर के बीच में उड़ीसा राज्य का संग्रहालय है, जिस में प्रस्तर शिल्प की अनूठी कारीगरी की मूर्तियां, सिक्के, शिलालेख, ताम्रपत्रों के लेख, मध्यकालीन दुर्लभ ताम्रपत्र की पांडुलिपियां, कलाकृतियां, अस्त्रशस्त्र तथा उड़ीसा की अन्य कला और शिल्प संबंधी वस्तुएं सुरक्षित हैं. हस्तकला संग्रहालय में हाथ से निर्मित कारीगरी की वस्तुएं प्रदर्शित हैं.

बिंदुसागर झीलः भुवनेश्वर में अनेक तालाब और झीलें हैं. पुराने भुवनेश्वर स्थित बिंदुसागर सब से बड़ी झील है. यह झील 1,300 फुट लंबी और 700 फुट चौड़ी है. झील के चारों ओर पत्थर लगे हुए हैं. किसी जमाने में इस झील के इर्दगिर्द 7,000 मंदिर बने हुए थे, जिन की वजह से भुवनेश्वर को मंदिरों का शहर कहते हैं.

धौलीः भुवनेश्वर से 10 किलोमीटर दक्षिण पूर्व में धौली पहाड़ी है, जो सम्राट अशोक और उड़ीसा के राजा कलिंग राज के युद्ध की स्मृति को संजोए हुए है. इस पहाड़ी पर सम्राट अशोक के हृदय परिवर्तन के बाद

बौद्ध धर्म स्वीकार कर लेने पर एक शिलालेख अशोक द्वारा खुदवाया हुआ मिला है. धौली पहाड़ी के ऊपर श्वेत मंदिर शैली में एक शांति स्तूप बना हुआ है, जिस के चारों ओर बुद्ध की चार विशाल प्रतिमाएं स्थापित हैं.

इस की दीवारों पर बुद्ध जीवन से संबंधित प्रतिमाएं जड़ी हुई हैं. इस के पास ही एक शिवमंदिर है, जो नया बना हुआ है. कहते हैं उसी स्थान पर पहले एक बड़ा प्राचीन शिवमंदिर था, धौली पहाड़ी ढलानों पर काजू के पेड़ लगाए गए हैं. पहाड़ी के ऊपर तक जाने वाले मार्ग के दोनों ओर काजू के हरेभरे लहलहाते वृक्ष बड़े ही सुंदर लगते हैं. पहाड़ी के नीचे समतल भाग में नारियल के वृक्षों के बगीचे दूर तक फैले हुए हैं. यहां से पूरे क्षेत्र की सुंदरता का अवलोकन कर सकते हैं. यह स्तूप बस में यात्रा करते हुए नजर आता है.

खंडगिरि उदयगिरि की गुफाएं: भुवनेश्वर से 5 किलोमीटर पश्चिम उत्तर में दो प्राचीन पहाड़ियां हैं, जिन में महात्मा बुद्ध के समय की बनी अनेक गुफाएं हैं. खंडगिरि पहाड़ी की ऊंचाई 133 फुट है. उदयगिरि की ऊंचाई 118 फुट है. ये पहाड़ियां जैन और बौद्ध मतावलंबियों के पवित्र तीर्थ हैं. ये पहाड़ियां अपने में उड़ीसा का बड़ा ही महत्त्वपूर्ण इतिहास संजोए हुए हैं. घने वृक्षों से आच्छादित इन पहाड़ियों में खंडगिरि पर जैन धर्म से संबंधित छोटीबड़ी गुफाएं हैं. ये गुफाएं लगभग 2,000 वर्ष प्राचीन हैं. इन गुफाओं में जैन साधु निवास किया करते थे.

खंडगिरि पहाड़ी पर ऊपर चढ़ाई चढ़नी पड़ती है. आसपास हरियाली फैली है. छायादार वृक्षों के बीच से हो कर रास्ता जाता है. यहां जैन संप्रदाय के आचार्य श्री पारसनाथजी का मंदिर है और आकाश गंगा नामक सरोवर है. यहां का प्राकृतिक दृश्य देखते ही बनता है. यहां 24 तीर्थंकरों की प्रतिमाएं एक ही पत्थर को काट कर तैयार की गई हैं. यहां का वातावरण काफी शांत तथा रमणीक है.

उदयगिरि में बुद्ध के समय की बनी हुई अनेक गुफाएं हैं. ये गुफाएं पर्वत काटकाट कर बनाई गई हैं. यहां बौद्ध भिक्षुकों ने आत्मज्ञान प्राप्ति की साधना की थी. ये गुफाएं इस प्रकार बनाई गई हैं कि सामने आंगन भी निकल आया है. इन में एकएक में कई कोठरियां और बरामदे आदि हैं. इन गुफाओं में सब से बड़ी गुंफा रानी नूर गुंफा है. यह दो मंजिली इमारत है. योद्धा राजा की फौजों की विजय की स्मृति में बनी गणेश गुफा में एक ही पत्थर से बने दो द्वारपाल हाथी बनाए हुए हैं. इन के अलावा सर्पगुफा, बैकुंठ गुफा, स्वर्णद्वारी गुफा हैं. यहां की प्राकृतिक सुंदरता चप्पेचप्पे में बिखरी पड़ी है. गुफाओं तक पहुंचने के लिए सीढ़ियां तथा ढलावदार रास्ता है.

हाथी गुंफा: हाथी के आकार की गुफा है. उदयगिरि की गुफाओं में यह सब से महत्त्वपूर्ण गुफा है. इस गुफा में एक विस्तृत शिलालेख मिला है, जो इतिहास में हाथी गुफा अभिलेख के नाम से जाना जाता है. ऐतिहासिक दृष्टिकोण से यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण अभिलेख है. इस अभिलेख में उड़ीसा के एक परम शक्तिशाली सम्राट 'खारवेल' के शासनकाल की तेरह वर्ष की महत्त्वपूर्ण घटनाओं का क्रम से विवरण दिया गया है. इस अभिलेख की अनुपस्थिति में ऐसे शक्तिशाली सम्राट के विषय में संभवतः हम कुछ न जान सकते. यह अभिलेख सम्राट खारवेल के शासनकाल का है, जिस का समय ई. पू. दूसरी शताब्दी है.

शिशुपालगढ़ : भुवनेश्वर से 3 किलोमीटर पूर्व गंगा नदी के तट पर शिशुपाल गढ़ के अवशेष मिले हैं, जिन्हें पुरातत्त्व विभाग ने कुछ ही वर्षों पूर्व उत्खनन कर के प्राप्त किया है. किसी समय यह स्थान उड़ीसा की राजधानी रह चुका है.

खरीदारी:

भुवनेश्वर में हस्तशिल्प की वस्तुएं अच्छी व सस्ती मिलती हैं. अतः आप अपनी रुचि के अनुसार हस्तशिल्प, पाषाण शिल्प आदि की चीजें खरीद सकते हैं.

पर्यटन कार्यालय का पता:

पर्यटन कार्यालय, जयदेव मार्ग, निकट पंथनिवास, भुवनेश्वर.



पुरी

पुरी बंगाल की खाड़ी के तट पर बसा भारत के प्रमुख दर्शनीय स्थलों में से एक है. यह देश के मुख्य तीर्थस्थलों में गिना जाता है. पुरी अपने ऐतिहासिक और धार्मिक महत्त्व के कारण प्रसिद्ध है. यहां अनेक मंदिर हैं जिन का वास्तुकला सौंदर्य अपनेआप में अनुपम है. इस के अतिरिक्त यहां का समुद्रतट बहुत आकर्षक है.

कैसे जाएं?

पुरी वायु, रेल तथा सड़क मार्गों से भारत के दूसरे प्रमुख शहरों के साथ जुड़ा है. इस का निकटतम हवाई अड्डा भुवनेश्वर (62 कि.मी.) है. यहां रेल तथा अन्य साधनों से भी पहुंचा जा सकता है.

कहां ठहरें?

पश्चिमी ढंग के होटलों में दक्षिणपूर्वी रेलवे होटल तथा अन्य होटलों में पुरी होटल, विक्टोरिया क्लब होटल, बे व्यू होटल, सामारिका होटल, सी व्यू, रेणुका और सी साइड इन होटल आदि हैं. समुद्रतट पर अब कई नए भव्य होटल बने हैं.

इन के अतिरिक्त पंथनिवास, महोदधि निवास, यूथ होस्टल, सर्किट हाउस, टूरिस्ट लाज तथा शहर की अनेक धर्मशालाओं में भी ठहरा जा सकता है. फिर भी पहले आरक्षण जरूर करवा लें.

दर्शनीय स्थल

यहां की सुनहरी धूप में चमकता समुद्रतट विश्व के सब से सुंदर तटों में से एक है. यहां सूर्योदय के समय किरणों की झिलमिलाहट और रंगों का खिलवाड़ देखने का अपना ही आनंद है. यहां प्रायः सब से अधिक पर्यटक आते हैं. पर्यटकों को नहाते या यों ही लेट कर हवा के झोंकों का आनंद लेते देखा जा सकता है. नमकीन पानी में पैर डुबोने से थकान भाग जाती है.

पुरी का विश्व प्रसिद्ध जगन्नाथ मंदिर काफी बड़े क्षेत्र में फैला हुआ है. यह मंदिर काले पत्थरों से तराशा हुआ है तथा अपनी भव्यता के लिए प्रसिद्ध है. यहां के पंडों से

सावधान रहें. लाख न नुकर करने के बाद भी वे गले में फूलों का हार डाल देते हैं और मनचाही कीमत न मिलने पर गालीगलौज करते हैं. अन्य कई तरह की अभद्र हरकतें वे कर देते हैं. इसलिए उन से बचें. मंदिर को मूर्तिकला के लिए देखने जाएं, व्यर्थ के अंधविश्वासों के लिए नहीं.

इस के अलावा पुरी में गुंडिया (रथ यात्रा के दिनों में जगन्नाथ की मूर्ति को यहीं रखा जाता है) लोकनाथ व सोनार गौरांग मंदिर भी दर्शनीय स्थल हैं. यहां अनेक मठ भी देखे जा सकते हैं.

पुरी के दक्षिणपश्चिम में चिलका झील का सौंदर्य अपनेआप में अनुपम है. यहां 160 तरह की मछलियां पाई जाती हैं. यहां नौका विहार तथा मछली पकड़ने की सुविधाएं उलब्ध हैं.

पुरी से सात कि.मी. की दूरी पर बालीघाट समुद्रतट एक खूबसूरत और मोहक पिकनिक स्थल है. यहां छोटी जाति का बाली हरिण और रंगबिरंगे पक्षी देखना बड़ा भला लगता है.

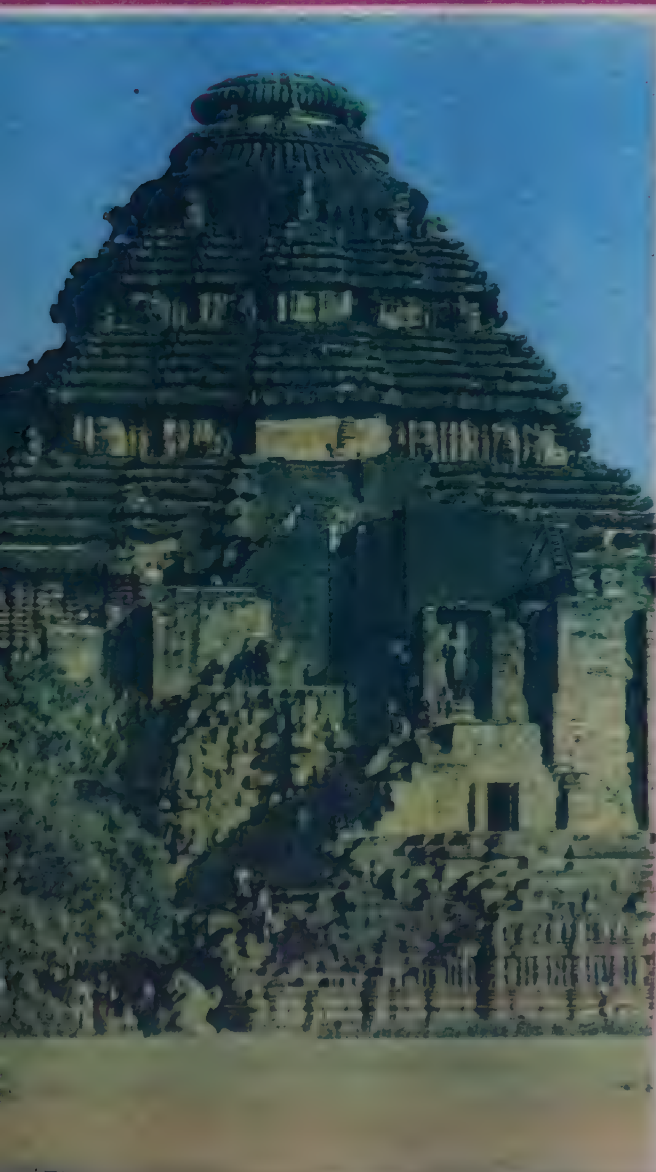
विश्वनाथ का मंदिर पुरी से 35 कि.मी. की दूरी पर ढेलांग के निकट विश्वनाथ पहाड़ी की चोटी पर स्थित है. यहां से आसपास की प्राकृतिक सुंदरता देखी जा सकती है.

सोप स्टोन को काट कर बनाई गई मूर्तियां, मंदिरों के माडल्स, काठ के रंगीन खिलौने, सीपियों से बनी वस्तुएं, तिनकों की चटाइयां, टोकरियां, पत्ताचित्र आदि अनेक चीजें यहां उचित मूल्य पर मिल जाती हैं. इन के अलावा उड़ीसा के विशेष चांदी तार के आभूषण, सूती, रेशमी कपड़े इत्यादि भी यहां की प्रसिद्ध चीजें हैं. सरकारी हस्तकला एंपोरियम अथवा नगर की दुकानों से खरीदी जा सकती हैं.

पर्यटन कार्यालय का पता

उड़ीसा सरकार कार्यालय, टूरिस्ट बंगला, पुरी –2, दूरभाष: 131

कोणार्क



'पत्थरों में बसी कविता' के नाम से प्रसिद्ध कोणार्क सूर्य मंदिर के लिए विख्यात है. कोणार्क का रेतीला शांत समुद्री तट देश के खूबसूरत तटों में से एक है. यहां शाम को तैरने, दोपहर को धूप में रेत पर खड़े होने और सुबह नीले समुद्र में दूर कहीं उगते हुए सूर्य को निहारने का अपना अलग आनंद है.

उड़ीसा के पूर्वी समुद्रतट पर चंद्रभागा नदी के किनारे बसा कोणार्क एक ऐतिहासिक नगर है. यहां बने विशाल सूर्य मंदिर को देखने देशविदेश से प्रति वर्ष हजारों पर्यटक आते हैं. यह मंदिर स्थापत्य एवं उड़ीसी वास्तुकला का चरम निर्देशन है.

कैसे जाएं?

कोणार्क भुवनेश्वर एवं पुरी से सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है. अतः पर्यटकों को कोणार्क पहुंचने के लिए पहले भुवनेश्वर या पुरी



कोणार्क अपने सूर्यमंदिर के कारण विख्यात हैं.

पहुंचना पड़ेगा. भुवनेश्वर वायु, रेल तथा बस मार्गों द्वारा देश के अन्य प्रमुख नगरों से जुड़ा है. भुवनेश्वर और पुरी से कोणार्क के लिए नियमित बस सेवाएं उपलब्ध रहती हैं.

कहां ठहरें?

कोणार्क में ठहरने के लिए पर्यटन विभाग के ट्रैवलर्स लाज तथा टूरिस्ट बंगला अच्छे एवं सुविधापूरक आवास स्थल हैं. इन के अतिरिक्त निरीक्षण भवन में भी ठहरा जा सकता है. ये सभी सरकारी आवास हैं, अतः इन में ठहरने के लिए पूर्व आरक्षण करा लेना अधिक सुविधाजनक रहता है. आप पुरी में रह कर भी कोणार्क देखने आ सकते हैं.

क्या देखें?

यों तो कोणार्क पर्यटन का मुख्य आकर्षण कला, कल्पना और शिल्प का अन्यतम नमूना सूर्य मंदिर ही है, फिर भी बीच, पुरातत्व विभाग का संग्रहालय आदि भी ऐसे स्थान हैं, जिन्हें देख कर पर्यटकों के ज्ञान और आनंद में वृद्धि ही होगी.

सूर्य मंदिर: इस मंदिर का निर्माण सूर्य के रथ के रूप में कल्पित किया गया था. इस के निर्माण की कल्पना जितनी सुंदर थी, इस की रचना उस से भी कहीं अधिक सुंदर हो गई. लेकिन यह अत्यंत अफसोस की बात है कि प्राकृतिक प्रकोपों और मानवीय संरक्षण की उदासीनता के कारण यह मंदिर ध्वस्त होता जा रहा है.

'आइने अकबरी' के अनुसार यह सूर्य मंदिर 9 वीं सदी में केसरी वंश के किसी राजा ने बनवाया था. बाद में (1238-64) गंगवंशीय राजा नरेशसिंह 'देव' (प्रथम) ने अपने विजय स्मारक के रूप में इस का निर्माण वर्तमान रूप में कराया था. 12,000 कुशल कारीगरों ने 12 वर्षों के परिश्रम से इस मंदिर को नया रूप दिया था. तत्कालीन उड़ीसा राज्य के इन 12 वर्षों की समग्र आय इस मंदिर के निर्माण में व्यय हो गई थी. इस मंदिर के निर्माण में यह भी एक आश्चर्यजनक तथ्य है कि कोणार्क क्या, वहां दूरदूर तक कोई पर्वत नहीं दिखता, फिर इस विशालकाय मंदिर का निर्माण पत्थरों से कैसे हुआ होगा.

मूलतः यह मंदिर चौकोर परकोटे से घिरा था, जिस में तीन ओर ऊंचेऊंचे प्रवेश द्वार थे. मुख्य द्वार पूर्व दिशा में था, जिस के ठीक सामने दूर समुद्र से कहीं सूर्योदय होता है.

संपूर्ण सूर्य मंदिर के मुख्यतः तीन भाग थे—नाट मंडप, जगमोहन मंडप और देउल (गर्भगृह). आप को जान कर आश्चर्य होगा कि ये तीनों ही मंडप एक ही अक्ष पर बने थे.

नाट मंडप में अनेक अलंकृत मूर्त्तियां हैं. इस के चारों ओर सोपान हैं. पूर्वी सोपान मार्ग के दोनों ओर गजशार्दूलों की मूर्तियां हैं. ये मूर्तियां देखने में शक्तिशाली और भयावह प्रतीत होती हैं. इस मंडप का शिखर भाग नष्ट हो चुका है.

नाट मंडप उतर कर जगमोहन मंडप पड़ता है. नाट और जगमोहन मंडपों के मध्य पहले उच्च 'एकाश्म अरुण स्तंभ' था, जो अब पुरी के मंदिर के सामने लगा है.

जगमोहन और देउल एक ही जगती पर स्थित हैं. जगती के नीचे विभिन्न मुद्राओं में हाथियों की आकृतियां बनी हैं और ऊपरी भाग में देव, किन्नर, गंधर्व, अप्सराओं आदि की अलंकृत कलाकृतियों के साथसाथ नरनारी की कामासक्त मुद्राएं भी अंकित हैं.

जगती की रचना में सूर्य के रथ की कल्पना की गई है. इस के 24 अलंकृत पहिए भारतीय 12 महीनों के 24 पखवाड़ों की ओर संकेत करते हैं. इन पहियों में लगी 8-8 तीलियां दिन के आठ प्रहरों को दर्शाती हैं.

जगती के आगे के भाग में सोपान पंक्ति के एक ओर तीन व दूसरी ओर चार घोड़े दौड़ती हुई मुद्रा में बने हैं. ये घोड़े सूर्य की गति और सप्ताह के सात दिनों के प्रतीक हैं.

देउल मंडप का शिखर व मध्य भाग नष्टप्राय है.

समुद्रतटः सूर्य मंदिर से करीब 3 किलोमीटर दूर समुद्रतट अत्यंत रमणीक है. पिकनिक की दृष्टि से यह स्थल आनंददायक है. यहां समुद्री रेत में खड़े हो कर धूप का आनंद लिया जा सकता है. समुद्र की लहरों में स्नान भी किया जा सकता है.

कोणार्क में दीवार सज्जा की वस्तुएं, छतरियां, उडीसी कला और हस्तशिल्प की वस्तुएं अच्छी मिलती हैं. अतः पर्यटक कोणार्क से ये वस्तुएं खरीद कर अपने कोणार्क पर्यटन की स्मृतियों को दीर्घजीवी बना सकते हैं.

पर्यटन कार्यालय का पता

कोणार्क पर्यटन के दौरान अन्य सूचनाओं के लिए पर्यटक, पर्यटन अधिकारी, पर्यटन विभाग, पंथनिवास, कोणार्क से संपर्क स्थापित कर सकते हैं.

हैदराबाद

निजामों की राजधानी हैदराबाद आंध्र प्रदेश की राजधानी है. भारत के लगभग हृदय के पास बसे हुए इस शहर को उत्तरी व दक्षिणी भारत का 'गेट वे' कहा जाता है.

मूसी नदी के दोनों ओर बसा यह शहर हुसैनाबाद झील से दो भागों में बंटा हुआ है—हैदराबाद एवं सिकंदराबाद. यहां की इमारतें मध्यकालीन भारतीय, फारसी और मुगलकालीन स्थापत्य कला के संगम का अद्भुत सौंदर्य प्रस्तुत करती हैं.

हैदराबाद का पुराना नाम भाग्यनगर था. इस की स्थापना 16 वीं शताब्दी के अंत में कुतुबशाही साम्राज्य के मुहम्मद अली कुतुबशाह ने भागमती नामक एक नर्तकी के प्रति अपने 'प्रेम स्मारक' के रूप में की थी. बाद में नर्तकी के महारानी बन कर राजभवन में आने पर जब उसे 'हैदर महल' की उपाधि दी गई तब कुतुबशाह ने शहर का नाम बदल कर हैदराबाद रख दिया.

सिकंदराबाद में ब्रिटिश पद्धति में संचालित 'निजाम' की कड़ी सुरक्षा व्यवस्था की सैनिक छावनी थी. यह निजाम का सुरक्षा कवच था.

कैसे जाएं?

बंबई, कलकत्ता, मद्रास, दिल्ली, बंगलौर, तिरुपति एवं विशाखापटनम से

हैदराबाद के लिए इंडियन एअरलाइंस के वायुयान प्रतिदिन आतेजाते हैं.

हैदराबाद रेल और सड़क द्वारा भी भारत के प्रमुख नगरों से जुड़ा है. सड़क द्वारा बंगलौर, बंबई, मद्रास, विजयवाड़ा, कलकत्ता और पणजी (गोआ) से यहां जाया जा सकता है.

कहां ठहरें?

सस्ते होटलों में रायल लाज, श्री अनु होटल, मैट्रो लाज, एवरेस्ट लाज तथा यूथ होस्टल हैं. मध्यम श्रेणी के होटलों में श्री वृंदावन होटल, होटल पैलेस, होटल अप्सरा, होटल इंपीरियल हैं. बहुत अच्छे होटलों में रिट्ज होटल, वेलकमग्रुप का बंजारा, ब्लूमून होटल, सिद्धार्थ होटल तथा जयाइंटरनेशनल होटल हैं. खाने के लिए कारथ होटलों की शृंखला है, जहां बढ़िया व सस्ता खाना मिल जाता है.

रेलवे रिटायरिंग रूम, वाई.एम.सी. ए. के कमरे मध्यम श्रेणी में अच्छे हैं. सिकंदराबाद क्लब में अस्थायी सदस्यता पर भी आप ठहर सकते हैं.

क्या देखें?

चारमीनार: हैदराबाद का प्रमुख आकर्षण है—चारमीनार तथा चूड़ियों का प्रसिद्ध बाजार. लाड बाजार से हो कर आप चारमीनार तक पहुंच सकते हैं. चारमीनार एक रक्षक की भांति नगर के बीचोबीच स्थित है. यह ताजिया पद्धति पर बनी है. इसे 1591 में सुलतान मुहम्मद अली द्वारा प्लेग की महामारी शहर के अंदर फैलने से रोकने के लिए विजय स्मारक के रूप में निर्मित कराया गया. यह बेमिसाल इमारत विभिन्न किस्म के कमानीदार दरवाजों तथा 180 फुट ऊंची चारमीनारों से अलंकृत है और इस की दूसरी मंजिल में एक छोटी सी मसजिद है. बाजारों के बीचोबीच खड़ी इस इमारत से पूरा शहर आप को नीचे फैला दिखाई पड़ता है.

मक्का मसजिद: चारमीनार के पश्चिम में थोड़ी दूरी पर बनी पूर्वी व इसलामी स्थापत्य कला और संस्कृति की प्रतीक मक्का मसजिद एक खूबसूरत रंगीन मसजिद है, इस का निर्माण 1614 में हुआ था. कहा जाता है कि इस मसजिद का नाम मक्का से लाई हुई उस ईंट पर पड़ा जो अब भी वहां ज्यों की त्यों मौजूद है.

फलकनुमा महल: आधुनिक भवनों में फलकनुमा महल है, जिसे यहीं के एक नवाब ने ओरिएंटल शैली में लाखों रुपए की लागत से बनवाया. इस की बाहरी साजसज्जा देखने लायक है. यहां से हैदराबाद के पास फैले गांव का खूबसूरत मंजर दिखाई देता है.

उस्मानिया विश्वविद्यालय: उस्मानिया विश्वविद्यालय दक्षिण का सब से महत्त्वपूर्ण विद्या अध्ययन केंद्र है. इस की स्थापत्य कला में हिंदू तथा मुसलिम शैली का सम्मिश्रण है. मूसी नदी पर उच्च न्यायालय सिटी कालिज और किनारे पर फैले पब्लिक उद्यानों में सैर का मजा भी लें.

चिड़ियाघर: मीर आलम टैंक रोड के बगल में बना नेहरू चिड़ियाघर 300 एकड़ की ऐसी ऊंचीनीची जमीन पर बना है जिस में चट्टानों के सौंदर्य को पूर्वकालीन रूप में ही रखा गया है. इसी के अंदर 'लायन सफारी पार्क' भी है. यह पार्क प्रतिदिन 8.30 सुबह से सायं 5.00 बजे तक खुला रहता है. यह भारत में ही नहीं, पूरे दक्षिणपूर्वी एशिया में अपने ढंग का एक मात्र बाग है. दर्शकों को मिनी बस द्वारा अंदर ले जाया जाता है. बच्चों की रेलगाड़ी के साथ हाथी तथा ऊंट की सवारी यहां का एक लुभावना आकर्षण है.

संग्रहालय: चारमीनार के पास ही में मूसी नदी के एक किनारे पर विश्व विख्यात सालारजंग संग्रहालय है. यह मीर युसूफ अली खां उर्फ नवाब सालारजंग (तृतीय) का निजी संग्रह है. 35 हालों में एक व्यक्ति द्वारा एकत्रित वस्तुओं का यह संग्रहालय विश्व भर में अनोखा व अद्भुत है. 'म्यूजिकल क्लाक' (संगीत घड़ी) संग्रहालय का प्रमुख आकर्षण है. घंटा पूरा होने पर एक जोकर घड़ी के भीतर का दरवाजा खोल कर बाहर आता है और समयानुसार घंटा बजा कर



हैदराबाद का प्रमुख आकर्षण : चारमीनार.

तर ही घुस जाता है.

संगमरमर पत्थर में बनी रबैका की सिद्ध मूर्ति, लघुचित्र, चमकीली हस्तलिखित डुलिपियां, कीमती हरे पत्थर की वस्तुएं, थी दांत, रत्नजटित हथियार औरंगजेब हीरे से मढ़ी तलवार तथा नवाबी शाकें यहां संग्रहीत हैं.

यहां के सार्वजनिक उद्यान भारत के ब से सुंदर उद्यानों में से हैं. ये बगीचे धान सभा पुरातत्त्व संग्रहालय, जुबली ल, जवाहर बाल भवन, तेलगु ललित ला थोरानम (यहां पर ओपन एअर येटर विशेष रूप से निर्मित है) के चारों र फैले हैं.

.एम. बिरला प्लेनीटोरियम (तारा मंडल):

यह भारत के अति उन्नत तकनीक से सज्जित अत्याधुनिक तारा मंडलों में से है. नौबत पहाड़ी पर स्थित है. आकाश के रों को जी भर कर देख तथा महसूस कर कते हैं.

सार्वजनिक उद्यान के सामने नौबत ाड़ और काला पहाड़ नाम की दो ाड़ियां हैं. कुतुबशाही बादशाहों के समय की चोटी से ढोल की आवाज पर जकीय घोषणा और आदेश सुनाए जाते थे. यह परंपरा औरंगजेब के शासनकाल तक चली गई. अब काले पहाड़ पर भगवान वेंकटेश्वर का संगमरमर से बना मंदिर रात की चांदनी में एक मनोरम दृश्य पेश करता है. दूसरी पहाड़ी पर बना हैंगिंग गार्डन यहां के प्राकृतिक दृश्यों को सुंदरता प्रदान कर रहा है.

सिकंदराबाद हैदराबाद की तुलना में नया बसा आधुनिक क्षेत्र है और अत्याधुनिक होटलों के लिए विख्यात है. गोलकुंडा का दुर्ग इस का विशेष आकर्षण है. यह दुर्ग चारमीनार से करीब पांच मील दूर है, जिस में कभी विश्व प्रसिद्ध कोहनूर हीरा जगमगाया करता था. विशाल दुर्ग को चारों ओर से घेरने वाली दीवार में आठ द्वार हैं. इस किले की सब से बड़ी विशेषता यह है कि यहां के मुख्य प्रवेश द्वार पर गुंबद के नीचे खड़े हो कर ताली बजाने से उस की आवाज को किले के सब से ऊपरी बिंदु (लगभग 120 मीटर) की ऊंचाई पर सुना जा सकता है. दूसरी विशेषता यह है कि छत पर बने बागबगीचों को सींचने तथा महलों के अंदर ऊंचाई पर जल पूर्ति के लिए देसी पद्धति से मिट्टी के बने पाइपों तथा फारसी पहियों की सहायता से जल ऊपर पहुंचता था. किले के अंदर बालाहिसार फाटक, बारूदखाना, हरम, दादमहल, तारामती मसजिद आदि में घूमा जा सकता है. घूमने के लिए गाइड जरूर कर लें.

कुतुब सुलतानों के मकबरे: मुख्य द्वारों के बाहर जाने वाली सड़क पर सात कुतुबशाही राजाओं के मकबरे हैं. इस के चारों तरफ सुंदर बागबगीचे हैं. काले

ग्रेनाइट पत्थर का बना रेमंड का मकबरा, उस्मानिया विश्वविद्यालय, येलेश्वरम संग्रहालय, पुरातत्त्व संग्रहालय, माडर्न आर्ट गैलरी भी अन्य दर्शनीय स्थल हैं.

खरीदारी

हैदराबादी मोती, नग व लाख के कड़े, चूड़ियां यहां का मुख्य आकर्षण हैं. इन के अलावा यहां हस्तशिल्प की वस्तुएं भी हैं. कोंडापल्ला खिलौने, क्रोशिए की चीजें, गलीचे, सूती साड़ियां, कारचोबी का काम की हुई चीजें, हाथीदांत और लकड़ी की चीजें, बिदरी के काम से बनी वस्तुएं भी खरीदी जा सकती हैं.

इन के अतिरिक्त वेंकटगिरि साड़ियां पोचमपल्ली तथा हिमरू साड़ियां, निर्मल चित्र, सालारजंग म्यूजियम की तांबे की अनुकृतियां, हथकरघा के कपड़े, परदे के कपड़े, चायदानी के कवर, जूते, छोटीमोटी चीजें खरीदने के लिए हैदराबाद की आबिद रोड, सुलतान बाजार, नामपल्ली, लाल बाजार उपयुक्त हैं.

पर्यटन कार्यालय का पता:

पर्यटन निदेशक, लिडकैप बिल्डिंग हिमायत नगर, हैदराबाद -500029.

मद्रास

दक्षिण भारत का मुख्य द्वार कहलाने वाला प्रमुख नगर मद्रास तमिलनाडु की राजधानी होने के साथसाथ भारत का चौथा बड़ा नगर है. 350 वर्ष पूर्व छोटेछोटे गांवों का समूह यह नगर आधुनिक सभ्यता का प्रतीक महानगर है. दक्षिण भारत की कला, संस्कृति, संगीत के साथसाथ भारत की महान परंपराओं को इस नगर ने अपने में समेट रखा है.

1639 में चंद्रगिरी के राजा द्वारा फ्रांसिस डे को ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए पट्टे (लीज) पर मद्रास पत्रम नामक स्थान पर एक व्यापारिक स्थल (ट्रेडिंग पोस्ट) खोलने के लिए जगह दी गई. उसी वर्ष सेंट जार्ज फोर्ट पर काम शुरू हो गया, जो 1653 में खत्म हुआ और इसी ब्रिटिश शिकंजे की पकड़ यहां आखिर तक मजबूत रही, जिस की वजह से स्वतंत्रता प्राप्ति तक मद्रास अंगरेजों के कब्जे में रहा. फिर बीच में यह फ्रांस तथा ब्रिटेन के बीच में झूलता भी रहा.

आधुनिक मद्रास सेंट जार्ज फोर्ट के इर्दगिर्द फैला हुआ है तथा पुराने दुर्ग की 20 फुट ऊंची दीवारें आज भी खड़ी हैं.

वास्तविक या असली मद्रास जार्ज टाउन फोर्ट के उत्तर में स्थित है. चार शताब्दी पूर्व तक अंतर्राष्ट्रीय व्यापार केंद्र होने के कारण गौरवपूर्ण इतिहास के साक्षी अवशेषों के रूप में चाइना बाजार रोड इर्वनिंग रोड, पुर्तगाली चर्च स्ट्रीट नामक गलियां आज भी मौजूद हैं. मद्रास बंदरगाह भारत के विख्यात बंदरगाहों में से एक है जब कि यह एक कृत्रिम बंदरगाह खुले तट पर बना है. यहां पर यूरोपियन अंगरेजों का उतरना जोखिम का काम था.

कैसे जाएं?

मद्रास में अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा है यहां सिंगापुर, कोलंबो आदि विदेशी नगरों से नियमित हवाई सुविधाएं उपलब्ध रहती हैं. साथ ही दिल्ली, कलकत्ता, बंबई बंगलौर, कोचीन, कोयंबटूर, हैदराबाद मदुरै, नागपुर, त्रिवेंद्रम आदि नगरों से भी यहां के लिए हवाई उड़ानें हैं.

देश के विभिन्न प्रमुख नगरों दिल्ली कलकत्ता, बंबई आदि से मद्रास तक नियमित रेलगाड़ियां भी आतीजाती हैं अतः रेल मार्ग से जाने वाले पर्यटक रेलगाड़ी द्वारा भी मद्रास तक जा सकते हैं.

मद्रास में तमिलनाडु स्टेट ट्रांसपोर्ट तथा तिरुवल्लूवर ट्रांसपोर्ट कारपोरेशन की बसों की अच्छी व्यवस्था है. आसपास के



भरे पेड़ों से घिरा मद्रास शहर. ▲

रों तथा स्थानीय आवागमन में इन बसों उपयोग किया जा सकता है. बंगलौर, दुरै, नागपट्टनम, पांडिचेरी, तंजौर, मेश्वरम, त्रिवेंद्रम, बेलूर आदि नगरों से ास के लिए नियमित बस सेवाएं उपलब्ध ती हैं.

ुख नगरों से दूरी

दिल्ली-2,188 किलोमीटर, बंबई-1,279, लोमीटर, कलकत्ता-1,662 किलोमीटर, र्नाकुलम/कोचीन- 700 किलोमीटर, ालौर-530 किलोमीटर.

हां ठहरें?

पाश्चात्य शैली के होटलों में चोला रेटन यहां का सब से बढ़िया सुविधासंपन्न टल है. डीलक्स ताज, कारोमेंडल तथा श्रीभारा अच्छे तथा महंगे होटल हैं. लीडे इन, अदयार गेट होटल आधुनिक, फसुथरे तथा आरामदेह व सुविधापूर्ण हैं. टल मार्डन, सवेरा, कांची, सुदर्शन रनेशनल, मोरिस भी अच्छे हैं. पामग्रोव ाकाहारी), मद्रास इंटरनेशनल, प्रेसीडेंट, टलांटिक भी अच्छे हैं. ब्ल्यू डायमंड सस्ता र अच्छा होटल है. अच्छी सर्विस है. भारतीय ढंग के होटलों में श्रीलेखा सब से बढ़िया होटल है, सिलवर स्टार्स, कांची टूरिस्ट होम, उदीपी होम, टूरिस्ट होस्टल, यूथ होस्टल, रेलवे रिटायरिंग रूम, वाई. डब्ल्यू.सी.ए. इंटरनेशनल गेस्ट हाउस इत्यादि में भी ठहरने की सुविधाएं उपलब्ध हैं.

यहां पाश्चात्य शैली के होटलों में ठहरना महंगा पड़ता है. इसलिए सामान्य भारतीय ढंग के होटलों में ठहरना ठीक रहता है.

दर्शनीय स्थल:

सेंट जार्ज फोर्ट: सेंट जार्ज सन 1640 में ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए बनवाया गया था. अब यहां राज्य विधान मंडल तथा सचिवालय हैं. इसी के दक्षिण में 'बार मेमोरियल' है, जिसे 1936 में बनाया गया. इस विशाल गोलाकार स्मारक में पहले विश्व युद्ध में मारे गए लोगों की स्मृतियां रखी हैं. इसी किले के अंदर 1680 में निर्मित सेंट मेरी का गिरजाघर है, जिसे अंगरेजों द्वारा निर्मित पूर्व का प्राचीनतम गिरजाघर कहा जाता है.

मेरीना बीच: मद्रास का मेरीना बीच विश्व का दूसरा सब से लंबा समुद्रतट है.



मद्रास का अडयार बीच. यहां आ कर पर्यटक तनाव भूल जाते हैं.

यहां आ कर पर्यटक अपने तनाव भूल जाते हैं. इस के उत्तरी छोर पर अन्ना स्क्वायर एक खूबसूरत बगीचे के बीच में स्थित है, जिस का प्रवेशद्वार दो विशाल हाथी दांतों के रूप में बनाया गया है. इस में एक विशाल स्मारक स्तंभ है और एक मशाल निरंतर जलती रहती है. इस बीच पर मेरीना स्वीमिंग पूल के दक्षिण में एक मछलीघर है.मेरीना के 200 से 300 गज चौड़े रेतीले तट पर अधिक भीड़भाड़ नहीं रहती. इस का मुख्य कारण मेरीना तट पर शार्क मछलियों की बहुलता होना है. यहां तैरना खतरनाक है. इसलिए अलग से स्वीमिंग पूल बना है. मछलीघर के पास पुराना आईसहाउस है. अडयार में डाक्टर ऐनी बेसेंट द्वारा स्थापित थियोसोफिकल सोसाइटी का मुख्यालय है. इस के आंगन में जो तीन पीपल के विशाल वृक्ष हैं, देश के सब से पुराने और बड़े वृक्षों में माने जाते हैं. इस की छांव में 500 लोग एक साथ विश्राम कर सकते हैं.

नेशनल आर्ट गेलरी: यहां नेशनल आर्ट गैलरी भी देखने लायक है. यह विक्टोरियन काल के गोथिक भवन में पैनथियन रोड पर स्थित है. इस के साथ ही यहां का संग्रहालय है. यहां द्रविड़ शासन की कांसे तथा पीतल की प्रतिमाएं और स्थापत्य कला के नूमने सुरक्षित देखे जा सकते हैं.

राजाजी सभागार: माउंट रोड पर राजाजी सभागार है, जहां पर मद्रास के पुराने गवर्नरों के चित्र संग्रहीत हैं.

स्नेक पार्क: रोमुलसव्हाटेकर नामक अमरीकी द्वारा स्थापित किया गया मद्रास का स्नेक पार्क (सांप उद्यान) गुइनडी डीयर पार्क में बना हुआ है. यहां भारतीय सांपों की 500 से अधिक किस्में घूमती नजर आती हैं.

रेंगने वाले अन्य जानवरों में यहां मगरमच्छ, घड़ियाल, दैत्याकार छिपकली तथा गिरगिट भी देखे जा सकते हैं.

मायलापुर: मायलापुर तिरुवल्लुवर दूसरी शताब्दी के तमिल साहित्य के कवि का जन्म स्थान मायलापुर में कपिलेश्वर मंदिर है.

कालक्षेत्र: कालक्षेत्र एक ऐसी विख्यात संस्था है, जिस ने पिछले 40 वर्षों में ललित कलाओं, नृत्य शैलियों तथा दक्षिण भारत के संगीत की उन्नति के लिए बहुत काम किया है. यहां प्राचीन कपड़ा डिजाइनों को नई शैली से तैयार किया जाता है.

वल्लुवर कोट्टम: नुंगमबक्कम में वल्लुवर कोट्टम एशिया के सब से बड़े सभाभवनों में से एक है. उच्च न्यायालय और ला कालिज की लाल रंग की ऊंचे गुंबदों वाली इमारतें भारतीय और अरब शैलियों के मिश्रण से बनी हैं.

इन के अतिरिक्त द्रविड़ स्थापत्य शैली का कपिलेश्वर मंदिर, पार्थसारथी मंदिर, संतोभ में बना गोथिक स्थापत्य शैली का गिरजाघर, सेदापेट में चिन्नामलाई का गिरजाघर, रिपन बिल्डिंग, चिड़ियाघर इत्यादि अन्य स्थल भी देखने योग्य हैं. यही नहीं, मद्रास के आसपास अनेक दर्शनीय, खूबसूरत स्थल बिखरे पड़े हैं.

खरीदारी

यहां बनने वाली प्रमुख चीजें हैं—गलीचा, कांसे की चोल शैली की मूर्तियां (ठोस एवं खोखली), जरी का काम, जो दक्षिण भारत में कोरनाड के नाम से जाना जाता है, बंधेज की रंगाई के वस्त्र, हथकरघों व बिजली के करघों से बुनी जाने वाली साड़ियों में जरी का प्रयोग, शंख, घोंघे, सीपियां, विभिन्न रंगों और आकृतियों के लैंपशेड, राखदान, पेपरवेट, अगरबत्ती स्टैंड, आभूषण तथा विभिन्न वाद्य यंत्र.

पैरीज कार्नर, अन्नामलाई, पौंडी बाजार और लुज कार्नर खरीदारी के प्रमुख क्षेत्र हैं. सरकारी खरीद केंद्रों पर आम बाजार भाव से अधिक कीमत पर चीजें मिलती हैं.

पैरीज कार्नर में कुरालागम के पास फूलों तथा फलों के बाजार हैं.

पर्यटन कार्यालय का पता:

मद्रास के पर्यटन स्थलों के लिए माउंट रोड, तमिलनाडु पर्यटन कार्यालय की विशेष बसें सुबह 7 बजे चलती हैं. संपर्क करें.

तमिलनाडु सरकार पर्यटन कार्यालय, वी. एम. टी. बिल्डिंग, 143, अन्नामलाई, मद्रास. फोन: 811751

महाबलीपुरम

बंगाल की खाड़ी के तट पर स्थित महाबलीपुरम सातवीं शताब्दी के, पल्लवों के अद्‌भुत, वैभवशाली तथा उत्कृष्ट शिल्प को संजोए हुए हैं.

महाबलीपुरम मद्रास के दक्षिण में 60 किलोमीटर दूर, समुद्र की सतह के बराबर बसा हुआ है.

पल्लवों ने आज से लगभग 1,300 वर्ष पूर्व दक्षिण भारत के एक बड़े हिस्से पर राज किया था. उस समय महाबलीपुरम उन का बंदरगाह था. वे यहां से दूरदूर तक व्यापार करते थे.

उसी दौरान उन्होंने अपनी वास्तुकला से अनेक स्मारकों, मंदिरों, रथ मंदिरों, गुफा मंदिरों आदि का सृजन किया था. उन्होंने दो स्थानों पर अपनी यादगारें छोड़ी थीं. एक तो अपनी राजधानी कांचीपुरम में, और दूसरे अपने बंदरगाह महाबलीपुरम में.

महाबलीपुरम पहले मामालापुरम नाम से जाना जाता था. इस की खोज पल्लवों



ोर चट्टानों को तराश कर बनाई गई महाबलीपुरम कलाकृतियां पर्यटकों को आकर्षित करती हैं. ▲

राजा महेंद्रवर्मन ने सातवीं शताब्दी में थी.

महाबलीपुरम की कलाकृतियां कठोर ट्टानों को तराशतराश कर गढ़ी गई थीं. लांकि समय की सैकड़ों परतों ने इन की ष्ठता और सौंदर्य को बहुत अधिक भावित किया है, किंतु फिर भी आज इन के वशेष उस समय के शैल्पिक उत्कर्ष की हानी कहते हैं. इन स्मारकों को चार भागों वर्गीकृत किया जा सकता है.

गुफामंदिर, रथ मंदिर, चट्टान के एक शाल टुकड़े पर उत्कीर्णन कला तथा टीय मंदिर.

ो जाएं?

मद्रास से महाबलीपुरम के लिए यमित रूप से बस सेवा है. इस के तिरिक्त टैक्सी से भी जाया जा सकता है. ास से एक दिन के आयोजित टूर में भी ा जाता है.

ां ठहरें?

वैसे तो आप मद्रास से सुबह चल कर, नभर महाबलीपुरम देखने के बाद शाम लौट सकते हैं. लेकिन यदि आप इस भव्य ऐतिहासिक स्थल को फुरसत से देखना चाहते हैं तो आप समुद्र पर स्थित पर्यटक विभाग के पर्यटकघर में ठहर सकते हैं.

इस के अलावा गोल्डन सन तथा सिल्वर सेंड्स आदि होटल भी हैं. बस अड्डे के पास एक धर्मशाला भी है. यहां होटल महंगे हैं.

अर्जुन की तपस्या वाला पत्थर: इस में 27 मीटर लंबे तथा 9 मीटर ऊंचे विशाल चट्टान के एक टुकड़े पर शानदार नक्काशी की गई है. जानवरों, मनुष्य आकृतियों के अलावा इस पर हिमालय से निकलती हुई गंगा भी चित्रांकित है. यह कलाकृति विश्व में अपनी तरह की सब से बड़ी और बेहतरीन है.

वरहा मंडप: यह छोटा सा मंडप एक चट्टान को काट कर बनाया गया है जिस में नक्काशी का सुंदर काम है.

कृष्ण मंडप: इस मंडप में कृष्ण को गोवर्धन पर्वत उठाए हुए दिखाया गया है.

पांच रथ: ये पांच महत्त्वपूर्ण कलाकृतियां एक पहाड़ी को ऊपर से नीचे तक तराश कर सृजित की गई हैं. ये स्मारक देखने में रथ मंदिर जैसे हैं, अतः इन्हें रथ कहा जाता है. वास्तव में, ये रथ मंदिर सातवीं शताब्दी की एक अलग किस्म की मंदिर निर्माण

शैली का नमूना हैं. ये पांच रथ पांचों पांडव और उन की पत्नी द्रौपदी के नाम पर हैं. ये छोटेछोटे मंदिर बहुत खूबसूरती तथा कौशल से गढ़े गए हैं. इन्हें सूक्ष्मता से देखने पर कलाकार की कार्यदक्षता का पता चलता है.

महिषासुरमर्दिनी गुफा: यह प्रसिद्ध गुफा मंदिर कारीगरी का एक बेहतरीन नमूना है. इस में दुर्गा महिषासुर को मारने की मुद्रा में दिखाई गई है. इस में प्रदर्शित शिल्प कला देखने योग्य है.

तटीय मंदिर:समुद्र के तट पर शान से खड़ा सातवीं शती का यह भव्य मंदिर आज तक अपनेआप को जीवित रखे हुए है जबकि सागर की लहरें इस के तट से टकराटकरा कर लौट जाती हैं. चट्टानों को तराश कर गढ़े गए इस मंदिर के आसपास सांडों की मूर्तियों की कतार है. इस मंदिर की पीठ समुद्र की ओर है. यह रथ मंदिरों से अलग शैली में बनाया गया है. सातवीं शती में राजा जयसिम्हा ने इसे बनवाया था.

ऐसा समझा जाता है कि ऐसे ही और दोतीन मंदिर सागर के तट पर थे, लेकिन धीरेधीरे सागर की लहरों में लुप्त हो गए.

इस के अतिरिक्त महाबलीपुरम में कुछ स्मरणीय समुद्र तट भी हैं.

क्या खरीदें?

पूमपूहार हेंडीक्राफ्ट्स सेल्स एंपोरियम में जा कर आप खरीदारी कर सकते हैं. इस के अलावा सरकारी मूर्तिकला प्रशिक्षण केंद्र में भी पत्थर की मूर्तियां बिकती हैं.

पर्यटन कार्यालय का पता:

पर्यटन कार्यालय, तमिलनाडु सरकार, पर्यटन विभाग, महाबलीपुरम. ●



पहाड़ पर छुट्टियां

यादगार कैसे बनाएं?

लेख • कनु सभरवाल

"कब आए नैनीताल से वापस? कैसी कटीं छुट्टियां? खूब मजा आया होगा?" आभा को देखते मैं ने एकसाथ कई प्रश्न दाग दिए.

"न ही पूछो तो अच्छा है. मैं तो वहां से न पकड़ कर आई हूं कि फिर कभी किसी ाड़ पर छुट्टियां बिताने नहीं जाएंगे," भा की आवाज से ऐसा लग रहा था, मानो ई दुखद घटना घटी हो.

"क्यों, सब ठीक ठाक तो हैं न? किसी कोई चोट तो नहीं लगी या फिर कोई चोरी रह तो नहीं हुई?"

"नहीं ऐसा तो कुछ नहीं हुआ?"

"फिर बात क्या है? क्यों इतनी बुझी सी लग रही हो?" मेरी आवाज में आश्चर्य से ज्यादा असली बात को जान लेने का उतावलापन था.

"अब क्या कहूं? एक बात हो तो बताऊं. घर से निकलने से ले कर वापस आने तक कुछ भी तो ठीक से नहीं हुआ. सबजगह कष्ट ही कष्ट उठाया. और उन तकलीफों को झेलने की खातिर तीन चार हजार रुपए जो खर्च कर दिए, उन का दुख अलग है." आभा के अंदर से दुख का लावा सा फूट रहा था.

"अब बता भी दो कि क्या हुआ, क्यों भूमिका बांधे जा रही हो," मैं ने वातावरण की गंभीरता को हलका करने के लिए मजाक के लहजे में कहा.

"क्या नहीं हुआ, अगर यह पूछतीं तो शायद मेरे लिए उत्तर देना ज्यादा आसान हो जाता. यहां से जाते हुए बस स्टैंड पर एकदो नहीं, पूरे पांच घंटे इंतजार करना पड़ा, तब कहीं जा कर एक बस में जगह मिली. वहां पहुंचने में रात हो गई थी. एक घटिया से होटल में बड़ी मुशकिल से एक मामूली सा कमरा मिला. ऊपर से उस का किराया इतना मानो 'पांच तारा होटल' हो. वहां का खाना भी बहुत ही घटिया था. बस, यों समझो कि इतने दिनों न तो ढंग का खानापीना हुआ और न ही घूमनाफिरना."

"क्यों, वहां पर धारा 144 लगी हुई थी क्या?"

"अरे, कर्फ्यू भी लगा होता तो भी घूम लेते. मगर भारी बरसात में कहां जाते. न तो हमारे पास छाते थे और न ही बरसात के लायक कपड़ेजूते."

"उन कपड़ों का क्या हुआ, जो तुम जाने से एक दिन पहले बाजार से खरीद कर लाई थीं?" मुझे आभा की बातों में रस आने लगा था.

"यह एक अलग रोना है. सब यों ही वापस आ गए. जो एकआध जोड़ा किसी ने पहना भी तो वह बरसात में खराब हो गया."

आभा जाने कितनी देर अपने दुखद अनुभव सुनाती रही. पिछले चार वर्षों से वह किसी पहाड़ पर गरमियों की छुट्टियां बिताने का कार्यक्रम बनाती आ रही थी. मगर हर बार किसी न किसी कारणवश उसे अपना कार्यक्रम रद्द करना पड़ता था.

इस बार भी उस के पति को सही समय पर छुट्टी नहीं मिल रही थी. इसलिए जाने के बारे में नहीं सोचा था. एक दिन अचानक ही उस के पति शेखर ने घर आ कर छुट्टी मंजूर हो जाने की खबर आभा को सुनाई तो उस के लिए मानो ईद का चांद निकल आया. उन्होंने दूसरे ही दिन नैनीताल जाने का कार्यक्रम बना लिया. एक ही दिन में भागदौड़ कर के सब सामान जुटा लिया.

आभा अपने पति शेखर व बच्चों के साथ नैनीताल चली गई थी. कितनी खुशी झलक रही थी उस के चेहरे से. झलकती भी क्यों न, आखिर, वह सपना जो कई वर्षों से उस ने अपने मनमस्तिष्क में संजो रखा था, पूरा होने जो जा रहा था.

परंतु इन सात दिनों में ही आभा के चेहरे की रौनक समाप्त हो चुकी थी. छुट्टियों में तरोताजा होने की जगह उलटी वह और भी थकीथकी नजर आ रही थी.

ऐसा क्यों?

यह सब सिर्फ आभा व शेखर के साथ ही हुआ हो, ऐसी बात नहीं. अन्य कितने परिवारों के साथ भी ऐसा ही कुछ न कुछ होता रहता है. हां, इतना अंतर जरूर हो सकता है कि कुछ लोगों के साथ ऐसी सिर्फ एकआध अप्रिय घटना घटी हो, जबकि किसी अन्य के साथ एक के बाद एक जाने कितनी ही ऐसी घटनाएं होती हैं, जिस से उन का घूमनेफिरने का सारा मजा किरकिरा हो जाता है.

मगर ऐसा क्यों होता है और ऐसा होने

पर्यटन पर जाने से पहले यात्रा तथा पर्यटन स्थल के बारे में अच्छी तरह जानकारी कर के हर पहलू से सोचविचार लें. कहीं ऐसा न हो कि जल्दबाजी में किए गए निर्णय और अधकचरी जानकारियों से आप की छुट्टियों का सारा मजा किरकिरा हो जाए.



र किसे दोष दिया जाए? इस बात पर गर गहराई से सोचा जाए तो इस निष्कर्ष र पहुंचना कोई कठिन काम नहीं होगा कि ह सब हमारी अपनी ही गलती का रिणाम होता है और इस सब का एक ही ख्य कारण होता है—अनुचित व अनुपयुक्त चविचार.

जल्दबाजी में किया गया काम ठीक भी संकता है, पर उस के गलत होने की भावना को भी नहीं नकारा जा सकता. हर ज होने वाले कामों को हम बिना सोचेसमझे र जल्दी में कर सकते हैं. परंतु वर्ष में एक र मिलने वाली छुट्टियों जैसी महत्त्वपूर्ण त पर बिना विचार किए कहीं जा कर तीत करने का निर्णय करें तो कहीं न हीं, कुछ न कुछ गलत होने की संभावना बहुत प्रबल होना स्वाभाविक है. इसलिए ह बहुत जरूरी है कि इस तरह के किसी र्यक्रम को कार्यरूप देने से पहले उस के भी पहलुओं पर सोचविचार कर लिया ए.

ग्रीष्म ऋतु में पहाड़ों पर छुट्टियां टने का अलग ही आनंद होता है. इस

मन में कोई चिंता न पाल कर आप इस तरह बागों में टहलते हुए छुट्टियों का मजा दुगना कर सकते हैं. ▲

आनंद को पूर्ण रूप से प्राप्त करने के लिए उसे इस का आनंद और भी बढ़ाने के लिए कुछ बातों पर गौर व अमल करना बहुत आवश्यक है. सेना के प्रशिक्षण के बारे में बहुत ही प्रचलित है "शांति के दिनों आप जितना पसीना बहाओगे, युद्ध में उतना ही कम खून बहेगा." इसी तरह पहाड़ों पर जाने से पहले आप तैयारी के विषय में जितना सोचेंगे व करेंगे, उतना ही अधिक मजा व आनंद आप वहां पहुंचने पर पाएंगे.

अगर इस बार आप अपनी छुट्टियां पहाड़ों पर बिताने का इरादा कर रहे हैं तो निम्नलिखित बातों पर ध्यान दीजिए, ताकि आप की छुट्टियां और अधिक आनंददायक व मनोरंजक बन सकें.

क्याक्या ले जाएं

क्याक्या सामान साथ में ले जाना है, इस का निर्णय करना कभी भी कठिन नहीं

होता. कठिनाई व मुशकिल तो इस बात पर आती है कि क्याक्या छोड़ा जाए. सामान बांधते समय हमें यह लगता है कि सभी चीजें हमारी जरूरत की हैं. इसी चक्कर में सामान बहुत बढ़ जाता है. इस से न सिर्फ हमें असुविधा व परेशानी होती है, बल्कि किराएभाड़े पर भी अधिक खर्च आता है. कई बार पहाड़ों पर जरूरत पड़ने पर भार उठाने वाला नहीं मिलता. उस समय ज्यादा सामान के साथ आप की क्या हालत हो सकती है, इस बारे में पहले से ही सोच लेना चाहिए.

हमें चाहिए कि हम अपने साथ कम से कम और सिर्फ जरूरत का सामान ले कर जाएं. कपड़े वही ले कर जाएं, जो आसानी से स्वयं ही धोए जा सकें. कपड़ों का चुनाव करते समय इस बात का ध्यान रखा जाए कि हम अपने मनोरंजन व सुख के लिए जा रहे हैं न कि दूसरों को दिखाने व खुश करने के लिए. इसलिए वही कपड़े साथ लिए जाएं, जिन्हें पहन कर हम आसानी से घूमफिर सकें. चमकीलीभड़कीली साड़ियां ले जाने की कोई तुक नहीं. जहां तक हो सके वे कपड़े साथ लिए जाएं जो आप अपने घर में पहनना चाहते हों. मगर किसी कारणवश या "लोग क्या कहेंगे" के डर या झिझक से न पहन पाते हों क्योंकि वहां पर ऐसी किसी बात का डर नहीं होगा.

इसी तरह जूते, चप्पलें वगैरह ऐसे होने चाहिए, जो आरामदायक हों, क्योंकि पहाड़ों पर बहुत चलना पड़ता है. ऐसे अवसरों पर ऊंची एड़ी के सैंडल और इसी तरह के अन्य जूतों से बहुत तकलीफ होती है.

कुछ ऐसी चीजें होती हैं, जिन की जरूरत तो कभीकभी पड़ती है, पर साथ में न होने पर बहुत कष्ट होता है. इन छोटीछोटी चीजों को नई जगह पर जरूरत पड़ने पर ढूंढ़ने में अकसर बहुत कठिनाई होती है. इसलिए उचित होगा, अगर ऐसी वस्तुएं अपने साथ रखी जाएं. ये न तो ज्यादा भारी होती हैं और न ही ज्यादा जगह घेरती हैं. जैसे टार्च, कुछ जरूरी दवाइयों के पैकेट, सेफ्टीपिन, रबड़बैंड, नाड़ा, सूईधागा, बटन और बंद होने वाली छतरी इत्यादि.

कैसे जाएं?

पहाड़ पर कैसे पहुंचा जाए? इस बारे में पहले से सोचना बहुत आवश्यक है "जब जाना होगा तब देख लेंगे" वाला नजरिया पूरे कार्यक्रम का मजा चौपट कर सकता है. अगर आप के पास खुद अपना वाहन है, तब भी कई बातों का ध्यान रखना जरूरी है.

जाने से पहले सफाईधुलाई (सर्विसिंग) करा लेनी उचित है. साथ में कुछ जरूरी पुरजे ले लेने चाहिए. रास्ते के बारे में पूरी जानकारी का होना बहुत आवश्यक है. इसी तरह अगर गंतव्य की दूरी ज्यादा है तो साथ में किसी अन्य गाड़ी चलाने वाले का होना भी जरूरी है. ऐसे अवसरों पर अगर साथ में एक अन्य परिवार हो (उसी गाड़ी में या फिर अलग गाड़ी में) तो रास्ते में होने वाली संभावित स्थितियों से बिना किसी तकलीफ के निबटा जा सकता है.

छुट्टियों में आवागमन बहुत बढ़ जाता है, इसलिए अगर आप सार्वजनिक सुविधाओं का इस्तेमाल करना चाहते हैं तो यह बहुत जरूरी है कि आप पहले से ही अपना स्थान आरक्षित करा लें. बिना आरक्षण के गाड़ी या बस में जाना अपनेआप को जानबूझ कर कष्ट देने के समान है. साथ ही ऐसा करने से आप का पहला कदम ही गलत दिशा में होगा. आप वहां पहुंचने से पहले ही स्वयं को थकाहारा महसूस करने लगेंगे.

कहां ठहरें?

ठहरने की जगह के बारे में अलग विचारधाराएं हैं.

कुछ लोगों का कहना है कि सारा दिन तो घूमनेफिरने में निकल जाता है. कमरे में तो सिर्फ रात को सोने के लिए ही जाना होता है. इसलिए किसी भी तरह का कमरा हो क्या फर्क पड़ता है. सिर्फ सोने के लिए अच्छे होटल में महंगा कमरा लेने से क्या लाभ?



बिलकुल इस के विपरीत कुछ लोगों
कहना है, चूंकि सारा दिन घूमनाफिरना
ता है, इसलिए थकावट हो जाती है.
ाले दिन फिर से घूमनेफिरने के लिए रात
समय शरीर को अच्छा आराम मिलना
हुत जरूरी है. इसलिए अच्छे होटल में
च्छे कमरे का होना बहुत आवश्यक है.

किसी भी तरह के होटल में कमरे का
यन आप की 'जेब' पर निर्भर करता है.
किन अगर जेब इजाजत दे तो अच्छे कमरे
होना आप की छुट्टियों व मनोरंजन को
र अधिक यादगार बना देगा.

आप जहां भी ठहरें, पहले से अपना
मरा आरक्षित करा लें. इस से अनचाही
शानियों से बचा जा सकता है, साथ ही
ों की भी बचत होती है क्योंकि आप की
बूरी देख कर होटल वाले अकसर आप
ज्यादा किराया ऐंठ लेंगे. अगर किसी
रण आप पहले से आरक्षण नहीं करा पाते
आप वहां पर दोपहर होने से पहले पहुंचें.
म या रात को पहुंचने पर आप ढंग का
टल नहीं तलाश कर सकेंगे. हो सकता है

यात्रा में उतना ही सामान ले जाना चाहिए, जितना आवश्यक हो और सुविधापूर्वक उठाया जा सके.

कि आप की इस मजबूरी का नाजायज लाभ उठाया जाए.

आप अपने साथ बिस्तर वगैरह मत ले जाएं. होटलों में बिस्तर, कंबल वगैरह मिलते हैं. अगर कहीं किसी कमरे के साथ यह सब न भी मिले तो किराए पर मिल जाते हैं. इन का किराया भी ज्यादा नहीं होता. कुल मिला कर यह उतना ही पड़ेगा, जितना मजदूरों व कुलियों का भाड़ा होता है. बिस्तर बांधने और साथ ले जाने की सिरदर्दी अलग से बचेगी.

खानेपीने के नखरे

बाहर का खाना कितना भी बढ़िया क्यों न हो, घर के खाने की बराबरी नहीं कर सकता. एकदो दिन के बाद ही बाहर के खाने से मन भर जाता है, लेकिन इस का मतलब यह नहीं है कि आप अपने साथ छोटामोटा रसोईघर भी ले जाएं. घूमने जाने का एक मकसद यह भी होता है कि गृहिणी को भी कुछ दिनों के लिए रसोईघर के झंझटों से छुट्टी मिले.

इसलिए छुट्टियों का असली आनंद तो तभी आएगा, जब वहां पर खाना बनाने का झंझट मोल न लिया जाए. खानेपीने के मामले में (खासतौर पर जब आप पहाड़ों पर छुट्टियों का मजा लेने जाते हैं) इस बात को ध्यान में रखना चाहिए 'जीने के लिए खाना है, खाने के लिए नहीं जीना है.'

इसी संदर्भ में एक अन्य बात का जिक्र करना उचित होगा. सभी पहाड़ी जगहों में काफी समय लग जाता है. सुबह नाश्ता कर के निकलतेनिकलते अकसर 9-10 बज जाते हैं. एकदो घंटे दर्शनीय स्थल तक पहुंचने में लग जाते हैं. ऐसे में अगर दोपहर का भोजन करने के लिए वापस मुख्य बाजार में आना हो तो घूमनेफिरने और कोई भी जगह आराम से दिल भर कर देखने के लिए समय नहीं

रहता. सारा समय इधरउधर की भागदौड़ में ही निकल जाता है.

ऐसे अवसरों पर यह उचित होगा कि आप दोपहर के खाने के लिए वापस न आएं. सुबह कमरे से निकलते हुए ही आप दोपहर के खाने का इंतजाम कर के चलें. ऐसे हालात में एकदो दिन के लिए उचित खाने के बिना भी रहा जा सकता है. आप अपने साथ डबलरोटी, मक्खन, जैम वगैरह ले जा सकते हैं. बिस्कुट, केक व फलों आदि से भी काम चलाया जा सकता है. दिन में खाने की कसर रात के भोजन के समय भी पूरी की जा सकती है.

अगर आप चाय के शौकीन हैं तो अपने साथ चाय का थर्मस ले कर चलिए. जब, जहां आप का दिल चाहे, वहीं पर आप को एक गरम कप चाय का मिल जाए तो आप का आनंद और भी बढ़ जाएगा.

घूमनेफिरने का असली आनंद

उस दिन रीमा मिली. वह हाल ही में मसूरी में 10 दिनों की छुट्टियां काट कर आई थी. मिलते ही कहने लगी, "खूब मजा किया. इस बार तो छः पिक्चरें देखीं वहां पर."

मैं अपनेआप को रोक न सकी और पूछ बैठी, "अपने शहर में सिनेमाघर नहीं हैं या फिर यहां पिक्चरें देखने से मनोहर साहब मना करते हैं? वहां पर प्रकृति की गोद में घूमनेफिरने गई थीं या पिक्चरें देखने?"

रीमा से कोई उत्तर देते नहीं बन पड़ा.

हम शहरों से इतनी दूर पहाड़ी स्थलों पर कुछ दिनों के लिए क्यों जाते हैं? सिर्फ इसलिए कि शहर के कोलाहल व रोजमर्रा की बंधीबंधाई जिंदगी से कुछ दिनों के लिए छुटकारा मिल सके. कुछ रमणीय स्थलों को देख सकें. शरीर को कुछ दिनों के लिए ताजी व स्वच्छ हवा का तोहफा दे सकें. अब अगर वहां जा कर भी अधिक समय सिनेमाघरों व बाजारों में घूमने में व्यतीत करना है तो फिर वहां जाने का लाभ ही क्या है?

पहाड़ों पर जा कर घूमनेफिरने का असली आनंद प्राप्त करने के लिए कुछ बातों पर अमल करना बहुत जरूरी है.

वहां पहुंचते ही आप 'टूरिस्ट ब्यूरो' से संपर्क करें और पता लगाएं कि उस शहर के आसपास कौनकौन से मुख्य दर्शनीय स्थल हैं. इस बात की जानकारी अगर आप वहां पहुंचने से पहले ही प्राप्त कर सकें तो और भी अच्छा है. अकसर यह जानकारी होटलों से भी प्राप्त हो सकती है.

अगले दिन घूमनेफिरने का कार्यक्रम पहली रात को ही बना लेना चाहिए और सब तय कर लेना चाहिए. वह जगह कितनी दूर है, वहां पर खानेपीने का क्या प्रबंध है वगैरवगैरह की जानकारी आप अपने होटल से ही प्राप्त कर सकते हैं. ऐसा करने से अगले दिन आप का कीमती और नपातुला समय बरबाद नहीं होगा.

अगर वह जगह (जहां आप घूमने जा रहे हैं) आप के होटल से ज्यादा दूर नहीं है तो बेहतर होगा कि आप पैदल चल कर जाएं. टैक्सी वगैरह में जाने से आप प्राकृतिक दृश्यों का असली आनंद नहीं उठा पाएंगे.

अगर आप को शुरू में ही कोई जगह अच्छी लगी हो तो अगले ही दिन वहीं पर दोबारा मत जाइए. किसी नई जगह पर घूमने के लिए जाएं. हो सकता है कि वह जगह पहले वाले स्थल से भी ज्यादा सुंदर हो और आप को पसंद आए.

एक बात और, आप अपने कार्यक्रम को अधिक कठोर एवं स्थिर न बनाएं. अपनेआप को समय व नित्यक्रम के धागों में कठपुतली की तरह मत बांधिए. घूमनेफिरने का एक अर्थ यह भी तो होता है कि बंधीबंधाई जिंदगी से कुछ दिनों के लिए छुटकारा मिल सके. अपने नित्यक्रम में स्थल व जरूरत के अनुसार फेरबदल की व्यवस्था रखिए.

मान लीजिए आप एक दिन के लिए नैनीताल से अल्मोड़ा जाते हैं. आप के परिवार के सदस्यों को यह जगह नैनीताल से भी ज्यादा अच्छी लगती है. ऐसे समय पर अपने पहले के बनाए कार्यक्रम के अनुसार एक ही दिन बाद नैनीताल वापस जाने की जिद मत कीजिए.

जब आप ने कार्यक्रम बनाया था, तब
ायद आप को पता नहीं था कि कौन सी
गह ज्यादा सुंदर है. आप ने दूसरों की पसंद
 अनुसार ही कार्यक्रम बनाया था. इसलिए
ब, जब आप की पसंद अलग है तो अपनी
रजी के अनुसार ही चलें. लोगों की सलाह
ो सलाह का ही दरजा दें. उसे अपनी इच्छा
 चाहत पर हावी न होने दें.

रीदारी किस लिए

अकसर देखने में आता है कि लोग हाड़ों पर छुट्टियां काटने जाते हैं कुछ ही ामान के साथ. लेकिन वापसी पर उन के ास दोतीन नग ज्यादा होते हैं. स्पष्ट है कि न्होंने वहां पर खरीदारी की होती है. धिकतर यह सामान खुला या गत्ते के डब्बों होता है क्योंकि जाते समय सूटकेस वगैरह ी खाली नहीं होते.

छुट्टियों में भ्रमण पर जाने से पहले इस षय पर सोच लेना भी उचित होगा. अगर स बात पर ध्यान दिया जाए तो लगेगा कि एक तो ऐसी खरीदारी फजूल होती है और दूसरे इस में काफी समय भी बरबाद हो जाता है.

चूंकि छुट्टियों का बजट करीबकरीब नपातुला होता है, इसलिए खरीदारी के चक्कर में घूमनेफिरने और दूसरे आवश्यक खर्चों में कटौती करनी पड़ती है. वापसी में अधिक सामान ढोने की सिरदर्दी अलग उठानी पड़ती है.

और सब से बड़ी बात यह कि पहाड़ों पर अकसर हर चीज महंगी मिलती है. आप ही सोचिए, वहां के व्यापारियों का कामधंधा तो वर्ष के पांचछः महीने ही चलता है, जब तक पर्यटन का मौसम होता है. मगर उन्हें अपना व परिवार का पेट तो वर्ष भर पालना होता है.

हां, अगर आप यादगार के तौर पर कुछ ले जाना चाहें तो बात और है. इस हालत में, आप कोई ऐसी चीज ढूंढ़िए जो वहां की 'खास' वस्तु हो और जो आप के शहर में न मिलती हो. ●



रेलयात्रा सुविधाजनक कैसे बनाएं?

लेख ● जगदीश चावला



छुट्टियों के दिन करीब आते ही अकसर कुछ लोग बाहर घूमने की योजनाएं बनाने लगते हैं और रेल यात्रा का नाम सुनते ही उन के बच्चे भी पुलकित हो उठते हैं. इस बार यदि आप भी कहीं बाहर घूमने की योजना बना रहे हों तो अपनी तैयारी में इस बात का विशेष ध्यान रखिए कि सफर में ले जाने योग्य आप का

सामान कम से कम हो तथा नग भी ज्यादा भारी व आकार में बड़े न हों, अन्यथा इन्हें जगहजगह उठाने और रखने में आप को काफी परेशानी हो सकती है. सफर में जाते समय अपने साथ वही सामान ले कर चलिए, जिस की आप को अत्यंत आवश्यकता हो. अनावश्यक सामान आप के लिए बोझा तो है ही, साथ ही इस से सामान की चोरी हो जाने की भी संभावना रहती है.

अपनी यात्रा के सामान में जहां मौसम के अनुकूल कुछ जरूरी कपड़ेलत्ते लिए जा सकते हैं, वहीं पर टार्च, थरमस, कैमरा, हाथ पंखा, ट्रांजिस्टर, बरनाल, सिरदर्द व पेटदर्द की दवाएं, शृंगार का सामान तथा रास्ते में पढ़ने के लिए कुछ पत्रपत्रिकाएं इत्यादि भी ली जा सकती हैं. मगर इतना सामान ले कर न चलें कि आप का डब्बा पूरा मालगोदाम ही बना दिखाई दे. अपने सभी आवश्यक नगों पर अपने नाम और पते की परची लगा देने से जहां उस के मार्ग में बदले जाने की संभावना कम हो जाती है, वहीं पर कभी कोई आकस्मिक दुर्घटना होने पर नग पर लिखे नामपते से उस के मालिक की पहचान भी हो जाती है और जरूरत पड़ने पर सामान सही मालिक के पास भेजा जा सकता है.

रेलयात्रा करने वालों के लिए रेलों की समयसारिणी भी बड़े काम की पुस्तिका है. इस समयसारिणी में गाड़ियों के आगमन व प्रस्थान संबंधी अनेक सूचनाएं रहती हैं.

कंप्यूटर द्वारा आरक्षण से बहुत सुविधा होने लगी है (दाएं).

परिवार के सदस्यों की आवश्यकतानुसार बर्थ का आरक्षण कराएं. लंबे सफर में कंजूसी कर अपने और दूसरों के लिए परेशानी खड़ी न करें (नीचे).





रेलयात्रा पर जाने से पूर्व आरक्षण और रेलयात्रा संबंधी अन्य जानकारी आवश्यक है ताकि हर समस्या का समुचित समाधान ढूंढ़ कर आप अपनी यात्रा को सुखद और सफल बना सकें.

अतः इसे मंगा कर इस का अध्ययन करना यात्रियों के लिए काफी हितकर रहता है. हां, यदि समयसारिणी को समझने में कोई कठिनाई आ रही हो तो रेलवे स्टेशन के पूछताछ कार्यालय से संपर्क स्थापित कर अपनी शंकाओं का समाधान किया जा सकता है.

रेलवे स्टेशन पर कई बार रेलगाड़ियां संभावित समय से पहले और बाद में भी आती हैं तथा उन के प्लेटफार्म भी बदल सकते हैं. इसलिए गाड़ी छूटने से करीब आधा घंटा पूर्व स्टेशन पर पहुंचते ही पूछताछ कार्यालय से अपनी गाड़ी व उस के प्लेटफार्म की पुष्टि अवश्य कर लीजिए. कहीं ऐसा न हो कि आप प्लेटफार्म नंबर 5 पर अपनी गाड़ी के आने की प्रतीक्षा कर रहे हों और आप की गाड़ी प्लेटफार्म नंबर 4 से रवाना हो रही हो. बड़े शहरों में गाड़ियों के प्लेटफार्मों पर आनेजाने की सूचनाएं भी प्रायः स्टेशनों पर लगे लाउडस्पीकरों पर दी जाती हैं. मगर जहां ऐसी व्यवस्था न हो वहां अपनी गाड़ी के बारे में पहले से प्राप्त की गई जानकारी भी बाद में काफी लाभदायक सिद्ध होती है.

आवश्यक और कम सामान ही ले कर चलें. कहीं ऐसा न हो कि आप की यात्रा सामान की देखभाल में ही लगी रह जाए.

हमारे यहां वातानुकूलित डब्बों वाली कई एक्सप्रेस व सुपर एक्सप्रेस गाड़ियां भी हैं जो खासखास मार्गों पर चलती हैं. ज्यादातर लोग मेल या एक्सप्रेस रेलगाड़ियों से ही यात्रा करना बेहतर मानते हैं. इन गाड़ियों का किराया भले ही सवारी गाड़ियों की अपेक्षा कुछ अधिक होता है, लेकिन लंबे सफर के लिए ऐसी गाड़ियां ज्यादा उपयुक्त हैं. ऐसी गाड़ियां न तो सवारी गाड़ी की तरह हर छोटेबड़े स्टेशन पर रुकरुक कर चलती हैं और न ही इन में ज्यादा समय बरबाद होता है. वैसे भी, यदि किसी व्यक्ति को छोटेछोटे स्टेशनों को देखने का चाव न हो तो सवारी गाड़ियां लंबी यात्रा करने वाले यात्रियों को बुरी तरह उबा देती हैं.

यह तो सभी जानते हैं कि बिना टिकट रेलयात्रा करना एक दंडनीय अपराध है, पर यह भी जान लेना चाहिए कि यात्री यदि





किसी कारणवश टिकट खिड़की से टिकट न ले पाया हो, पर उसे गाड़ी पकड़ना जरूरी हो तो ऐसे यात्री को प्लेटफार्म टिकट खरीद लेना चाहिए और गाड़ी चलने से पूर्व गार्ड को सूचित कर देना चाहिए कि वह किस कारण से टिकट नहीं ले सका. ऐसे में गार्ड एक प्रमाणपत्र दे देता है, जिस से यात्री जुर्माना अदा किए बगैर ही मार्ग में अपना टिकट बनवा सकता है.

रेलयात्रा के लिए 5 साल तक के बच्चे का टिकट नहीं लगता, जब कि 5 साल से ऊपर तथा 12 साल से कम आयु वाले बच्चों का आधा टिकट व 12 साल से बड़े बच्चों का पूरा टिकट लगता है.

अपनी सुविधापूर्ण यात्रा के लिए अपनी सीटों या बर्थों का आरक्षण पहले से करा लेना भी ठीक रहता है. सीटों व बर्थों का आरक्षण जहां 90 दिन पहले से कराया जा सकता है वहीं पर किसी मध्यवर्ती स्टेशन से आरक्षण कराने के लिए कम से कम 72 घंटे पहले अपने आरक्षण की सूचना स्टेशन मास्टर को देनी चाहिए. आप का आरक्षित टिकट ही आप को इस बात का पता देगा कि गाड़ी में आप को कौन सी सीट या बर्थ दी गई है. सीटों या शायिकाओं (स्लीपर) के आरक्षण के इच्छुक यात्रियों को अपना टिकट हमेशा रेलवे आरक्षण कार्यालय या रेलवे बुकिंग एजेंसियों अथवा अधिकृत ट्रेवल

दुर्घटना की स्थिति में अगर आप की यात्रा भंग होती है तो रेल विभाग किराया वापस कर देता है. इसलिए टिकट संभाल कर रखें. ▲

एजेंसियों से ही खरीदना चाहिए. कुछ बड़े नगरों में आरक्षण का काम अब कंप्यूटरों से होने लगा है, जिस से हेराफेरी की गुंजाइश कम हो गई है. यात्री को इस मामले में यह बात हमेशा याद रखनी चाहिए कि आरक्षित टिकटों की अवैध बिक्री एवं हस्तांतरण रेलवे अधिनियम की धारा 14ए के अंतर्गत एक दंडनीय अपराध है.

आरक्षण संबंधी किसी भी शिकायत के लिए प्रत्येक टिकट शीर्ष पर बाईं ओर छपे पी.एन.आर. नंबर का हवाला देना जरूरी है. एक व्यक्ति पार्टी (टोली) के मामले में एक समय में 4 टिकट और संयुक्त परिवार के मामले में 6 टिकटों तक का आरक्षण करा सकता है, बशर्ते कि सारे टिकट एक ही गाड़ी में समान गंतव्य के लिए हों.

कंप्यूटर आरक्षण में एक व्यक्ति से एक बार में केवल एक ही आवेदनपत्र स्वीकार किया जाता है. रेल प्रशासन यात्रियों को शायिकाओं के आरक्षण की सुविधा रात को 9 बजे से प्रातः 6 बजे तक ही देता है. अतः संबंधित यात्री यह मान कर चलें कि वे प्रातः 6 बजे से रात को 9 बजे तक

डब्बे में यात्रा करने वाले अन्य यात्रियों को बैठने का स्थान देने से मना नहीं कर सकते.

रेलवे के अधिकृत ट्रेवल एजेंट जहां अपना कुछ निर्धारित सेवा शुल्क ले कर आप का आरक्षित टिकट आप तक पहुंचा देते हैं, वहीं पर आरक्षण के लिए यात्रियों को आरक्षण शुल्क भी देना पड़ता है. आरक्षण शुल्क के बिना आरक्षण नहीं होता. इस बार के नए रेल बजट (1988-89) के बाद आरक्षण शुल्क की दरें इस प्रकार हैं: वातानुकूल पहला दर्जा-12 रुपए, पहला दर्जा-6 रुपए, वातानुकूल शयनयान (एयरकंडीशंड स्लीपर)-6 रुपए, वातानुकूल कुरसीयान (एयरकंडीशंड चेयरकार)-5 रुपए, दूसरा दर्जा शयनयान. 500 कि. मी. दूरी तक -10 रुपए, तथा (500 कि. मी. से अधिक दूरी के लिए) -15 रुपए तथा दूसरा दर्जा-2 रुपए.

सुपरफास्ट गाड़ियों में अलग से लिए जाने वाले अनुपूरक प्रभार की नई दरें भी इस प्रकार हैं—वातानुकूल पहला दर्जा-25 रुपए प्रति सीट/बर्थ, पहला दर्जा-12 रुपए, वातानुकूल शयनयान-12 रुपए, वातानुकूल कुरसीयान-12 रुपए, दूसरा दर्जा शयनयान-6 रुपए, दूसरा दर्जा कुरसीयान-2 रुपए.

अपने साथ बिस्तर आदि न ले कर चलने वाले यात्री जान लें कि कुछ मुख्य स्टेशनों पर अधिसूचित गाड़ियों में वातानुकूल दो टायर शयनयान व पहले दर्जे के सवारी डब्बों में किराए पर ट्रेवल बैग (चादरें, तौलिए, कंबल, तकिया खोल सहित) भी मिल जाते हैं. इस सुविधा के लिए आरक्षण प्राप्त करते समय या गाड़ी के अनुसूचित समय से तीन घंटे पहले टिकट कलक्टर से अनुरोध करना होता है. पर यह सुविधा सामान उपलब्ध होने पर ही मिलती है.

आकस्मिक आरक्षण

यदि आप की यात्रा आकस्मिक है और आप पहले से आरक्षण नहीं करा पाते हैं तो भी गाड़ी आने पर आप डब्बे के कंडक्टर से संपर्क स्थापित कर के स्थान पा सकते हैं, बशर्ते कि खाली स्थान उपलब्ध हो. स्थान खाली होने पर आरक्षण शुल्क ले कर आप को बैठने अथवा सोने की जगह दे दी जाएगी.

यदि किसी स्टेशन से आप आरक्षण करा लेते हैं और मार्ग के किसी अन्य स्टेशन से उस गाड़ी पर सवार होना चाहते हैं तो ऐसा आप 24 घंटे पहले यात्रा शुरू करने वाले स्टेशन को लिखित सूचना दे कर कर सकते हैं. लेकिन ऐसी दशा में जितने हिस्से की आप ने यात्रा न की हो, उस का पैसा आप को नहीं लौटाया जाएगा.

यात्रा के दौरान आप अपने आरक्षित टिकट को अपने पास संभाल कर रखिए. यद्यपि खोए हुए टिकटों या रसीदों के लिए रेलवे उत्तरदायी नहीं है, फिर भी यदि आप का आरक्षित टिकट खो जाए और रेलवे अधिकारी चाहें तो उसी आरक्षण पर 25% दंड प्रभार ले कर आप को यात्रा करने की अनुमति दे सकते हैं. यदि खोया हुआ टिकट बाद में मिल जाता है तो गाड़ी के प्रस्थान से पूर्व इसे प्रदान करने पर आप का दंड प्रभार लौटाया भी जा सकता है.

हर स्टेशन मास्टर टिकट शुल्क लौटाने के लिए भी अधिकृत होता है, अतः आंशिक रूप से प्रयुक्त किए गए टिकटों की शुल्क वापसी, यंत्र की खराबी या आगे की यात्रा के लिए आरक्षण आदि के बारे में भी स्टेशन मास्टर से संपर्क किया जा सकता है.

यदि किन्हीं कारणों से आप की यात्रा योजना स्थगित हो जाए तो अपना आरक्षण रद्द कराने की काररवाई भी तुरंत कीजिए. अप्रयुक्त टिकट के किराए की वापसी का अधिकार भी स्टेशन मास्टरों को दिया गया है. हालांकि किराया वापसी में आरक्षण शुल्क वापस नहीं किया जाता, लेकिन बिना इस्तेमाल किया गया टिकट, जिस पर आरक्षण न किया गया हो और जिस गाड़ी के लिए वह टिकट जारी किया गया हो, उस गाड़ी के वास्तविक प्रस्थान के तीन घंटे के भीतर या कोई भी टिकट जो समस्त दिन के



लिए वैध है और उस दिन की अंतिम गाड़ी के गंतव्य स्टेशन को प्रस्थान के तीन घंटे के अंदर यदि लौटाया जाता है तो ऐसे प्रत्येक टिकट के पैसे की वापसी एक रुपया प्रति टिकट लिखाई प्रभार काट कर दी जाती है.

मगर बिना इस्तेमाल हुए आरक्षित टिकटों की वापसी पर जहां यात्री को आरक्षण शुल्क वापस नहीं मिलता, वहां उसे आरक्षित टिकटों की वापसी पर जो रद्दीकरण शुल्क लगता है उसे भी इन दो भागों में बांटा गया है:

1. यदि टिकट जिस पर सीट या शायिका के लिए आरक्षण किया गया है, गाड़ी के निर्धारित प्रस्थान से दो दिन से अधिक पहले रद्द करने हेतु प्रस्तुत किया जाता है तो ऐसे प्रत्येक टिकट की वापसी 15 रुपए वातानुकूल श्रेणी, 10 रुपए प्रथम श्रेणी दो टायर वातानुकूल/वातानुकूल कुरसीयान और 5 रुपए द्वितीय श्रेणी के लिए रद्दीकरण प्रभार समान दर पर काट कर की जाती है.

2. इसी तरह, यदि कोई आरक्षित टिकट दो दिन पहले से ले कर गाड़ी छूटने के 20 घंटों के अंदर, यदि टिकट 500 किलोमीटर से अधिक दूरी का हो, और

क्लाक रूम में सामान रखते समय ताला लगाना और सामान की रसीद लेना न भूलें.

गाड़ी छूटने के 3 घंटे के अंदर, यदि टिकट 500 किलोमीटर से कम दूरी का हो तो रद्द कराए जाने पर हर टिकट की किराया वापसी 50% रद्दीकरण प्रभाव काट कर की जाती है, लेकिन इस के लिए भी कटौती की कम से कम दरें 50 रुपए वातानुकूल श्रेणी, 30 रुपए प्रथम श्रेणी दो टायर वातानुकूल कुरसीयान और 15 रुपए द्वितीय श्रेणी के लिए निर्धारित हैं.

यद्यपि रद्दीकरण के विरुद्ध आरक्षण (रिजर्वेशन अगेंस्ट कैंसलेशन यानी आर.ए.सी.) और प्रतीक्षा सूची के टिकटों पर रद्दीकरण प्रभार नहीं लगता, परंतु एक रुपया लिखाई प्रभार वसूल किया जाता है, यदि अंतिम आरक्षण चार्टों का प्रदर्शन किए जाने के समय तक आरक्षण की पुष्टि न कर दी गई हो.

किन्हीं अपरिहार्य कारणों से जब रेल सेवा भंग हो जाए तो रेलवे अपने नियमानुसार यात्रियों को किराया वापस भी कर सकती है. वैसे, यात्री को टिकट के पैसे की पूरी वापसी उस हालत में भी होती है,

जब गाड़ी तीन घंटे से अधिक देरी से छूट रही हो या रेल अधिकारी यात्री को पूर्व निश्चित श्रेणी में स्थान न दिला सकें. इसी प्रकार यदि गाड़ी किन्हीं कारणों से रद्द हो जाए तो यात्री उस दशा में तीन दिन के भीतर अपना पूरा पैसा बिना आरक्षण शुल्क के वापस ले सकते हैं. वैसे तो वातानुकूलन उपकरण की विफलता पर भी कुछ नियमों के अनुसार रकम वापसी के प्रावधान हैं, मगर जब अप्रत्याशित परिस्थिति, जैसे दुर्घटना, रेलमार्ग में दरार, बाढ़ इत्यादि के कारण गाड़ी की यात्रा अस्तव्यस्त हो जाए और रेल प्रशासन गाड़ी बदल कर या मार्ग परिवर्तित कर के या यात्री को उस के गंतव्य स्टेशन तक उचित समय के अंदर पहुंचाने में असमर्थ हो अन्यथा इन्हीं कारणों से यात्री को अपनी यात्रा, मार्ग में ही समाप्त करनी पड़े तो किराए की वापसी हो जाती है.

इसी तरह, यदि एक यात्री के पास टिकट होते हुए भी, आरक्षण हो या न हो, किसी गाड़ी, जिस में उस ने यात्रा की है, के विलंब से चलने के कारण किसी जंकशन स्टेशन पर दूसरी गाड़ी का संबंध खो देता है तो यात्रा न किए गए अंश के किराए की वापसी भी, रद्द करने का शुल्क लिए बिना उसी जंकशन स्टेशन पर ही की जाती है, बशर्ते कि उस उक्त गाड़ी, जिस में यात्री ने यात्रा की है, की वास्तविक पहुंच के तीन घंटों के भीतर यात्री ने अपना टिकट किराए की वापसी के लिए पेश कर दिया हो.

यात्रा प्रारंभ करने वाले स्टेशन पर प्रत्येक टिकट पर सामान के कुल वजन के आधार पर निम्नलिखित निश्शुल्क छूट दी जाती है: वातानुकूल दर्जा-70 किलोग्राम, पहला दर्जा-50 किलोग्राम, वातानुकूल कुरसीयान 40 किलोग्राम और दूसरा दर्जा-35 किलोग्राम. इस से अधिक वजन होने पर रेलवे द्वारा अधिक प्रभार लिया जाता है. और प्रत्येक आधे टिकट पर उपर्युक्त वजन से आधा भार ले जाने की भी छूट है. मगर कुछ वस्तुएं सामान के रूप में बुक नहीं की जातीं. जैसे विस्फोटक व ज्वलनशील पदार्थ, तेजाब एवं अन्य संहारक पदार्थ, आपसी टकराहट से टूटफूट या रिसाव से अन्य चीजों को नुकसान पहुंचाने वाली वस्तुएं इत्यादि.

यदि कोई यात्री मार्ग में या गंतव्य स्टेशन पर बिना बुक किए या आंशिक रूप से बुक किए गए, निश्शुल्क छूट से अधिक भार के सामान के साथ पकड़ा जाता है तो रेलवे द्वारा ऐसे सामान पर सामान्य दर से छः गुना ज्यादा जुरमाना भी वसूल किया जा सकता है. इसलिए उचित यही है कि दी गई छूट से ज्यादा भार के सामान की बुकिंग करा ली जाए.

वैसे तो हर यात्री अपने सामान की देखरेख का स्वयं जिम्मेदार होता है, पर यदि सफर में आप का कोई सामान चोरी या गुम हो जाए तो आप इस की शिकायत गाड़ी के कंडक्टर अथवा चलटिकट परीक्षक या गार्ड से भी कर सकते हैं और उन से समुचित मार्गदर्शन ले सकते हैं. आकस्मिक चोट लग जाने या किसी प्रकार की डाक्टरी सहायता की आवश्यकता पड़ने पर भी इन्हीं रेल अधिकारियों से संपर्क करना चाहिए.

खानपान की व्यवस्था

यों तो करीबकरीब सभी बड़े स्टेशनों पर खानपान के लिए उपहार गृहों और चाय की दुकानों के अलावा ठेकेदारों द्वारा संचालित स्टालों तथा रेहड़ियों की व्यवस्था है, जिन के पास विविध प्रकार के खाद्य व पेय पदार्थ, जैसे फल, जूस, चाय, काफी, ठंडा पेय, पान, सिगरेट इत्यादि आसानी से उपलब्ध रहते हैं, परंतु कई डाक व एक्सप्रेस गाड़ियों में यात्रियों की सुविधा के लिए भोजन यान की भी सुविधा होती है. इन पैंट्री कारों तथा बफे कारों द्वारा सुबह की चाय, नाश्ता, दोपहर का भोजन, शाम की चाय व रात का भोजन दिया जाता है. भोजन में शाकाहारी और मांसाहारी भोजन की मानक दरें भी रेलवे द्वारा निर्धारित रहती हैं. अतः यहां भोजन आदि का आदेश काफी समय पहले कोच परिचर अथवा भोजन देने

"मेरे घर में मच्छर और कॉकरोच...! हूं...!!



फ़िनिट का वार. कीड़ों की मार."

फ़िनिट शक्ति, सुरक्षित है और प्रभावी. घर के कोने कोने और खिड़की दरवाज़ों की दरारों तक में पहुंच कर उड़ने और रेंगने वाले तमाम कीड़े-मकोड़ों को मार डालता है. फ़िनिट इस्तेमाल कीजिए और निश्चित हो जाइए.

फ़िनिट शक्ति
सुरक्षित और प्रभावी.



हिन्दुस्तान पेट्रोलियम
कॉर्पोरेशन लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)

CLARION/B/HP/39/173 HIN

वाले को देना चाहिए ताकि आप के खानपान का सामान ठीक समय पर आप तक पहुंचे. वैसे, खानपान सेवाओं के लिए चुकाए गए पैसे की रसीदें मांगें और बिलों को नष्ट न करें ताकि उन का दुरुपयोग न हो.

गंतव्य स्टेशन के निकट आने पर जल्दी उतरने की हड़बड़ी में अपना कोई सामान रेलगाड़ी में मत भूलिए. यदि आप का कोई रिश्तेदार या परिचित व्यक्ति आप को स्टेशन पर लेने के लिए आने वाला हो तो उस की प्रतीक्षा भी कुछ समय तक जरूर कीजिए. ऐसा न हो कि आप उसे स्टेशन के बाहर ढूंढ़ने लगें और वह आप को प्लेटफार्म पर ही तलाशता रहे.

वैसे यदि आप अपना कोई सामान या सूटकेस आदि अपने साथसाथ लिए घूमना नहीं चाहते हों तो उसे रेलवे के अमानती सामान घर में जमा करा दीजिए. यों तो अमानती सामान घर की यह सुविधा हर बड़े स्टेशन पर उपलब्ध है, मगर छोटे स्टेशनों पर जहां अलग से ऐसी कोई व्यवस्था न हो, वहां पर यात्रियों का सामान भी बुकिंग क्लर्क या सहायक स्टेशन मास्टर ही रखता है.

अमानती सामान

अमानती सामान घर में कोई भी सामान या नग बिना यात्री का ताला लगाए नहीं रखा जाता. यह सामान भी यहां पर एक महीने की अस्थायी अवधि तक ही रखा जाता है, जिस के लिए यात्रियों को भारतीय रेल सम्मेलन कोचिंग दर सूची के नियम 61.9 के अनुसार लागू प्रभार देना होता है, जो प्रायः अवधि के अनुसार एक रुपए से तीन रुपए प्रति नग तक होता है. यहां एक महीने से अधिक पड़ा सामान लावारिस संपत्ति समझ कर खोए हुए सामान के कार्यालय में पहुंचा दिया जाता है, जिस की बाद में नीलामी कर दी जाती है.

यदि यहां रखे आप के नग की रसीद कहीं गुम हो जाए तो आप अपना वह नग स्टांप लगा हुआ क्षतिपूर्ति पत्र लिख कर रेलवे प्रशासन की मरजी से ले सकते हैं. हालांकि रेलवे आप के नग में रखी चीजों का जिम्मेदार नहीं है, परंतु वह आप के नग को अपने विवेकानुसार ही वापस करने का हक रखता है.

दिल्ली, कानपुर, लखनऊ और वाराणसी जैसे कई अन्य स्टेशनों पर यात्रियों की कीमती वस्तुएं रखने के लिए लाकरों की व्यवस्था भी है. इन लाकरों के लिए यात्री से सामान्य सा निर्धारित शुल्क लिया जाता है और ये लाकर अधिकतम एक सप्ताह तक के लिए ही सौंपे जाते हैं. रेलवे के इन लाकरों में खतरनाक विस्फोटक पदार्थ रखने की अनुमति नहीं है. यात्री को इस के लिए एक लाइसेंसपत्र पर हस्ताक्षर करने होते हैं

अपनी लंबी रेलयात्रा में यदि कोई यात्री किसी स्टेशन पर से अपने किसी परिचित को कोई समाचार या संदेश देना चाहे तो इस के लिए वह स्टेशनों पर उपलब्ध डाकतार सेवा का लाभ उठा सकता है.

रेल प्रशासन का भ्रष्टाचार भी किसी से छिपा नहीं है. अतः यात्रा के दौरान यदि आप से कोई रेलवे कर्मचारी किसी प्रकार की रिश्वत की मांग करे अथवा भ्रष्टाचार में लिप्त नजर आए तो आप उस की शिकायत भी सीधे या डाक द्वारा संबंधित रेलवे के प्रधान कार्यालय में मुख्य सतर्कता अधिकारी को अथवा सतर्कता निदेशालय, रेल मंत्रालय (रेलवे बोर्ड) नई दिल्ली को कर सकते हैं. यों तो यहां शिकायतकर्ता की सभी शिकायतें गोपनीय रखी जाती हैं, परंतु यदि कोई जांच समिति गठित हो या जांचपड़ताल अधिकारी चाहे तो शिकायतकर्ता को गवाही देने के लिए भी तैयार रहना चाहिए.

ऐसे तो प्रत्येक यात्री अपनी यात्रा के दौरान कुछ न कुछ नया अनुभव अवश्य प्राप्त करता है. मगर वे यात्राएं सचमुच ही अविस्मरणीय हो कर रह जाती हैं, जिन के अनुभव भी स्मृतियों में सदाबहार फूलों की तरह खिलेखिले से रहते हैं. इस बार अपनी यात्रा से आप कितने सुखद अनुभवों की महक ले कर लौटते हैं, यह भी देखिए. ●

खुशबू के जंगल

खुशबुओं के
उग आए
आदमकद जंगल.

बोझिल हवाओं में
फैल गया सन्नाटा,
अंगअंग शिराओं को
तोड़ गया सन्नाटा.
रात गए
शरमाए
आदमकद जंगल.

मौसम ने शरबती
रंग यों उछाले,
शाम की हथेली पर
सुरमई उजाले.
बांहों तक
झुक आए
आदमकद जंगल.

दस्तक दे गुजर गई
सुबह की धूप,
अपनी ही परछाईं
लगे अंध कूप,
यादों में
घिर आए
आदमकद जंगल.

—दिनेश शुक्ल



देखिए, टचवुड आपके लकड़ी के सुन्दर फ़र्नीचर की हिफ़ाजत लम्बे अर्से तक कैसे करता है – जो पॉलिश के बस की बात नहीं.

पेश है टचवुड पॉलीयुरेथेन क्लियर वुड फ़िनिश मतलब, अब दुबारा पॉलिश करने की कोई परेशानी नहीं. टचवुड की पॉलियुरेथेन परत खरोंचों, दाग-धब्बों और बच्चों की शरारतों से पूरी तरह सुरक्षित है.



पॉलिश में ये मज़बूती नहीं

माना, पॉलिश लगाते ही लकड़ी का फ़र्नीचर सुन्दर दिखने लगता है, लेकिन चाय, सब्ज़ी का शोरबा जैसा कुछ गिरते ही उस पर धब्बा सा पड़ जाता है, जो दुबारा पॉलिश लगाने तक बना रहता है.

क्योंकि पॉलिश सिर्फ़ एक पतली कमज़ोर सी तह ही जमा सकती है: ऐसी तह जो दाग़-धब्बों और खरोंचों से बचाव नहीं कर पाती

इसलिए आपका फ़र्नीचर कुछ ही महीनों में धब्बों और खरोंचो की नुमाइश बन जाता है.

और फिर वो भद्दा सा दिखने लगता है.

टचवुड–पॉलीयूरेथेन की मज़बूती

टचवुड में है पॉलीयूरेथेन–बहुत ही मज़बूत प्लास्टिक इसकी एक गाढ़ी पारदर्शी परत बन जाती है जो लकड़ी पर मज़बूती से जमी रहती है

ये परत गर्म और ठंडी चीज़ों और खरोंचों का एक लम्बे अर्से तक मुक़ाबला कर सकती है. इतना ही नहीं, इस परत के ज़रिये लकड़ी की स्वाभाविक चमक बरसों एक सी बनी रहती है, जबकि इतने वक़्त में मामूली पॉलिश का नामोनिशान तक नहीं रह पाता.



ब्रश से लगाइए–ये सूखकर एक मज़बूत परत बन जाता है.

टचवुड लिक्विड है, इसलिए ब्रश से इसे लगाया जा सकता है. और ये काम कोई भी पेन्टर आसानी से कर सकता है. याद रखिए, दुबारा जब भी आप अपने घर में रंग कराएँ, फ़र्नीचर पर टचवुड ज़रूर आज़माएँ

चूँकि ये मजबूत गाढ़ी परत में बदल जाता है, इसलिए मामूली पॉलिश के मुक़ाबले कुछ देरी से सूखता है. फिर भी इसके सूखने मे, खिड़की और दरवाज़ों पर किए पेन्ट से ज़्यादा वक़्त नहीं लगता.

और फिर टचवुड की सुरक्षा बारीक से बारीक नक्काशी में फैल जाती है–हर छुपे कोने तक पहुँच जाती है.

वैसे टचवुड की क़ीमत मामूली पॉलिश से कुछ ज़्यादा ज़रूर है, लेकिन आपके लकड़ी के सुन्दर फ़र्नीचर को ये जितना सुरक्षित रखता है उससे क़ीमत वसूल हो जाती है. पॉलिश इतने लम्बे अर्से तक बचाव नहीं कर सकती.

ग्लॉसी (चमकीली) या मैट (बिना चमकवाली) फ़िनिश

टचवुड दो तरह के फ़िनिश मे मिलता है, ग्लॉसी और मैट, जो मामूली पॉलिश मे नहीं मिलता और फिर आप उसमें अपनी पसंद के रंग मिलाकर लकड़ी को तीन तरह के विशेष रूप दे सकते हैं.

जितना चाहें–आसानी से ले आइए

एशियन पेन्ट्स–विक्रेता की किसी भी दूकान से आप टचवुड ले सकते हैं: बस दूकान में आइए और ले जाइए.

टचवुड–बस एक बार के इस्तेमाल से ही आप जान जाएंगे कि ये आपके फ़र्नीचर की सुन्दरता किस ख़ूबी से बचाए रखता है

TOUCH WOOD

एक बार लगे–फ़र्नीचर बरसों नया रहे.



OBM/9349/HN

एशियन पेन्ट्स

एहसास

कहानी • कल्पना गुप्ता

"मां, मुझ से तुम्हारा अपमान सहन नहीं होता है. मेरे लिए इसे सहन करना असंभव है. कभीकभी सोचती हूं कि तुम्हें बेकार ही इस पचड़े में फंसा दिया. मेरा अंतर्मन मुझे बारबार धिक्कारता है. मेरे ही सामने विशाल के पिता तुम्हें कैसीकैसी बातें सुनाते हैं. वह सदा तुम पर आदेश चलाते रहते हैं और मुझे उस बुड्ढे की ये सभी हरकतें बरदाश्त करनी पड़ती हैं. केवल तुम्हारे कारण. तुम सदा चुप्पी का ताला मेरे मुंह पर डाले रहती हो. आखिर, यह सब कब तक चलेगा?''

''गुड्डो, तुम से एक नहीं हजार बार कहा है कि तुम इन सब बातों पर ध्यान न दो. यदि आज मैं भारत चली जाऊं तो तुम तो अपनी देखभाल अच्छी तरह कर लोगी, पर इस चार वर्षीया मासूम बच्ची का क्या होगा? तुम फिर इसे 'चाइल्ड माईंडर' के पास पटक आओगी. फूल सी बच्ची की क्या



शिखा तो पहले से ही चिढ़ी हुई थी. विशाल के फरमाइश करते ही वह भड़क गई.

दुर्गति कर रखी थी तुम ने. अब मेरे पास रह कर तो इस के चेहरे पर कुछ रौनक आई है और शरीर पर कुछ मांस चढ़ा है." (चाइल्ड माईंडर, यानी बच्चों की देखभाल करने वाली वे स्त्रियां जो एक निश्चित धनराशि पर बच्चे की देखभाल करने का पूर्ण दायित्व लेती हैं.)

यह वार्त्तालाप डाक्टर शिखा और हाल ही में भारत से अमरीका आई हुई उन की मां रितु देवी के मध्य हो रहा था. रितु देवी की शिखा सब से लाड़ली बेटी थी. वैसे तो वे चार बहनें थीं, पर घर में सब से छोटी होने के कारण शिखा आरंभ से ही कुछ अधिक प्यार की भागीदार बनी हुई थी. शिखा के पति विशाल किसी फर्म में मुख्य प्रबंधक थे. वह छः वर्ष पूर्व अपने मातापिता के बुलाने पर भारत गए थे. मातापिता ने उन के विवाह के लिए चारपांच जगह बातचीत चलाई हुई थी. उन सभी लड़कियों में उन्हें मेरठ में बसे हुए मध्यमवर्गीय परिवार की लड़की शिखा ही सर्वाधिक शिक्षित व सुंदर दिखाई दी थी. अतः एक माह के अंदर ही विवाह हो गया था और वह अपनी पत्नी को ले कर अमरीका आ गए थे.

शिखा ने बनारस मेडिकल कालिज से एम.बी.बी.एस. किया था. उस ने अमरीका आने के कुछ दिन पश्चात ही एम.एस. में प्रवेश पाने के लिए अथक प्रयास शुरू कर दिए. परिणामस्वरूप उसे प्रवेश मिल गया था और अब एम.एस. करने के पश्चात वह पास ही स्थित एक हस्पताल में कार्यरत थी.

कुछ दिनों तक तो सब कुछ अच्छे ढंग से चलता रहा था, पर समस्या तब उत्पन्न हुई जब वह गर्भवती हुई. विशाल को शिखा से प्यार तो बहुत था, पर एक व्यस्त प्रबंधक होने के कारण वह शिखा की वह देखभाल न कर पाए, जो उन्हें करनी चाहिए थी. इस अवधि में शिखा बड़ी ही तनावग्रस्त रही थी. विशाल, अपनी व घर की देखभाल करने में वह बहुत थक जाती थी.

जैसेतैसे प्रसव के दिन करीब आए और शिखा ने एक सुंदर सी बच्ची को जन्म दिया. शिखा को लगा जैसे उस का ही छोटा रूप उस की गोद में आ गया हो. वह बड़ी ही संतुष्ट व प्रसन्न थी. पर शीघ्र ही प्रसन्नता ने चिंता व अवसाद का रूप धारण कर लिया क्योंकि उस की छुट्टियां अब समाप्त हो गई थीं.

बच्ची के कामों में विशाल का सहयोग उसे जरा भी नहीं मिलता था. लंगोट बदलने की बात तो दूर रही, रसोई में बोतल में रखा दूध भी वह उठ कर कभी बच्ची को नहीं पिलाते थे. पति का ऐसा व्यवहार देख कर शिखा को बड़ा क्रोध आता था. पर उस के कहनेसुनने का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता था. वह सुबह के अखबार में आंखें गड़ाए बैठे रहते थे.

अपने पिता का विशेष ध्यान रखने की धुन में विशाल अपनी पत्नी शिखा व बेटी ज्योति की भी उपेक्षा कर बैठा. लेकिन जब वह अपनी सास से भी नौकरानी जैसा बर्ताव करने लगा तो शिखा का धैर्य जवाब देने लगा.

शिखा की किसी सहेली ने एक अमरीकन स्त्री का पता बताया था जो उस की बच्ची को रख सकती थी. अगले ही दिन वहां जा कर उस स्त्री से सभी बातें कर के शिखा घर आ गई थी.

अब वह पुनः हस्पताल के कार्य में व्यस्त हो गई थी. हर सप्ताह के अंत में वह बच्ची को ले आती थी. वह सोमवार को उसे पुनः पहुंचा देती थी. देखतेदेखते चार वर्ष बीत गए थे. तभी उस की चाइल्ड माईंडर ने

पनी त्वचा को दीजिए नये पामोलिव का स्पर्श.



इसका भरपूर मुलायम झाग आपकी
त्वचा को बनाए निखरी-निखरी, कोमल-कोमल.
इसकी मनमोहक भीनी-भीनी खुशबू,
तन-मन महकाए हर पल!

नया पामोलिव साबुन. नर्म, मुलायम त्वचा के लिए.

गुलाबी, सफ़ेद और हरे रंगों में उपलब्ध.

Rediffusion/CP/5533 b HN

किसी दूसरे शहर में घर ले लिया था. अब पुनः पहले वाली समस्या सामने थी. तभी शिखा के मन में विचार आया कि क्यों न मां को कुछ महीनों के लिए अमरीका बुला लें.

उस ने विशाल से राय ले कर अपनी मां रितु देवी का टिकट भेज दिया. रितु देवी बचपन में कानवेंट स्कूल में पढ़ी हुई थीं. अतः उन्हें अमरीका आने में कोई परेशानी नहीं हुई. अब घर में मां आ गई थीं. उन्होंने आते ही शिखा को सभी जिम्मेदारियों से एकाएक मुक्त कर दिया था.

रितु देवी के हाथों का बना हुआ स्वादिष्ट भोजन खाखा कर बच्ची ज्योति, शिखा व विशाल के स्वास्थ्य में बड़ा अंतर आ गया था. उन के आ जाने से ज्योति को रखने की समस्या का समाधान तो हो ही गया था, शिखा मानसिक तनाव से भी मुक्ति पा गई थी.

एक दिन शिखा विशाल के कपड़ों पर इस्तिरी कर रही थी. तभी रितु देवी ने कहा, "जा, तू आराम कर ले. मैं इस काम को निबटाती हूं."

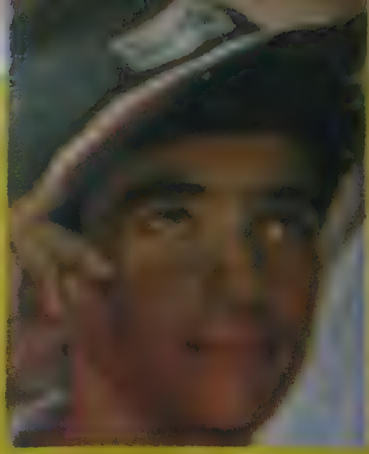
शिखा के मना करने के बावजूद भी रितु देवी ने यह काम अपने हाथों में लिया था



पहले पूरे घर में हूवर (वैक्यूम लीनर) से कालीनों की सफाई प्रत्येक विवार को विशाल कर देते थे. पर अब यह म भी रितु देवी ने ले लिया था. विशाल ो और क्या चाहिए था. उन्हें सुबह देर तक ोने व अखबार पढ़ने के लिए और अधिक

रितु देवी ज्योति के साथ कमरे में आईं तो विशाल के पिता खर्राटे ले रहे थे. टी.वी. पर फिल्म समाप्त हो चुकी थी और खाली कैसेट चल रहा था.





चाहत

चाहत नहीं है
किसी साहिल तक जाने
की
जब से डगमगाती
किश्ती में हम ने
चुपके से तेरा नाम लिखा.
—निर्मला सुरेंद्रन

समय मिल गया था. शिखा सुबह 8 बजे हस्पताल चली जाती थी और रितु देवी गरमागरम खाना बना कर ज्योति व विशाल को खिला देती थी. फिर 9 बजे ज्योति को पास ही स्थित नर्सरी विद्यालय में ले जाती थीं.

अब तो सुबह 6 बजे ही बिस्तर पर गरमागरम चाय का कप भी विशाल को मिल जाता था. टोस्ट और उबले अंडों का बेमजा नाश्ता खाए कितने दिन हो गए थे. जब से रितु देवी आई थीं, कभी आलू भरे परांठे तो कभी सूजी का हलवा और कभी पूरी व आलू की सब्जी. खाने में भी विविधता थी. इस के अतिरिक्त इस्तिरी किए हुए कपड़े भी वार्डरोब में तरतीब से टंगे हुए मिल जाते थे. अभी रितु देवी को आए हुए तीन माह ही हुए थे कि विशाल ने यह सोच कर, अभी तो खानेपीने का खूब आराम है, अपने पिता को टिकट भेज दिया था. शिखा से पूछने का तात्पर्य था, मना कर देना. अतः विशाल ने उस से पूछने की आवश्यकता भी न समझी.

जब ससुर के आने की सूचना फोन द्वारा शिखा को मिली तो वह बुरी तरह जलभुन गई. ससुर के आने का तात्पर्य था रितु देवी के कामों में वृद्धि. उसे इस बात का भी दुख था कि विशाल ने उस से इस विषय में कोई राय लिए बिना ही टिकट भेज दिया था. यह सब सोच कर वह मन ही मन कुढ़ती रही. अतः उस के स्वभाव में एक तीखापन खुद ब खुद ही आता चला गया.

रविवार को विशाल के पिता आ गए थे. रितु देवी चुपचाप सभी कार्य करती रहती थीं. पर अब समधीजी के रोजरोज के नखरों ने उन्हें बड़ी परेशानी में डाल दिया था. जब रितु देवी सुबह की चाय ले कर पहुंचीं तो वह बोले, "थोड़ी देर बाद मुझे दूसरा कप बना देंगी."

पर उस दिन तो हद हो गई थी जब वह गुसलखाने से नहा कर निकले तो रितु देवी ज्योति को नहलाने के लिए अंदर घुसीं. क्या देखा कि उन के सारे कपड़े व तौलिया बाथ टब में पानी में डूबे पड़े हुए हैं. वह क्या कहतीं, चुपचाप निचोड़ कर घर के बगीचे में फैला दिए. पति के कपड़ों के अतिरिक्त उन्होंने कभी किसी पुरुष के कपड़े नहीं धोए थे. उस दिन पहली बार किसी अन्य पुरुष के कपड़े धोने में उन्हें बड़ा अजीब लगा. पर यह बात वह किस से कहतीं. बेटी तो सुबह 8 बजे ही निकल जाती थी और दामाद तैयार हो रहे थे.

ज्योति को नहला कर बाहर आईं और रोज की तरह मेज पर सब के लिए खाना लगा दिया तो समधीजी ने बताया कि वह इतनी जल्दी खाना नहीं खाएंगे. विशाल ने हंसते हुए कहा, "मांजी, पिताजी ठहरे एक व्यवसायी आदमी. यह एक बजे ही खाना खाते हैं. इसलिए आप ऐसा करें कि इन के लिए दोतीन परांठे और आलू की सब्जी बना दें. यह नाश्ता कर लेंगे और पिताजी आप नाश्ता कर के बैठक में बैठें. काम पर जाने से पहले मैं एक हिंदी फिल्म ला दूंगा. उसे आप देख लेंगे तो बोर नहीं होंगे."

विशाल तो यह कह कर चले गए और रितु देवी अपना खाना छोड़ कर परांठे व आलू की सब्जी बनाने फिर से रसोईघर में

चली गईं. वह सोच रही थीं कि कल तक यह खाना खा लेते थे.

ज्योति भी वहीं आ गई थी. उसे अपने दादाजी विचित्र प्रकार के व्यक्ति लगे थे. और फिर जब से वह आए थे, उस के पिताजी ने उसे एक बार भी गोद में उठा कर प्यार नहीं किया था, न ही कोई चाकलेट दी थी. इसलिए उसे वह अपने प्रतिद्वंद्वी के समान लगे थे. उसे तो अपनी नानीजी ही सब से अच्छी लगी थीं, जो उसे मांपिताजी से भी अधिक प्यार करती थीं. जब से नानीजी आई थीं उसे अकेले कमरे में सोना भी नहीं पड़ता था. अब तो नानी के बिस्तर पर उन की बांह पर सिर रख कर अच्छीअच्छी कहानियां सुनते हुए नींद आ जाती थी, पता ही नहीं चलता था. नानी कितना प्यार करती थीं और उस का भोलाभाला मन अपनी नानी व दादाजी के तुलनात्मक विश्लेषण में अकसर ही लगा रहता था. तभी तो वह नानी के साथ ही चिपटी रहती थी.

समधीजी को नाश्ता दे कर रितु देवी ने ज्योति को खाना खिलाया. उन की अपनी भूख तो खत्म हो चुकी थी. बच्ची को ले कर वह ऊपर चली गईं.

इधर विशाल के पिता मनीष कुमार सोफे पर ठाठ से पसरे हुए हिंदी फिलम का आनंद उठा रहे थे. बेटे ने टी.वी. व वीडियो के बारे में उन्हें पहले ही समझा दिया था. नाश्ते के जूठे बरतन वह रसोई के सिंक में रख आए थे. वह फिर फिलम देखने में व्यस्त हो गए थे.

पाप

यदि मनुष्य पाप कर भी ले तो उसे दोबारा न दोहराए, न उसे छिपाए और न ही उस में रत हो. पाप का संचय ही सब दुखों का मूल है.

—महात्मा बुद्ध

एक बजे के लगभग रितु देवी नीचे आईं. रसोई में जा कर नाश्ते के बरतन धोए और समधीजी के लिए खाना निकाल कर जब बैठक में गईं तो देखा वह खर्राटे ले रहे थे और फिलम तो समाप्त हो चुकी थी. खाली कैसेट चल रहा था और टी.वी. पर घरघराहट की आवाज के साथ अनगिनत लकीरें आ रही थीं.

टी.वी. व वीडियो बंद कर के उन्होंने ज्योति से दादाजी को जगाने को कहा. मेज पर खाना रख कर वह पलटीं तो मनीष कुमार हाथ धो कर आ चुके थे. उन्होंने खाने पर एक अजीब सी दृष्टि डाली. पर इस से पहले कि वह कुछ कहते, रितु देवी पलट कर रसोई में जा चुकी थीं. वह गरमगरम फुलके सेंक कर ज्योति के द्वारा खाने के कमरे में भिजवा रही थीं. इस तरह खाना समाप्त हुआ.

अब मनीष कुमार बाहर बगीचे में बैठ कर धूप सेंक रहे थे और वह ज्योति को ले कर बैठक में आ गईं. ज्योति बच्चों के कार्यक्रम देख रही थी और वह धुले हुए कपड़े इस्तिरी कर रही थीं. देखतेदेखते 4 बज गए और मनीष कुमार अंदर आ गए. शिखा व विशाल के आने का समय भी हो गया था. अब दोबारा रसोई में उन्होंने पकौड़ों के लिए घोल बनाया व चाय का पानी चढ़ा दिया.

शिखा ने आने के फौरन बाद कपड़े बदले और रितु देवी के पास रसोईघर में सहायता करने पहुंची. बेटी का थका हुआ चेहरा देख कर रितु देवी ने उसे वहीं कुरसी पर बैठने को कहा. शिखा दिन भर का हाल पूछने लगी. सभी बातें जान कर उसे बहुत क्रोध आया, "इन बापबेटे की इतनी हिम्मत कि मेरी मां के साथ नौकरों जैसा व्यवहार करें. रोज इसी तरह तुम्हें परेशान करते हैं. आने दो विशाल को."

रितु देवी ने उसे शांत रहने को कहा. तभी विशाल भी आ गए. मेज पर चाय लग चुकी थी और सभी ने एकसाथ बैठ कर चाय

पी और पकौड़े खाए. सहसा विशाल के पिता स्वाभिमानुसार बोले, "पकौड़ों में मिर्च बिलकुल नहीं है. मजा नहीं आया."

शिखा ने उत्तर दिया, "हम लोग मिर्च पसंद नहीं करते हैं और ज्योति तो जरा भी मिर्च नहीं खाती है."

विशाल ने कहा, "पिताजी के पकौड़ों में अलग से तेज मिर्च डाली जा सकती थी." शिखा और रितु चुप ही रहीं.

चाय के बाद विशाल अपने पिता के पास जो बैठे तो उन्हें कुछ याद न रहा कि पत्नी व बच्चे से भी दो बातें कर लें. शिखा तो अवसर की तलाश में थी. विशाल जब ऊपर कपड़े बदलने आए तो शिखा ने कहा, "मुझे तुम से कुछ बातें करनी हैं."

विशाल ने कहा, "अभी नहीं, मैं पिताजी को ले कर कहीं जा रहा हूं. लौट कर आने पर बातें होंगी."

शिखा ने खुद को अपमानित सा महसूस किया. बापबेटे दोनों चले गए. ज्योति को भी नहीं ले गए. कार के आने की आवाज आई और शिखा का चेहरा क्रोध से तमतमा उठा. रितु देवी ने उसे समझाया, "धीरज रख बेटी. क्रोध करने से क्या लाभ, तू अपना ही खून जला रही है. तू लाख मुझे चाहती है तो इस से क्या? इन लोगों को लड़के वाले होने के कारण बड़ा घमंड सा है. हम से सेवा कराना और हमें नीचा समझना ये अपना अधिकार समझते हैं. इन के मुंह लगने से कोई लाभ नहीं. तुम अपना दिमाग शांत रखो."

परंतु शिखा के मन में उथलपुथल मची हुई थी. वह सोचने लगी, 'मां भारत में कितनी अच्छी तरह से रहती थीं. नौकर, महरी सभी थे. साथ में दोदो बहुएं सेवा करने के लिए थीं. मैं ने इन्हें अपने स्वार्थ के लिए बुला कर धर्म संकट में डाल दिया. खैर, मां को यहां अधिक समय तक रखना उचित नहीं है. सुबह 5 बजे से ले कर रात 11 बजे तक बेचारी काम में जुटी रहती हैं.

रात 10 बजे पितापुत्र वापस लौटे. मां

शेष पृष्ठ 215 पर

बच्चों के मुख से

मेरे पांच वर्षीय पुत्र का स्कूल में नयानया दाखिला हुआ था. एक दिन जब वह स्कूल से लौटा तो मुझ से बोला, "मां, आप मेरे बाद घर में अकेली रह जाती हैं, क्यों नहीं आप भी हमारे यहां अध्यापिका बन जातीं?"

मैं ने टालने के लिए कहा, "आप के स्कूल में जगह खाली नहीं है, मैं कैसे आ सकती हूं?"

वह तपाक से बोला, "जगह खाली क्यों नहीं है, इतने बड़े स्कूल में कहीं भी बैठ जाना." —कृष्णा सागर

*

पहली बार जब मैं अपनी तीन वर्षीया बेटी को स्कूल छोड़ने गया तो वहां बच्चे छोटे होने के कारण रो रहे थे. उन्हें देख कर वह भी रोने लगी.

शाम को लौटने पर जब मैं ने उस से रोने का कारण पूछा तो वह बोली, "सभी बच्चे रो रहे थे, मैं ने सोचा कि मुझे भी रोना ही होगा. इसलिए मैं भी रोने लगी."

—योगराज भाटिया

*

मेरी एक परिचिता जरा ज्यादा ही मोटी हैं. एक दिन गरमी कुछ अधिक थी, बारबार पानी पीने के कारण वह परेशान हो कर बोलीं, "आज तो लगता है पानी पीतेपीते ही मेरा पेट फट जाएगा."

यह सुन कर उन का छः वर्षीय पुत्र बोला, "पहले आप नया कुरता बदल कर पुराना पहन लीजिए, कहीं पेट फटने से कुरता न फट जाए." —फरी जहान

*

हम लोग स्वतंत्रतादिवस के अवसर पर घर में बैठे बातें कर रहे थे. बातोंबातों में मेरे मामाजी के मुंह से निकला, "भारत हमारी माता है."

"तब तो भारत माता हमारी तो दादी हुई," मामाजी का पांच वर्षीय बेटा अमित तपाक से बोला. -हिमांशु शेखर ●

व्यंग्य • उषा वधवा



बिस्तर पर संपूर्ण आराम

री ढ़ की हड्डी में कहीं थोड़ा सा कुछ हिल गया था और डाक्टर ने उस का एक ही इलाज बताया था बिस्तर पर संपूर्ण आराम यानी चौबीसों घंटे पलंग पर बिना करवट बदले सीधा सोए रहना था. घर के सब सदस्यों ने पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया. दो ही दिन की बात थी.

तड़के ही सब लोग रोज से एक घंटा पहले उठ गए और सब ने एकएक मोरचा संभाल लिया. कालिज जाने वाली बिटिया ने जिसे हर रोज अपना नाश्ता करने का भी समय नहीं होता था, जल्दी से उठ कर सब के लंच बाक्स तैयार कर दिए. मेरे पलंग के पास मेज पर टिफिन में मेरे लिए खाना और थरमस में चाय भर कर रख दी ताकि भूख लगने पर मुझे उठ कर रसोई तक भी न जाना

आराम करने की चेतावनी दे कर मेरे परिवार के लोग मेरी बिस्तर पर संपूर्ण आराम की योजना को पूरा करने में जुटे हुए थे. लेकिन क्या इस सुनहरे मौके के इस दिवास्वप्न को मैं साकार कर पाई?

पड़े. पलंग पर बैठेबैठे हाथ बढ़ा कर मैं जो चाहे ले सकती थी.

बेटे ने सब के बिस्तर झाड़ कर बिछा दिए. साथ वाली मेज पर दवाई और पानी का जग रख कर चेतावनी दी, "बिस्तर से

बाहर से बारबार किसी के आने और गलत टेलिफोन के आने पर मेरी आराम करने की योजना चौपट हो कर रह गई.





नीचे उतरने की कोई जरूरत नहीं है."

पति दफ्तर जाते समय दरवाजा भिड़ाते हुए बोले, "अभी महरी आ कर बाकी काम कर जाएगी. तभी एक बार दरवाजा बंद कर लेना और पूरा दिन पलंग से नीचे उतरने की जरूरत नहीं. दो दिन पूरा आराम करोगी तो अवश्य ठीक हो जाओगी, ऐसा कहा है डाक्टर ने."

जब डाक्टर ने ही आराम से लेटे रहने को कहा हो तो मुझे ही कौन सा पागल कुत्ते ने काटा है कि इधरउधर घूमूं. मैंने सोचा, ऐसा सुनहरी मौका जिंदगी में कबकब आता है एक गृहिणी के जीवन में. मुझे तो ऐसा अवसर पहली ही बार मिला था और मैं उस का भरपूर लाभ उठाना चाहती थी. इस निश्चय के साथ मैं आंखें बंद कर के लेट गई कि आज का पूरा दिन लेटेलेटे रुपहलेसुनहरे दिवास्वप्न देख कर ही बिताना है.

महरी शीघ्र ही आ गई. उस के मन में भी मेरी सहायता करने की तीव्र अभिलाषा थी. काम समाप्त कर के बोली, "लाइए, आप की कमर की मालिश और सिकाई कर दूं."

मैं ने उसे बहुत मुशकिल से समझाया, "बहना,यह कोई पुराने जमाने वालों का सा दर्द नहीं है कि मालिश या सिकाई से चला जाए. यह तो अति आधुनिक बीमारी है 'स्लिप डिस्क' और इस का एक ही इलाज है, सीधे लेटे रहो."

मैं ने उस की क्षमता पर अविश्वास किया था, सो वह उदास मन से चली गई और मैं ने कुंडी लगाते हुए सोचा, बस अब शाम तक आराम से सोना है. पर यह सोचना भी तो मेरे दिवास्वप्नों में से एक था. आधा घंटा भी नहीं लेट पाई थी कि बाहर की घंटी बजी. उठना ही पड़ा. जाने कोई दूर से आया हो. एक लड़की थी. मुसकरा कर बोली, "हम ने बरतन धोने का एक नए किस्म का पाउडर बनाया है..."

जी चाहा, पाउडर का पैकेट खोल कर पूरा उसी के सिर पर उड़ेल दूं. पर उस की भोली मुसकराहट के आगे हथियार डालने

अवकाश

व्यस्त मनुष्य को आंसू बहाने के लिए अवकाश नहीं. —बायरन

पड़े. उसे मना करने के बाद मैं आ कर लेटी ही थी कि घंटी फिर बजी.

इस बार पड़ोसिन थी. पड़ोसी धर्म निभाने आई थी. बोली, "तुम्हारा हाल पूछने आई हूं. कुछ काम हो तो बताओ."

चाहा कि कहूं, "मुझे चैन से सोने दो. यही बड़ी मेहरबानी होगी." पर कैसे कहती. जातेजाते उसे किसी को जरूरी फोन करना याद आ गया. और जब तक वह अपनी सहेली को पिछली रात टेलीविजन पर आई फिल्म के गुणदोष बताती रही, मैं सोफे पर ही उलटीसीधी होती रही. एक अच्छे और कर्तव्यपरायण पड़ोसी होने के आत्मसंतोष से तुष्ट हो कर वह लौटी तो मेरा पूरा एक घंटा बरबाद हो चुका था.

अब कुछ भी हो जाए मैं उठूंगी नहीं, यह निर्णय कर मैं आधा घंटा भी नहीं लेटी थी कि टेलीफोन की घंटी बजी.

"क्या आप सपना सिनेमा से बोल रही हैं?" किसी ने मधुर कंठ से पूछा. और बिना मेरे जवाब का इंतजार किए जोड़ दिया, "क्या आज तीन बजे के शो के चार टिकट मिल सकेंगे?"

मैं सपना तो जरूर देख रही थी पर टिकट नहीं थे बेचने को. मैं ने रिसीवर गुस्से में आ कर जोर से पटका और जा कर सो गई.

पांच मिनट बाद ही बाहर के फाटक की घंटी बजी. निश्चय ही डाकिया था. किसी तरह पहुंची. रजिस्ट्री थी. दुनिया में दो चीजें आप का समय अथवा सुविधा का इंतजार नहीं कर सकतीं. मृत्यु की तरह डाकिया को भी उतनी ही उतावली रहती है. वह चाहता है कि लोगों को दरवाजे पर पेन हाथ में ले कर उस के इंतजार में खड़े मिलना चाहिए.

मैं ने सोचा अंदर के कमरे से बारबार यहां बाहर तक आना पड़ता है, क्यों न यहीं बैठक के दीवान पर पसर जाऊं. चलना कम पड़ेगा. भूख लगी थी और दवाई क भी समय हो गया था. पर दर्द के मारे यों ह दीवान पर लेट गई. पर कितनी देर मुशकिल से दस मिनट.

इस बार टेलीफोन पर पति थे. दफ्त में बैठेबैठे उन्हें मेरा हाल पूछने की बात या आई. मुझे प्रसन्न होना चाहिए था. पूछ लगे, "आराम से लेटी हो न? उठ कर घूम त नहीं रहीं?"

"बिलकुल नहीं, जी, पूरा आराम क रही हूं," मैं ने आश्वासन दिया.

खाना खा कर दवाई ली और सोच अब भरी दोपहर में कौन आएगा. अब त चैन से कुछ देर सो सकती हूं. पर घंटी फि बजी. बाहर जा कर देखा तो कोई युवक थ "आप कौन सा साबुन इस्तेमाल करती हैं? उस ने किवाड़ खोलते ही सवाल दागा, "ह अपनी कंपनी वालों की ओर से एक सर्वे क रहे हैं."

मुझे बहुत क्रोध आया, मैं ने कहा, "ह कोई भी साबुन इस्तेमाल नहीं करते." औ किवाड़ बंद कर लिए. चार बजे किवाड़ फि खटका. मुझे पता था कि दूध वाले के आने क समय हो गया है सो उठ कर दूध लिया. चा बजे सहेली का फोन आया. हालचाल पूछ लगी और आराम करने की सख्त ताकी करते हुए फोन रख दिया. लेटी ही थी वि महरी ने दरवाजा खटकाया, कर्तव्य निष है बेचारी, आज के इस युग में भी बिना का किए नहीं लौटेगी. सो उठ कर दरवाज खोलना पड़ा.

शाम के छः बजे के आसपास जब घ के लोग एकएक कर के घर लौटे तो उन्हों मुझे घर के दरवाजे के बाहर आराम कुरस पर बैठे पाया. कहने लगे, "पूरा दिन सो क तंग आ गई क्या?" मैं सोच ही रही थी वि उत्तर में हां कहूं या नहीं, बेटे ने जोड़ा, "पता न, डाक्टर ने बैठने को मना किया है." उस ने मुझे भीतर ले जा कर पलंग पर लि दिया. खैर कोई बात नहीं. अभी तो कल व दिन आराम करना बाकी है, सोच कर मु काफी अच्छा लगा.

याद तुम्हारी आई

रात जरा गहराई,
याद तुम्हारी आई.
झड़ के टूटते पत्तों से
बूंद अश्क की टपकी,
ख्वाब सा बन तुम आन खड़ी,
आंख जरा सी झपकी.
चाह बनी तुम से इतनी
बात समझ न आई.

मरी बांहें, नागिन सी लटें
कों के भार से आंखें झुकीं,
राई समंदर की जिन में
मस्त उनींदी थकीथकी,
शी छा जाती है तब
तुम हौलेहौले मुसकाई.





चलने से तुम्हारे नंगे पांव,
जो सुनी पायल की छमाछम,
मन का मयूर यों नाच उठा
जो बैठा था कब से गुमसुम,
किसी बात पर तुम खिलखिला पड़ी
किसी बात पर यों शरमाई.

क्यों होंठ तुम्हारे तपते हैं.
हो गए कपोल यों लाल क्यों,
यौवन के भार से शरीर
आखिर इतना बेहाल क्यों,
खिले फूल की खुशबू से
भंवरे की दिशा भरमाई.
—सुधीर मोहन 'अनजान'

अपराध बोध

कहानी •
कुसुम गुप्त

मेरा मन ही नहीं, संपूर्ण अस्तित्व असीम पीड़ा से व्यथित है. मुझे लगता है कि मेरा जीवन निरर्थक और निस्सार हो गया है. अंदर तक एक तीव्र अपराध बोध मुझे कुतरता रहता है—चूहे के तेज, नुकीले दांतों की भांति.

हमारे जीवन में घटी उस त्रासदी के लिए कौन उत्तरदायी है? मैं अथवा सुहास या फिर आधुनिक जीवन शैली तथा अभिजात्य वर्ग की संस्कृति.

मैं कुछ निर्णय नहीं कर पाती. सूने,



इन लड़कों के बारे में कुछ मत कहो. सारे के धोखेबाज, मतलबी होते हैं." मेरे समझाने शिजनी उत्तेजित हो कर बोली. ▼



अपनी शीलसंकोची, अनुशासित बेटी में आए परिवर्तन को देख मैं यही अनुमान लगाती रही कि वह प्रेम रोग से ग्रसित हो गई है. मुझे क्या पता था कि उस का रोग तो और अधिक गंभीर था जिस से बचाना मेरे लिए मुशकिल निकला.

सपाट, रेगिस्तान जैसे अपने जीवन को देख कभी मैं कांपती तो कभी एकदम भयभीत हो जाती. हर पल जीवन अर्थहीन लगता. एक महत्त्वहीन बोझ मात्र.

प्रकट में सुहास मुझे आश्रय देते—शारीरिक तथा भावनात्मक दोनों स्तरों पर. मेरी आंखों में उभरती नमी को देख कर वह मुझे अपने अंक में समेट लेते. मेरे माथे और बालों पर अपने स्नेह के प्रतीक चुंबनों की वर्षा कर के वह केवल इतना ही कहते, "इला, जो हो गया, उसे ले कर अब हम कुछ नहीं कर सकते. संतोष करो. अनिवार्य से सहयोग ही विवेक है."



मेज पर रखे इंजेक्शन, प्रयोग में लाई गई सुई, एक पुड़िया में कुछ पाउडर को देख मेरे अंतर में क्रोध की एक तेज लहर आई और मैं ने पलंग पर लेटी शिजनी का कंधा पकड़ अपनी तरफ पलटा.

वह कोरी सांत्वना मेरा संबल नहीं बन पाती. जितना सुहास मुझे स्नेह देते हैं, उतनी ही मैं उन के अंक में चूरचूर हो कर बिखर जाती हूं. उस क्षण मुझे सुहास के अपराध का एहसास भी कचोटने लगता है.

क्या हमारे जीवन में जो कुछ अघटित हुआ था, उस के लिए पूरी तरह नहीं तो क्या 50% सुहास जिम्मेदार नहीं थे? निश्चित रूप से वह उस उत्तरदायित्व को नकार नहीं सकते. वह तीन वर्षों के लिए विदेश चले गए थे—जांबिया. एक विशेष अनुबंध के तहत, वहां की सरकार के विशेषज्ञ परामर्शदाता के रूप में. भारत में मिलने वाले वेतन से ढाई गुना अधिक पारिश्रमिक पर.

ठीक भी था. जीवन में पैसे का महत्त्व है. वह साधन है. परंतु जैसे ही साधन साध्य का रूप ले लेता है, संकट प्रारंभ हो जाता है. सुहास के लिए पैसा ही जांबिया जाने का प्रमुख आकर्षण था, यह जानते हुए भी कि मैं उन के साथ नहीं जा सकूंगी. कारण भी उन्हें पता था.

मैं स्वयं कार्यरत थी. एक कार्यालय में निरीक्षक के पद पर कार्य कर रही थी. इसलिए तीन वर्षों के लिए विदेश जाना मेरे लिए असंभव था. हां, मैं सरकारी सेवा में होती तो तीन वर्षों के लिए 'असाधारण अवकाश' ले कर जा सकती थी.

शायद ऐसा होने पर भी मैं न जा पाती. इस का कारण थी—शिजनी, जो बी.ए. के



शिकायत

दर्पण को देख
जो हम मुसकराते,
होशोहवास
हम खोते जाते.
गैरों से मुहब्बत
अपनों से रुसबाई,
तुम्हीं ने आईने
की कयामत बुलाई.
—प्रसून

द्वितीय वर्ष में थी. वह अर्थशास्त्र में बी.ए. (आनर्स) कर रही थी. उस की पढ़ाई को बीच में छुड़वाना या फिर उसे किसी छात्रावास में छोड़ कर जाना कोई बुद्धिमत्तापूर्ण निर्णय नहीं होता.

इसलिए मेरी नौकरी और शिंजनी की पढ़ाई आड़े आ गई थीं और मेरे तथा सुहास के बीच एक अस्थायी, जरूरी संबंधविच्छेद की स्थिति को जन्म दे गई थीं. सुहास चले गए, मेरे कंधे पर हमारी एकमात्र बेटी की देखभाल का उत्तरदायित्त्व डाल कर.

जब तक सुहास पास थे, हम तीनों खूब खुश थे. सच तो यह था कि मैं स्वयं को संसार का सब से सुखी प्राणी समझती थी. मुझे किसी बात का अभाव नहीं था. प्यारा पति, खूब सुंदर, सुशील और अनुशासित बेटी, अपनी अच्छीभली नौकरी, समस्त सुखसुविधाएं—आर्थिक तथा भौतिक स्तर पर. और सब से ऊपर, हम तीनों के मानवीय संबंध अत्यंत मधुर तथा संतुलित थे.

सुहास के जाने के बाद मुझे आभास हुआ था कि पति की उपस्थिति या सान्निध्य का क्या महत्त्व होता है? मेरे जीवन में एक भयावह सी रिक्तता समा गई थी. व्यस्तता के बावजूद, शिंजनी की उपस्थिति में भी मैं अपनेआप को निपट अकेला महसूस करती रहती थी.

रात को कभीकभी नींद खुल जाती थी तो बस सारी रात सूनी आंखों में बीत जाती थी. बिस्तर का वह भाग, जिस पर सुहास सोते थे, भयावह से सूनेपन से ग्रस्त मुझे आतंकित करता रहता था.

सुबह हम दोनों साथ ही चाय पीते थे. अब सुबह की चाय बेस्वाद हो गई थी. सुहास के सामने रात के खाने में खूब तरहतरह के व्यंजन बनते थे. बिना 'स्वीटडिश' के रात का भोजन संपूर्ण नहीं होता था. पर अब मांबेटी एक सब्जी के साथ परांठे खा कर सो जातीं. मीठे की जगह फलों ने ले ली थी. कौन पकाए अकेली जान के लिए.

मेरे जीवन में ही बदलाव नहीं आया था, बल्कि अपने पिताजी के जाने के बाद शिंजनी का भी जैसे रूपांतर हो गया था. इस रूपांतर ने मुझे थोड़ा उलझाया था, थोड़ा चौंकाया था. सुहास के सामने वह काफी संतुलित तथा गंभीर रहती थी. सादा वस्त्र पहनती थी. ठीक समय पर कालिज जाती थी और निश्चित समय पर लौट आती थी.

पर सुहास के जाने के तीनचार महीने बाद ही मैं ने शिंजनी में महत्त्वपूर्ण बदलाव देखा. अब वह भड़कीले तथा 'माड' कपड़े पहनने लगी थी. उस के कालिज आनेजाने का समय भी अनिश्चित हो गया था. वह पहले की अपेक्षा कुछ ज्यादा चंचल, वाचाल और खुशनुमा हो गई थी. बातबात में मेरी गरदन में बांहें डाल कर झूल जाती थी और अकारण ही मुझे चूम लेती थी. रात के खाने में पहले वह चुप रहती थी. पर अब वह खूब चटरचटर बोलने लगी थी. कभी कालिज के लड़कों के बारे में तो कभी सिनेमा तथा दूरदर्शन के कलाकारों के विषय में.

मैं बड़ी तन्मयता और आंतरिक खुशी के साथ शिंजनी में आने वाले उस परिवर्तन को देख रही थी. मुझे आभास हो गया था कि वह अवश्य किसी नवयुवक के प्रेमपाश में फंस गई है. ठीक भी था. 19वें वर्ष को

अभीअभी पार किया था उस ने. प्रेम करना कोई पाप नहीं था. मैं ने भी तो प्रेमविवाह किया था. खूब सफल रहा था. मेरी बेटी भी यदि विवेकपूर्ण प्रेमविवाह करती है तो हम दोनों आपत्ति नहीं करेंगे.

शिंजनी प्रेम मार्ग पर अग्रसर हो रही थी, क्या यह मेरा केवल अनुमान मात्र था? क्या उस उम्र की लड़की का खिलखिलाना या चहचहाना ही इस तथ्य का साक्षी था? नहीं, उस के साथ ही कुछ और घटनाएं भी घटती रही थीं, जो मेरे उस विश्वास को बल देती रही थीं.

सब से महत्त्वपूर्ण तथ्य था उस के आने वाले फोनों की संख्या में वृद्धि. काफी फोन आते थे. एकदो बार मुझे उन्हें सुनने का अवसर मिला तो पाया कि वे सारे फोन लड़कों के थे. या शायद एक ही लड़का था.

एक और महत्त्वपूर्ण बात थी. अकसर छुट्टी वाले दिन या फिर देर शाम को लड़केलड़कियों से भरी कोई कार आती थी और शिंजनी उस में चली जाती थी. देर रात गए लौटती थी. हां, वह किसी मित्र के यहां होने वाली उस पार्टी में सम्मिलित होने के लिए मुझ से पूर्व अनुमति अवश्य ले लेती थी. नया जमाना, नवयुवकनवयुवतियां, मैं भला क्यों मना करती. मुझे तो अपनी शिंजनी के विवेक तथा परिपक्वता में अटूट विश्वास था.

शिंजनी अपने रूपसौंदर्य के प्रति भी सजग हो चली थी. काफी देरदेर तक वह शीशे के सामने खड़ी शृंगार करती और स्वयं को निहारती रहती थी. अदृश्य कीलमुहांसों से आतंकित हो उठती थी. जरा सा कोई दाना दिखाई देता तो वह घबराई हुई मेरे पास आती और उस स्थल पर उंगली रख कर मुझ से पूछती, "मां, देखना, यह मुंहासा तो नहीं?"

दिन बीतते चले गए. शिंजनी बहिर्मुखी होती गई. जिस दिन भी वह किसी पार्टी में शामिल हो कर लौटती, मुझे रात देर गए तक जगाए रखती. सारी घटनाओं

शेष पृष्ठ 205 पर

बात ऐसे बनी

एक बार मैं अपने चाचाजी के साथ एक सैनिक छावनी में गया. उसी समय हम लोगों ने देखा कि एक सैनिक को कप्तान बुरी तरह डांट रहा था. पूछने पर पता चला कि वह अपने कप्तान को सैल्यूट करना भूल गया था. कप्तान ने अनुशासन भंग करने के आरोप में उसे 100 बार लगातार सैल्यूट मारने का आदेश दिया.

अभी सैनिक ने 3-4 सैल्यूट मारे ही थे कि उधर से एक कर्नल गुजरा. उस ने इस दृश्य को देख कर कप्तान से इस का कारण पूछा. जब उसे सारा माजरा मालूम हुआ तो उस ने कप्तान से कहा, "ठीक है, वह जितनी बार सैल्यूट करे, तुम उतनी बार उस का जवाब दो."

अब हालत यह थी कि दोनों एक दूसरे को सैल्यूट मार रहे थे.

—श्यामजी मिश्र

एक बार मैं अपनी भाभी के साथ उन के मायके गया था. वहां उन के रिश्तेदार ने मेरे जूते देख कर उस के दाम पूछे. जब मैं ने बताया कि यह जूता मैं ने 250 रुपए में लिया है तो उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ. उन्होंने कहा कि हमारे शहर में तो बहुत सस्ते जूते मिलते हैं.

शाम को जब मैं उन के घर गया तो वह जूतों की बात को भूले नहीं थे. वे मुझे एक कमरे में ले गए जहां अनेक जूते रखे थे. सब की खासियत बता कर उन्होंने फिर कहना शुरू कर दिया, "तुम्हारे शहर की अपेक्षा हमारे शहर में बढ़िया और सस्ते जूते मिलते हैं."

अब तक मेरा धैर्य जवाब दे चुका था. मैं ने छूटते ही कहा, "जिस शहर में आप जैसे जूतों के शौकीन रहते हों वहां जूते सस्ते होंगे ही."

मेरी बात सुन कर सभी हंस पड़े, लेकिन उन का चेहरा उतर गया.

—अतुल कुमार शुक्ला

सदाबहार साड़ियां

साड़ी ऐसा सदाबहार परिधान है जो हर उम्र और हर मौसम के अनुकूल है. विभिन्न तरीकों से बांधी गई साड़ी चाहे गुजरात की सीधे पल्ले की हो या उत्तर भारत का परंपरागत ढंग, हर रंग और हर ढंग में अपनी अनूठी छटा बिखेरती है.





हलके बादामी रंग की साड़ी के पल्ले पर मैरून और हलके हरे रंग की धारियां और हलके बादामी रंग के साथ हलके हरे रंग के डिजाइन की क्रेप डिशीन साड़ियों में सजी इन नवयुवतियों के सौंदर्य की मनमोहक आभा देखने वालों को मंत्रमुग्ध कर रही है.

मैरून रंग पर सफेद बूटे और काले बार्डर का साथ देती हुई ब्राउन रंग पर सफेद डिज़ाइन की सीधे पल्ले की सिल्क साड़ियां पहने ये शरमाती झिझकती नवयौवनाएं ऐसी लग रही हैं मानो चारों ओर बिखेरते सौंदर्य को अपने में समेटने का प्रयास कर रही हों.

प्रेसियस सिल्क साड़ियां, कृष्णा नगर, दिल्ली.

सुलेखा दुख से बौराई सी बोली थी, "तुम अब मुझे बिलकुल प्यार नहीं करते," और वह झुक कर फर्श पर बिखरा हुआ कांच चुनने लगी थी, "मैं ने क्या कहा था, यही न कि शीशा पुराना हो गया है. चेहरा ठीक से दिखाई नहीं देता." दुख का गोला सा हिचकी बन कर बारबार उछल कर उस के गले से बाहर आना चाहता था.

चांद की बात

कहानी • माया प्रधान

"चेहरा भी तो उतना ही धुंधला हो गया है, क्या करोगी देख कर," प्रशांत झल्ला उठा, "जब भी कुछ लिखने बैठो, तुम या तुम्हारे लाड़ले आ जाएंगे सिर खाने."

प्रशांत ने कागजकलम खिसका कर क्रोध से उसे देखा.

सुलेखा कांच उठाना रोक कर बोली; "इतने दिनों से लिखलिख कर कागज नीलाकाला कर रहे हो. पर लेखक तो आज तक नहीं बन पाए."

"जी हां, नहीं बन पाया," प्रशांत ने सीधा उस की आंखों में झांक कर जैसे अग्निबाण छोड़ा, "क्योंकि लेखक बनने से पहले मैं पति बन बैठा, यही बेवकूफी की."

"हां, हां, मैं ने ही तो कहा था यह बेवकूफी करने को," सुलेखा आंचल संभालती हुई खड़ी हो गई, "तब तो खुद ही जल्दी मचा रखी थी. रोज कहते थे, सुलू, तुम मेरे जीवन की प्रेरणा बन कर आ जाओ. तुम्हारी चांद सी सूरत देख कर मैं रोज नई रचनाओं को जन्म देता रहूंगा."

"नासमझ था, मांबाप का कहना नहीं माना." प्रशांत ने दोनों हथेलियां माफी मांगने के अंदाज में जोर से जोड़ीं और घर से बाहर निकल गया.

सुलेखा बौखलाई सी उधर देखती रही. फिर पैर पटक कर कांच के टुकड़े बटोरने लगी.

सहसा हाथ में हलकी सी किरच चुभ गई तो रक्त छलछला आया. सुलेखा की आंखें पहले ही भरी हुई थीं. कांच चुभा तो





बीते दिनों की याद कर सुलेखा उदास हो जाती. सोचती, 'जीवनक्रम कहां से गलत दिशा की ओर मुड़ गया.'

प्रशांत सुलेखा से विवाह रचा कर अपने मातापिता से तो दूर हो ही चुका था, अपनी चांद सी पत्नी से प्रेरणा ले कर लेखक बनने का उस का सपना सपना ही बन कर रह गया था. लेकिन एक दिन सुलेखा ने प्रशांत की हालत देख कर उसे 'चांद की बात' याद दिलाने का निश्चय कर लिया.

और भी बरस उठीं. उस ने फर्श साफ कर के हाथ धोए और बच्चों के कपड़े इस्तिरी करने लगी. वह दिनरात कुछ न कुछ करती रहती थी और व्यस्त रहती थी, पर प्रशांत अब पहले वाला प्रशांत नहीं रहा था. उस की आंसुओं से धुंधलाती आंखों में अतीत चलचित्र सा घूमने लगा.

प्रशांत का घर भी सुलेखा की गली में ही कुछ ही दूरी पर था. सुलेखा के पिता का स्थानांतरण कुछ माह पूर्व ही उस शहर में हुआ था. सुलेखा जब कालिज के लिए बस स्टैंड की तरफ जाती तो एक युवक साइकिल पर उस के साथ या पीछे चलता. प्रकट रूप में वह अत्यंत लापरवाही से चल रहा होता था, पर वह कनखियों से लगातार सुलेखा के रूप को आंखों में भरता रहता था.

सुलेखा को अभी तक अच्छी तरह याद था कि वह छुट्टी का दिन था. वह अपनी भाभी के साथ खरीदारी कर के घर लौट रही थी. संध्या के समय अकसर गली के मोड़ पर रिकशे वालों की बड़ी भीड़ हो जाती थी. उस दिन वह रिकशों से बचतीबचाती ज्यों ही आगे बढ़ी, एक स्कूटर के धक्के से उछल कर गिर पड़ी.

भाभी घबरा कर रोने लगी थीं और



एक साल बाद ही उन की गृहस्थी में नया अतिथि आ गया. उसे देख कर दोनों भावविभोर हो जाते.

वह स्तंभित सी देख रही थी कि वही साइकिल वाला युवक उसे सहारा दे कर उठा रहा था.

"चोट तो नहीं आई?" उस ने पूछा.

"लोगबाग देख कर स्कूटर भी नहीं चला सकते," भाभी निकट आ गई थीं. वह क्रोध में बोलीं.

"आप घबराएं नहीं, उस स्कूटर का नंबर मैं ने नोट कर लिया है. आप तो इन्हें घर ले जाइए. देखिए कहीं चोटवोट न लगी हो."

सुलेखा ने उस का हाथ छुड़ा कर स्वयं ही चलने का प्रयास किया. भाभी के हाथ में सामान था, उसे युवक को थमा कर भाभी बोलीं, "वह थोड़ी सी दूरी पर ही हमारा घर है. जरा आप पहुंचा देंगे. मैं इसे ले चलती हूं."

युवक साथ चलते हुए बोला, "मैं भी इसी गली में रहता हूं. मेरा नाम प्रशांत है."

दरवाजे पर पहुंच कर जब प्रशांत ने भाभी को सामान थमाया तो मुसकरा कर सुलेखा को देखते हुए बोला, "लाखलाख शुक्र मानिए कि आप को कुछ न हुआ. वरना, इस मोड़ पर तो बड़ी दुर्घटनाएं होती हैं."

उस दिन के बाद प्रशांत को अपनी साइकिल पीछे या साथ चलाने की आवश्यकता नहीं रह गई थी. मोड़ पार होते ही सुलेखा उस की साइकिल के पीछे उचक कर बैठ जाती थी. कभी वापसी में भी दोनों मिल जाते. धीरेधीरे वह साथ राहों तक ही सीमित न रह कर पार्क, बस या रेस्तरां आदि तक विस्तार पाता गया.

प्रशांत पढ़ाई में बहुत तेज था. पर उस का नौकरी करने का कोई विचार नहीं था. कहता, "मैं या तो स्वतंत्र पत्रकार बनना चाहता हूं या लेखक."


सुंदर घर का सपना हुआ साकार
पेंट से जब निखरी हर दीवार
Tractor
ACRYLIC
WASHABLE DISTEMPER
5 KGS. NETT
Tractor
DISTEMPER
5 KGS. NETT
ADROIT/AP-11/87 HIN
ट्रैक्टर... पूरे भारत में सबका मनपसंद...
धुलने वाली मुलायम सतह और
गजब का टिकाऊपन...हर बजट के मुताबिक दाम भी बहुत कम!
ट्रैक्टर...हर दिल को छूती— रंगों में पसंद अनूठी!
हल्के रंगों की खामोशी प्यारी और गहरे रंगों की शोखी न्यारी!
ट्रैक्टर सिंथेटिक और ट्रैक्टर एक्रेलिक डिस्टेंपर...
रंगों की बहार ले आये, आपके घर के अंदर!
दीवारों पर रईसी शान
बिल्कुल किफायती दाम
में सबसे ज़्यादा
वाला डिस्टेंपर
एशियन पेन्ट्स



ख्याल

मुरझाया फूल जैसे
खिलाया नहीं जाता,
वैसे ही दोस्त तुम को
भुलाया नहीं जाता,
यूं तो मैं अपनेआप को
भी भूल चुका हूं,
लेकिन तेरा खयाल
भुलाया नहीं जाता.
—प्रदीप वर्मा 'सोना'

"तुम मेरे जीवन में सदा के लिए आ जाओ, सुलू. एक तरफ मेरी लेखनी होगी, दूसरी तरफ तुम्हारा चांद सा मुखड़ा. तुम्हारी प्रेरणा पा कर मैं कहां से कहां पहुंच जाऊंगा."

लेकिन बहुत जल्दी ही प्रशांत को पता चल गया था कि चांद को पाना सचमुच सरल नहीं है. दोनों अलगअलग जाति के थे. मातापिता वैसे तो आधुनिक होने का दम भरते थे, पर आधुनिकता का प्रमाण देने के समय घोर पुरातनपंथी बन जाते थे. दोनों को ही अपनी जाति की ही बहू व दामाद की अपेक्षा थी. मातापिता की ओर से निराश हो कर दोनों ने स्वयं ही अदालत में पंजीकरण करवा के विवाह संपन्न करा डाला.

एक वर्ष व्यतीत हो गया. सुलेखा खाना बनाती तो प्रशांत उस की सहायता करता. उस की हथेलियां थाम कर कहता, "मेरा वश चलता तो तुम्हें रानी बना कर रखता. पर क्या करूं, नौकरी भी मिली तो कैसी. दफ्तर की प्रयोगशाला सहायक की."

"मेरे ही कारण हुआ न यह. तुम्हारी पढ़ाई बीच में ही छुट गई. तुम नौकरी करना ही नहीं चाहते थे, पर करनी पड़ी. और वह तुम्हारा साहित्यकार बनने का सपना..."

प्रशांत उसे दिलासा देता, "अगर हमारे घर वाले खुशीखुशी साथ देते तो सब ठीक हो जाता."

"मनुष्य को निराश कभी नहीं होना चाहिए. तुम पढ़ाई भी पूरी करो, और फिर चाहो तो किसी प्रतियोगिता में बैठ जाना. नहीं तो स्वतत्रं लेखन करना."

प्रशांत उस की हथेलियों पर जैसे अपने स्वप्नों की थपकी दे कर सुलाता और कहता, "सुलू, घर की जिम्मेदारी आ जाने के बाद स्वतत्रं लेखन का खतरा बिरले ही उठा पाते हैं."

"अर्थात." सुलेखा चौंकती.

"कुछ नहीं," वह मुसकरा देता, "इस समय तो जो कुछ हाथ में है, वही नियामत है."

एक वर्ष बाद ही उन की गृहस्थी में एक नया अतिथि आ गया. उस प्यारे से शिशु को देख कर दोनों विभोर रहने लगे.

प्रशांत ने गृहस्थी के साथसाथ अध्ययन जारी रखा था. कुछ वर्षों बाद एक और नन्हीं बच्ची का जन्म भी हो गया. घर में खर्च बढ़ रहे थे, पर आय बढ़ाने का साधन कोई नहीं था. प्रशांत कई प्रतियोगिताओं में बैठा, पर सफलता प्राप्त नहीं हुई. निराशा और कुंठा से वह चिड़चिड़ा होता चला गया.

घर का काम और बच्चे संभालते हुए सुलेखा को भी अपने बारे में सोचने का अवकाश ही नहीं मिलता था. उस का रूपरंग तो वही था, पर संवारने के अभाव में धूमिल पड़ता जा रहा था. आर्थिक तंगी के कारण वैसे भी पौष्टिक आहार की कमी रहती थी. न प्रेरणा लेने वाले को उस की सुधि थी, न प्रेरणा देने वाली को अपनी.

एक दिन कार्यालय से घर आ कर प्रशांत अकारण ही खीजने लगा, "दफ्तर से थक कर आओ तो घर में तुम्हारा हलदी और तेल पुता चेहरा देखने को मिलता है. यह भी नहीं होता कि शाम को ढंग से पहनओढ़ कर रहो."

सुलेखा ने समय की कमी का रोना

या, पर अंदर से प्रसन्न हुई कि प्रशांत को भी भी उस के रूपरंग की चिंता है.

अगले दिन ही एक साफसुथरी धोती हन कर, बाल संवार कर और हलका सा ंदर्य प्रसाधन चेहरे पर लगा कर वह दगद् भाव से प्रशांत की प्रतीक्षा करने गी. सोचती रही, 'आज प्रशांत कितना सन्न होगा मुझे देख कर. शायद एक बार कर बीते हुए दिन साकार हो उठें.'

पर प्रशांत घर में घुसा तो उस का जाज बहुत खराब था. शायद कार्यालय में कसी से झगड़ा हुआ था. उसे देखते ही ला, "बच्चों की कुछ चिंता नही है. बाहर ट्टी में खेल रहे हैं. बस, अपने सजनेसंवरने ी चिंता लगी रहती है."

सुलेखा सन्नाटे में खड़ी उसे देखती रही. दर फूटती रुलाई को काबू में कर के वह सोई में भाग गई.

रात भोजन के बाद प्रशांत कुछ सहज आ तो बोला, "तुम ने कपड़े क्यों बदल गए?"

"रसोई में अच्छे कपड़ों का क्या काम?"

प्रशांत ने प्यार से उस की हथेलियां थाम लीं और बोला, "हमारे सपने कहीं खो गए हैं, सुलू."

सुलेखा ने हाथ छुड़ा लिया, "हां, अब हम सपनों में नहीं यथार्थ में जी रहे हैं."

उस का भरा हुआ मन प्रशांत के हलके से प्यार से और छलक पड़ा. राख सने बरतनों पर आंखें जल बिखेरती रहीं.

प्रशांत को कुछ लिखनेपढ़ने का समय सचमुच ही नहीं मिलता था अब. कार्यालय और घर की चक्की में पिसने के अलावा प्रतियोगिताओं की तैयारी में भी उस का समय निकल जाता था.

हांलाकि प्रतियोगिताओं में बैठने की उस की आयु तीव्रता से समाप्त होने के कगार पर थी. पर अभी उस ने आशा का दामन नहीं छोड़ा था. ऐसे में यदि कभी लिखने का मन होता था तो बच्चों का शोर या सुलेखा का हस्तक्षेप उसे क्रोधित कर देता था.

यह भी खूब रही

मेरे चाचाजी बहुत मजाकिया हैं. एक दिन जब वह अपने दफ्तर जा रहे थे तो न्होंने अपने नौकर से कमर में बांधने वाली टी और कोट मांगते हुए कहा, "रामू, जरा टी कोट देना."

रामू मजाक समझ नहीं पाया और दर जा कर चाचीजी का पेटीकोट ले आया.

रामू के हाथ में पेटीकोट देख कर हम ब ठहाका मार कर हंस पड़े

—राकेश अग्रवाल

*

मेरे पति बहुत ही मजाकिया स्वभाव के हैं. एक दिन मैं अपने एक रिश्तेदार के व में शादी पर गई. इस के पहले मैं कभी व नहीं गई थी. अतः मेरे देवर मुझे रास्ते खेतों में उगी चीजों के नाम बताते जा रहे

तभी मैं ने अपने देवर से कहा, "यहां ं लोग जरा सी मेहनत में कितनी सारी चीजें पैदा कर लेते हैं."

यह सुनते ही साथ चल रहे मेरे पति तपाक से बोले, "एक तुम्हारी भाभी हैं कि इतनी मेहनत के बावजूद एक बार में सिर्फ एक ही बच्चा पैदा कर पाती हैं."

—विभा श्रीवास्तव

*

हमारे मामाजी बहुत भुलक्कड़ स्वभाव के हैं. एक दिन दुकान जाते समय वह अपने दो वर्षीय पुत्र को भी साथ ले गए. लेकिन जब वह वापस आए तो पुत्र को उन के साथ न पा कर उस की खोज की गई. और मामाजी एकदम भूल गए कि पुत्र को कहां छोड़ आए.

लगभग दो घंटे बाद एक व्यक्ति ने आ कर दुकान के भीतर से किसी बच्चे के रोने की सूचना दी. मामाजी सरपट दुकान की ओर दौड़ पड़े.

दरअसल दुकान बंद करते समय वह पुत्र को वहीं सोता हुआ छोड़ आए थे.

—सुरेश शर्मा

जीवन

जीवन क्षणक्षण कर के बनता है. एक क्षण को खोने का अर्थ है—दूसरे को पाना. —मृदुला गर्ग

सुलेखा अकसर सोचती, जीवनक्रम कहां से गलत दिशा की ओर मुड़ गया.

बातबात में उत्तेजित होने वाले प्रशांत में वह पहले वाला हसंमुख प्रेमी तलाशती रहती. लेकिन प्यार की धरती पर खिलने वाले फूल गृहस्थी के कटु यर्थाथ को झेलते ही झुलस गए. इतनी पथरीली, नुकीली जमीन कहां से आ गई!

सुलेखा को मालूम था, अब काफी भटकने के बाद ही प्रशांत घर आएगा. खुले आकाश में जैसे आवारा बादल भटक रहे हों निरुद्देश्य से. उस ने अपने आंसुओं को पोंछ डाला और रसोई में लग गई. प्रशांत ने कभी चाहा था कि वह उस की प्रेरणा बने. भले ही प्रशांत सपना भूल गया हो, पर उसे तो सपना याद है.

सुलेखा ने प्रशांत की पसंद को प्राथमिकता देने की ठानी और सब से पहले उस की रुचि का भोजन बनाने के प्रयास में जुट गई. थोड़े में भी अधिक से अधिक उस की रुचि का जो किया जा सकता था, वही करेगी.

टोकरी में केवल आलू और बैंगन निकले. सुलेखा को हंसी आ गई. स्वयं से ही बोली, "चलो श्रीमती प्रेरणा, कुछ करो."

उस ने आलू उबलने रख दिए और सौंफ पीसने बैठ गई, ताकि प्रशांत की पसंद के बैंगन और बेसनी परांठे बना सके. वह बैंगनों को खोखला कर के अभी मसाला भर ही रही थी कि बड़ा बेटा नीरज दौड़ता हुआ आया और बोला, "मां, देखिए तो पिताजी के साथ कौनकौन आ रहा है?"

सुलेखा हड़बड़ा गई. भोजन के समय बिना बताए किसी भी मित्र को ले आना प्रशांत की एक आदत थी. पर उस दिन तो वह नाराज हो कर गया था. फिर क्यों मित्रों को पकड़ लाया था?

प्रशांत की आवाज निकट आ गई थी और मित्रों के कहकहे बता रहे थे कि वे गिनती में तीन तो हैं ही.

सुलेखा हाथ पोंछ कर उन के स्वागतार्थ बाहर आ गई. प्रशांत ने चोर दृष्टि से उसे देखा कि कहीं नाराज तो नहीं है. उस के मित्रों ने कहकहों के मध्य कहा, "लीजिए भाभीजी, हम भी आ गए. खूब सुगंध उड़ रही है आप की रसोई से."

"तभी तो हमारा यार बाहर खाने को तैयार नहीं होता," दूसरे मित्र ने कहा.

"हम तीनों तो आज कहीं बाहर खाने के लिए इकट्ठे निकले थे. यह मिला तो हम ने इसे भी साथ चलने को कहा," मित्र फिर हंसा, "लेकिन यह आप से डरता बहुत है. साथ चलने की अपेक्षा हमें ही यहां घसीट लाया."

सुलेखा ने कनखियों से प्रशांत को देखा, क्या पता, लड़झगड़ कर जाने के बाद उसे मित्रों के साथ घर आने में ही अपनी भलाई नजर आई हो. इसे डर का नाम देना ठीक है क्या?

"वैसे भी भाभीजी, इसे आप के हाथों का पकाया भोजन छोड़ और कहीं का अच्छा ही नहीं लगता."

वे तीनों वहीं कुरसियां खींच कर बैठ गए. रमेश बोला, "अब इस का दिल रखने को व्यर्थ ही आप को परेशानी में डाल दिया न."

"नहीं,नहीं, कोई परेशानी नहीं." सुलेखा ने भरसक मुसकराने का प्रयत्न किया और प्रशांत की तरफ एक तीखी मुसकराहट फेंक अंदर चली गई.

थोड़ी देर में प्याज, नीबू, अचार और बैंगन के साथ परांठों से छोटी मेज सज गई. तीनों मित्र खाते हुए बीचबीच में सुलेखा की प्रशंसा में वाहवाह कहना याद रखते थे.

सुलेखा को सचमुच हंसी आ गई, 'इसी वाह को सुनने के लिए प्रशांत मित्रों को नहीं पकड़ लाता है?'

सुलेखा के मस्तिष्क में अचानक एक प्रश्न कौंध उठा. उस प्रश्न का उत्तर खोजते ही वह शरारत से मुसकराते हुए रसोई का कार्य निबटाने लगी.

मित्रों को विदा कर के प्रशांत धीरेधीरे डरे हुए कदमों से अंदर आया. अभी वह कमरे की तरफ बढ़ा ही था कि सुलेखा का स्वर गूंजा, "अपना आधा लिखा पूरा नहीं करोगे?"

प्रशांत ने फिर नाराज नजरें उस पर टिका दीं. सुलेखा मुसकराती रही. बोली, "बहुत सुंदर लिखा है तुम ने. मैं ने सब पढ़ डाला है."

"सच?" प्रशांत की आंखों का रंग बदल गया. फिर जैसे कुछ याद करते हुए बोला, "पर तुम्हें समय कहां से मिला होगा."

"मिला क्यों नहीं," सुलेखा ने लापरवाही से कहते हुए उस की तरफ कदम बढ़ा दिए," इस में मुशकिल क्या है. एक हाथ में कापी एक में कलछी."

"ऐसा," प्रशांत ने प्रसन्नता से उछलते हुए उसे बांहों में उठा लिया और बोला, "तुम सचमुच मेरी प्रेरणा हो, सुलू."

"हलदी ओर प्याज वाली..." वह हंस कर फर्श पर खड़ी हो गई. सोचा, 'कैसी मासूम खुशी है प्रशांत की. और वह इतनी छोटी सी खुशी के लिए भी अवसर नहीं जुटा पाती.'

उस ने मुसकराते हुए प्रशांत के मुख पर हथेलियां जमा दीं, "लेखक महाशय, चांद की जमीन में कुछ भी सौंदर्य नहीं है. ऊबड़खाबड़ जमीन ही एक कटु यथार्थ है."

प्रशांत ने एक निःश्वास भर लिया, "नहीं, चांद तो आज भी सुंदर ही है, सुलू, देखने वाले की नजर बदल गई है." कहते हुए प्रशांत ने सुलेखा को खींच कर अपने आलिंगन में बांध लिया. फिर उस के लरजते होंठों को चूम कर गुनगुनाया, "सच सपने से भी सुंदर होता है. मैं आज से चांद की तमन्ना नहीं करूंगा क्योंकि तुम उस से भी सुंदर हो —मेरा जीवनसाथी, मेरी प्रेरणा!" ●



भगवान का सहारा ले कर हम अपने कष्टों को दूर भगाने की चेष्टा करते हैं.

भगवान मजबूरी का दूसरा नाम

लेख • सुरेंद्रनाथ लाल

जब मेरी अवस्था छोटी थी, बहुधा बड़ों के मुंह से सुनता था कि भगवान के राज्य में देर तो है, पर अंधेर नहीं. आयु बढ़ने के साथसाथ कई बार मुझे इस कथन पर सोचने का अवसर मिला और धीरेधीरे मेरा यह विश्वास बढ़ता गया कि वास्तव में देर से बड़ा अंधेर कुछ और नहीं है. फिर भगवान यदि देर करता है तो वह देर ही नहीं अंधेर भी करता है.

बचपन में हम अपने बड़ों से छोटेछोटे खिलौनों की अपेक्षा करते हैं. यदि हमें वे खिलौने तब नहीं मिलते और बड़े होने पर दिए जाते हैं, तब उन का हमारे लिए क्या प्रयोजन है? यदि लुटेरा पकड़े जाने पर भी समय से लूटे हुए धन को वापस न करे तो कौन सा न्याय हुआ? परीक्षाफल हमें परीक्षा देने के पांच साल बाद बताया जाए तो फिर बताने की भी क्या आवश्यकता है? किसी भी उपलब्धि का आनंद तभी है जब वह समय से मिले. यदि कोई इस में अनावश्यक विलंब करता है तो वह निश्चय ही अन्यायी और क्रूर है.

न्याय का प्रश्न भी महत्त्वपूर्ण है. मनुष्यों द्वारा बनाई गई संस्थाओं की क्षमताएं सीमित हैं. परंतु हम अपेक्षा करते हैं कि अधिकारी न्याय देने में, जहां तक संभव हो, शीघ्रता करेंगे. फिर तथाकथित भगवान तो सर्वशक्तिमान है और साथ ही सर्वज्ञ भी. तब वह अच्छे या बुरे कर्मों का पुरस्कार अथवा दंड देने में विलंब क्यों करता है? उसे तो गवाह ढूंढ़ने, सबूत जुटाने और जांचपड़ताल करने की कोई आवश्यकता ही नहीं है.

अब यह भी माना जाता है कि केवल न्याय करना ही पर्याप्त नहीं है परंतु न्याय किया जा रहा है यह भी साफ दिखाई पड़ना चाहिए. दुख है कि इस भगवान के राज्य में ऐसा कुछ नहीं होता. वह तो इस जन्म के अच्छे बुरे कर्मों का फल हमें अगले जन्म में देता है. हमें कोइ कष्ट होता है तो हम केवल मान लेते हैं कि हम ने पूर्व जन्म में कोई पाप किया होगा. भगवान हमें यह बताने की आवश्यकता नहीं समझता कि आखिर हम ने कब और कौन सा अपराध किया था. छोटे और असहाय बच्चे भी जब किसी रोग अथवा दुर्घटना से पीड़ाग्रस्त होते हैं तो भी हम यही समझते हैं कि यह भगवान की न्याय व्यवस्था के अंतर्गत ही हो रहा है.

हम में से अधिकांश बारबार भगवान में विश्वास प्रकट करते हैं. परंतु यह विश्वास बहुत ऊपरी लगता है. उदाहरण के लिए, यदि कोई चोरबदमाश हमारी आंखों के सामने हमारा धन लूटने अथवा हमें हानि पहुंचाने का प्रयास करता है तो हम सामर्थ्यवान होने पर इस के पहले ही कि वह कुछ करे स्वयं उस की अच्छी मरम्मत कर देते हैं. यदि हम कमजोर हुए तो कानून और पुलिस का सहारा ले कर उसे दंडित कराने का प्रयास करते हैं. यदि न्यायव्यवस्था भी हमारे शरीर और धन की रक्षा करने में और आततायी को दंड देने में असमर्थ होती है तो फिर हम भगवान का सहारा लेते हैं और आशा करते हैं कि भविष्य में अथवा अगले जन्म में पापी को अपने दुष्कर्मों का फल भुगतना होगा.

यदि हमें भगवान में और उस के न्यायी होने में वास्तव में विश्वास है तो फिर हम स्वयं अपने बल अथवा कानून का सहारा क्यों लेते हैं?

इतिहास के प्रारंभ से शासक न्याय और व्यवस्था को बनाए रखने के लिए एड़ीचोटी का जोर क्यों लगाते आए हैं? अपराधी को यह कहने का अधिकार क्यों नहीं दिया जाता कि यदि उस ने वास्तव में जुर्म किया होगा तो भगवान उस को दंड देगा, कानून को जबरन टांग अड़ाने की क्या जरूरत है? उत्तर सीधा है—भगवान विवशता का दूसरा नाम है. हमें कर्मों के फल दूसरे जन्म में अथवा कयामत के दिन मिलने में विश्वास नहीं है इसलिए यथाशक्ति हम दुष्टों से यहीं निबटने का प्रयास करते हैं. कोई पागल ही अपना धन इस दुनिया में किसी को देगा और उस के लाभ अथवा ब्याज की अपेक्षा दूसरे जन्म अथवा परलोक में करेगा.

प्रश्न उठता है कि यदि हमें न भगवान कहीं दिखाई पड़ता है और न ही यह प्रत्यक्ष है कि उस के द्वारा हर जगह न्याय होता है तो फिर हम में से अधिकांश उस के होने में क्यों विश्वास रखते हैं? कदाचित इस

जब कोई तर्क हमारे विवेक की कसौटी पर गलत साबित होता है या हमें कोई कष्ट पहुंचता है तो हम इसे भगवान की इच्छा मान कर स्वीकार कर लेते हैं क्योंकि वास्तव में भगवान वह खिलौना है जिस का मजबूरी के समय प्रयोग कर के हम संतुष्ट हो जाते हैं.



वेश्वास के पीछे जीवित प्राणियों की नरंतर जीवित रहने की अभिलाषा है. हम रना नहीं चाहते, इसी लिए यह मान लेते हैं क हम मरते नहीं हैं. परंतु शरीर का नाश ो हम चारों ओर देखते हैं फिर हम कैसे मर होंगे?

एतदर्थ अपने को भरमाने के लिए हम आत्मा की कल्पना की. हम ने अपने को मझाया कि हमें शरीर नाश होने से निराश ोने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि हम ास्तव में शरीर नहीं आत्मा हैं. चूंकि यह ात्मा भौतिक पदार्थ नहीं है इसलिए इस के मर होने के विश्वास में कम कठिनाई है. ब आत्मा अमर होगी तो हम भी अमर ोंगे. इधर शरीर से भी हमारा मोह नहीं या है. इसलिए हम ने अपने को समझाया क यह आत्मा बारबार अपनी पसंद का रीर चुन लेगी. काल्पनिक आत्मा के मानने बाद काल्पनिक परमात्मा की भी ावश्यकता पड़ी जो उक्त आत्मा की खभाल करेगा.

पुराने समय में (वैसे आजकल भी) क्रूर

जब हमें कोई कष्ट पहुंचता है तो हम उसे पूर्व जन्म का कोई पाप मान कर स्वीकार क्यों कर लेते हैं?

राजाओं और शासकों से सामान्य प्रजा को न्याय मिलने की बहुत आशा नहीं होती थी. इसी लिए असहाय व्यक्ति राजा के सामने गिड़गिड़ाता और उस की चाटुकारिता करता था. चूंकि भगवान और देवता हमारी आत्मा के साथ परलोक में मनमानी कर सकते हैं, इसलिए हम ने सोचा कि क्यों न हम इस लोक से ही उन की चाटुकारिता (भजनपूजन) प्रारंभ कर दें जिस से वे हमारे ऊपर कृपा बनाए रखेंगे.

कुछ तथाकथित दार्शनिकों ने आत्मा के अलग रहते हुए उस के सुखी होने में कोई संभावना नहीं देखी. उन के विचार में परमात्मा से बिछुड़ जाने के कारण ही आत्मा को कई योनियों में भटकना पड़ता है और बारबार मोहमाया में फंस कर दुख भुगतना पड़ता है. इस कारण सारे सांसारिक सुखों को त्याग कर किसी तरह पुनः परमात्मा में विलीन होने को ही मोक्ष की स्थिति मानी गई और वही सब से बड़ा पुरुषार्थ माना गया.

ईश्वर को पिता और अपने को संतान तुल्य मानने वाले यह भूल जाते हैं कि पुत्र के पिता से अलग हो जाने पर जितना कष्ट पुत्र को होता है उस से कहीं अधिक पिता को होता है. संतान को दुख क्लेश में देख कर हर मातापिता की छाती फटती है, परंतु यह भगवान तो विचित्र पिता है. वह सदा आनंदमय है. उस की संतानें रोती कलपती रहती हैं परंतु इस से उस के ऊपर कोई असर नहीं होता. वह अनेक कड़ी और अनावश्यक परीक्षाएं लिया करता है. उस की निर्दयता या परपीड़ा जैसा अन्य उदाहरण इस लोक में भी मिलना कठिन है.

समझ में नहीं आता कि यदि आत्मापरमात्मा का ही अंग है तो दोनों के अलगअलग गुण कैसे हो जाते हैं? यदि सारे समुद्र का जल खारा होता है तो किसी छोटे पात्र में अलग ले जाने पर भी वह जल खारा

ही होगा. अपने मूल से अलग हो जाने के कारण यदि आत्मा को छटपटाहट होती है तो फिर परमात्मा को तो और अधिक कलेश होना चाहिए. छोटी आत्मा जब छोटे मोहमाया में फंस सकती है तो बड़ी आत्मा (परमात्मा) तो और भी भयानक माया से ग्रस्त हो सकती है. परंतु हम छोटे प्राणी अपने परमात्मा को इन चंगुलों में फंसा नहीं देखना चाहते.

हम कुछ भी कहें परंतु वास्तविकता यह है कि भगवान ने हम को नहीं बनाया बल्कि हम ने भगवान को बनाया है. जिस प्रकार मातापिता अपनी संतान की बुराइयों को नजरअंदाज करते रहते हैं, उसी प्रकार मनुष्य भी भगवान की कमजोरियों पर परदा डालता रहता है. हम उस की गलतियों के लिए कोई न कोई बहाना ढूंढते रहते हैं. वह हमारे रहने के लिए अच्छी जगह बनाए या न बनाए, हम उस के लिए बड़ेबड़े मंदिर, मसजिद और गिरजाघर बनाते हैं.

रक्षा : किस की कौन करे?

हमारे ऊपर जब आक्रमण होता है तो भला भगवान हमारी क्या रक्षा करेगा, उलटे जब उस के स्थानों पर हमले होते हैं तो उन की रक्षा के लिए हमें अपनी जान लड़ानी पड़ती है. मुंह से तो हम कहते हैं कि हमारा भगवान सर्वशक्तिमान है परंतु विधर्मी बारबार उस के पवित्र स्थानों का सत्यानास करते हैं और उस के भक्तों की जान लेते हैं. वह क्या चाहता है, स्वयं तो बता नहीं सकता बल्कि समयसमय पर दूसरों (ऋषियों, गुरुओं, पैगंबरों आदि) से अपनी आढ़त करवाता है. हम उस के नाम पर ग्रंथ लिखते हैं, धर्म और पंथ की दुकानें चलाते हैं और एकदूसरे का सिर फोड़ते हैं. उधर वह शायद एक ओर बैठा तमाशा देखता है?

भगवान के अस्तित्व की दलील के रूप में, बचपन में मुझे समझाया गया कि जैसे घड़ा बनाने के लिए कुम्हार की आवश्यकता पड़ती है. उसी प्रकार दुनिया बनाने के लिए भी कोई सृष्टिकर्ता अवश्य होगा. उस समय इस तर्क में मुझे कोई दोष नहीं दिखाई पड़ा.

हां, इतना मैं ने जरूर सोचा कि घड़ा बनाने वाला आवश्यक नहीं कि भला व्यक्ति ही हो. कुम्हार दुष्ट भी हो सकता है. फिर भगवान के किसी एजेंट को कैसे पता चलता है कि भगवान सरासर अच्छा ही अच्छा, न्यायी, निर्विकार और तरस खाने वाला है?

सत्य तो यह है कि चूंकि उस के अस्तित्व की कल्पना हम करते हैं इसलिए उस में कौनकौन से गुण होंगे इस का फैसला भी हम ही करते हैं. असहाय अवस्था में हमें किसी सहारे की जरूरत है, इसी लिए हम ने भगवान बनाया. फिर वह सहारा ऐसा होना चाहिए जिसे हम अपनी आवश्यकतानुसार ढाल सकें. इसी लिए उसे दयालु बनाया. यदि हम अच्छा करते हैं तो उसे हमें अच्छा फल देना ही चाहिए, इसी लिए हम ने उसे न्यायी बनाया. यदि हम ने बुरा किया है तो भी वह हमें दंडित न करे. इस कारण हम ने उसे दयालु बनाया.

हर अधिकारी और शासक चाटुकारिता पसंद करता है. इसलिए हम ने यह हथकंडा भगवान पर भी खेला. हम ने फैसला किया कि भगवान भक्तवत्सल है और अपने भक्तों और प्रशंसकों की देखभाल करता है. भगवान में इतने सारे गुण हैं इस की हमारे पास कोई कसौटी नहीं है और यदि कोई हो भी तो हम उस पर भगवान को कसना नहीं चाहते. डूबते को तिनके का सहारा चाहिए और कहीं सच्चाई की खोज परख में वह तिनका भी गायब हो गया तो हम क्या करेंगे?

अधिक आयु होने पर कुम्हार और घड़े के तर्क पर कई बार विचार करने का समय मिला. क्या वास्तव में कुम्हार घड़ा बनाता है? वह जादू या छूमंतर द्वारा कुछ नहीं (शून्य) से घड़े की रचना नहीं करता. जिस सामग्री (मिट्टी, पानी) से घड़ा बनाया जाता है वह तो पहले से ही वर्तमान होती है. कुम्हार केवल उस के एक स्वरूप को दूसरे रूप में बदल देता है. जैसे कुछ नहीं (असत्) से कुछ (सत्) की रचना नहीं हो सकती,



वह भले ही हमें रहने को घर न दे लेकिन हम उस के लिए बड़ेबड़े मंदिर बनाते हैं. क्यों?

उसी प्रकार तथाकथित भगवान शून्य से दुनिया को नहीं बना सकता. यह संसार बनने से पूर्व भी किसी न किसी रूप में वर्तमान होगा.

फिर, कुम्हार मिट्टी पानी के स्वभाव में न कोई परिवर्तन करता है, न कर सकता है क्योंकि वस्तुओं के अस्तित्व में ही उन का स्वभाव निहित है. यदि किसी वस्तु का स्वभाव बदला जा सके तो फिर वह उस का 'स्वभाव' नहीं हुआ. उदाहरण के लिए, त्रिभुज के तीनों कोणों का योग दो समकोण होता है. यह उस के स्वभाव में ही निहित है. यदि त्रिभुज होगा तो उस के तीनों कोणों का योग दो समकोण ही होगा. त्रिभुज का यह स्वभाव हम ने अथवा भगवान ने नहीं बनाया है. इस प्रकार न तो संसार बनाया जा सकता है और न ही उस के विभिन्न अंशों के स्वभाव में परिवर्तन किया जा सकता है.

होता केवल इतना है कि जब संसार का एक अंश दूसरे अंश के संपर्क में आता है तो उन के स्वरूप में परिवर्तन मात्र होता है. यह परिवर्तन भी एकतरफा नहीं होता. यदि छत पर से घड़ा कुम्हार के सिर पर लुढ़क जाए तो कुम्हार के रूप में भी परिवर्तन हो सकता है. यह हम सभी जानते हैं कि कारखानों में यद्यपि कर्मचारी यंत्रों का संचालन करते हैं, तथापि कभीकभी यंत्र भी अपने चलाने वाले का अंग भंग कर देते हैं, उसे अंधा, लंगड़ा बना देते हैं. यहां तक कि जान भी ले लेते हैं. इस प्रकार, यदि भगवान संसार का स्वरूप परिवर्तन कर सकता है तो संसार भी कभीकभी भगवान में परिवर्तन ला सकता है. मोटे तौर पर, यह कहा जा सकता है कि यदि भगवान दुनिया को बनाता है तो दुनिया भी भगवान को बनाती है.

कई प्राचीन दार्शनिकों का भी यही मत था कि शरीर (पदार्थ) से ही शरीर की रचना संभव है. भगवान यदि निराकार है तो वह साकार विश्व को बनाबिगाड़ नहीं सकता. हम खयाल से खयाल को भले आसमान में उड़ा दें परंतु वायुयान को उड़ाने के लिए खयाल से काम नहीं चलेगा. उस के लिए तो ठोस अथवा द्रव ईंधन और

व्यक्तित्व

यदि आप के पास मोहक व्यक्तित्व है, तो आप के पास और कुछ होने का अर्थ नहीं, यदि आप के पास मोहक व्यक्तित्व नहीं है तो जो कुछ भी आप के पास है उस का कोई अर्थ नहीं. —जेम्स मैथ्यू बेरी

शरीरधारी चालक चाहिए. भगवान यदि पदार्थ रहित अस्तित्व है तो वह अन्य पदार्थ रहित सत्ताओं में हेरफेर कर सकता है परंतु पदार्थवान दुनिया में किसी प्रकार की दखलअंदाजी नहीं कर सकता. स्वयं भगवत्‌गीता में जहां कई प्रकार की उलटीसीधी बातें कही गई हैं कभीकभी सही बात भी कृष्ण के मुख से निकल पड़ती है, जैसे:

न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः

न कर्मफलसंयोगं स्वभावस्तु प्रवर्तते.

अर्थात ईश्वर न तो संसार के कर्मों को बनाता है, न ही कर्तापन को अथवा कर्म और फल के संयोग को. यह सब कुछ स्वभावतः ही होता रहता है.

ईश्वर के ऊपर धार्मिक अथवा दार्शनिक दो दृष्टिकोणों से विचार किया जाता है. जब ईश्वर धर्म का विषय होता है तब उस पर बौद्धिक वादविवाद करना निरर्थक है. हर धर्म अपनीअपनी पसंद का ईश्वर गढ़ लेता है. मुंह से तो हम कहते हैं कि वह हमारा मालिक है, पर वास्तव में वह हमारा चाकर और खिलौना होता है. ऐसा खिलौना जिस का हम मजबूरी में सहारे के रूप में उपयोग करते हैं. जिस प्रकार छोटे बच्चे जब हस्पतालों में अकेले होते हैं तो उन का प्रिय खिलौना उन्हें ढाढ़स देने का कारण होता है. उसी प्रकार हमारी पसंद का भगवान हमें कठिन परिस्थितियों में साहस देता है. ईसाई ईसामसीह का सहारा लेते हैं. मुसलमान उस अल्लाह का जिस ने मुहम्मद को भेजा. हिंदू इस विषय में काफी संपन्न हैं. उन के पास ऐसे खिलौनों की अच्छीखासी संख्या है जिस में से वे अपने मनोनुकूल किसी देवीदेवता को चुन लेते हैं. इस संदर्भ में प्रसिद्ध शायर गालिब का नीचे लिखा शेर ध्यान देने योग्य है:

हम को मालूम है जन्नत (अथवा भगवान) की हकीकत लेकिन

दिल के बहलाने को गालिब यह खयाल अच्छा है.

दार्शनिक जब भगवान के ऊपर सोचविचार करने लगते हैं तो भगवान के ऊपर आफत सी आ जाती है. सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, दयालु आदि गुणों से संपन्न ठोस व्यक्तित्व रखने वाला भगवान धीरेधीरे बुद्धि से ओझल होने लगता है. पहले वह साकार से निराकार बनता है, फिर सगुण से निर्गुण. वह इंद्रियातीत ही नहीं, मन बुद्धि से भी परे हो जाता है. हम उस को सहारे के लिए पकड़ते हैं तो उल्टा वह हमारा ही सहारा लेने लगता है. आत्मा ही परमात्मा है, हम स्वयं ही ब्रह्म हैं. (अहं ब्रह्मास्मि अथवा अनल हक) ऐसा कह कर वह अपना बोझ हमारे सिर पर पटक कर चंपत हो जाता है.

जहां एक ओर जनसाधारण यह समझता है कि बिना भगवान की इच्छा के एक पत्ता तक नहीं हिलता, वहीं दार्शनिकों का भगवान अधिक से अधिक एक आदि शक्ति और जगत का आदि कारण मात्र होता है. वह प्रारंभ में मायाजाल रच कर अवकाशग्रहण कर चुका होता है. आगे हम जानें और हमारा काम.

इस प्रकार हम देखते हैं कि जहां एक ओर नास्तिक दर्शन भगवान के अस्तित्व को ही मानने से इनकार करते हैं, वहीं दूसरी ओर अधिकांश आस्तिक दर्शन भी एक ऐसे भगवान को मानते हैं जिस का होना या न होना दोनों बराबर है. ऐसे भगवान से अनुनयविनय कर के अपना अथवा अपने समाज के हितसाधन का प्रयास करना निरर्थक है. ●


हर कोई...
..हर कोई...
..हर कोई...
हर कोई चाहे न्यूट्रिन ट्विंक
Twink
SOFT DRINK CONCENTRATE
Orange
• ऑरेंज
• लेमन
• मैन्गो
• पाइनेपल
• ग्रेप
ट्विंक
सॉफ्ट ड्रिंक कॉन्सन्ट्रेट
नयी मजेदार "स्वाद बहार"
nutrine
ACIL/056/88-Hin

कुछ पहलू और भी हैं

कहानी •

अश्विनीकुमार भटनागर

नेहरू के शब्दों में "ये कारखाने, आधुनिक मंदिर हैं." जब से यह घोषणा हुई, देश कृषि प्रधान होते हुए भी तीव्र गति से औद्योगीकरण की ओर अग्रसर होता चला गया है. इस औद्योगीकरण के पीछे कई सिद्धांत थे. प्रमुख सिद्धांत था, देश के पिछड़े भागों व वर्गों को उन्नति और विकास में बराबर का साझीदार बनाना और वहां रहने वाले आदिवासियों व अनुसूचित जातियों को मुख्य धारा में आने का प्रोत्साहन व अवसर देना.

इन कारखानों की स्थापना

"तुम सब रोज मेरे बगीचे में से फल चोरी कर ले जाते हो. मैं तुम्हारी रिपोर्ट करूंगी," गृहिणी ने चिल्ला कर उन आदिवासी बच्चों से कहा.





मे एक साधारण आदिवासी के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा, इस की खोज करने के लिए एक युवा पत्रकार औद्योगिक क्षेत्रों के भ्रमण पर निकल पड़ा. वह देश के कोनेकोने में बिखरे इन आधुनिक मंदिरों में गया और अनेक आर्थिक, सामाजिक व राजनीतिक तथ्य एकत्रित किए. जो परिणाम निकला, उस से वह चकरा गया. ये ही प्रश्न बारबार उस के मस्तिष्क में उठ रहे थे, क्या हम लोग अपने उद्देश्य में सफल हुए हैं? इनसान सचमुच जागृत हो गया है या मानसिक कोढ़ के चंगुल में फंस गया है?

रहरह कर उसे उस निर्मल हृदय व विनम्र वृद्ध आदिवासी से लिया साक्षात्कार याद आ रहा था, जिस का नाम था मुंडा. उस का पुत्र उस समय कारखाने में प्रोन्नति पा कर उपप्रबंधक के पद पर पहुंच गया था. लगातार संघर्ष करने से उस के व्यवहार में एक कड़वाहट थी. उस के दोनों बच्चे गैरआदिवासियों के प्रति आक्रोश, घृणा व उद्दंडता की भावना में जी रहे थे, क्योंकि उन्होंने केवल समृद्धि देखी थी.

पत्रकार ने पूछा, "मुंडाजी, आप को उस समय की याद होगी, जब यहां कारखाना नहीं था. क्या कुछ वर्णन कर सकते हैं?"

मुंडा मुसकराया, उस की धुंधली आंखें

औद्योगीकरण से प्रभावित आदिवासी जनजीवन के बारे में जानने को उत्सुक पत्रकार उन आदिवासी इलाकों में गया जहां कारखाने लगाए गए थे. यहीं एक आदिवासी मुंडा ने उसे ऐसी बातें बताईं कि वह चकरा गया.

आकाश में टिक गईं. पुरानी स्मृति को ताजा करने में कुछ समय तो लगा ही, पर वह एक बड़ा सुंदर अनुभव था.

"हां, याद है. बहुत कुछ याद है."

वह फिर खो गया.

पत्रकार ने कुरेदा, "क्या याद है?"

"तब यहां कुछ नहीं था," मुंडा ने चारों ओर हाथ फैला कर कहा, "चारों ओर दूरदूर तक जंगल ही जंगल था."

पत्रकार ने मन में सोचा, 'इस विशाल कारखाने के लिए लाखों एकड़ धरती पर फैले जंगल का विनाश हो गया तो पर्यावरण में असंतुलन तो होगा ही. भट्टियों से निकलते जहरीले धुएं से वातावरण तो दूषित होगा ही. कारखाने से निष्कासित दूषित जल जब नदी में गिरेगा तो नदी में जीते प्राणी तो मरेंगे ही. साथ में इस जल पर निर्भर रहने वाले मनुष्य अनेक बीमारियों का भी शिकार तो होंगे ही. यह कैसा विकास है?'

"आप लोगों की तब जीविका क्या थी?" पत्रकार ने प्रश्न किया.

"कुछ भी नहीं," मुंडा हंसा, "थोड़ी बहुत खेती करते थे. बाकी समय नाचगाना, खानापीना और मस्त रहना. कोई चिंता नहीं थी. जंगल हमारा मातापिता और अन्नदाता सब कुछ था. झोंपड़ियों में रहते थे, पर बहुत अच्छा लगता था, बिलकुल स्वतंत्रता से रहते थे."

मुंडा को फिर से सपनों के संसार में खोते देख कर पत्रकार ने टोका, "और अब?"

"अब यह पक्का मकान है, एकदम जेलखाना लगता है, इस घर से निकल कर बाहर जाएं कहां? फिर से जंगल में खो जाने को जी करता है."

"कारखाना और कालोनी बनाने के लिए आप से आप की जमीन तो सरकार ने ली होगी?"

"हां, सब जमीन ले ली. पर उस का पूरा पैसा भी दिया."

"उस पैसे का आप ने क्या किया?"

मुंडा फिर हंसा, "हम आदिवासी पैसे का क्या करेंगे? हमारी मुट्ठी में पैसा तो पानी के समान है. और मुट्ठी में कई सूराख होते हैं, सब खापी के बराबर कर दिया."

पत्रकार ने आगे प्रश्न किया, "फिर आप की जीविका कैसे चलती थी?"

"बड़ी मेहरबानी सरकार की," मुंडा ने नम्रता व कृतज्ञता से कहा, "हम सब को कारखाने में नौकरी दी. नौकरी के लिए योग्यतानुसार प्रशिक्षण दिया. रहने को मकान और बच्चों की शिक्षा के लिए स्कूल. शिक्षा भी मुफ्त. एक पैसा नहीं देना पड़ता."

"आप इस से खुश हैं?"

"हां, अगर यह कारखाना नहीं होता तो इतना विकास कहां देखने को मिलता? मैं और मेरे बच्चे आज भी जंगल के निवासी बने रहते."

"जब कालोनी बनी तो क्या आप इसी मकान में रहते थे?"

मुंडा जोर से हंसा, "आप भी क्या मजाक करते हैं? अरे, यह तो बंगला है मेरे बेटे का. बड़ा अफसर है न. मैं तो मजदूर कालोनी में रहता था. दो छोटे से कमरे, पर बिजली भी थी और पानी भी."

"क्या आप के पासपड़ोसी सब आदिवासी थे?"

"अधिकतर तो आदिवासी थे," मुंडा सोच कर बोला, "परंतु बहुत सारे बाहर के लोग भी थे. मैं ने तो पहली बार सुना था कि यहां बंगाल, बिहार, तमिलनाडु, केरल और राजस्थान जैसी और जगहें भी हैं. पहले हमारी दुनिया तो बस जंगल तक ही सीमित थी."

"आप लोगों का बाहर के लोगों से झगड़ा भी होता होगा? आखिर उन का रहनासहना, बोलचाल, तीजत्योहार सब ही तो अलगअलग होंगे?"

मुंडा फिर हंसा और काफी देर तक हंसता रहा. फिर बोला, "हां, झगड़ा तो होता था. पर इस बात पर नहीं कि उन के आचारविचार अलग थे. वैसे हम सब



मिलजुल कर रहते थे. तीजत्योहार मिल कर मनाते थे. गमीखुशी में भी साथ देते थे." मुंडा चुप हो गया.

"फिर झगड़ा क्यों होता था?"

इसी लिए कि बाहरी लोग हम आदिवासियों को नीचा समझते थे. हमें बराबर का इनसान नहीं समझते थे. इस बात को ले कर अकसर झगड़ा होता था."

"फिर आप विरोध तो करते होंगे?"

"केवल विवाह करने से एक आदिवासी गैर आदिवासी कैसे हो गया? मेरी रगों में तो अभी भी आदिवासी रक्त बहता है," रेखामुंडा उत्तेजित हो कर पत्रकार से बोली.▲

"कैसा विरोध? हम आदिवासी से कुछ और तो बनने से रहे. बस, परिस्थितियों से समझौता कर लेते थे."

"उस समय चोरी, डाका या हिंसा की वारदातें होती थीं?"

"नहीं, एक भी नहीं. रात भर दरवाजा खोल कर सोते थे. एक भी चीज कोई उठा कर नहीं ले जाता था."

"अब क्या होता है?"

मुंडा सोच में पड़ गया. कुछ देर बाद बोला, "अब हम लोग आधुनिक बन गए हैं. न. सिनेमा खूब देखते हैं. यहां दो तो सिनेमाघर खुल गए हैं. ऊपर से कंपनी प्रति सप्ताह एक सिनेमा खुले मैदान में मुफ्त में दिखाती है. सिनेमा का असर पड़ता है न."

"आप ने पहले कभी सिनेमा देखा था?"

"नहीं, पहले यहां का मुफ्त सिनेमा देखा था. हमें तो देख कर बड़ी शर्म आई. पर आश्चर्य भी हुआ और अच्छा भी लगा." मुंडा ने गहरी सांस ली.

"आप ने शिक्षा ली?"

मुंडा झेंप गया, "अरे, हम क्या शिक्षा लेंगे. बच्चों ने पढ़ लिया, वही बहुत है."

"कितने बच्चे हैं?"

"दो, एक लड़का और एक लड़की. सिनेमा देखने और कुछ साथ पढ़ने वाले बच्चों के हंसी उड़ाने से उन्होंने अपने आदिवासी नाम बदल लिए. लड़के ने नाम रखा- आमित मुंडा और लड़की ने रेखा मुंडा."

पत्रकार को हंसी आ गई. मुंडा और भी झेंप गया, जैसे उस से कोई अपराध हो गया हो. पत्रकार ने आगे प्रश्न किया, "बच्चों के बारे में कुछ बताएंगे?"

"मेरा बड़ा लड़का यानी आमित मुंडा..." मुंडा ने गर्व से कहा, "कंपनी में आजकल उपप्रबंधक बन गया है. पढ़ने में अच्छा निकला. वैसे पढ़ना शायद कठिन होता, पर एक तो फीस माफ थी और दूसरे नंबर कम आने से भी आदिवासी होने के कारण कक्षा ऊपर चढ़ा दिया जाता था. सरकारी नीति है न !"

"फिर क्या इंजीनियर बन गया?"

"हां, यहां तो सारे के सारे इंजीनियर ही हैं. सो उसे भी धुन चढ़ गई कि मैं भी इंजीनियर बनूंगा. परीक्षा में बैठा तो नंबर बहुत कम थे. परंतु आदिवासियों के लिए सुरक्षित स्थान होने से उसे प्रवेश मिल गया."

"क्या वह हर साल इसी तरह पास होता गया?"

"हां, इस से यह अवश्य हुआ कि जिन्हें प्रवेश नहीं मिला या परीक्षा में पास नहीं हुए, उन्हें ईर्ष्या बहुत हुई. एक बार तो कालिज में इस को ले कर हंगामा भी हुआ. हड़ताल हुई. कुछ विद्यार्थियों ने अदालत में मुकदमा भी कर दिया. पर अदालत ने कहा कि इसे सरकारी नीति के अनुसार सुरक्षित स्थान के लिए प्रवेश मिला है."

"पर आप यह नहीं सोचते कि इस तरह कम नंबर पा कर भी आगे बढ़ाने से आप के पुत्र में योग्यता नहीं होगी?"

"अजी, आजकल योग्यता को कौन पूछता है? हम आदिवासियों को अगर सरकार ही ऊपर नहीं उठाएगी तो आम आदमी तो सदा ही हमारा शोषण करता रहेगा?"

पत्रकार मुंडा की बात से चकित हो गया. वह इतना तो जागृत हो गया था कि अपनी बातों में जो विरोधाभास था, उसे बिलकुल महसूस नहीं कर रहा था.

पत्रकार ने पूछा, "क्या आप यह नहीं सोचते कि इस देश की बागडोर योग्य पुरुषों के हाथों में होनी चाहिए? कारखाने चलाने के लिए कुशल इंजीनियर होने चाहिए?"

मुंडा ने उलझन महसूस की. रुक कर बोला, "आप की बात ठीक है पर योग्यता व कुशलता की कसौटी पर आदिवासी सदा खरा नहीं उतरेगा. उसे अपनेआप ऊपर उठने में सौ साल भी लग सकते हैं. पर यह जो हम ने अपनी धरती कारखाने, विकास और

उन्नति के लिए न्योछावर कर दी है, क्या इसलिए कि हमारे बच्चे सौ साल तक प्रतीक्षा करें."

पत्रकार निरुत्तर हो गया. एक पेचीदा प्रश्न का पेचीदा उत्तर था. मुंडा के चेहरे पर क्षणिक आवेश झलका. परंतु वह जंगलपुत्र होने के कारण अत्यधिक सहनशील भी था.

पत्रकार ने प्रश्नों का रुख मोड़ते हुए पूछा, "अच्छा, यह बताइए कि पहले के और अब के वातावरण में क्या अंतर है?"

मुंडा कुछ देर तक सोचता रहा. फिर बोला, "हरियाली देखने को बहुत मन करता है. अब तो चारों ओर सीमेंट, पत्थर, लोहा, और धुआं ही धुआं दिखाई देता है, बस पहले वर्षा भी खूब होती थी और बिजली के पंखों का तो नाम भी नहीं सुना था. अब तो बिना पंखे के कोई सो ही नहीं सकता. वातावरण में पहले जो एक खुशबू थी, वह अब नहीं है."

उसी समय एक प्रौढ़ पुरुष ने प्रवेश किया. प्रश्नसूचक दृष्टि से पत्रकार ने देखा.

"यह मेरा बेटा है," मुंडा ने परिचय दिया, "आमित मुंडा."

अमित ने परिचय प्राप्त कर के पत्रकार से हाथ मिलाया. पत्रकार के हाथ अभिवादन के लिए उठे थे, पर बीच में ही रुक गए.

अमित ने इधरउधर की बातें कर के कहा, "आज मैं बहुत खुश हूं. मैं व्यवस्था से एक लड़ाई जीत गया हूं."

पत्रकार ने आश्चर्य से पूछा, "कैसी लड़ाई?"

"कुछ महीने पहले प्रोन्नति की एक सूची निकली थी. मुझे अयोग्य बता कर प्रोन्नति नहीं दी. महानिदेशक तक गया, परंतु एक ही जवाब मिला कि अफसरों की प्रोन्नति उन की योग्यता के आधार पर होती है. मैं ने केंद्रीय गृह मंत्री को लिखा. वहां से आदेश आ गए हैं कि आदिवासियों के लिए स्थान सुरक्षित हैं. चूंकि और कोई आदिवासी उम्मीदवार नहीं था, इस कारण मुझे प्रोन्नति मिलनी चाहिए."



चराग

रातों की सियाही का
कोई गम नहीं मुझे,
यादों के चरागों को
जलाए हुए हैं हम.
—दिनेशचंद्र 'नीरस'

पत्रकार ने पूछा, "क्या इस तरह का संघर्ष आप को हर बार करना पड़ता है?"

"यही मेरी विडंबना है. आदिवासी होना मानो एक बड़ा अभिशाप है. सब को ईर्ष्या और जलन होती है. जहां तक हो सकता है, मेरे रास्ते में रुकावटें डालते हैं."

"आप को कोई और भी कटु अनुभव है?"

"एक नहीं, कई. समाज में हमें कोई बराबरी का दरजा नहीं देता. हमें इतना हीन समझते हैं कि साथ में उठने बैठने और खानेपीने से कतराते हैं. बड़ा अपमान महसूस होता है."

"अगर यह कारखाना नहीं होता तो आप शायद अभी भी जंगल का जीवन बिता रहे होते. आप कौन सा जीवन पसंद करेंगे, आज का या पहले वाला?"

अमित सोच में पड़ गया. बहुत गंभीर हो कर बोला, "इस का उत्तर कठिन है परंतु इतनी शिक्षा और सुविधाएं होने से यही कह सकता हूं कि विकास और प्रगति के लिए इनसान को कहीं न कहीं कुछ त्यागना ही पड़ता है. आदिवासी ने अपनी स्वतंत्रता खो कर यदि इस सामाजिक असंतुलन का जीवन स्वीकार किया है तो शायद यह सोच कर कि कभी न कभी उसे समाज में अपना उचित

स्थान मिल जाएगा. बस, सब्र की आवश्यकता है."

पत्रकार ने अगला प्रश्न किया, "आप ने थोड़ाबहुत पुराना जीवन और अब दूसरा जीवन भी देखा है. यह संघर्ष आप को कटु और मीठे अनुभव दे रहा है. पर आप के बच्चों को तो लगभग समृद्धि का वातावरण मिल रहा है. अपेक्षाकृत सुविधाएं भी अधिक हैं और समाज में आदिवासियों को स्थान भी मिल रहा है. वे क्या सोचते हैं?"

अमित ने आवेश में आ कर कहा, "वे तो हम से भी अधिक क्रुद्ध हैं. छोटीमोटी अवहेलना से भी उन का खून खौलने लगता है. सामाजिक स्वीकृति जो कुछ भी है, उन्हें एक दिखावा और छलावा लगती है."

"आप का कहना है कि वे अधिक जागृत हो गए हैं?"

"ऐसा कहिए कि उन में चेतना आ गई है. दुख यह है कि उन में हिंसा की भावना आ रही है. यह रोकना कठिन है. साथ के बच्चे जब काले रंग को ले कर या हमारे नाकनक्श को ले कर हंसी उड़ाते हैं तो कभीकभी मारपीट हो जाती है."

"आप का मतलब है कि बच्चों में सहनशीलता की कमी है. बहुत जल्दी क्रोध में आ जाते हैं."

"ताली दोनों हाथों से बजती है. पहले हम लोग अपमान या तो महसूस नहीं करते थे या पी जाते थे. आजकल के बच्चे ऐसा करने लगे तो यह उन की कमजोरी समझी जाएगी. वे दबते चले जाएंगे और फिर शुरू होगा शोषण का दौर. नहीं, उन्हें यह सब सहने की आवश्यकता नहीं है." अमित के स्वर में दबादबा आक्रोश था.

पत्रकार ने पूछा, "आप की बहन..."

"मेरी बहन, रेखा? वह तो डाक्टर बन गई है. लीजिए, वह भी आ गई. उसी से पूछ लीजिए जो कुछ पूछना हो."

अभिवादन के बाद पत्रकार ने रेखा से पूछा, "आप को डाक्टरी की शिक्षा प्राप्त करने में कोई कठिनाई हुई?"

रेखा ने हंस कर कहा, "कठिनाई तो बहुत हुई. एक तो पढ़ाई कठिन थी ही, साथ ही सहपाठियों से कुछ सहायता नहीं मिली. उन्हें सदा यह लगता था कि मेरा डाक्टरी पढ़ने का कोई अधिकार नहीं. मुझे हमेशा एक घुसपैठिया का दरजा मिलता था. अपमान भी काफी उठाना पड़ा. पर यह सब पुरानी बात है. मुझे कोई शिकायत नहीं."

"आप को नौकरी मिलने में कोई कठिनाई हुई?"

"कोई नहीं, इस कारखाने में जगह थी. बहुत से उम्मीदवार थे, पर यहीं का होने से व पिताजी के कारण आदिवासी होने से प्राथमिकता दी गई. मैं सुरक्षित स्थान के लिए चुन ली गई."

"लोगों में काफी रोष होगा?"

"अवश्य हुआ, परंतु हम आदिवासियों को खुलेआम कोई नौकरी देता कहां है?"

पत्रकार ने विनोदभाव से पूछा, "विवाह?"

रेखा ने बेझिझक कहा, "वह तो मैं कर चुकी. यहीं एक इंजीनियर हैं."

अमित ने बीच में कहा, "इस ने प्रेम विवाह किया है. एक गैरआदिवासी से. हम ने बहुत समझाया, पर यह नहीं मानी. अब परिणाम भोग रही है."

पत्रकार ने आश्चर्य से पूछा, "कैसा परिणाम? ऐसी शादी से तो सरकार की ओर से इनाम मिला होगा?"

"हां," रेखा ने कहा, "मुझे नहीं, हम दोनों को एक हजार रुपया इनाम मिला."

"तो यह तो बहुत प्रसन्नता की बात है कि आप ने ऐसा क्रांतिकारी कदम उठाया."

"हां, मैं ऐसा ही समझती थी. पर इस की हानियां अब समझ में आ रही हैं."

"कैसी हानियां?"

"एक प्रोन्नति विवाह के पहले मिली थी. अब नहीं मिल रही. कई साल से वहीं पड़ी हूं."

"वह क्यों?"

"गैरआदिवासी से विवाह करने के कारण मेरा स्तर बदल गया. अब मैं उन्नत

अब!

होम्योपैथिक

डेनटॉन

कैल्केरिआ फास्फोरिका के साथ

अब दांत आयेंगे बिना परेशानी के साथ



अपने बच्चे के लिये डेनटॉन लाइये, बढ़ते दांतों के साथ बच्चे के चेहरे पर मुस्कुराहट पाइये। डेनटॉन दांत आने के दिनों में होने वाली परेशानियों को ध्यान में रखकर तैयार की गई है। दस्त, चिड़चिड़ाहट, बुखार, उल्टी, भूख में कमी, पेट दर्द आदि को दूर भगाये, बच्चे को स्वस्थ और हंसमुख बनाये डेनटॉन।

फिर डेनटॉन होम्योपैथिक दवा है। न तेज़ असर के नुक्सान का डर न अन्य परेशानियों का खतरा।

डेनटॉन

उत्तरप्रदेश के बाहर 20 ग्राम की शीशी सिर्फ 12/-रु० में (स्थानीय कर अतिरिक्त) सभी होम्योपैथिक स्टोर और बड़े मैडिकल स्टोर्स में उपलब्ध।

React/88

शारदा बॉयरॉन लेबोरेट्रीज़ लिमिटेड

पोस्ट बाक्स नं० 3094 जी पी ओ लोधी रोड़, नई दिल्ली, 110003

दुनिया के सबसे बड़े होम्योपैथिक निर्माता फ्रांस की बॉयरॉन कम्पनी के सहयोग से निर्मित।

जातियों में आ गई हूं. इसलिए सरकारी सुरक्षा बंद हो गई. बच्चों को भी विशेष सुविधाएं नहीं मिलेंगी. भला बताइए, यह तो सरासर अन्याय है. केवल विवाह करने से एक आदिवासी गैरआदिवासी कैसे हो गया?"

वह उत्तेजित हो कर बोली, "मेरी रगों में तो अभी भी आदिवासी रक्त बहता है. मैं ने कई बार यह प्रश्न उठाया था, असफल रही."

"अब क्या करेंगी?"

"सोचती हूं, अदालत में जाना चाहिए."

पत्रकार चकित रह गया. वह खड़ा हो गया. आज के लिए काफी मसाला मिल गया था.

कुछ दूर गया था कि देखा कि एक घर के आगे एक गृहिणी को 13 से 15 साल तक के कुछ आदिवासी बच्चे घेर कर उस से लड़ रहे थे. वह रुक गया.

गृहिणी ने चिल्ला कर कहा, "तुम सब चोर हो. रोज मेरे बगीचे में से फल चुरा कर ले जाते हो. एक केला नहीं बचा. कच्चे अमरूद तोड़तोड़ कर खा लिए या फेंक दिए. मैं तुम्हारी रिपोर्ट करूंगी."

एक बड़े लड़के ने उद्दंडता से कहा, "हां, हां, कर देना रिपोर्ट. क्या कर लेगी पुलिस हमारा? यह हमारी जमीन है. यह कारखाना हमारा है. ये पेड़ और फल तू अपने साथ ले कर नहीं आई थी. इन पर हमारा हक है.

तू तो विदेशी है. आज है, कल चली जाएगी. पर हम लोग तो हमेशा यहीं रहेंगे. ज्यादा तेवर दिखाए तो घर का सामान भी उठा कर ले जाएंगे."

गृहिणी क्रोध और भय से कांप रही थी.

पत्रकार ने गहरी सांस ली और आगे चल दिया. उस के जेहन में बारबार एक ही प्रश्न फुंकार रहा था, "अभी इन्हें कितनी और उन्नति कर के अपने अधिकार दूसरों से झपट लेने हैं?" ●





गुजरात

सौंदर्य से परिपूर्ण



गौरवशाली गुजरात के जगमगाते रत्न :

अहमदाबाद मांडवी : समुद्रतट का रमणीक स्थल.
चोरवाड़ : देश का एकमात्र समुद्रतट जो महल से शोभायमान हो रहा है.
द्वारका : श्रीकृष्ण की राजधानी, देश के चार पवित्रतम धामों में एक.
गिर : एशिया में बब्बर शेरों का एकमात्र निवासस्थल.
पालिताना : शेत्रुंजय पहाड़ी पर जैन मंदिरों की दर्शनीय श्रृंखला
पोरबंदर : महात्मा गांधी का जन्म स्थान.
पावागढ़ का रज्जुमार्ग : पश्चिम भारत में अपने ढंग का अनूठा.
सोमनाथ : शाश्वत मंदिर, शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक.

गुजरात : सुखद क्षण बिताने के लिए आदर्श प्रदेश

गुजरात
पर्यटन निगम लि.

• अहमदाबाद :
एच.के. हाउस,
आश्रम रोड के निकट,
अहमदाबाद-380009
दूरभाष 449683, 449172

• बंबई
धनराज महल
अपोलो बंदर
बंबई-400039
दूरभाष : 2024925

• देहली
ए/6 स्टेट एम्पोरिया बिल्डिंग,
बाबा खड़क सिंह मार्ग
नई दिल्ली-110001
दूरभाष : 322107

• जूनागढ़
होटल गिरनार
मजेवाडी गेट
जूनागढ़-362001
दूरभाष 21201, 21203

• सूरत
1/847 अथुगर स्ट्रीट
नानपुरा, सूरत-395001
दूरभाष : 26586

• बड़ोदरा
नर्मदा भवन,
सी ब्लाक, इंदिरा ऐवेन्यू,
बड़ोदरा-390001
दूरभाष : 540797

• राजकोट
कलक्टर कार्यालय के निकट
राजकोट-360001
दूरभाष : 49800
इंटरनेशनल ट्रैवेल्स
दूरभाष : 22689

• जाम नगर
रायल ट्रैवेल्स,
दूरभाष 78208

• भावनगर
पराग ट्रैवेल्स,
दूरभाष : 26333, 23752

टेलेक्स 012-549

|| चराति चरतो भगः ||



धुंध

कहानी • पुष्पा श्रीवास्तव

दीपा ने जैसे ही छात्रावास के कमरे में कदम रखा, उस की नजर सामने खाली शैया पर बैठी एक अनजान लड़की पर पड़ी. वह सूटकेस खोल कर उस में से कपड़े वगैरह बाहर निकाल रही थी. कमरे में किसी के आने का एहसास होते ही उस लड़की ने सिर उठाया और दीपा को देख कर मुसकराते हुए बोली, "आइए, मैं आप का ही इंतजार कर रही हूं."

दीपा ने मुसकरा कर जवाब दिया "शायद आप मेरी नई रूम मेट हैं. क्या ना है आप का?"

"सुधा. आप का नाम दीपा है न?"

"हां, इस कमरे में अभी तक सिर्फ ही थी. बहुत अकेलापन महसूस होता था अब आप के आने से मेरा अकेलापन दूर ह जाएगा. अच्छा सुधा, सामान बाद में ठीव



ती रहना. चलो, पहले चायनाश्ता किया ए," अपना थैला किनारे की मेज पर ते हुए दीपा ने कहा.

"ठीक है, यह सब बाद में करूंगी."

सुधा सामान ज्यों का त्यों छोड़ कर ा के साथ कमरे से निकल गई.

मेस में दीपा ने चाय पीते हुए सुधा का रचय छात्रावास की अन्य लड़कियों से राया. वापस कमरे में आ कर दीपा ने मान सही ढंग से रखने में सुधा की मदद .

कुछ ही दिनों के साथ ने दीपा और ा को एकदूसरे के काफी समीप ला दिया. नों ही नौकरी पेशा थीं, इसलिए जल्दी ही लमिल गई थीं. दोनों प्रायः एकदूसरे को ने व्यक्तिगत जीवन के भव सुनाया रती थीं.





सुधा ने कई बार महसूस किया था कि दीपा के जीवन में जरूर कोई ऐसी बात है, जिस के कारण वह कभीकभी बहुत अधिक गंभीर हो जाया करती थी. परंतु सुधा ने कभी उस के मन का भेद जानने का प्रयत्न नहीं किया था.

हबीब और दीपा के प्यार में धर्म आड़े आ गया था और हबीब की शादी कहीं और हो गई थी. फिर भी वे एकदूसरे को भुला नहीं सके थे. प्रेम के वशीभूत हो कर जब दोनों ने विवाह करने की ठानी तो सुधा ने दीपा को ऐसी सलाह दी कि उस के प्यार की धुंध खुद ब खुद छंट गई.

एक दिन दीपा जब अपने दफ्तर से लौटी तो काफी बुझीबुझी सी थी. वह कमरे में आते ही चुपचाप अपने पलंग पर लेट गई और आंखें बंद कर लीं.

सुधा हमेशा दीपा से पहले अपने दफ्तर से लौटती थी. वह उस वक्त दीवार पर लगे आईने के सामने बैठी अपने बाल संवार रही थी. थोड़ी देर वह चुपचाप दीपा को निहारती रही, फिर खामोशी तोड़ते हुए पूछने लगी, ''दीपा, चाय पीने नहीं चलोगी? क्या बात है, आज कुछ ज्यादा ही थकीथकी लग रही हो?''

दीपा ने अपनी आंखें खोले बिना लेटेलेटे ही उत्तर दिया, ''तुम जाओ, आज मेरी इच्छा नहीं है चाय पीने की.''

''क्या बात है, कुछ बताओ भी?'' सुधा उठ कर दीपा के पास आई और उस का हाथ छू कर जांचने लगी. ''बुखारवुखार तो नहीं है?''

''नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है. बस, यो ही. मन नहीं कर रहा है कुछ खानेपीने को.''

''अच्छा, तुम आराम करो. मैं तुम्हारे लिए चाय यहीं ले कर आ जाऊंगी,'' कहते हुए सुधा कमरे से बाहर निकल गई.

थोड़ी देर बाद जब वह चाय ले कर लौटी तो देखा कि दीपा अपने आंसू पोंछ रही थी.

''अरे, क्या हो गया है, तम्हें? चलो उठो, जल्दी से मुंह धो कर पहले चाय पी लो. फिर बताओ, ये आंसू किस गम में बहाए जा रहे हैं?'' जबरदस्ती दीपा को उठाते हुए सुधा बोली.

दीपा ने उठ कर हाथमुंह धोए. सुधा ने झट उसे चाय का कप थमा दिया. चाय पीने के बाद दीपा थोड़ी संयत हुई तो कहने लगी, सुधा, मैं एक आदमी से प्यार करती हूं.''

''हूं, तो यह बात है. कौन हैं वह महाशय?'' सुधा ने मुसकराते हुए पूछा.

दीपा पहले की तरह गंभीर बनी रही. फिर बोली, ''वह मेरे दफ्तर में ही काम करता है. साथ में कुछ व्यापार का काम भी करता है. हम दोनों एकदूसरे को पिछले दो वर्षों से जानते हैं.''

''तो अब अपने प्रेम को शादी में बदल लो. इस में कौन सी मुशकिल है?'' सुधा ने पूर्ववत शरारत से मुसकराते हुए सलाह दी.

''यह बात नहीं है, सुधा. उस का विवाह हो चुका है.'' दीपा ने सिर झुका लिया.

''क्या, तुम कहीं मजाक तो नहीं कर रही हो? एक शादीशुदा आदमी से भला कैसा प्यार?'' सुधा ने आश्चर्य से पूछा. उस के चेहरे की मुसकान गायब हो गई थी.

''वह अपनी शादी से पहले मुझ से प्यार करता था और आज भी करता है. मैं ने पहले धर्म में अंतर होने के कारण उस के शादी के प्रस्ताव को ठुकरा दिया था. फिर उस ने अपने परिवार वालों की पसंद की अपनी जाति की लड़की से शादी कर ली.''

''उस की शादी हो जाने के बाद भी तुम दोनों के बीच में अभी तक पुराना प्रेम संबंध कायम है? यह तो तुम दोनों के लिए किसी भी प्रकार उचित नहीं है. वह तो पुरुष है. लेकिन क्या तुम एक स्त्री हो कर उस की पत्नी के प्रति अन्याय नहीं कर रही हो? फिर तुम्हारा अपना भविष्य क्या होगा?''

''उस की पत्नी रेशमा सब कुछ जानती है. मैं उस के घर भी दोतीन बार जा चुकी हूं. वह मुझ से बहुत अच्छी तरह बातें करती है. उन का एक बच्चा भी है. मैं हबीब को प्यार करती हूं. उस का घर बिगाड़ना नहीं चाहती हूं. लेकिन हबीब को समझाना बहुत मुशकिल है. वह मुझ से बेइंतहा प्यार करता है. वह मुझ से भी शादी करना चाहता है.''

''उस की पहली पत्नी का क्या होगा?''

''वह कहता है कि उस के धर्म में एक से अधिक शादियां करने की छूट है. उस की पहली पत्नी अगर हमारी शादी को स्वीकार नहीं करेगी तो शादी के बाद वह उसे तलाक दे देगा.''



''हबीब दीपाजी से शादी कर के भी मुझे नहीं छोड़ पाएंगे क्योंकि वह अपनी प्रेमिका से जितना प्यार करते हैं, उस से कहीं अधिक अपनी पत्नी और बच्चे से करते हैं.'' टेलीफोन पर रेशमा के ये शब्द सुन कर दीपा के चेहरे पर भूचाल सा आने लगा.

''सचाई तो यह है दीपा कि यह तुम्हारा प्यार नहीं स्वार्थ है. तुम दोनों आज अपने स्वार्थी प्यार की आड़ ले कर एक निर्दोष औरत और उस के मासूम बच्चे के जीवन के साथ खिलवाड़ करना चाहते हो.'' सुधा ने सीधेसीधे शब्दों में दीपा को वास्तविकता का एहसास कराना चाहा.

''नहीं, मैं ऐसा नहीं चाहती हूं. लेकिन हमारा प्यार मिट नहीं सकता. मैं ने कई बार कोशिश की. लेकिन हबीब कहता है कि वह मुझ से प्यार करना कभी नहीं छोड़ेगा. मैं उस के सिवा किसी और की नहीं हो सकती. अब तुम्हीं बताओ, मैं क्या करूं?''

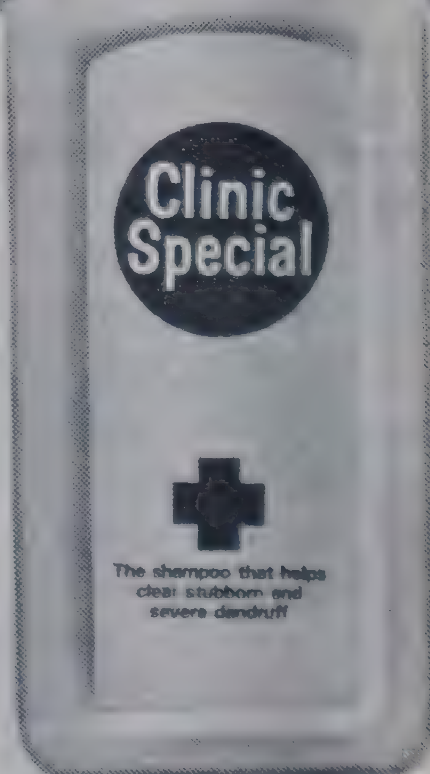
''अगर तुम दोनों एकदूसरे से इतना अधिक प्रेम करते थे तो पहले ही शादी क्यों नहीं कर ली? तुम अपने धर्म को क्यों नहीं छोड़ सकीं? अब वही धर्म तुम्हारे लिए महत्त्वहीन हो चुका है. हबीब का प्यार भी कैसा था, जिस ने तुम्हें अपने धर्म से ऊपर उठने की प्रेरणा नहीं दी. प्रेम संबंध शुरू होने के एक वर्ष के अंदर ही उस ने तुम्हारे इनकार के बदले में अपनी शादी रचा ली. और अब वह अपनी पत्नी और प्रेमिका दोनों से बेवफाई कर रहा है.''

दीपा अपने चेहरे को दोनों हाथों में छिपा कर रो पड़ी . सुधा थोड़ी देर तक उसे देखती रही. फिर बोली, ''हबीब तुम से उस समय तक शादी नहीं कर सकता, जब तक

क्लिनिक स्पेशल शैम्पू आपको डैण्ड्रफ़ से छुटकारा दिलाता है. फिर तो आप महफ़िल पर छा जाते हैं.



जब डैण्ड्रफ़ के कारण महफ़िल में आपकी शान घटती नज़र आये तो स्पेशलिस्ट से शैम्पू कीजिए. इसका मृदु-मुलायम झाग बालों को साफ़ करता है जबकि इसमें मिले विशेष तत्त्व डैण्ड्रफ़ की रोकथाम करते हैं. तभी तो आपके बाल बेहद दिलकश होकर निखर आते हैं—साफ़ और स्वस्थ बाल तथा खुजली का नामोनिशान नहीं.



HTA 1802

क्लिनिक स्पेशल

शैम्पू

साफ़, स्वस्थ और डैण्ड्रफ़ रहित बालों के लिए.

हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड का उत्कृष्ट उत्पादन

तुम उस से शादी के लिए रजामंद न हो. लेकिन तुम अपने पूर्व प्रेम के वशीभूत होने के कारण उस से शादी करने के लिए तैयार हो. हबीब की पत्नी क्या यह जानती है कि हबीब तुम से दूसरी शादी करना चाहता है?" सुधा ने पूछा.

"नहीं, हबीब का कहना है कि वह उसे तभी बताएगा जब मैं शादी के लिए हां कर दूंगी," दीपा ने उत्तर दिया.

"ठीक है. फिर तुम भी उस के आगे एक शर्त रखो," सुधा ने कुछ सोचते हुए कहा.

"कैसी शर्त?"

"हबीब से कहो कि तुम शादी के लिए तैयार हो. लेकिन शादी से पहले उसे अपनी पहली पत्नी को तलाक देना होगा."

"लेकिन, सुधा, मैं अपनी तरफ से ऐसी कोई शर्त हबीब के सामने नहीं रखना चाहती हूं. वह तो कहता है कि मुझ से शादी के बाद पहली पत्नी को छोड़ देगा. मैं नहीं चाहती कि मुझ से शादी करने से पहले वह मेरे कहने पर अपनी पत्नी को छोड़ दे."

"अच्छा, तो तुम यह सोचती हो कि तुम से शादी करने के बाद वह अपनेआप पहली पत्नी को तलाक दे देगा और तब उस की पत्नी भी आसानी से उसे छोड़ देगी?" सुधा ने सीधे दीपा की आंखों में झांकते हुए प्रश्न किया. लेकिन दीपा उस प्रश्न का कोई उत्तर न दे सकी. सुधा ने फिर कहा, "इस का मतलब यह हुआ, तुम यह तो चाहती हो कि हबीब अपनी पत्नी को छोड़ दे. मगर शादी से पहले अपने मुंह से स्वीकार नहीं करना चाहती हो. शायद तुम यह सोच रही हो कि हबीब तुम से बेइंतहा प्यार करता है, इसलिए तुम से शादी करने के बाद अपनेआप पहली पत्नी को छोड़ देगा."

इस बार भी दीपा कुछ न बोली. उसे खामोश देख कर सुधा ने बिलकुल शांत स्वर में कहा, "बस, मेरी एक सलाह मानो. तुम अपने प्रति हबीब के प्रेम की गहराई को परखने के लिए पहले उस के सामने वही शर्त रखो. फिर मुझे बताओ कि उस ने तुम्हें क्या जवाब दिया. अच्छा, अब इस विषय पर कल बातें होंगी. चलो, नीचे टी. वी. देखने चलें," यह कहते हुए सुधा उठ कर खड़ी हो गई.

दूसरे दिन दीपा जब अपने दफ्तर से वापस लौटी तो सुधा रोज की तरह पहले से ही कमरे में मौजूद थी. दीपा चुपचाप अपने पलंग पर बैठ गई. थोड़ी देर उन के बीच खामोशी रही. फिर दीपा ने ही बोलना शुरू किया, "हबीब से मेरी बात हुई थी. उस ने पहले कही हुई बातें दोहराई हैं. यह भी कहा है कि मुझ से शादी करने से पहले अगर वह पहली पत्नी से तलाक की मांग करेगा तो वह कभी राजी नहीं होगी और सतर्क हो कर दूसरी शादी में बाधा डालेगी. लेकिन दूसरी शादी के बाद उसे तलाक देना आसान होगा."

"देखो दीपा, हबीब के लिए यह जरूरी नहीं है कि वह अपनी दूसरी शादी का जिक्र अपनी पत्नी से करे. हो सकता है कि वह तुम से शादी करने के बाद उसे बताए. अब दूसरी शादी तो वह धूमधड़ाके के साथ करेगा नहीं, बल्कि पूरी सादगी से करेगा. और चंद आपसी लोगों के साथ यह एक रस्म अदा करने की तरह होगी. इसलिए तुम्हारी ओर से मैं टेलीफोन पर हबीब की पत्नी से एक प्रश्न करूंगी, जिस का जवाब तुम भी सुनोगी."

"क्या पूछोगी?" दीपा ने जानना चाहा.

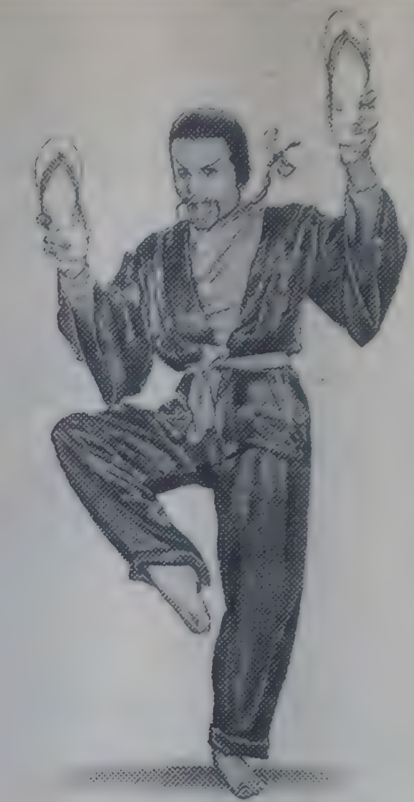
"जब पूछूंगी तब सुन लेना. अभी तुम यह बताओ कि हबीब के घर पर टेलीफोन है?"

"हां."

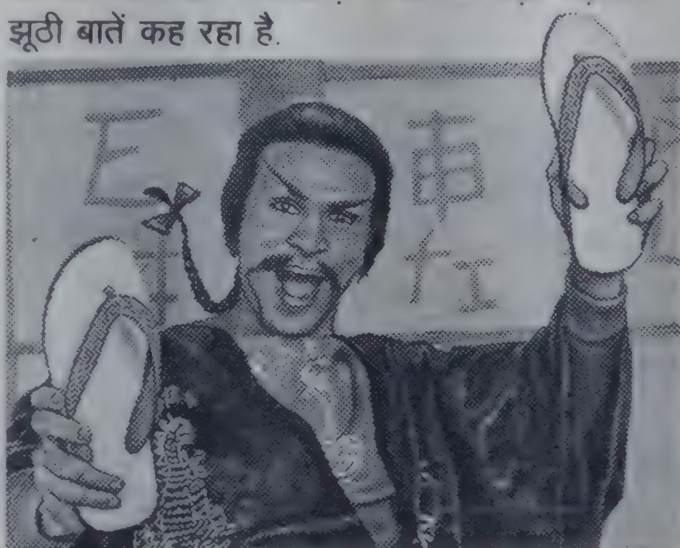
"ठीक है, अब चलो मेरे साथ पास के टेलीफोन बूथ तक," मन में कुछ संशय होने के बावजूद दीपा सुधा के साथ चल पड़ी.

फोन पर हबीब के टेलीफोन का नंबर डायल कर के दीपा ने रेशमा की आवाज सुनते ही फोन सुधा को थमा दिया. सुधा फोन पर बोली, "रेशमाजी, नमस्कार. मैं दीपा की सहेली सुधा बोल रही हूं." ➛

हिन्दुस्तानी चपाटाज़ द्वारा बदमाश वाँग टाँग का पर्दाफ़ाश !

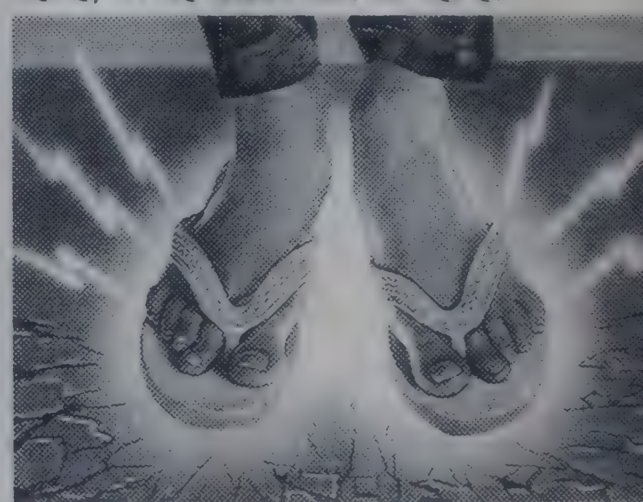


बदमाश वाँग-टाँग चपाटाज़ के बारे में बढ़ा-चढ़ाकर झूठी बातें कह रहा है.



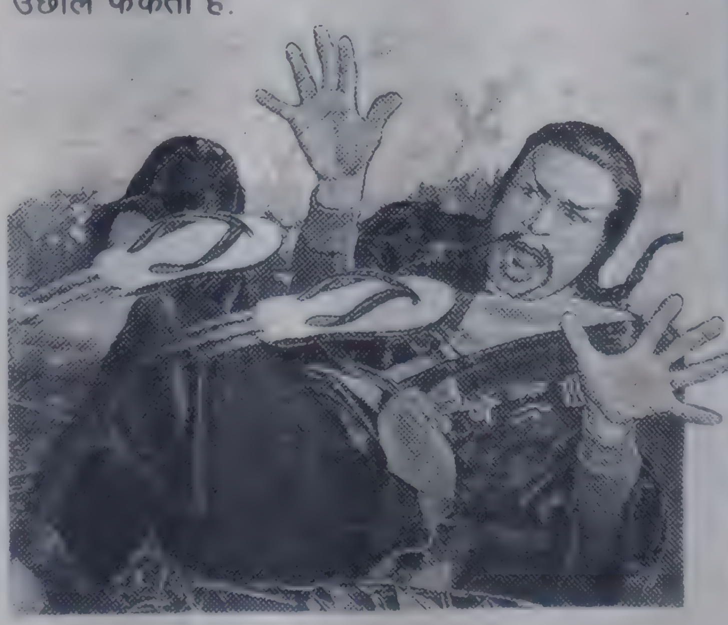
"अभी-अभी आया, जापान से लाया, आला चपाटाज़, निराला चपाटाज़."

उसके पैर में पहनी हुई चपाटाज़ गुस्से से लाल हो रही हैं, पर वह बेखबर बोले जा रहा है.

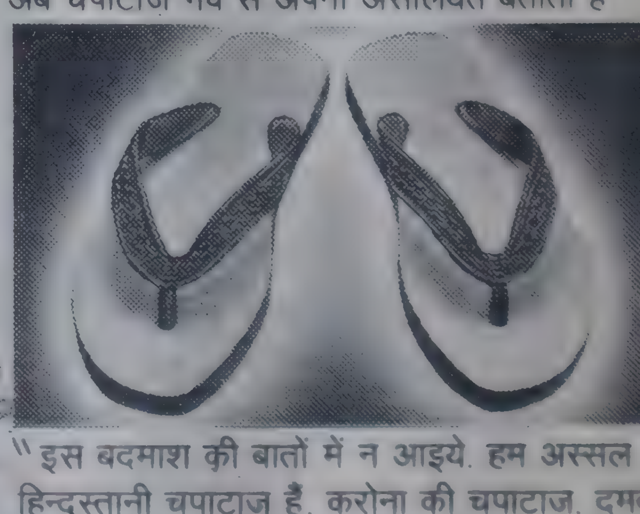


"इनका नहीं कोई सानी, तक्नॉलोजी जापानी, ये जापानी चपाटाज़."

आखिर चपाटाज़ ये झूठ सह नहीं पातीं और उसे उछाल फेंकती हैं.

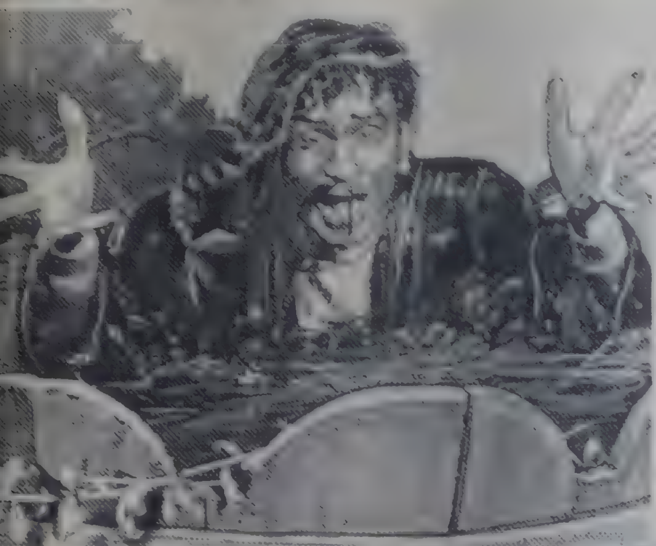


अब चपाटाज़ गर्व से अपनी असलियत बताती हैं

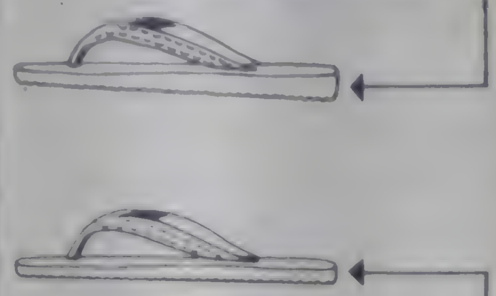


"इस बदमाश की बातों में न आइये. हम अस्सल हिन्दुस्तानी चपाटाज़ हैं. करोना की चपाटाज़. दम रबड़ से बनी. जापान क्या, दुनिया में कहीं भी चल के लिये लाजवाब. आखिर यह हमारी इज़्ज़त का सवाल है."

दमाश वॉंग-टॉंग का पर्दाफ़ाश हो चुका है. वह
खिसिया कर कहता है...

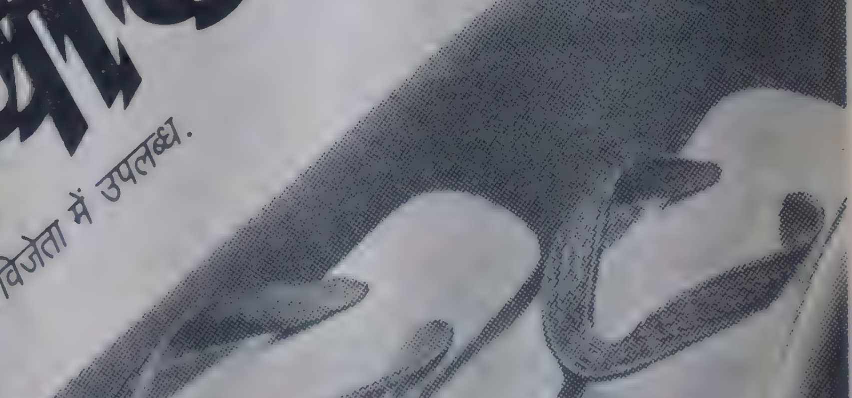


"अरे अपनी इज़्जत का तो फालूदा बना दिया ना!"



दमदार रबड़ से बनी
करोना की
चपाटाज़
विजय और विजेता में उपलब्ध.

CSC FOOTWEAR Carona



सीर्फ़ चप्पल नहीं–
चपाटाज़!

Contract-CL-42/88. Hn

प्रतिष्ठा

यह एक दिलचस्प सवाल है कि यदि आदमी के कपड़े उतार दिए जाएं तो किस हद तक वह अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा कर पाएगा.

—हेनरी डेविड थोरो

"ओह, आप लोग घर क्यों नहीं आईं? मेरा बड़ा मन है दीपाजी से बातें करने का. ये तो अकसर उन्हीं का जिक्र करते रहते हैं. किसी छुट्टी के दिन आप लोग घर आइए. मुझे खुशी होगी."

रेशमा ने बड़ी सहजता से घर आने का निमंत्रण दिया.

"मैं आप का संदेश दीपा तक जरूर पहुंचा दूंगी. लेकिन इस समय तो मैं ने आप से एक जरूरी बात करने के लिए फोन किया है," सुधा ने कहा.

"कहिए."

"रेशमाजी, मेरा प्रश्न बहुत व्यक्तिगत है. लेकिन मैं दीपा की ओर से ही पूछ रही हूं. आशा है कि आप जवाब जरूर देंगी. आप के पति अगर आप को तलाक दिए बिना दीपा से विवाह कर लें तो क्या आप उन की दूसरी शादी के बाद उन से तलाक लेना चाहेंगी?" अपने वाक्य को खत्म करने के साथ ही सुधा ने टेलीफोन का चोंगा पास खड़ी दीपा के कान से लगा दयिा. दीपा धड़कते दिल से रेशमा के जवाब का इंतजार करने लगी.

कुछ पल की खामोशी के बाद दूसरी तरफ से रेशमा की आवाज उभरी.

"सुधाजी, इस का मतलब है दीपाजी ने आप को मेरे पति से अपने प्रेम संबंधों के बारे में सब कुछ बता दिया है. खैर, इस बारे में मेरा उत्तर यही है कि पहले तो मुझे अपने पति पर पूरा भरोसा है. वह दीपाजी से प्यार भले ही करते हों, लेकिन उन्हें अपनी दूसरी पत्नी बना कर मेरा अधिकार मुझ से कभी नहीं छीनेंगे. फिर भी, अगर इस बात पर मैं विश्वास कर भी लूं कि हबीब दीपाजी से शादी करना चाहते हैं तो भी मुझे वह दूसरी शादी करने के बाद किसी भी हालत में नहीं छोड़ सकेंगे. क्योंकि जितना प्यार वह अपनी प्रेमिका से करते हैं, उस से कहीं ज्यादा अपनी पत्नी और बच्चे से करते हैं.

"इसलिए दीपाजी से मेरी यह बात जरूर कह दीजिएगा कि अगर उन्हें मेरे पति से इतना ही प्यार है तो उन्हें दोहरी जिंदगी की खाई में क्यों धकेल रही हैं? हबीब दूसरी शादी कर के न पूरी तरह दीपा के हो कर जी सकेंगे, न मेरे. वैसे अगर वह दूसरी शादी करना चाहेंगे तो मैं कोई रुकावट नहीं डालूंगी क्योंकि मैं अपने पति से बेइंतहा प्यार करती हूं. उन की खुशी मेरी खुशी है."

सुधा बड़े गौर से दीपा के चेहरे को देख रही थी. उस के चेहरे पर आतेजाते भावों को देख कर जब तक वह कुछ समझती कि दीपा ने झटके से संपर्क काट दिया. फिर वह अपने चेहरे पर भूचाल के से भाव ले कर वहां से चल दी. उस ने सुधा की तरफ देखा तक नहीं.

छात्रावास के कमरे में पहुंच कर वह शैया पर गिर पड़ी और फूटफूट कर रोने लगी. सुधा ने उसे चुप कराने की कोई कोशिश नहीं की. काफी देर तक रोते रहने के बाद दीपा उठी और सुधा के दोनों हाथ थाम कर भरे गले से बोली, "सुधा, मेरी आंखों के सामने अभी तक स्वार्थ की धुंध छाई हुई थी. तुम्हारे प्रयास और रेशमा की बातों की रोशनी ने उस धुंध को हटा दिया है. मैं तुम्हारे इस उपकार को कभी नहीं भूलूंगी."

सुधा ने दीपा के गालों पर बह आए आंसुओं को पोंछा और मुसकरा कर बोली, "दीपा, धुंध से बाहर निकलने के बाद सामने फैली रोशनी के सहारे, अपने जीवन की नई शुरुआत करो. नई दिशाएं तुम्हारी आंखों के सामने हैं, नई राहें तुम्हारा इंतजार कर रही हैं. बस, तुम्हारे कदम बढ़ाने की देर है, नई मंजिलें खुद चल कर तुम्हारे पास आ जाएंगी. शर्त इतनी है कि पीछे छूट गई धुंध की तरफ एक बार भी मुड़ कर न देखना." ●

अपराध बोध

(पृष्ठ 167 का शेषांश)

को वह ब्योरेवार, विस्तार से मुझे सुनाती.

वह सचमुच मेरे लिए चिंता नहीं, संतोष का विषय था कि मेरी बेटी सुखी और खुश है. अब वह खुले रूप से अकसर नरेन नाम के लड़के की चर्चा किया करती थी. मेरी बेटी इतनी युवा और परिपक्व हो गई थी कि वह एक लड़के से प्रेम करने लगी है. यह विचार मेरे अंतर में जाने खुशी के कितने गुलाब गमका देता था.

शिजनी के होंठों पर सजी एक मुसकान, उस की आंखों में बसी एक नीली सी चमक तथा उस के संपूर्ण अस्तित्व को आश्वस्त करता एक आभामंडल—में उसे देखती और सोचती, 'प्रेम भी कैसा चमत्कार है, जो एक शीलसंकोची, विनयी, अनुशासित एवं अंतर्मुखी प्राणी को भी कैसा चंचल तथा बहिर्मुखी बना देता है. पहले जिस के होंठों से मौन चिपका रहता था, वही अब हर समय प्रेम गीत गुनगुनाती रहती है.'

नरेन के प्रति मेरी उत्सुकता बढ़ रही थी. वह देखने में कैसा लगता था? किस वर्ष में था? सहपाठी ही होगा? कहां रहता था? उस के पिता क्या करते थे? परिवार में कौनकौन सदस्य था?

मेरे पास प्रश्नों की लंबी पंक्ति थी. अकसर, मौके बेमौके मैं उन में से कुछ को उछाल देती थी. पर शिजनी इतनी पक्की हो चुकी थी कि नरेन से संबंधित हर प्रश्न का उत्तर बड़ी चतुराई से टाल जाती थी.

शिजनी ऐसा क्यों करती थी? क्या शीलसंकोच के कारण? अथवा अभी दोनों का प्रेम पूर्व पारस्परिक परीक्षण चल रहा था? मैं कुछ भी निर्णय करने की स्थिति में नहीं थी.

हां, एक दिन स्वर्ण अवसर मिला था शिजनी के रहस्यमय प्रेम संसार में झांकने का. शाम का समय था शिजनी को अपनी किसी सहेली के जन्मदिन की पार्टी में जाना था, इसलिए वह नहाने गई थी.

शिजनी स्नानघर में थी. तभी फोन आ गया. मैं ने चोंगा उठाया और बोली, "हैलो."

"शिजनी से बात कर सकता हूं?" दूसरी ओर से स्वर उभरा.

"आप कौन बोल रहे हैं?"

"नरेन."

"तो नरेन बेटा, तुम हो?"

मैं खुशी से उमग पड़ी. इस से पूर्व कि मैं उस से कुछ पूछती या कहती, उधर से नरेन बोला, "चाचीजी, शिजनी से कहिए, मैं नमिता की जन्मदिन की पार्टी में नहीं जा पाऊंगा. इसलिए शिजनी को अपनी कार में साथ नहीं ले जा सकूंगा."

"क्यों, क्या हुआ? घर आओ न बेटा. मैं तुम्हें देखना..."मैं बोल तो गई पर शीघ्र ही मुझे लगा, यह इकतरफा संप्रेषण था. सचमुच नरेन ने फोन बंद कर दिया था.

शिजनी स्नानघर से बाहर आई. मैं ने उसे नरेन द्वारा दी गई सूचना बताई तो वह एकदम उदास हो गई. उखड़ी और परेशान सी वह अपने कमरे में जा कर बंद हो गई.

उस उदास शाम के बाद शिजनी के अंदर एक ऐसा परिवर्तन आया था कि मैं परेशान हो गई थी. किसी सैनिक को जैसे 'कोर्ट मार्शल' कर दिया गया हो. एकदम वैसी ही स्थिति हो गई थी उस की.

कुछ दिन पूर्व तक वह बहिर्मुखी और कितनी खुश रहती थी. अचानक वह अंतर्मुखी हो गई थी. उसे एक चुप लग गई थी. उस के होंठों पर गमकते गुलाब मुरझा गए थे. आंखों में बसी नीली चमक बुझ गई थी. वह हर समय उदास, खिन्न और खोईखोई सी रहती थी. मेरे और उस के

बीच बहुत कम बातचीत होती थी.

निश्चत रूप से शिंजनी और नरेन के बीच झगड़ा हुआ था. मैं ने सोचा, 'पागल कहीं की. प्रेमीप्रेमिका के बीच लड़ाई तो दूध पर जमी मलाई सी पौष्टिक तथा स्वादिष्ट होती है.'

एक दिन मैं ने उसे घूमफिरा कर उस विषय में समझाना चाहा तो वह उत्तेजित हो कर बोली, "मां, इन लड़कों के बारे में कुछ मत कहो. सारे के सारे धोखेबाज, मतलबी और बेईमान होते हैं."

"पर बेटी..."

"मां, मैं इस विषय में कोई बात नहीं करना चाहती."

मैं समझ सकती थी शिंजनी की अंतः व्यथा. प्रथम प्रेम और उस में निराशा तथा विश्वासघात से प्रथम साक्षात्कार. निश्चित रूप से कुंठा उत्पन्न करेगा. शिंजनी ही क्या, कोई भी लड़की हो, उस की यही प्रतिक्रिया होगी.

मुझे यह देख कर संतोष हुआ कि शिंजनी ने उस स्वाभाविक किंतु झकझोर देने वाली दारुण स्थिति से समझौता कर लिया. उस ने मध्य मार्ग अपना लिया. न वह अंतर्मुखी बनी रहती और न ही पहले की भांति बहिर्मुखी. वह पहले की अपेक्षा कहीं अधिक सहज और प्रकृतिस्थ हो चली थी. खुशी के अवसर पर खुश और उदासी के मौके पर उदास.

धीरेधीरे मेरी बेटी परिपक्व और चिंतनशील हो चली थी. पर एक शाम को जो रहस्यमय व्यवहार शिंजनी ने प्रदर्शित किया, उस ने मुझे विचारमग्न कर दिया.

शिंजनी मुझ से पहले कालिज से लौट आई थी. मैं बाद में आई थी. कपड़े बदले, चाय बनाई दो प्याले. उसे बुलाने के लिए उस के कमरे में घुसी तो देखा कि वह अपनी अलमारी में कुछ छिपा कर रख रही है. मुझे अचानक कमरे में आया देख कर वह घबरा गई. उस का मुख पीला पड़ गया.

"क्या बात है, शिंजनी? तुम इतनी घबराई..."

"मां, आप को दस्तक दे कर अंदर आना चाहिए था."

"क्यों?" मैं ने विस्मित हो कर पूछा.

"हमें एकदूसरे की एकांतता का खयाल करना चाहिए."

"मांबेटी के बीच कैसी एकांतता? कैसा छिपावदुराव?"

शिंजनी ने कोई उत्तर नहीं दिया. स्पष्ट रूप से वह मुझ से असहमत थी. उस ने अलमारी को ताला लगाया और बड़ी अनिच्छा से मेरे साथ बाहर चाय पीने के लिए आ गई.

उस दिन पूरी शाम मैं शिंजनी के रहस्यमय, असंगत व्यवहार की भूलभुलैयों में खोई रही. कड़े परिश्रम के बाद मैं ने रहस्य सुलझा लिया. निश्चित रूप से शिंजनी ने किसी अन्य लड़के से प्रेम संबंध जोड़े थे या संभवतया नरेन से 'कुट्टी' के बाद 'अब्बा' हो गई हो. उन में से ही किसी एक का प्रेमपत्र हो सकता था, जिसे वह छिपा रही थी.

सितंबर का महीना आया और अपने साथ बुखार की सौगात लाया. शिंजनी को भी बुखार आया. दोतीन दिन बीमार रही. एकदम परेशान, चिड़चिड़ी और कमजोर हो गई.

बुखार उतरा तो वह कालिज जाने लगी. पर उस बार मैं ने उस के अंदर बहुत दूरगामी परिवर्तन देखे.

शारीरिक स्तर पर वह कमजोर हो गई थी. उस की आंखों के नीचे काले घेरे उभर आए थे. उस का चेहरा कांतिहीन हो गया था. उसे भूख नहीं लगती थी. कभीकभार उस के पेट में दर्द हो जाता था. दोचार बार उसे उलटियां भी हुई थीं.

मैं उसे डाक्टर के पास ले जाना चाहती थी. पर वह टाल जाती थी. कहती कि यह सब बुखार का दुष्परिणाम है. समय के साथ सब ठीक हो जाएगा. मैं उसे ताकत की दवा देती, पर वह नहीं खाती.

वह लापरवाह, चिड़चिड़ी और



त्वचा में ज्योति जगाए
रेक्सोना
ज्योतिर्मय त्वचा...जिसकी चाहत रही है
आपको सदा. आपकी चाहतों का साबुन–रेक्सोना.
रेक्सोना में है चार कुदरती तेलों का मिश्रण–
हापुशा, दालचीनी, लौंग, टेरिबिंथ–आपकी
त्वचा की कुदरती देखभाल के लिए.
रेक्सोना
की त्वचा को कोमल और उज्ज्वल रखता है.
लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन.

असभ्य हो गई थी. बातबात में मुझ से झगड़ने लगती. घर में होती, पलंग पर लेटी या सोफे पर बैठी, शारीरिक रूप से उपस्थित किंतु मानसिक रूप से किसी कल्पनालोक में विचरण करती हुई. उस ने अपनी पढ़ाई की तरफ से भी लापरवाही बरतनी शुरू कर दी थी.

कुछ दिनों तक मैं भी शिजनी के इस बदलाव से चिंतित हुई. फिर सोचा, 'यह उम्र ही ऐसी ही है, कच्ची और अस्थिर. पल में कुछ और अगले पल कुछ और. युवावस्था तथा पूर्ण महिला बनने के बीच का संधिकाल!'

बस, यही सोच कर मैं ने संतोष कर लिया. पहले मैं सुहास को एक पत्र लिखना चाहती थी, शिजनी की समस्या को ले कर. फिर मैं ने सोचा, 'लुशाका में बैठे वह बेचारे व्यर्थ में परेशान होंगे. कोई लाभ नहीं उन्हें यह सब बताने का. यों वह दीवाली के आसपास आने की सोच ही रहे हैं.'

मैं सोचती थी कि समय के प्रवाह के साथ शिजनी की वे सारी असंगतियां खुद ब खुद ठीक हो जाएंगी. पर मैं भ्रम में थी. हर दिन उस के जीवन से एक नया आयाम जुड़ जाता, जो मुझे चिंतित ही नहीं, परेशान भी कर देता.

पिछले महीने उस ने अपनी जेबखर्च की राशि दोगुनी करा ली महंगाई की दुहाई दे कर. अब उस की बड़ी राशि में भी गुजारा नहीं होता था. कभी 100 रुपए तो कभी 50 रुपए की अतिरिक्त मांग पेश होती. मैं दे देती. यही सोच कर कि आजकल की लड़कियां लड़कों से हर बात में समानता चाहती हैं.

काफी, सिनेमा, सैरसपाटे पर यदि लड़का 100 रुपए खर्च करता है तो लड़की भी उतना ही व्यय करने को आतुर रहती है, वरना बराबरी का दावा खोखला नहीं हो जाएगा.

और एक दिन शिजनी ने 250 रुपए मांगे तो मैं बुरी तरह उखड़ कर बोली, "क्या करती हो इतने रुपयों का?"

"मां, मुझे हर खर्च का स्पष्टीकरण देना होगा?" शिजनी का स्वर बेहद कड़वा था.

"मैं स्पष्टीकरण नहीं मांग रही हूं, पर साथ ही यह फुजूलखर्ची मुझे पसंद नहीं."

"मां, यह तुम कह रही हो?"

आवेश में भरी वह अपने कमरे में गई और अंदर से दरवाजा बंद कर लिया.

पहली बार मेरा अंतर आवेश और आक्रोश से हिल गया. निश्चित रूप से वह बदतमीजी थी शिजनी की. मांबाप के अनुशासन के विरुद्ध यह खुला विद्रोह था. मैं ने भी उसे नहीं मनाया. पड़ी रहो अपने कोप भवन में. जब भूखप्यास लगेगी तो खुद ब खुद उठ कर बाहर आओगी.

बस, यही सोचती हुई मैं तैयार हुई और अपने दफ्तर चली गई. बाहर से ताला लगा गई, जो अंदर से खुल जाता था.

पूरे दिन मैं बेहद उखड़ी और चिंतित सी रही. मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि शिजनी के साथ मैं ने ऐसा क्या किया, जिस के कारण वह ऐसा अभद्र तथा शालीनता-रहित व्यवहार करती है?

अवसाद का बोझ बरदाश्त के बाहर हो गया तो मैं ने कागज लिया और सुहास के नाम एक लंबा पत्र घसीट डाला. अंतर की सारी व्यथा और असमर्थता व्यक्त कर दी. मन हलका हो गया. शाम तक मैं ने पत्र नहीं भेजा. अपनी मेज की दराज में उसे रख कर मैं घर आ गई.

घर पहुंची, ताला खोला, सब कुछ वैसा ही था जैसा मैं सुबह छोड़ गई थी. क्या शिजनी अभी भी कोप भवन में है अथवा वह कालिज चली गई है?'

मैं ने उस के कमरे के बंद दरवाजे को धकेला. वह बंद ही था, तो क्या...?'

कुछ समझ में नहीं आया. ताला अंदर से भी बंद हो सकता था और बाहर से भी. मैं ने शिजनी को आवाज दी. कोई उत्तर नहीं शायद वह कालिज चली गई थी.

मैं ने कपड़े बदले. चाय बनाई, पी. खाना बनाने का फैसला शिजनी के आने पर छोड़ कर मैं अव्यवस्थित घर को ठीकठाक करने लगी.

तभी फोन की घंटी बजी. मैं ने चोंगा उठाया. बातचीत की. उधर से एक लड़की शिजनी के बारे में पूछताछ कर रही थी. वह कालिज नहीं गई थी, ऐसा उस ने बताया.

शिजनी कालिज नहीं गई तो फिर कहां है सुबह से अब तक? कहीं कोप भवन में ही तो नहीं पड़ी है?

मैं ने चाभी से उस के कमरे का ताला खोला. मेरा अनुमान सही था. शिजनी अपने पलंग पर लेटी थी. शायद सो रही थी. उस की पीठ मेरी तरफ थी.

पलंग के पास रखी मेज पर जो सामान बिखरा पड़ा था, उसे देख कर मैं स्तब्ध रह गई. इंजेक्शन, प्रयोग में लाई गई सूई, कुछ तरल पदार्थ, एक पुड़िया में कुछ पाउडर.

मेरे संपूर्ण शरीर में ठंडी सिहरन दौड़ गई. शिजनी के जीवन की विभीषिका उघड़ी पड़ी थी मेरे सामने, 'तो यह किसी लड़केवड़के से प्रेम नहीं करती है. यह तो इन मादक द्रव्यों को लेने की आदी हो चुकी है. यह क्या हुआ?'

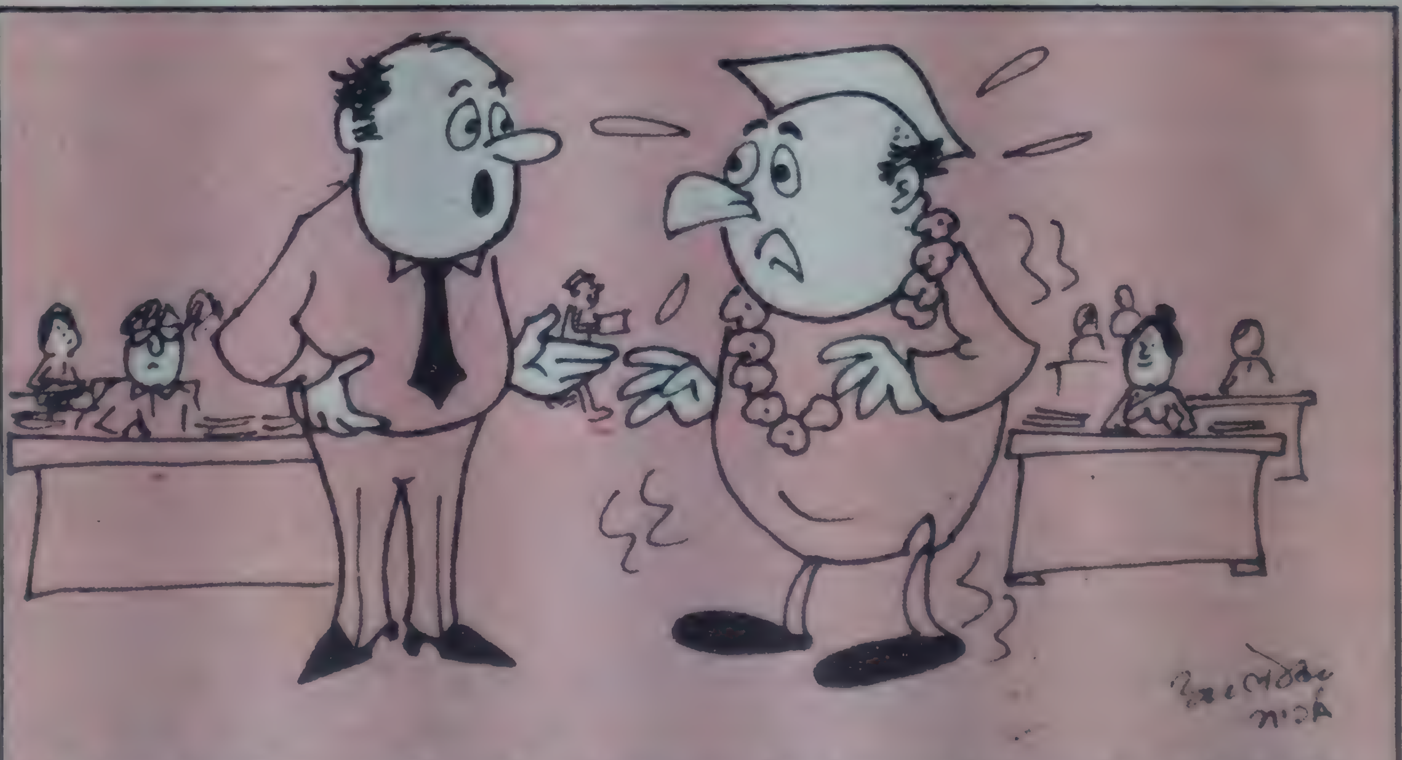
मेरे अंतर में क्रोध की एक तेज लहर आई. अब शिजनी की बच्ची को वह सजा दूंगी जो वह जिंदगी भर याद रखेगी. मैं ने उस का कंधा पकड़ कर अपनी तरफ पलटा और बस, पलांश में मैं संज्ञाशून्य हो गई.

हां, उस से पूर्व मैं ने शिजनी का शरीर देख लिया था. ठंडा, बर्फ सा, अकड़ा. पुतलियां फैल गई थीं. उस में जीवन का कोई चिह्न शेष नहीं था. मेरी प्यारी, इकलौती शिजनी का मृत शरीर मेरे समक्ष था

मेरा घर वीरान हो गया था. मेरा जीवन रासरंगविहीन बन चुका था. सुहास लुसाका से वापस आ गए थे, अपने अनुबंध को अधूरा छोड़ कर.

जीवन पूर्ववत चल रहा है. पर शिजनी की स्मृति एक अभिशप्त छाया सी मेरे पीछे लगी रहती है. हर समय वह यही कहती है, 'मां, मेरी असामयिक मृत्यु के लिए तुम ही दोषी हो. तुम को यह तक पता नहीं चला कि तुम्हारी बेटी मादक द्रव्य लेने लगी है. तुम समझती रहीं कि वह प्रेम करने लगी है. कैसी मां हो तुम?'

वह अपराध बोध मुझे आज भी छटपटाता है. काश, मैं थोड़ी सजग और व्यावहारिक होती! ●



''महोदय, यह मंत्रिमंडल नहीं, कार्यालय है. यहां काम ठीक से चलाना है तो आए दिन कर्मचारियों के विभाग में उलटफेर नहीं कर सकते.''

★★★★ अति उत्तम ★★★ उत्तम ★★ मध्यम ★ साधारण ○ बेकार

★ फलक

निर्माता: वी. सागर भगत
निर्देशक: शशिलाल नायर
संगीत: कल्याणजी आनंदजी
मुख्य कलाकार: राखी गुलजार, जैकी श्राफ, मोहन भंडारी, माधवी, परेश रावल, अनुपम खेर, सुप्रिया पाठक व किरनकुमार.

यह फिल्म सलीम खान (सलीम जावेद वाले सलीम) द्वारा लिखी गई है तथा इस पर उन्हीं के द्वारा लिखित फिल्म 'दीवार' व 'नाम' की छाप स्पष्ट रूप से नजर आती है.

फिल्म की कहानी एक मिल के चारों तरफ घूमती है, जिस में राखी के पति को उस की अति ईमानदारी की वजह से मिल के भ्रष्ट मालिकों परेश रावल व अनुपम खेर द्वारा एक गुंडे किरनकुमार की सहायता से कत्ल कर दिया जाता है. राखी अपने दोनों बेटों (बड़े हो कर जैकी श्राफ व मोहन भंडारी) को बड़ी कठिन परिस्थितियों में पालपोस कर बड़ा करती है. मोहन भंडारी वकील बनता है तथा जैकी अपराधी बनता है. इस के बाद की फिल्म में जैकी की आपराधिक हरकतों की वजह से उस में व राखी में वात्सल्यजन्य तनाव, मोहन भंडारी का मजदूरों की तरफ से मिल मालिकों के खिलाफ संघर्ष, जैकी का माधवी को प्रेमिका के रूप में पाना व खोना, अनुपम खेर का हृदय परिवर्तन तथा परेश रावल की खलनायकनुमा हरकतें दिखाई गई हैं. अंत में जब जैकी को पता चलता है कि परेश रावल ने उस के पिता का कत्ल किया था तो वह उसे मारने के लिए निकल पड़ता है. परंतु धोखे से स्वयं मारा जाता है तथा परेश रावल का अंत राखी के हाथों होता है.

फिल्म की पटकथा में खूबियां व खामियां दोनों हैं. खूबियां ये हैं कि पटकथा सुगठित है, इस में इस्तेमाल की गई घटनाएं ताजी हैं तथा किसी भी किरदार को अनावश्यक फैलाव नहीं दिया गया है. खामियां ये हैं कि पटकथा हद से ज्यादा बनावटी है तथा अतिनियंत्रित. वास्तव में एक अच्छी पटकथा न सिर्फ सुगठित होनी चाहिए वरन उस में एक 'प्राकृतिक बहाव'



फिल्म 'फलक' में राखी, अनुपम खेर, किरनकुमार और मोहन भंडारी : अच्छी कहानी पर बनी फिल्म.



फिल्म 'शिवा शक्ति' में शत्रुघ्न सिन्हा और गोविंदा: अपराध की दुनिया पर बुना गया तानाबाना.

होना चाहिए तथा उस में 'आश्चर्य का तत्व' भी विद्यमान होना चाहिए. वैसे सलीम खान जैसे लेखक से इस गलती की उम्मीद नहीं थी.

राखी का किरदार काफी सलीके से लिखा गया है. परंतु वह उस के साथ न्याय करने में असफल रही है. जैकी श्राफ इस से बेहतर अभिनय शायद कभी नहीं कर पाएगा. मोहन भंडारी इस तनाव भरी फिल्म में कुछ हलकेफुलके क्षण देने में निश्चित रूप से सफल रहा है. माधवी बेहद साधारण है. परेश रावल व अनुपम खेर ने अपनी साख कायम रखी है. अन्य सभी कलाकारों ने भी अपनी भूमिका के साथ न्याय किया है.

शशिलाल नायर के निर्देशन का स्तर औसत से ऊपर है. और भी बेहतर हो सकता था, अगर लेखक सलीम खान उस पर बुरी तरह हावी न होता. दरअसल, यह फिल्म है ही सलीम खान की.

फिल्म में गीतसंगीत की कहीं भी गुंजाइश नहीं है. ऐसे में संगीतकार से अच्छे संगीत की उम्मीद करना मूर्खता है.

फिल्म को वास्तविकता के निकट लाने के चक्कर में इस की बाक्स आफिस जरूरतों को नजरअंदाज कर दिया गया है. इस के अलावा चरमोत्कर्ष पर जा कर जैकी के मरने का दृश्य कतई प्रभावशाली नहीं है. फिल्म का प्रचार काफी गलत ढंग से किया गया है. और पोस्टरों में राखी को प्रमुखता से दिखाया गया है. जाहिर है, इस फिल्म के निर्माता व वितरकों को भारी घाटा उठाने के लिए तैयार रहना चाहिए.

○ शिवा शक्ति

निर्मातानिर्देशक: आनंद
संगीत: आनंद मिलिंद
मुख्य कलाकार: शत्रुघ्न सिन्हा, गोविंदा, अनिता राज, किमी काटकर, गुलशन ग्रोवर और अनुपम खेर.

अपराध की बुनियाद पर बुना गया तानाबाना, कहानी नाम की कोई चीज नहीं, सिर्फ गलतफहमियां, चोरियां, अफीम,

चरस, गांजा, मारधाड़ और कार रेस—इसी का नाम है शिवा शक्ति, जिस में गोविंदा जैसा नायक—दो हाथ का छोकरा 20 मिनट में 50 किलोमीटर दूर तक कार चलाता है. है न हैरतअंगेज बात. जी हां यह अविश्वसनीय कारनामे आप को बंबइया फिल्म की हर चालू फिल्म में मिलेंगे तो शिवा शक्ति में क्यों नहीं.

शिवा (शत्रुघ्न सिन्हा) अपनी बहन कुसुम (किमी काटकर) की शादी के लिए पैसे इकट्ठे करने बंबई आता है. बंबई में उस की मुलाकात शक्ति (गोविंदा) से होती है, जो कारें चोरी किया करता है. अपराध जगत के सम्राट डी.सी. (अनुपम खेर) को शक्ति की जरूरत है. शक्ति बंबई छोड़ कर उसी गांव में जाता है, जहां कुसुम रहती है. दोनों में प्रेम होता है. डी.सी. के आदमी गांव में आ कर शक्ति को शहर ले जाते हैं और एक म्यूजियम में रखा हीरा चोरी करने के लिए मजबूर करते हैं. शक्ति पकड़ा जाता है. यह जान कर शिवा का दिल टूट जाता है. वह जब गांव जाता है तो शक्ति और कुसुम की प्रेम कहानी सुन कर शक्ति को मारने का प्रण करता है. उधर शक्ति भी पुलिस की गिरफ्त से भाग निकलता है. शिवा और शक्ति आपस में टकराते हैं. भारी गलतफहमियां दूर होती हैं और दोनों मिल कर डी.सी. से अपना बदला लेते हैं.

इस फिल्म का अंजाम क्या होगा, यह शुरू में मारधाड़ चालू होते ही पता चल जाता है. फिल्म में आधे से ज्यादा खलपात्र (गुंडे) भरे पड़े हैं और मारधाड़ का आलम तो यह है कि लगता है लातघूंसों की बारिश हो रही हो.

फिल्म का निर्देशन व संपादन सामान्य है. फिल्म के संवाद अच्छे नहीं कहे जा सकते. फिल्म की फोटोग्राफी भी साधारण है.

अभिनय की दृष्टि से किमी काटकर की भूमिकाएं बेकार हैं और नायिकाओं की खानापूरी करने के लिए डाली गई हैं. अन्य कलाकार साधारण हैं. फिल्म के संगीत में भी कोई विशेष दम नहीं है. ●



आपका दंत-रक्षक
सिबाका* फ्लोराइड
बच्चे हमेशा बच्चे ही रहेंगे... हंसते-चहकते, जीवन में हर मिठास का मजा लेते हुए. इन शुरू के वर्षों में आपके बच्चे के दांत सड़ सकते हैं, इसलिए विशेष रूप से सुरक्षा की जरूरत है.
1988 में, एशिया-पॅसिफ़िक कॉनफ़रेंस और वर्ल्ड ज़ोरास्ट्रियन डेंटल कॉनफ़रेंस, जो क्रमशः दिल्ली और बंबई में हुईं, में डॉ. डेविड बार्म्स, ओरल हैल्थ प्रमुख, विश्व स्वास्थ्य संस्था (WHO) ने टूथपेस्टों में फ्लोराइड की जोरदार सिफारिश की.
डॉ. डेविड बार्म्स ने कहा है, "फ्लोराइड से दांतों की सड़न रोकने में, बड़ा ही अनुकूल प्रभाव पड़ता है."
और सिबाका फ्लोराइड टूथपेस्ट यही करती है...
सिबाका फ्लोराइड दांतों के एनॅमल से मिलकर अम्ल बनाने वाले जीवाणुओं और दंत-छिद्रों से दंत-रक्षा करती है.
Cibaca
Cibaca
Fluoride
toothpaste
हिन्दुस्तान सीबा-गायगी का उत्कृष्ट उत्पादन
ULKA-TP-1-88 HIN

एहसास
पृष्ठ 156 का शेष

व शिखा ने रात का भोजन तैयार कर रखा था. तभी विशाल ने शिखा को अलग बुला कर कहा, "शिखा, तुम से एक बात कहनी है. पिताजी कह रहे थे कि दिन के खाने पर केवल एक सब्जी और दाल ही थी. उन्हें एक सूखी सब्जी व एक रसेदार सब्जी चाहिए. साथ में दाल हो तो अच्छा है, क्योंकि उन के दांत कमजोर हैं."

शिखा तो पहले से ही भरी बैठी थी. विशाल की इन बातों ने उस के गुस्से को और भी बढ़ा दिया. उस ने कहा, "विशाल, अगर दिमाग है तो उस का प्रयोग करो. अगर नहीं है तो किसी से उधार ले लो. इतना शानदार भोजन चाहिए तो अपने पिता का प्रबंध किसी होटल में कर दो. तुम लोग मेरी मां को क्या नौकरानी समझने लगे हो? उन्हें मैं ने तीन माह के लिए बुलाया था और उन्हें बुलाने का मुख्य उद्देश्य था ज्योति की देखभाल करना. अपनी लाख कोशिशों के बावजूद भी मैं अभी तक कोई भली चाइल्ड माईंडर नहीं तलाश पाई हूं. हम लोगों को बताए बिना तुम ने अपने पिता को बुलवा लिया. अगर मुझ से पूछ लेते तो तुम्हारी इज्जत कम नहीं हो जाती. तुम लोगों के इस व्यवहार से मेरी मां की मानसिक व शारीरिक दशा पर क्या प्रभाव पड़ा है, क्या कभी सोचा है?

"कई दिनों से उन के नखरे सह रही हैं वह. मैं ने उन्हें ज्योति की देखभाल के लिए बुलाया था; धोबिन, महरी, रसोइया व नौकरानी बनाने के लिए नहीं. क्या तुम सोचते हो कि तुम लोग लड़के वाले हो कर जो चाहे कर सकते हो.

"अरे, अब वह जमाने लद गए जब लड़के वाले लड़की व लड़की के घरवालों पर मनमाने अत्याचार व दुर्व्यवहार करते थे. उस समय लड़कियां पढ़ीलिखी नहीं होती थीं, अपना भलाबुरा नहीं समझतीं थीं और पति को सब कुछ मानती थीं. पर अब पढ़ीलिखी लड़कियां न तो अपना अपमान होने देंगी और न अपने घरवालों का.

"जैसे तुम्हें तुम्हारे मातापिता ने पढ़ायालिखाया है, ठीक वैसे ही मुझे भी मेरे मातापिता ने अनेक कष्ट सह कर पढ़ाया है और न तो मेरी मां और न ही मैं तुम पर आश्रित हैं जो तुम दोनों हर वक्त हम दोनों पर आदेश चला रहे हो.

"मानती हूं कि अपने पिता के प्रति तुम्हारे मन में बड़ा सम्मान है. ठीक वैसा ही सम्मान व प्यार मेरे मन में मेरी मां के प्रति है. अगर तुम उन्हें इतना चाहते हो तो स्वयं उन की देखभाल, उन की सेवा क्यों नहीं करते. मुख्य प्रबंधक का दायित्व निभाने के अलावा और कोई भी दायित्व निभाते हो. यह प्रश्न स्वयं से पूछ कर देखो.

"जब से तुम्हारे पिता यहां आए हैं, तुम इस घर में एक पुत्र के अलावा और कुछ भी रह गए हो? भूल गए कि तुम इसी घर में पिता, पति व दामाद भी हो.

"आवश्यकता से अधिक किसी की ओर ध्यान देना अच्छा भी नहीं होता. तुम पितापुत्र शनिवार व रविवार को ठठ से बैठ कर वीडियो पर दोदो फिल्में देखते हो और हम मांबेटी सारासारा दिन तुम लोगों के खाने व नाश्ते की व्यवस्था में ही व्यस्त रहती हैं. आखिर मैं भी एक व्यस्त डाक्टर हूं. मुझे भी छुट्टी अपने ढंग से गुजारने की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए. तुम्हारे पिता यहां आ कर यह भूल गए कि यहां उन की बहू नौकरी करती है. यदि मैं नौकरी न करती, सारा दिन घर पर रहती तो शौक से उन की आवभगत करती, पर मेरी मां पर आदेश चलाने का उन्हें क्या अधिकार है?

"मां को मैं इसी माह के अंत में भारत भेज रही हूं. तुम्हारे पिता जितने दिन यहां रहना चाहें, शौक से रहें. मैं सुबह काम पर जाने से पूर्व परांठे व सब्जी बना कर रख जाऊंगी. उसे वह नाश्ता समझ कर खाएं या

खाना समझ कर, यह उन के ऊपर निर्भर करता है.

"अगर तुम्हें लगता है कि ऐसा नहीं होना चाहिए तो तुम्हारी बहुत सी छुट्टियां पड़ी हैं, ले लो और जी भर कर अपने पिता की सेवा करो. सहने की भी एक सीमा होती है और वह सीमा अब पार हो चुकी है. आगे तुम्हारी मरजी और तुम्हारे पिताजी की मरजी. जो चाहे करो," कहने को तो शिखा इतना कुछ कह गई और विशाल हक्काबक्का सा खड़ा रह गया.

शिखा इतना तो कभी भी न बोली थी. आरंभ से ही वह कम बोलती थी. पर उस दिन कैसे ज्वालामुखी के समान फट पड़ी थी. परंतु उस के कथन में सच्चाई थी. विशाल से एकाएक कोई उत्तर देते न बन पड़ा. उन्होंने केवल यही कहा, "ठीक है, मैं पिताजी को समझा दूंगा."

इस के बाद विशाल ने अगले शनिवार को बाहर घूमने का कार्यक्रम बनाया. अब उन्हें पहली बार एहसास हुआ कि उन की सास इतनी दूर से उन के घर आई थी. उन्हें घुमानाफिराना भी उन्हीं का कर्तव्य था. जब से उन्होंने अमरीका की धरती पर पांव रखा था तभी से उन लोगों ने उन्हें घरगृहस्थी के झंझट में झोंक रखा था. वाकई, शिखा का क्रोध स्वाभाविक था. उन्हें उन सभी का ध्यान रखना चाहिए. वह स्वार्थी हो गए थे. अब उन्हें ध्यान आया कि बच्ची को अपनी गोद में बैठा कर उस की प्यारीप्यारी बातें सुने कितने दिन हो गए थे. क्या प्रभाव पड़ा होगा उस मासूम के मन पर?

उन्हें स्वयं पर ग्लानि हो रही थी. पत्नी ने उन्हें जो फटकार दी थी, वह उस के ऊपर हावी हो गई थी. उन्हें लगा, "वाकई मैं कर्तव्यच्युत हो गया था. पिताजी के आगे मैं ने उन लोगों की उपेक्षा की है. मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था. खैर, जो हुआ सो हुआ अब मैं अपने सब कर्त्तव्यों को भलीभांति निभाऊंगा."

काम पर से लौटते समय विशाल भारतीय मिठाई की दुकान से रसगुल्ले, बरफी, दालमोठ व बच्ची के लिए कु... चाकलेट भी ले कर आए. सामान रितु देवी को पकड़ाया और ज्योति को आवाज लगा... जो बाहर बगीचे में खेल रही थी. ज्योति को विश्वास ही नहीं हुआ कि पिताजी उस के लिए चाकलेट ले कर आए हैं.

जब से उस के दादाजी आए थे उ... चाकलेट मिलनी बंद हो गई थी. मां औ... नानी ही कभीकभी दिला देती थीं, ज... सब्जी वगैरह लेने जाते थे.

उसे बड़ा अच्छा लगा था जब विशा... ने उसे गोद में उठा कर चूमा था. झट उस... भी विशाल के गाल पर प्यार कर लिया थ... और विशाल ने भी पहले की तरह अपन... दाढ़ी जानबूझ कर उसे गड़ा दी. विशाल... पूछा था, "पिताजी कहां हैं?" उत्तर रि... देवी ने दिया, "आप के पिता के को... रिश्तेदार आए थे. वह उन्हें अपने घर ए... सप्ताह के लिए ले गए हैं. उन्होंने कहा है कि... आज रात में आप से फोन पर बात क... लेंगे."

अब विशाल स्वयं को तनावमुक्त अनुभ... कर रहा था. पत्नी की डांटें तीखी त... अवश्य थीं पर अगर तीखी न होती तो उ... की आंखों पर पड़ा हुआ परदा कैसे हटता...

5.30 बजे शिखा आई. हाथों... सब्जीफल व अन्य घरेलू सामान से भरे ती... थैले थे. शिखा की यह हालत देख क... विशाल को बड़ा तरस आया. उधर शिख... के चेहरे पर गहरा विषाद छाया हुआ थ... उसे भी दुख था कि जिस पति से इतने व... तक कभी भी उस का झगड़ा नहीं हुआ थ... रात उसे कैसीकैसी बातें उस ने सुना डाल... थीं. पर वह क्या करे? वह भी तो विवश थ... सामने ही विशाल की गोद में बच्ची को दे... कर उसे अपनी आंखों पर विश्वास ही न... आया.

पहले वह रसोईघर में गई. सभ... सामान को यथास्थान रख कर, चाय ले क... रितु देवी के साथ बैठक में पहुंची. मेज प...

पहले से रखी मिठाई व दालमोठ इत्यादि देख कर उसे थोड़ा आश्चर्य हुआ तो रितु देवी ने बताया, "विशाल लाए हैं."

उस ने विशाल से पूछा, "किस खुशी में मिठाई लाए हो और पिताजी कहां हैं?"

विशाल ने बताया, "कोई रिश्तेदार उन्हें एक सप्ताह के लिए अपने घर ले गए हैं. रात में फोन आएगा तो पता चल जाएगा कि किस के साथ गए हैं."

"पर मिठाई किस उपलक्ष्य में खिलाई जा रही है?"

विशाल ने कहा, "मुझे सोते से जगा देने की खुशी में. मैं तो अपने कर्तव्यों की अवहेलना कर के आंखें बंद किए गहरी नींद सो रहा था. पर कल के तुम्हारे उस भाषण ने मुझे जगा कर इस बात का एहसास कराया कि मेरा वह व्यवहार स्वार्थपूर्ण व गलत था.

"अभी तक जो कुछ भी हुआ, उस के लिए मैं शर्मिंदा हूं. वाकई मैं बहुत स्वार्थी हो गया था. अब से घर के सभी कार्यों को हम सब मिलजुल कर करेंगे, मांजी पर ही सब कार्यों का बोझ डालना अनुचित है.

"मांजी, मुझे क्षमा कर दीजिए और शिखा तुम भी. मैं रात भर सोचता रहा कि मैं ने एकतरफा आचरण किया है. अपने पिता पर आवश्यकता से अधिक ध्यान दे कर और आप की उपेक्षा कर के मैं ने उचित नहीं किया है.

"शिखा, कल से हस्पताल से तुम सीधे घर आ जाना. मांजी, आप मुझे सामान की सूची बना कर सुबह दे देंगी. मैं काम पर से लौटते समय ले आऊंगा. पहले वाली कपड़े धोने की मशीन खराब हो चुकी है. इसलिए हम लोग कल ही नई मशीन खरीद लेंगे. अपने और पिताजी के कपड़े मैं इस्तिरी करूंगा. अपने और मांजी के कपड़े शिखा करेगी."

तभी ज्योति ने गुस्सा हो कर पूछा, "और मेरे कपड़ों को कौन इस्तिरी करेगा?"

विशाल ने हंस कर कहा, "अपनी रानी बेटी को हम एक छोटी सी इस्तिरी दिला देंगे. वह अपने कपड़े खुद इस्तिरी कर लेगी.

ज्योति जो घर के बदले हुए वातावरण को देख कर कुछ अजीब सी खुशी का अनुभव कर रही थी. दौड़ कर विशाल की गोद में चढ़ गई. घर के बोझिल वातावरण को एक सुगंधमय प्रसन्नता व उल्लास ने अपने आंचल में छिपा कर सुख के रंग बिखरा दिए थे. सचाई के जरा से एहसास ने उलझन की हर धुंध को झुठला दिया था.●

"इन के साथ तो कशमीर के सुंदर दृश्यों और सुहाने मौसम का सारा मजा किरकिरा हो गया. वहां पहुंचते ही कहने लगे कि यहां न बाढ़ है, न सूखा, मेरा दौरा व्यर्थ हो गया!"



उग्र होता फिलिस्तीनी विवाद

(पृष्ठ 28 का शेषांश)

परिवार, बालबच्चों के साथ रह कर सहकारी खेती में या कारखाने में काम करते हैं. दूसरे में बच्चों के लिए पृथक आवास हैं और मातापिता पंचायती अतिथिगृह में रहते हैं और छुट्टी के दिन अपने बच्चों से मिलने आते हैं. उन्हें किसी उद्यान या मनोरंजनगृह ले जाते हैं. किब्बुत्स और मोशब में उगाए गए फूलों, सब्जियों और फलों का सब से बड़ा ग्राहक यूरोपीय साझा बाजार है.

संसार के चारों प्रमुख धर्मों के अनुयायियों की इस पवित्र भूमि का एकएक टीला, एकएक नदी, नाला और एकएक मरूद्यान विश्व इतिहास का जीवंत दस्तावेज बन गया है. इस भूमि पर बीबीसी टीवी के लिए वृत्तचित्रों का एक सीरियल बनाया गया है. इस वृत्तचित्रमाला ने इसराइल को यूरोप, अमरीका तथा अरब देशों के लिए अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन का एक महत्त्वपूर्ण केंद्र बना दिया है. यरूशलम के राजा डेविड (लगभग 960 ई. पू.), और उस के पुत्र सुलेमान (लगभग 930 ई. पू.) तथा उन के समर्थक सिडोन के इंडोआर्य (पणि) राजा हिराम की ओल्ड टेस्टामेंट की कथा अब इतिहास से पुष्ट और प्रमाणित हो गई है. हिराम ने पश्चिम भारत के सुप्पारक बंदरगाह तक जलपोत ला कर यरूशलम के मंदिर के निर्माण के लिए 420 टेलेंट सोना और हाथीदांत जैसे बहुमूल्य पदार्थ ला कर दिए थे. लेबनान से देवदारु काट कर यरूशलम भेजा गया था.

बीरशब्बा आते समय हम लोग जूडा की पहाड़ी से उतरे तो लैटिन अमरीका के कोलंबिया तथा इक्वेडोर के सहयात्री एक नाले के पास उतर कर एकएक कंकड़ उठा कर, अपनीअपनी झोली में डालने लगे. गाइड ने बताया कि यहीं पर से पत्थर उठा कर, अपने गोफन से राजा डेविड ने फिलिस्तीनी (शाब्दिक अर्थ चोर या धोखेबाज) शत्रु गोलियत के सिर पर निशाना लगाया और उसे मार डाला. मैं ने अपने उन सहयात्रियों का अनुसरण किया और एक पत्थर अपने झोले में डाल लिया. गुलाबी रंगत लिए यह गोल चिकना कंकड़ कुमाऊं की किसी भी घाटी के सिरे पर जमा किए गए बुड़ी (तोर्चन) पत्थरों के समान है. मैं ने इसे समग्र मानव की एकता और समानता की निशानी के रूप में रखा है. आगे चल कर तो बीरशब्बा के उस हस्पताल में मुझे अरब बद्दू लोगों की आकृतियां अपने ही पर्वत देश के सीमांतवासियों की भांति लगीं. वहां मोशाबों और किब्बुत्सों में काम करने वाले गुरदे के बीमार रात में आ कर अपने रक्त की शुद्धि कर ले जाते हैं और अपने दैनिक कार्य पर चले जाते हैं. किसी गुरदे के उपलब्ध हो जाने पर उस का रोपण बीरशब्बा के हस्पताल में हो जाता है. ऐसी सुखसुविधाएं उपलब्ध होने के कारण क्रियातगट का यह कसबा, जो पहले 28 हजार लोगों के लिए बना था, अब 80 हजार लोगों की आत्मनिर्भर स्वशासित इकाई है.

यह सब गैरयहूदी अरब लोग अपने सांसद भी चुनते हैं तथा अपने इलाकों में अपने कसबों के मेयर भी. इन की अलग धार्मिक पाठशालाएं और धार्मिक न्यायालय हैं. ये इसराइल की आर्थिक व्यवस्था के अभिन्न अंग बन गए हैं. यही हाल अधिकृत क्षेत्र के हेब्रान, रामअल्लाह तथा गाजा आदि नगरों का है. सन 1948 से पहले इसी क्षेत्र में जितने गैरयहूदी थे, उन के चार गुने आज यहां पर बाहर से आ कर बस गए हैं. अतः किसी अरब के विस्थापित होने का प्रश्न ही नहीं है. पूरे इसराइल देश की इस समय जनसंख्या 4[illegible] लाख है. इन में 83% यहूदी हैं, शेष अरब. जितनी यहूदियों की कुल जनसंख्या इसराइल में है, उस के चार गुना यहूदी संसार के अन्य देशों में रहते हैं. सब से अधिक यहूदी अमरीका में हैं. संयुक्त राज्य अमरीका की राजनीति में वहां के प्रबुद्ध यहूदियों का बड़ा प्रभाव है.

अमरीकी कांग्रेस ने आतंकवाद क[illegible]

समाप्त करने के लिए 1987 में एक कानून बनाया और यह प्रमाणित हो जाने पर कि फिलिस्तीनी मुक्ति संगठन ही 1984 के विमान अपहरण, एक अमरीकी नागरिक की हत्या तथा विश्वभर में कई अन्य आतंकवादी उपसंगठनों का कर्णधार है, उसे 21 मार्च, 1988 तक अमरीका की धरती से अपने सभी कार्यालय बंद करने का आदेश दिया. जब इस तिथि तक वे कार्यालय नहीं हटाए गए तो अमरीकी सरकार ने संघीय न्यायालय में अपील की है कि वह फिलिस्तीनी मुक्ति संगठन के प्रेक्षक दूतावास के अधिकारियों और कर्मचारियों के नाम आदेश जारी करे कि वे मैनहटन, न्यूयार्क तथा अपने संबद्ध कार्यालयों में अपनी गतिविधियां बंद करें.

अमरीका के इस कदम का गुट-निरपेक्ष देशों ने कड़ा विरोध किया है और मामले को सुरक्षा परिषद तक पहुंचा दिया है. यह सब जानते हुए भी कि इसराइल अधिकृत पश्चिमी तट में शांतिपूर्वक रहने वाले अरबों को फिलिस्तीनी मुक्ति संगठन ही हिंसा के लिए उकसा रहा है. वे लोग, जो इसराइल की सेना या पुलिस के नियमित कर्मचारी हैं या वहां के कारखानों के मजदूर हैं, आज इन आतंकवादियों के कहने में आ कर अपने पदों से त्यागपत्र दे कर अपने ही घरों और हस्पतालों को फूंक रहे हैं. अमरीका ने इस क्षेत्र के लिए जो नवीनतम शांति का प्रस्ताव रखा,इसे भी यासद अराफात ने ठुकरा दिया.

भारत और आतंकवाद

मध्यपूर्व में शांति स्थापित करने का एकमात्र उपाय है अरब राष्ट्रों द्वारा मिस्र की भांति इसराइल को मान्यता देना. इसराइली लोगों की यह आम धारणा है कि जब भारत गुटनिरपेक्ष देशों का प्रमुख था तो वह मुसलिम राष्ट्रों को यह मान्यता प्रदान करने के लिए राजी कर सकता था.

मुझे इसराइल के सभी वर्गों के लोगों से मिलने और खुल कर बात करने का अवसर मिला. मेरे शोध का विषय ही वह जीवन दर्शन था, जिस के लिए यहूदी जाति बदनाम रही है, अर्थात बिना हाथपैर चलाए दूसरे की कमाई में हिस्सा बंटाना– सूदखोरी अथवा भगवान या भगवान के पुत्र और चहेते के नाम से श्रमिक का शोषण. सब धर्मों का आदि स्रोत यह्व निराकार परमेश्वर किसी सगुण उपासना की अपेक्षा नहीं करता. उस के नाम से भोली जनता को लूटने और लूटने न देने वाले श्रमिक का सतत संघर्ष आज आतंकवाद का रूप लिए हुए है. इसराइल की भूमि इंडोआर्य (हित्ती) और इसराइल (इसर-दस, अल/कबीला) असीरियन (असुर) दस कबीलों के पारस्परिक संघर्ष की भूमि है. वहां विश्व के प्राचीन इतिहास की वह सांस्कृतिक संपदा पुरावशेषों में छिपी है जो मानवमात्र को एक परिवार के सदस्यों की भांति मिलजुल कर रहने की प्रेरणा दे सकती है. उस का संरक्षण आवश्यक है.

भारत फिलिस्तीनी मुक्ति संगठन के नेता को एक राज्याध्यक्ष का सम्मान दे कर तथा उस बहुमूल्य सांस्कृतिक विरासत को नष्ट करने वालों को अपना प्रश्रय दे कर, स्वयं अपने देश में आतंकवाद के विरुद्ध लड़ने की सामर्थ्य और इच्छाशक्ति खो चुका है.



व्यक्तिगत विज्ञापन
वैवाहिक विज्ञापन
वर चाहिए

20 वर्षीया, 164 सें.मी., मांगलिक, बी.ए. आनर्स व टेक्सटाइल डिजाइनिंग कोर्स उत्तीर्ण, इकहरा बदन, गौरवर्ण, सुशील, गृहकार्यदक्ष, माहेश्वरी कन्या हेतु माहेश्वरी अथवा अग्रवाल, कार्यरत, शिक्षित वर. साधारण, दहेज रहित शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 9514, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मार्केटिंग एक्जीक्यूटिव, 165 सें.मी., सुंदर, चुस्त, गंभीर कन्या हेतु सुयोग्य, ऊंची शिक्षाप्राप्त, दहेजविरोधी, सुप्रतिष्ठित, 26-30 वर्षीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9527, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कान्यकुब्ज ब्राह्मण, 21, 162 सें.मी., बी.ए., एम.एड., उच्च प्रथम श्रेणी, एम.ए. (अध्ययनरत), सुंदर, इकहरी कन्या हेतु उच्च शिक्षित, सुस्थापित वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9528, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 160 सें.मी., एम.ए., सरयूपारीण ब्राह्मण, गृहकार्यदक्ष, सुंदर, गौरांग, जिला न्यायाधीश की पुत्री हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9615, सरिता, नई दिल्ली-110055.

31 वर्षीया, 162 सें.मी., राजपूत कन्या हेतु सुयोग्य, सुशिक्षित वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9616, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, कुर्मि क्षत्रिय, एम.ए., बी.एड. कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9617, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जुझौतिया ब्राह्मण, 24 व 19 वर्षीया, 150 सें.मी., क्रमशः इंटर, बी.ए., सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्याओं हेतु जुझौतिया ब्राह्मण, सुयोग्य, शासकीय अथवा बैंक सेवारत, मध्यप्रदेश निवासी, दहेजविरोधी वर चाहिए. जन्मकुंडली सहित शीघ्र लिखें: वि.नं. 9618, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीया, माथुर, सुंदर, बी.ए., गृहकार्यदक्ष, संतानहीन, कानूनन तलाकशुदा हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9619, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23, 157 सें.मी., मंगली, पंजाबी, एम.ए. गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9620, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 158 सें.मी., एम.ए., बी.एड., वैश्य, गौरवर्ण, शाकाहारी कन्या (पिता उच्च अधिकारी) हेतु संभ्रांत परिवारीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9621, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, 23 वर्षीया, 160 सें.मी., स्लिम, स्मार्ट, गोरी, एम.एससी., बी.एड., रिसर्च स्कालर कन्या हेतु इंजीनियर, डाक्टर, अधिकारी वर चाहिए. उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 9622, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीया, कुर्मि, सुंदर, एम.ए. कन्या हेतु वर चाहिए. उत्तम, शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 9623, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22 वर्षीया, 153 सें.मी., पंजाबी ब्राह्मण, परिवारीय, गृहकार्यनिपुण, इंटरमीडिएट (हाथपैर के जोड़ों पर सफेद दाग) कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9624, सरिता, नई दिल्ली-110055.

क्षत्रिय, 20 वर्षीया, 150 सें.मी., बी.ए. अध्ययनरत, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य, सजातीय, सरकारी सेवारत, दहेजविरोधी वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9625, सरिता, नई दिल्ली-110055.

22½ वर्षीया, मारवाड़ी अग्रवाल, बंसल, 165 सें.मी., मैट्रिक, सुंदर, आकर्षक, गृहकार्यदक्ष, बिजनेसमैन, परिवारीय लड़की हेतु लंबे कदवान, बिजनेसमैन, मारवाड़ी अग्रवाल वर चाहिए. कलकत्ता एवं आसपास को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 9626, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21 वर्षीया, 157 सें.मी., राजपूत, एम.एससी., (प्रथम वर्ष), शिक्षारत, अत्यंत सुंदर, गौरवर्ण, गृहकार्यदक्ष, उच्च परिवार कन्या हेतु इंजीनियर, डाक्टर, बैंक आफिसर, अन्य उच्च व्यवसायी, पदाधिकारी स्वजातीय, सुंदर, सुयोग्य वर. पिता डाक्टर, प्रथम श्रेणी राजपत्रित अधिकारी, महाराष्ट्र-वासी को प्राथमिकता. विज्ञापन उत्तम संबंध हेतु. लिखें: वि.नं. 9627, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, साहू (तेली), 158 सें.मी., हायर सैकेंडरी, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, सिलाई निपुण, कलकत्तावासी कन्या हेतु कार्यरत/व्यवसायरत वर चाहिए. जातिबंधन, दहेज नहीं. लिखें: वि.नं. 9628, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, 155 सें.मी., स्टाफनर्स, जाटव, केंद्रीय सरकारी हस्पताल, दिल्ली, हेतु जातिबंधन मुक्त सरकारी सेवारत, दिल्लीवासी वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9629, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21, 155 सें.मी., अग्रवाल (मारवाड़ी), शिक्षित, सुंदर, मध्यमवर्गीय हेतु उपयुक्त वर. लिखें: वि.नं. 9630, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21, 157 सें.मी., मंगली, सुंदर, सुशील, आकर्षक, गृहकार्यदक्ष, पारिवारिक, इकहरी तथा इंटर कन्या हेतु योग्य, शिक्षित, सुंदर, कार्यरत, नान गर्ग, बीसा अग्रवाल वर चाहिए. उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 9631, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 23, 155 सें.मी., एम.ए. (संगीत सितार), एम. फिल. अध्ययनरत कन्या हेतु सुशिक्षित, सुस्थापित, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9632,

सरिता, नई दिल्ली-110055.

29, 157 सें.मी., स्लिम, सुंदर, एम.ए., ब्राट कन्या हेतु सेवारत, व्यवसायी वर. उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 9633, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, माथुर कायस्थ, एम.ए., एम.एड., गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9634, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, 150 सें.मी., अग्रवाल गर्ग, एम.बी.बी.एस., सुसंस्कृत, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सजातीय, डाक्टर वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9635, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत कन्या, एस.एससी., 21, 158 सें.मी., रंग साफ, तीखे नाकनक्श हेतु उच्चअधिकारी, इंजीनियर, शिक्षाशास्त्री वर चाहिए. उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 9636, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बैस राजपूत, एम.ए., बी.एड., (एक आंख आर्टीफिशियल) अत्यंत सुंदर कन्या हेतु शिक्षित, सजातीय, सेवारत, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9637, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कान्यकुब्ज ब्राह्मण, 25, 154 सें.मी., एम.ए., एम.एड., रंग गेहुआं, प्रतिष्ठित परिवार, कन्या हेतु वर. उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 9638, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौहान राजपूत, हरिद्वारवासी, 23, 155 सें.मी., अतिसुंदर, गौरवर्ण, गृहकार्यदक्ष, एम.ए. अध्ययनरत कन्या हेतु योग्य, सरकारी सेवारत, लेक्चरर, वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9639, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23, 157 सें.मी., गौरवर्ण, स्लिम, स्मार्ट, एम.ए. (प्रावीण्य सूची), बी.एड., शासकीय विद्यालय में लेक्चरर, 1,800/-, गृहकार्य में दक्ष, संगीत, चित्रकला में विशेष रुचि, म.प्र. स्थित, गढ़वाली ब्राह्मण कन्या हेतु दहेजविरोधी, खुले विचारों वाला गढ़वाली कुमाऊंनी ब्राह्मण, आफिसर वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9640, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 160 सें.मी., रंग गेहुआं, पहली शादी से 1 पुत्री, 1 पुत्र, नसबंदी हो चुकी है. संभ्रांत वैश्य परिवारीय विधवा कन्या हेतु जीवनसाथी चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9641, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल वैश्य, 22, 165 सें.मी., एम.ए. हिंदी, सुदर्शनी, स्मार्ट, लंबी, साफ रंग, प्रतिष्ठित एवं संपन्न परिवारीय कन्या हेतु सुयोग्य,सेवारत या व्यावसायिक वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9642, सरिता, नई दिल्ली-110055.

रस्तोगी स्वर्णकार, 22, 163 सें.मी., एम.एससी., (रसायन शास्त्र) स्मार्ट, लंबी, साफ रंग, प्रतिष्ठित परिवारीय कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9643, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीया 168 सें.मी., सुंदर, आकर्षक, प्रतिभावान, सरयूपारीण ब्राह्मण, दिल्ली विश्वविद्यालय में स्थाई लेक्चरर, एम.ए., एम.फिल., पीएच.डी. कन्या हेतु सरयूपारीण ब्राह्मण वर. दिल्ली कार्यरत लेक्चरर, डाक्टर, इंजीनियर, आई.ए.एस., चार्टर्ड एकाउंटेंट, बैंक मैनेजर वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9644, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, 20 वर्षीया, 150 सें.मी., मैट्रिक पास, रंग गेहुआं, गृहकार्यदक्ष, सिलाईकटाईबनाई, कन्या हेतु वर चाहिए. पिताजी रेलवे सेवारत. लिखें: वि.नं. 9645, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23, 153 सें.मी., राजपूत, एम.ए., कंप्यूटर कोर्स अध्ययनरत, गृहकार्यदक्ष, गोरी, सुंदर कन्या हेतु सुस्थापित वर. पिता तहसीलदार. लिखें: वि.नं. 9646, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुप्ता, रौनियार वैश्य, 24, 157 सें.मी., एम.ए. समाजशास्त्र परीक्षार्थी, इकहरी, गेहुंमन, चश्माधारी, गृहकार्यदक्ष, घरेलू, बंबईवासी कन्या हेतु सुस्थापित वैश्य, अग्रवाल वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9647, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20, 154 सें.मी., गोरी, सुंदर, बिहारी जयसवार कुर्मी, बी.काम. अंतिम वर्ष छात्रा हेतु सुस्वावलंबी, स्नातक वर चाहिए. (पिता जमशेदपुर इंजीनियर). लिखें: वि.नं. 9648, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गरीब, इज्जतदार, घरेलू कन्या, 19, 165 सें.मी., इंटरमीडिएट, रंग गेहुआं, हेतु कार्यरत वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9649, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, संपन्न परिवारीय, 26, 160 सें.मी., एम.ए., गृहकार्यों में निपुण, कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9650, सरिता, नई दिल्ली-110055.

160, सें.मी., 31, पतली, आकर्षक, संवेदनशील, बी.एससी., कार्यरत कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9651, सरिता, नई दिल्ली-110055.

भटनागर, 22, 161 सें.मी., बी.ए., बी.एड. (प्रथम श्रेणी) आकर्षक व्यक्तित्व, रंग गोरा, अध्यापिका, एम.ए. अध्ययनरत हेतु योग्य सुस्थापित वर चाहिए. पिता राजपत्रित अधिकारी, एक भाई स्वव्यवसायरत, दूसरा भाई सेना अधिकारी. शीघ्र विवाह. पूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 9652, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20, 160 सें.मी., गृहविज्ञान स्नातक, सिलाईबुनाई दक्ष, सुंदर, सुशील, पंजाबी कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9653, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कान्यकुब्ज ब्राह्मण 23, 152 सें.मी., 40 कि.ग्रा., 1,700/-, डिप्लोमा, पोलीटेक्नीक, रंग गोरा, तीखे नाकनक्श, राज्य सरकार में कार्यरत, मध्यवर्ग परिवारीय कन्या हेतु योग्य वर. लिखें: वि.नं. 9654, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25, 152 सें.मी., राजपूत (ठाकुर) एम.एससी., पीएच.डी., गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य, सुस्थापित, सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9655, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी ब्राह्मण, कन्याएं 29, 160 सें.मी., एम.ए., एलएल.बी., कल्याण अधिकारी एवं 27, 155 सें.मी., एम.एससी. (ए.जी.) विश्वविद्यालय में अध्यापक हेतु इंजीनियर, डाक्टर या अधिकारी (म.प्र. में कार्यरत) वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9656, सरिता, नई दिल्ली-110055.

शर्मा (धीमान), 23, 153 सें.मी., डी.एच.एम.एस. डाक्टर कन्या हेतु सुयोग्य, सुस्थापित वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9657, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौरसिया, 24, 157 सें.मी., एम.एससी. (स्टैटिस्टिक्स), गेहुआं रंग, भारतीय जीवन बीमा निगम में कार्यरत, 1,500/- वेतन, कन्या हेतु सजातीय, योग्य वर चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 9658, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीया, 152 सें.मी., एम.ए., कायस्थ, गोरी, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, संगीत व फ्रूट प्रीजर्वेशन में डिप्लोमा, कन्या हेतु कायस्थ वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9659, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित माहेश्वरी, दिल्ली निवासी, 20 वर्षीया, 157 सें.मी., गोरी, सुंदर, ग्रेजुएट, सुशील, गृहकार्यदक्ष, कानवेंट शिक्षित, विदेश भ्रमण करी हुई कन्या हेतु सजातीय, सुयोग्य, शिक्षित, संपन्न, प्रतिष्ठित परिवारीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9660, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित सरकारी अधिकारी परिवारीय, 23, 158 सें.मी., बी.एससी., बी.एड., अग्रवाल, सुंदर, स्लिम, गेहुआं, सर्वगुणी कन्या हेतु वर. उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 9661, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ब्राह्मण, तीन कन्याएं, 18-23, ट्रेंड, जिला नागौर, राजस्थान अध्यापिकाएं हेतु 21-30 वर्षीय ब्राह्मण, गवर्नमेंट कर्मचारी, स्वव्यवस्थित, व्यापारी वर. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 9662, सरिता, नई दिल्ली-110055.

प्रतिष्ठित संपन्न, मारवाड़ी, अग्रवाल परिवारीय, 23, 155 सें.मी., ग्रेजुएट, कानूनी तलाकशुदा, निरपराध, निस्संतान कन्या हेतु वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9663, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, 159 सें.मी., ओसवाल, जैन, गृहकार्यदक्ष, ग्रेजुएट, स्लिम कन्या हेतु सजातीय, सुयोग्य वर चाहिए. उत्तम विवाह. लिखें: वि.नं. 9664, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीया, 150 सें.मी., (रैदास, एससी.), एम.बी.बी.एस., कलर फेयर, आकर्षक हेतु सजातीय, सुंदर, इंजीनियर, डाक्टर उच्च शासकीय सेवा पदस्थ वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9735, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, 23, 160 सें.मी., एम.ए., बी.एड., गोरी, सुंदर, स्लिम, सुशील एवं गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सजातीय वर चाहिए. उत्तम एवं शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 9736, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20 वर्षीया, चक्रवर्ती बंगाली, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु योग्य वर चाहिए. प्राथमिकता सहयोगी, स्वावलंबी, शिक्षित बंगाली, रेलवे कार्यरत को. लिखें: वि.नं. 9737, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, 158 सें.मी., गेहुआं रंग, गृहकार्यदक्ष, डिप्लोमा इन मेडिकल लेबोरेटरी एवं टेक्नालाजी (बांबे), सुंदर कन्या, (बंसल अग्रवाल) राजस्थान निवासी हेतु सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9738, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीया, 153 सें.मी., एम.एससी., होमसाइंस (विशेष योग्यता) कानवेंट शिक्षित, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, बंगाली कायस्थ कन्या के शीघ्र विवाह हेतु केंद्रीय अथवा मध्यप्रदेश शासन प्रथम श्रेणी अधिकारी आर्मी आफिसर, चार्टर्ड एकाउंटेंट, सुंदर एवं आकर्षक व्यक्तित्व वर चाहिए. विवरण सहित लिखें: वि.नं. 9739, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, 25, 156 सें.मी., 52 कि.ग्रा., बी.एससी., बी.एड., एम.ए., आफिसर, परिवारीय सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. इंजीनियर, डाक्टर, शासकीय सेवारत को वरीयता. लिखें: वि.नं. 9740, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुशवाहा क्षत्रिय, सुंदर, गोरी, 158 सें.मी., 22 वर्षीया, मांगलिक, मेडिकल छात्रा हेतु सुंदर, गोरा, डाक्टर, इंजीनियर, प्रशासनिक सेवारत, सजातीय, मांगलिक वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 9741, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीया, 159 सें.मी., हाईस्कूल, मध्यमवर्गीय, टेलीफोन डिप्लोमा, सीधे आंख की तरफ काला निशान बचपन से, हेतु योग्य वर. विकलांग, तलाकशुदा विधुर, एक बच्चे वाले भी लिखें: वि.नं. 9742, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वधू चाहिए

बीसा ओसवाल, जैन, उम्र 31, कद 160 सें.मी., आटोमोबाइल इंजीनियर लड़के के लिए सुंदर, सुशील, गोरी लड़की चाहिए. लिखें: वि.नं. 9567, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23 वर्षीय, सक्सेना कायस्थ, एडवोकेट, पुत्र वरिष्ठ एडवोकेट, देहरादून, गोरा, स्वस्थ, 173 सें.मी., साधन संपन्न हेतु सुयोग्य, सुंदर कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9577, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, 26, 170 सें.मी., 2,200/-, ग्रेजुएट, शाकाहारी, डायरेक्टर पार्टनर, संपन्न हेतु प्रोफेशनली, क्वालीफाइड वधू. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं.

9578, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26 वर्षीय, 176 सें.मी., कुर्मि क्षत्रिय, स्नातक, स्वतंत्र व्यवसायी, रु. 5,000/-, संपन्न, प्रतिष्ठित परिवारीय युवक हेतु सजातीय, सुशील, आकर्षक, ग्रेजुएट, लंबी, साफ रंग, गृहकार्यनिपुण कन्या चाहिए. उत्तर प्रदेश निवासी को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 9579, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27 वर्षीय, 170 सें.मी., कुर्मि क्षत्रिय, मध्यप्रदेश निवासी, एम.डी., नई दिल्ली में कार्यरत, सुंदर, डाक्टर हेतु अतिसुंदर वधू चाहिए. मेडिको प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 9580, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप राजपूत, (महरा, काहर, धीवर) मैकेनिकल इंजीनियर (डिप्लोमा), 26,165 सें.मी., दिल्लीवासी, मोटरपार्ट फैक्टरी मालिक, आयकरदाता हेतु सुंदर, सुशिक्षित, स्लिम कन्या चाहिए. बंधन रहित लिखें: वि.नं. 9590, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वैश्य, विधुर, 50, 175 सें.मी., 2,000/- मासिक आय, पारिवारिक दायित्वमुक्त हेतु सुंदर, शिक्षित, निस्संतान जीवनसाथी चाहिए. जातिबंधन नहीं. विधवा, तलाकशुदा स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 9595, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बिहारवासी, 29, कुर्मि, बी.ए., सीनियर क्लर्क, रेलवे, 1,500/-, परिवार में केवल मांबेटा, हेतु सुंदर शिक्षित वधू. शीघ्र विवाह. दहेज नहीं. लिखें: वि.नं. 9665, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26½ वर्षीय, 178 सें.मी., कुर्मि क्षत्रिय, एम.फिल., एलएल.बी., पी. एससी. सेलेक्टेड, इक्साइज इंस्पेक्टर, परिवार सुशिक्षित एवं साधनसंपन्न हेतु वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9666, सरिता, नई दिल्ली-110055.

49½ वर्षीय, अवधिया कुर्मी, विधुर (दो पुत्र, एक पुत्री), डिप्टी मजिस्ट्रेट हेतु 30-42 वर्षीया, संतान अनिच्छुक संतानोत्पत्ति में असमर्थ जीवनसंगिनी चाहिए. जातिबंधन नहीं. निर्धन, विकलांग, बिहारी को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 9667, सरिता, नई दिल्ली-110055.

38, 180 सें.मी., 2,000/-, एम.ए., नेत्रहीन राजकीय अध्यापक, संपन्न परिवार युवक हेतु सुशिक्षित गृहकार्यदक्ष, नेत्रवान युवती चाहिए. विधवा, परित्यक्ता स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 9668, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुंदर, समझदार, गृहकार्यदक्ष कन्या चाहिए. कोई बंधन नहीं. कम पढ़ी स्वीकार्य, साधारण विवाह. 30, 178 सें.मी., आकर्षक, संपन्न, सुशिक्षित मातापिता सहित अमरीका बसा पंजाबी युवक. निस्संकोच लिखें. पत्रोत्तर अवश्य मिलेगा अगर जन्मतिथि, ताजा फोटो सविवरण भेजेंगे. Box 550145, AL 35255. U.S.A.

25, 157 सें.मी., एम.ए. (संगीत अध्यापक, सरकारी), 2,100/-, नेत्रहीन युवक हेतु सुयोग्य, स्नातक वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9669, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25 वर्षीय, 170 सें.मी., गौरवर्ण, अतिसुंदर, प्रतिभावान, एम.काम., एलएल.बी., अग्रवाल कंसल, फिलहाल मल्टीनेशनल कंपनी में मध्यप्रदेश में सेल्स रिप्रजेंटेटिव हेतु उत्तम, सजातीय कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9670, सरिता, नई दिल्ली-110055.

खंडेलवाल, 23, 171 सें.मी., ग्रेजुएट, सुंदर, निजी व्यवसाय, हेतु सुंदर, सुशिक्षित, घरेलू वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9671, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, 28, 170 सें.मी., 2,000/-, ग्रेजुएट, आत्मज्ञानी, कानपुर निवासी हेतु धनी वधू जो शांति व मोक्ष चाहती हो. देवियां स्वयं पत्रव्यवहार कर सकती हैं. लिखें: वि.नं. 9672, सरिता, नई दिल्ली-110055.

37, अग्रवाल, गर्ग, मासिक आय 4,500/-, प्राध्यापक, विधुर, तीन बच्चे, हेतु सजातीय, मिलनसार, पारिवारिक कन्या चाहिए. निस्संतान विधवा विचारणीय. लिखें: वि.नं. 9673, सरिता, नई दिल्ली-110055.

36 वर्षीय, ग्रेजुएट, अल्प वेतनभोगी, अविवाहित, एकाकी, राजपूत युवक हेतु सेवारत जीवनसाथी चाहिए. कोई बंधन नहीं. लड़की स्वयं भी लिखें: वि.नं. 9674, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 27,160 सें.मी., 3,000/-, राष्ट्रीयकृत बैंक अधिकारी हेतु वधू चाहिए. बैंक/अन्य कार्यरत को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 9675, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुप्ता, स्नातक, 33, 4, 500/-, स्वयं का स्वतंत्र व्यापार, युवक हेतु गोरी, सुंदर कन्या चाहिए. जाति, दहेज सेवारत का बंधन नहीं. साधारण विवाह. कन्या के गुणों को ही प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 9676, सरिता, नई दिल्ली-110055.

34 वर्षीय, 162 सें.मी., 8,000/-मासिक, शिक्षित, फोरेन रिटर्ण्ड, निजी व्यवसाय, प्रतिष्ठित भार्गव परिवारीय, इकलौते, निस्संतान तलाकशुदा युवक हेतु (केवल 3 मास साथ रहे), गोरी, सुंदर, शिक्षित, पतली, गृहकार्यदक्ष कन्या चाहिए. जातिबंधन नहीं. प्रथम बार सविवरण लिखें: वि.नं. 9677, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गर्ग, 25 वर्षीय, सरकारी सेवारत, मासिक आय 1,500/-व अन्य सुविधाएं, हेतु सुंदर, जीवनसाथी चाहिए. लिखें: वि.नं. 9678, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिंदू (पासी), 28 वर्षीय, सुंदर, राष्ट्रीयकृत बैंक में चीफ कैशियर (दिल्ली कार्यरत), तलाकशुदा हेतु साथी चाहिए. जाति व अन्य कोई बंधन नहीं. लड़की स्वयं निस्संकोच लिख सकती है. लिखें: वि.नं. 9679,

सरिता, नई दिल्ली-110055.

28, 158 सें.मी., 1,200/-, कान्यकुब्ज, शांडिल्य गोत्रीय, स्वनियोजित युवक हेतु विशेष योग्यता प्राप्त, सुयोग्य कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9680, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, 178 सें.मी., मिल्ट्री अरोड़ा, डाक्टर हेतु एम.बी.बी.एस. लड़की चाहिए. लिखें: वि.नं. 9681, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीय, 170 सें.मी., एम.बी.बी.एस, शासकीय सेवारत, कान्यकुब्ज युवक हेतु संुदर, सुशिक्षित वधू. मेडिको को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 9682, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 170 सें.मी., शांडिल्य गोत्रीय, मैथिल ब्राह्मण, स्नातकोत्तर, स्वस्थ, संुदर युवक, स्टेनो, 1,500/-, हेतु संुदर, सुशिक्षित वधू. उपजातीय बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9683, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29 वर्षीय (धोबी), आफिसर युवक हेतु संुदर, सुशील, ग्रेजुएट, सजातीय कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9684, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिंधी, 28, 166 सें.मी., इकहरा बदन, मैट्रिक पढ़ालिखा, अकेला, गोरसांवला, आय तीन अंकों में, सादा विवाह हेतु सिंधी, इकहरे बदन की संुदर, सुशील, पढ़ीलिखी, गृहकार्यदक्ष वधू. दहेजबंधन नहीं. सर्विस वाली भी लिखें: वि.नं. 9685, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 25, 171 सें.मी., उत्तरप्रदेशीय, एम.बी.बी.एस., डी.आर्थ. कर रहे डाक्टर हेतु डाक्टर कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9686, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 185 सें.मी., वत्सगोत्रीय, उत्तरप्रदेशीय, ब्राह्मण, एम.डी. (मेडिसिन) डाक्टर हेतु संुदर, गोरी, मेडिको वधू. लिखें: वि.नं. 9687, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिल्ली निवासी, गुरुसिख, मंगलीक, 27, 165 सें.मी., अपना व्यवसाय, युवक हेतु मंगलीक वधू चाहिए. जातीय बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9688, सरिता, नई दिल्ली-110055.

45 वर्षीय, विधुर, आय 2,500/-, चार बच्चे साथ में, हेतु 40 वर्षीया, निस्संतान, जीवनसंगिनी चाहिए. लिखें: वि.नं. 9689, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 170 सें.मी., 1,500/-, संुदर, संवेदनशील, आध्यात्मिक व्यक्तित्व, सरकारी सेवारत, श्रीवास्तव युवक के अनुरूप वधू चाहिए. जातिबंधन शिथिलनीय. दहेज नहीं. लिखें: वि.नं. 9690, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कलकत्ता निवासी, मारवाड़ी (सिंहल), संुदर गोरे, चार्टर्ड एकाउंटेंट, 28, 172 सें.मी., हेतु संुदर गोरी सुशिक्षित, स्लिम, लंबी, सजातीय कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 9691, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मजहब, जाति, दहेज, पारिवारिक बंधनहीन, साहसप्रिय प्रकृतिप्रेमी, 28, 168 सें.मी., गौरवर्ण, स्वस्थ, सरकारी सेवारत युवक हेतु खूबसूरत, गोरी, लंबी, छरहरी, स्वस्थ, जिंदादिल, निर्भीक जीवनसाथी चाहिए. लिखें: वि.नं. 9692, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिल्लीवासी आफिसर, 35 वर्षीय, तलाकशुदा, एकाकी, आय 6,000/-मासिक, स्वयं की कार, जायदाद, हेतु सुयोग्य, गरीब लेकिन संुदर, स्वस्थ जीवनसंगिनी चाहिए. लड़की स्वयं भी पत्रव्यवहार करे. लिखें: वि.नं. 9693, सरिता, नई दिल्ली-110055.

49, 165 सें.मी., सिंधी, व्यवसायी, निजी दो मकान, उत्तरदायित्वमुक्त, स्वस्थ, विधुर हेतु सिंधी या पंजाबी, संुदर, सुशील, जीवनसाथी. निस्संतान, विधवा, तलाकशुदा स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 9694, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 170 सें.मी., बंबई स्थित, जैन, बीसा ओसवाल, डाक्टर, प्रतिष्ठित परिवारीय, स्नातक, अत्यंत स्मार्ट, संपन्न व्यवसायरत पुत्र हेतु सजातीय, प्रतिष्ठित व शिक्षित परिवार की सुशील, संुदर, संस्कारी, शिक्षित, गृहकार्यदक्ष, 22 वर्ष तक की कन्या चाहिए. शिक्षित परिवारीय कन्या के गुणों को प्राथमिकता. दहेजबंधन. नहीं, विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 9695, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32 वर्षीय, 170 सें. मी., विधुर, राजपूत चौहान, स्वव्यवसायरत, आय 1,500/- मासिक, युवक हेतु संुदर, पढ़ीलिखी, सुशील, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. दहेजबंधन नहीं. शीघ्र विवाह. प्रथम बार पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि. नं. 9696, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुन्नी मुसलिम, नाई, एडवोकेट, 27, 165 सें. मी., हेतु शिक्षित, संुदर वधू चाहिए. लिखें: वि. नं. 9697, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जमशेदपुर निवासी, निजी व्यवसाय, अपना घर, बी. एससी., 27 वर्षीय, 178 सें. मी., संुदर, स्वस्थ, रामगढ़िया सिख युवक हेतु गोरी, स्लिम, संुदर, गृहकार्यदक्ष, सजातीय वधू चाहिए. दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि. नं. 9698, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा, 32, 152 सें. मी., 1,900/-, एम. काम., निजी मकान, युवक हेतु वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि. नं. 9699, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27; 3,500/-, (धोबी), एम.बी.बी.एस. डाक्टर युवक हेतु वधू. मेडिको को प्राथमिकता. लिखें: वि. नं. 9700, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कलकत्ता/मद्रास निवासी, 25, 170 सें. मी., बी.काम., संुदर, स्मार्ट, निजी व्यवसाय, अग्रवाल जिंदल गोत्रीय हेतु संुदर, सुशील, स्मार्ट, शिक्षित, सजातीय वधू चाहिए. पत्रिका पूर्ण विवरण सहित संपर्क करें. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. दहेजबंधन नहीं. लिखें: वि. नं. 9701, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजपूत, इंजीनियर, 29, 165 सें.मी., सुंदर, गोरे, आकर्षक, केंद्रीय सेवारत, 3,500/-, प्रतिष्ठित परिवारीय युवक हेतु अत्यंत सुंदर, गोरी, आकर्षक वधू चाहिए. शीघ्र विवाह. लिखें: वि. नं. 9702, सरिता, नई दिल्ली-110055.

राजवंश अग्रवाल, ग्रेजुएट, सेनेटरी इंस्पेक्टर कोर्स उत्तीर्ण, 26, 165 सें. मी., आय 1,800/-, लिपिक, सरकारी सेवारत, प्रतिष्ठित परिवार, हेतु सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष, घरेलू कन्या चाहिए. लिखें: वि. नं. 9703, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, 26, 160सें. मी., इंजीनियर (एल एंड टी में कार्यरत) हेतु अतिसुंदर वधू चाहिए. लिखें: वि. नं. 9704, सरिता, नई दिल्ली-110055.

संपन्न जैन, 21, 175सें. मी., 1,800/-, हेतु वधू. दहेज नहीं. लिखें: वि. नं. 9705, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नेत्रहीन, सुंदर, 42, 165 सें.मी., संगीतज्ञ, दूरदर्शन, रेडियो के प्रख्यात गायक, बंबई सुरशृंगार पुरस्कृत, आय 5,000/-, गजल गुरबानी की कैसेट निकली है, हेतु सुयोग्य वधू चाहिए. कोई बंधन नहीं. लिखें: वि. नं. 9706, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिंधी, 28, बी.ए., 2,000/-, सरकारी सेवारत, विकलांग युवक हेतु गरीब, विधवा या संतानोत्पत्ति में असमर्थ वधू चाहिए. जाति एंवं दहेज नहीं. युवक थोड़ी सेक्सुअल कमजोरी महसूस करता है. लिखें: वि. नं. 9707, सरिता, नई दिल्ली-110055.

40, विधुर, 175 सें. मी., प्री यूनिवर्सिटी (साइंस) मासिक आय 2,500 /-, राउरकेला (उड़ीसा) निकटवर्ती एक लिमिटेड कंपनी में सीनियर स्टोर्स आफिसर, वशिष्ठ गोत्रीय, मारवाड़ी गौड़ ब्राह्मण को 30-40 वर्षीया, अच्छे स्वभाव की, सहनशील, घरेलू जीवनसंगिनी की जरूरत है जो पत्नी के साथ एक मां व बहू का फर्ज निभा सके तथा 3 वर्षीय एक बच्चे तथा बूढ़े मां, बाप व दादी का खयाल रख सके. सरल, शांतिमय जीवन के इच्छुक लिखें: वि. नं. 9708, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29, 170 सें. मी., धोबी (धंधा नहीं), केंद्रीय प्रथम श्रेणी राजपत्रित अधिकारी हेतु सुंदर, वधू चाहिए. बंधन नहीं. लिखें: वि. नं. 9709, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिल्ली निवासी, 29, 170सें. मी., एम.ए., बी.एड., नेत्रहीन अध्यापक, सरकारी क्वाटर, 2,500/- हेतु ग्रेजएट, सुशिल, देखने में सुंदर, स्लिम वधू चाहिए. शीघ्र विवाह. लिखें: वि. नं. 9710, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिगंबर जैन, 28, 174 सें. मी., ग्रेजुएट, बिजनेसमैन हेतु सुंदर, सुशील, सुशिक्षित वधू चाहिए. जैन व बीसा अग्रवाल को प्राथमिकता. लिखें: वि. नं. 9711, सरिता, नई दिल्ली-110055.

58 वर्ष के एक स्वस्थ, संपन्न, बहाई विधुर को हिंदी, अंगरेजी का सामान्य ज्ञानवाली, स्वस्थ, 45 वर्ष से अधिक आयु वाली विधवा या अविवाहित जीवनसंगिनी चाहिए. धर्म, जाति, देश, मातृभाषा का भेदभाव नहीं. लिखें: वि. नं. 9712, सरिता, नई दिल्ली-110055.

36 वर्षीय, स्नातक, 161 सें.मी., आय 5,500/-, गवर्नमेंट आफ फुजायरह में कार्यरत, बिहार निवासी हेतु हंसमुख, आकर्षक, आधुनिक, इंगलिश स्पीकिंग (प्राथमिकता) जीवनसंगिनी चाहिए. निस्संतान विधवा एवं परित्यक्ता स्वीकार्य. नौकरी आर्थिक स्तर, प्रांत, धर्म, जातिबंधन नहीं. दहेजरहित शीघ्र (जून 88) सिविल मैरिज. कन्या स्वयं भी पत्रव्यवहार कर सकती है. लिखें: NAVIN. L. AMBASTHA. POST BOX 500, FUJAIRAH U.A.E.

30 वर्षीय (यादव), दृष्टिहीन, डबल एम.ए., सरकारी स्कूल दिल्ली में सेवारत, आय 2,500/- मासिक, सरकारी आवास, राजकीय पुरस्कार प्राप्त युवक हेतु कम से कम मैट्रिक वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 9713, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ओसवाल जैन, 28,170 सें.मी., बी. काम, इंजीनियरिंग उद्योगरत, मासिक आय उच्च चार अंकीय, हेतु संदर, गृहकार्यदक्ष, सजातीय वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9714, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोयल, 28 वर्षीय, 178 सें.मी., डवलपमेंट आफिसर हेतु सुंदर, लंबी कन्या चाहिए. दिल्ली समीप को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 9722, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, चौरसिया, 175 सें.मी., गौरवर्ण, सरकारी प्रतिष्ठान में इंजीनियर, 3,500/-, हेतु प्रतिष्ठित घराने की सुंदर, स्नातक वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9723, सरिता, नई दिल्ली-110055.

48 वर्षीय, अग्रवाल गर्ग, विधुर, उत्तरदायित्व मुक्त हेतु 35-37 वर्षीया, सजातीय, निस्संतान विधवा जीवनसंगनी चाहिए. दिल्ली में अपना व्यवसाय, अपना मकान, पहली बार में पूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 9724, सरिता, नई दिल्ली-110055.

39 वर्षीय, अग्रवाल, निस्संतान, कानूनी तलाकशुदा, वार्षिक आय रु. 30,000/-, हेतु सुशील, घरेलू कन्या चाहिए.निस्संतान, विधवा भी स्वीकार्य. शीघ्र, साधारण विवाह. लिखें: वि.नं. 9725, सरिता, नई दिल्ली-110055.

इंजीनियर, भारतीय रक्षा लेखा सेवा, रक्षा मंत्रालय, स्वस्थ, श्रीवास्तव, आकर्षक, 27,175 सें.मी., हेतु वधू. अंर्तजातीय विचारणीय, उत्तम चयन. लिखें: वि.नं. 9726, सरिता, नई दिल्ली- 110055.

एकाकी, 23,168 सें.मी., स्वस्थ, डिप्लोमा, कार्यरत, खुले विचार, मिलनसार युवक हेतु मृदुभाषी वधू. आश्रय देने वाले, विधवा, तलाकशुदा मान्य. लिखें: वि.नं: 9727, सरिता, नई दिल्ली-110 055.

गढ़वाली राजपूत, केंद्रीय सेवारत, 28.160 सें.मी., 1,800/-, बी.काम., अच्छी आर्थिक स्थिति युवक हेतु वधू. जातिबंधन नहीं. शीघ्र विवरण सहित लिखें वि.नं. 9728, सरिता, नई दिल्ली-110055.

साव (तैलिक वैश्य) जमशेदपुर, प्रतिष्ठित परिवार, 26½ वर्षीय, 167 सें.मी., 56 कि.ग्रा., साफ रंग, बी.काम., निर्व्यसनी, शाकाहारी, सहृदय, व्यापारदक्ष, सौम्य युवक हेतु शिक्षित, गोरी, वास्तविक सुंदर, संपन्न वधूपक्ष. सविवरण (शीघ्र विवाह.) लिखें: वि.नं. 9729, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30, 175 सें.मी., तलाकशुदा (कानूनन), कुर्मी कनौजिया, मासिक आय रु. 8,000/-, हेतु सुंदर, निस्संतान विधवा, परित्यक्ता, अविवाहित वधू चाहिए. दहेज, जातिबंधन नहीं लिखें: वि.नं. 9730, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कान्यकुब्ज ब्राह्मण, उपमन्यु गोत्र., एम.काम., 22 वर्षीय, 170 सें.मी., गौरवर्ण, स्वस्थ एवं सुदर्शन, निजी व्यवसाय, मासिक आय पांच अंकीय, कलकत्ता में निजी आवास, हेतु सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्या एक मात्र विचारणीय केवल सजातीय जन्मांक सहित पत्रव्यवहार करें. लिखें: वि.नं. 9731, सरिता, नई दिल्ली-110055.

42 वर्षीय, 158 सें.मी., विधुर, अग्रवाल मंगल, प्रतिष्ठित संपन्न, उच्चमध्यमवर्गीय, स्वस्थ, सुंदर, स्मार्ट, उच्चव्यवसाय वैवाहिक सुख देने के पूर्ण योग्य, छोटा पुत्र 18 वर्ष (शेष विवाहित) हेतु सजातीय, गोरी, सुंदर, स्वस्थ, संतानोत्पत्ति अनिच्छुक, गृहकार्यदक्ष जीवनसंगिनी चाहिए. संभ्रांत परिवारीय विधवा, बांझ को वरीयता. लिखें: वि.नं. 9732, सरिता, नई दिल्ली-110055.

क्षत्रिय स्वर्णकार, 24.183 सें.मी., एरोड्रम आफिसर, प्रभावशाली व्यक्तित्व वाले युवक हेतु अतिसुंदर, कम से कम 163 सें.मी., लंबी, स्नातक कन्या चाहिए. इच्छुक प्रथम बार में पूर्ण विवरण दें. लिखें: वि.नं. 9733, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24 वर्षीय, 165 सें.मी., (रैदास, एससी.), एम.बी.बी.एस., एम.डी. अध्ययनरत, सुंदर, स्मार्ट हेतु सजातीय, सुंदर, सुशील, न्यूनतम स्नातक वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9734, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वरवधू चाहिए

नाई, 24. 150 सें.मी., बी.ए., सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्या/एम.ए., बी. लाइब्रेरी साइंस, सरकारी सेवारत युवक 30. 180 सें.मी., 1,800/-, हेतु सजातीय, सुयोग्य वरवधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9715, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29½ वर्षीया, 152 सें.मी., सिंधी, एम.ए., घरेलू, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु वर चाहिए. एवं भाई 28.175 सें.मी., 3,000/-, मल्टीनेशनल कंपनी [cut] कार्यरत हेतु योग्य वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखे[cut] वि.नं. 9716, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुन्नी मुसलिम, प्रतिष्ठित परिवारीय कन्या[cut] 34 व 28 वर्षीया, रिसर्च स्कालर्स दीनी तालीमयाफ्ता[cut] शासकीय अध्यापिकाओं एवं भाई 32 वर्षीय, गजेटे[cut] आफिसर, 30 वर्षीय, बी.ए. एम.एस. डाक्टर हे[cut] उपयुक्त रिश्ते. लिखें: वि.नं. 9717, सरिता, न[cut] दिल्ली-110055.

शेख मुसलिम, हैदराबाद निवासी, 22, 16[cut] सें.मी., मैट्रिक, एन.एच.पी.सी. में सेवारत, गेहु[cut] रंग, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु वर तथा 27, 170 सें.मी[cut] जूनियर इंजीनियर, एन.एच.पी.सी. में कार्यरत भा[cut] हेतु वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 9720, सरिता, न[cut] दिल्ली-110055.

गोद विज्ञापन

10, 8 या 6, 4 वर्षीय, स्वस्थ, सुंदर, खंडेलवा[cut] भाईबहन को गोद लेने के इच्छुक लिखें: वि.न. 971[cut] सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुप्ता दंपत्ती, नर्सिंग होम, संस्था या अना[cut] आश्रम द्वारा नवजात से 4 माह तक का शिशु गोद ले[cut] चाहते हैं. लिखें: वि.नं. 9719, सरिता, न[cut] दिल्ली-110055.

रिक्त स्थान

बैंक अधिकारी को गृहप्रबंध हेतु 22-30 वर्षीय[cut] स्मार्ट, सुशील, शिक्षित सहयोगिनी चाहिए. विधव[cut] निस्संतान, बेसहारा, परित्यक्ता मान्य, घर सदस्य[cut] सम्मान. लिखें: वि.नं. 9721, सरिता, नई दिल्ली[cut] 110055.

पांडुलिपि संशोधन के लिए हिंदी में दक्ष संपाद[cut] की आवश्यकता है. हिंदी के व्याकरण, विरामचिह्न[cut] वाक्य विन्यास आदि के बारे में पूर्ण ज्ञान आवश्य[cut] आवेदन करें: सरिता, नई दिल्ली-110055.

लेखकों के लिए

लेखकपयोगी साहित्य मंगाइए. साहित्यनिदे[cut] पांवटा (हिमाचल) 173025.

व्यापार

शोभिका क्रीमों, कोल्ड वैक्स, टेलकम पाउड[cut] व दीप्त तरल डिटरजेंट के लिए विक्रेताओं [cut] कमीशन एजेंटों की आवश्यकता है. लिखें [cut] शोभिका, बी-23, मेरठ रोड, इंडस्ट्रियल एस्टे[cut] गाजियाबाद.



PONDS
POND'S Sandal Talc
PONDS Sandal Talc
सोने से सजा-संवरा...
चदंन की महक से
महकता रूप...
अपने ही रूप से मोहित होने के क्षण।
सोने से सजा-संवरा असली चंदन की महक से महकता रूप।
क्षण भर में नारी होने की कोमल भावनाएँ आपके तन-मन में लहरा उठेंगी। और आप महसूस करेंगी अंग-अंग में नई उमंग।
मनमोहक सुगन्ध...
सोने जैसी अनमोल!
पॉण्ड्स
सैण्डल
टैल्क



क्रॅकजॅक कुरकुराइए!
क्रॅकजॅक ही खाइए
हर चीज के संग जमाइए
PARLE
Krackjack
BISCUITS
The sweet and salty temptation
मीठे-नमकीन क्रॅकजॅक
नये गोल्ड पैक में !
पारले
everest/88/PP/113-hn